विश्व-नाटक के आध्यात्मिक

विधि-विधान

एवं

नियम-सिद्धान्त

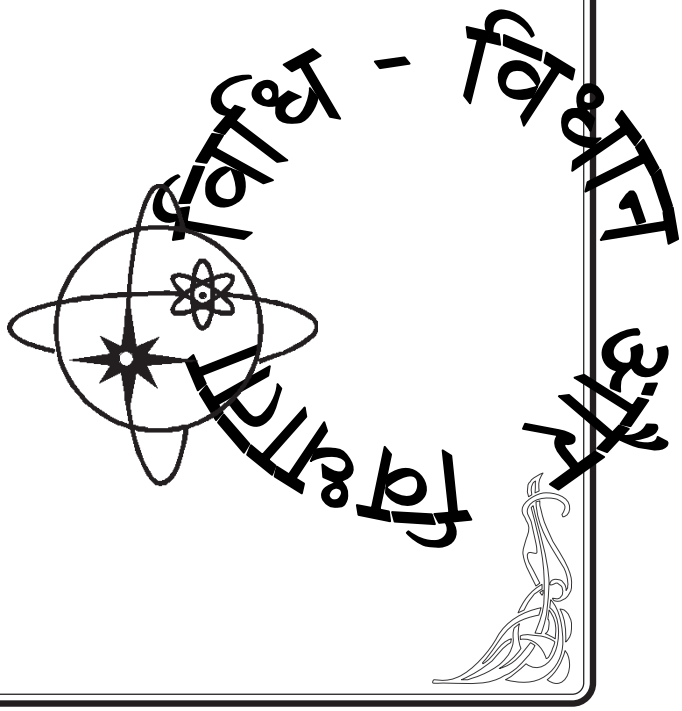

प्रस्तावना

परमात्मा पढ़ाने आये हैं और वे हमको इस विश्व-नाटक के अटल सत्यों (Fact Figures), नियम-सिद्धान्तों, इतिहास-भूगोल (History Geography) का ज्ञान दे रहे हैं। उन नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों का स्पष्ट ज्ञान और उनकी धारणा होगी तो ही हमारा ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा और हम अपने जीवन में सतत चढ़ती कला का अनुभव करेंगे।ये विशाल विश्व-नाटक है और इसके नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान अनन्त हैं, जिनके आधार पर ये विश्व-नाटक अबाध रूप से अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल तक चलता रहने वाला है। उन सभी नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों को समझना तो किसी मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर की बात है परन्तु परमपिता परमात्मा ने जो हमारे कल्याणार्थ और हमारे आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए हमको बताये हैं, उनमें से कुछ अति आवश्यक नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों का यहाँ वर्णन किया गया है।

इनमें से कुछ तो अनादि-अविनाशी (Eternal) सत्य हैं और वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सभी को सर्वमान्य होते और एकमत से स्वीकार्य होते हैं और होने भी चाहिए। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म और फल के अविनाशी विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता अवश्यम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। उनमें एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। उनमें देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं। इनके सम्बन्ध में बाबा की मुरलियों में भी देश-काल-परिस्थिति और व्यक्ति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं।

विश्व-नाटक के आध्यात्म सम्बन्धित अनादि-अविनाशी विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

विषय-सूची

प्रथम अध्याय (Ist Chapter)

कर्म से सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
आध्यात्मिक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
योग का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
हठ्ठयोग एव्र राज़योग में अन्तर
विश्व-नाटक के आध्यात्म सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
विश्व-नाटक के आध्यात्मिक विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और उनका पुरुषार्थ से सम्बन्ध
पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
धन-सम्पत्ति और उसकी प्राप्ति का विधि-विधान
पदार्थों की नश्वरता और अधिकार परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और परमात्मा
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और ब्रह्मा बाबा
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और आत्माओं के परस्पर सम्बन्ध

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)

चढ़ती कला और उतरती कला का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
पवित्रता का सिद्धान्त (Law of Purity)
विश्व-नाटक में संगमयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
विश्व-नाटक में सतयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
विश्व-नाटक में कलियुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
सतयुग और कलियुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों में तुलना
विश्व-नाटक में पुरुषोत्तम संगमयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों का महत्व
पुरुषोत्तम संगमयुग का सफल कर सफलता का सिद्धान्त
संगमयुग अर्थात् ज्ञानमार्ग और भक्ति मार्ग के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और दोनों में सम्बन्ध
विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना का विधि-विधान
स्थापना और विनाश की क्रिया का विधि-विधान
सतयुगी राजाई, उसकी स्थापना और पतन का विधि-विधान
जन्म, मृत्यु और मृत्यु-विजय का विधि-विधान
सतयुग की, कलियुग की और संगमयुग की मृत्यु का विधि-विधान

आत्माओं के परमधाम से आने और जाने का विधि-विधान
अन्न और संग का विधि-विधान अर्थात् उनके प्रभाव का विधि-विधान
परमात्म-प्यार की अनुभूति का विधि-विधान
परमात्म-प्यार का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
इन्द्र, इन्द्र सभा और उसके विधि-विधान
परमात्मा की मदद का विधि-विधान
परमात्मा की मदद लेने और देने का विधि-विधान
परमात्मा द्वारा एक का हजारगुणा प्राप्ति का विधि-विधान
दान-पुण्य का विधि-विधान
अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
मन्सा सेवा, मन्सा सुख एवं मन्सा भोगना विधि-विधान
संकल्प, वृत्ति और वायुमण्डल का विधि-विधान
ईश्वरीय सेवा का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
तन-मन की आरोग्यता में संकल्पों के प्रभाव का विधि-विधान
विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और भारत
शुभ-भावना, शुभ-कामना का विधि-विधान और नियम-सिद्धान्त
विश्व-नाटक, शुभभावना-शुभकामना और न्याय प्रक्रिया विधि-विधान
लव एण्ड लॉ के बैलेन्स का विधि-विधान
कर्मातीत स्थिति और कर्मातीत स्थिति का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त
जन्म-मृत्यु का नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान
ईश्वरीय पढ़ाई और परीक्षा का विधि-विधान
आध्यात्मिक प्रश्नावली और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

तृतीय अध्याय (IIIrd Chapter)

धर्मराज, धर्मराजपुरी और धर्मराजपुरी के विधि-विधान
कर्म और फल का विधि-विधान
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का विधि-विधान
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का विधि-विधान
कर्मभोग और कर्मभोग से मुक्ति पाने का विधि-विधान
ज्ञानमार्ग, ज्ञान मार्ग में समर्पित जीवन और सन्यास मार्ग के विधि-विधान
विविधि बिन्दु
सारांश

आध्यात्म सम्बन्धित अनादि-अविनाशी विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रत्न समझ अंगूठियाँ पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

इस विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम-सिद्धान्तों और विधि-विधान पर विचार करें तो देखेंगे कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी (Accurate, Just Auspicious) है। हर आत्मा ड्रामा अनुसार अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उसका फल भोग रही है, इसलिए जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात आत्मिक स्थिति और आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां स्वत: होती हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है, सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। जहाँ पवित्रता है, वहाँ राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं हो सकता। जहाँ पवित्रता है, वहाँ समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: उत्पन्न होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है इसलिए व्यर्थ संकल्प का नाम निशान नहीं होता। उसकी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप दूसरों की भी उसके प्रति शुभ भावना शुभ कामना होती है इसलिए भय का नाम-निशान नहीं होता है। इस विश्व-नाटक की सत्यता पर विचार करें तो देखते हैं, इसमें न कोई अपना है और न ही कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न ही कोई शत्रु है। न कोई किसको कुछ दे सकता है और न ही कोई किसका कुछ ले सकता है। सत्यता ये है कि जो आज अपना है वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। एक परमात्मा ही हमारा सच्चा सम्बन्धी है और उसने जो दिया वही हमारे लिए हितकर है। बाबा ने ज्ञान दिया है कि अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का, बाप के सानिध्य से, बाप की मधुर याद से और विश्व-कल्याण की सेवा से परमानन्द का का अनुभव करो। साक्षी होकर इस विश्व-नाटक के हर दृष्य को देखते हुए और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो, यही जीवन है। यही गीता ज्ञान का

सार है, ये ही इस विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त हैं और ये ही आध्यात्म की सर्वोच्च स्थिति है। यही मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

इस सर्वोच्च स्थिति को पाने के लिए इस विश्व-नाटक के अनेक नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान हैं, जो अटल हैं, जिनका ज्ञान अभी परमपिता परमात्मा ने हमको हमारे कल्याणार्थ दिया है, उन नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों का जितना स्पष्ट ज्ञान होगा, उन पर निश्चय होगा, उनकी जीवन में जितनी अच्छी धारणा होगी, हमारा पुरुषार्थ उतना ही अच्छा होगा और जितना हमारा पुरुषार्थ अच्छा होगा, उतना ही हमारा ये जीवन सुखमय होगा और भविष्य जीवन उज्ज्वल होगा। इसके लिए उन नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों पर विचार करके, उनको को अच्छी रीति समझना, उनका अनुभव करना और निश्चयबुद्धि बनकर उनको जीवन में अपनाना परमावश्यक है।

इस सृष्टि के विधि-विधान, नियम और सिद्धान्तों का यथार्थ ज्ञाता तो परमात्मा ही है परन्तु अध्ययन की दृष्टि से परमात्मा के द्वारा दिये हुए ज्ञान से और उसके आधार पर इन नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों को संगठित करने, उनके विषय में जानने और लिखने का पुरुषार्थ किया गया है। वैसे तो इस विश्व-नाटक का हर नियम और सिद्धान्त एक-दूसरे का पूरक है, एक-दूसरे पर आधारित है, एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं, एक-दूसरे का कारण है, परस्पर अर्न्तसम्बद्ध (Co-related) हैं इसलिए उनको अलग करना तो कठिन है परन्तु इनके विषय में अच्छी रीति अध्ययन के लिए, उनको समझकर जीवन में उनका लाभ लेने के लिए उनको निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया गया है। विश्व-नाटक के इन नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों पर ही हमारे जीवन रूपी भवन का आधार है। इनमें -

एक हैं कर्म और कर्मफल से सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

दूसरे हैं आध्यात्मिक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त तथा

तीसरे हैं विश्व-नाटक के आध्यात्म सम्बन्धी भौतिक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

1. कर्म से सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

यह विश्व कर्म-फल-कर्म के घटना-चक्र पर आधारित अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमे कर्म और फल का अनादि-अविनाशी विधि-विधान है और दोनों में अद्वितीय सन्तुलन है अर्थात् इसमें किसी भी आत्मा का कोई भी कर्म कब निष्फल नहीं होता है और कोई भी फल किसी भी आत्मा को बिना कर्म के नहीं मिल सकता है।

यह सृष्टि कर्मक्षेत्र है, इस कर्मक्षेत्र में जो जैसा कर्म रूपी बीज बोता है, उसका वैसा ही फल पाता है। कर्म आत्मा का स्वभाविक गुण है, इसलिए कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण है। हमारे कर्म सदा श्रेष्ठ हों, उसके लिए ही परमात्मा ने हमको कर्मों का ज्ञान दिया है। जीवन में श्रेष्ठ कर्म करने और सच्चा सुख पाने के लिए कर्म के विधि-विधान का ज्ञान अति आवश्यक है। परमात्मा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उससे हमको ये पता चला और अनुभव हुआ कि इस नाटक में आत्मा के पार्ट, कर्म और फल का अद्भुत सन्तुलन है, जिससे कोई भी आत्मा किसी को दोष नहीं दे सकती है, कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म बिना कर्म-फल के होता नहीं है अर्थात् हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है। इसलिए लौकिक गीता में भी लिखा है - हे अर्जुन तू कर्म कर, फल की चिन्ता मत कर। विश्व-नाटक के अनादि नियमानुसार हर आत्मा कर्म करने और कर्मानुसार कर्मफल भोगने के लिए बाध्य है अर्थात् हर आत्मा को कर्म करना ही पड़ता है और कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। सत्यता को देखें तो इस कर्मक्षेत्र पर आत्मा को कर्म के बिना मज़ा ही नहीं आता है, इसलिए वह हर क्षण मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई न कोई कर्म करती अवश्य है। इस कर्म, कर्म-फल और फिर कर्म के आधार पर ही ये विश्व नाटक अनादि काल से सफलतापूर्वक चलता आ रहा है और अनन्त काल तक सफलतापूर्वक चलता रहेगा।

विश्व-नाटक में कर्म का अटल विधि-विधान नूँधा हुआ है। कर्म और फल का ये विधि-विधान स्व-चालित है अर्थात् कोई कर्म का फल देता नहीं है, हर आत्मा को अपने कर्मानुसार स्वत: मिलता है। परमात्मा कर्म के विधि-विधान का ज्ञाता है और वह विधि-विधान हमको आकर बताता है, उस विधि-विधान को जानकर जो जैसा कर्म करता है, वह उसका फल पाता है। फल देने में परमात्मा का कोई सीधा हाथ नहीं है अर्थात् वह चाहे तो किसी को उसके कर्म का अच्छा या बुरा फल दे या न चाहे तो न दे, ऐसा नहीं है। हर आत्मा को फल स्वत: मिलता है। कर्म के विधि-विधान का ज्ञान देना परमात्मा का पार्ट है, जिसके अनुसार वह अपने निश्चित समय पर आकर इस विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज़ समझाता है। इस विश्व-नाटक और कर्म की गहन गति को हर प्रकार से समझना तो मनुष्य की शक्ति से परे है परन्तु परमात्मा ने हमको हमारे योग्य इसके नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार समझ में आया है कि यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है और कर्म का विधान पूर्ण न्यायपूर्ण है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है, वह इसकी सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता

को अनुभव करके, इसके परम सुख को अनुभव करता है।

कर्म के विधि-विधान के सम्बन्ध में जो यहाँ लिख रहे हैं, ये तो नाम-मात्र या अंश-मात्र ही है। कर्म का विधि-विधान तो अति गुह्य है, जो यथार्थ रूप में परमात्मा ही जानता है। समय-समय पर बाबा के द्वारा कर्म के सम्बन्ध में कुछ विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों के विषय में जो महावाक्य उच्चारे गये हैं, उनके आधार पर कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है।

"बाप कर्मों की गुह्य गति बैठ समझाते हैं।... मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ।... मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी आत्माओं को हूँ। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर।... आत्मा को कर्मों अनुसार ही रोगी-निरोगी शरीर आदि मिलता है।"

सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

* ये विश्व-नाटक एक कर्मक्षेत्र है, यहाँ कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म कर्म अर्थात् पार्ट के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म फलहीन नहीं होता। जो आत्मा जैसा कर्म करती, उस अनुरूप उसका फल अवश्य भोगती है। भक्त कवि तुलसीदास ने भी लिखा है - "तुलसी ये तन खेत है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान"। इस कर्मक्षेत्र पर आत्मायें कर्म करने और उनका फल भोगने के लिए ही अवतरित होती हैं। इसीलिए तुलसीदास ने कहा है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा।

* हर आत्मा के अपने कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण हैं, दूसरे व्यक्ति तो ड्रामा अनुसार केवल निमित्त कारण बनते हैं। इसीलिए लौकिक गीता में भी कहा है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

* कर्म एक दर्पण है, जिसमें कर्ता आत्मा की अन्तर्भावना प्रतिबिम्बित होती है और जो उसकी वंश परम्परा को भी प्रदर्शित करता है एवं भूतकाल और भविष्य के संस्कार-स्वभाव का भी साक्षात्कार कराता है। इसलिए हर आत्मा को कर्म के विधि-विधान और सिद्धान्त को समझकर कर्म करना चाहिए, जिससे उसका फल सुखमय हो।

* आत्मा अपने मूल स्वरूप में पवित्र है, इसलिए सामान्य स्थिति में कोई भी कर्म करने से पहले आत्मा उसके अच्छे-बुरे का निर्णय अवश्य देती है। उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि होती है। साधारण रूप से देखें तो जो कर्म दिल को खाता है वह विकर्म होता है और उसको करने से आत्मा को सदा बचना चाहिए। जो कर्म या व्यवहार हम अपने लिए अच्छा नहीं समझते हैं, वैसा कर्म या व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए।

* कर्म के विधि-विधान अनुसार पाप कर्म और गलत कर्म करने वाले की सुरक्षा करना या

उसको उसके दण्ड से बचाने का प्रयत्न करने वाला भी उस पाप कर्म में भागी होता है। इसी तरह से श्रेष्ठ कर्म करने और श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देने वाले को भी उस श्रेष्ठ कर्म के फल में हिस्सा मिलता है।

* पाप कर्म करने वाले को साधन-सम्पत्ति या राय-सलाह के द्वारा पाप कर्म करने में सहयोग करने वाले पर भी पाप-कर्म का बोझ चढ़ता है, वह भी उसमें भागीदार बनता है। इसलिए ही बाबा ने हमको श्रीमत दी है कि दान भी पात्र को देखकर देना चाहिए।

* हर चैतन्य प्राणी में अपने मन-बुद्धि-संस्कार है और वह अपनी श्रेणी अनुसार कर्म करता है और उसके कर्म अनुसार ही उसको फल मिलता है और उसके आधार पर उसका जन्म-पुनर्जन्म होता है। सभी चेतन्य प्राणी अपने कर्मानुसार अपनी योनि में ही सुखी-दुखी होते हैं अर्थात् किसी भी योनि की आत्मा अकारण न दुख पा सकती और न सुख पा सकती।

* मन्सा-वाचा-कर्मणा आत्मा जो भी कर्म करती, जिससे व्यक्ति सीधा प्रभावित होते हैं, वातावरण प्रभावित होता है, जिससे वर्तमान में या भविष्य में आत्मायें प्रभावित होती अर्थात् सुख-दुख पाते, उसका फल कर्ता आत्मा को सुख या दुख के रूप में अवश्य मिलता है। भल फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से कर्ता की भावना प्रधान होती है। पेड़ लगाने, अस्पताल, धर्मशाला आदि बनाने से अच्छा फल और फेक्टरी आदि लगाने से उससे निकलने वाले दूषित धुयें, बारूद के धुयें, गैस आदि से वातावरण को दूषित करने से भी कर्ता को उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है और सामूहिक रूप में उसका लाभ उठाने वालों को सामूहिक रूप में उसका फल दुख के रूप में भोगना पड़ता है।

आत्मायें जो सामूहिक रूप से भोगना भोग रही हैं, कर्म के विधि-विधान के अनुसार हम उनके सम्बन्ध में विचार करें तो देखेंगे उसके भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण अवश्य हैं क्योंकि सृष्टि के नियमानुसार बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता है और बिना कर्म के किसी आत्मा को कोई दुख नहीं मिल सकता है। ऐसे ही सामूहिक रूप से हम जो अच्छे कर्म करते हैं, जिससे वातावरण शुद्ध होता है, उसका फल भी सामूहिक रूप में सुख के रूप में मिलता है। जैसे अभी हम सामूहिक रूप से योग करते हैं, जिससे वातावरण शुद्ध होता है, उसका फल सतयुग में सतोप्रधान सुखदायी प्रकृति के रूप में मिलता है। भक्ति मार्ग में यज्ञ आदि का विधि-विधान भी इसी सत्य का प्रतीक है।

* देश, समाज, संगठन के द्वारा कोई अनुचित या अन्यायपूर्ण किये गये कर्मों में उस देश या संगठन के लोगों के द्वारा खुशी प्रगट करना, सहमति देना भी सामूहिक विकर्म हो जाता है और

उसका सामूहिक फल सबको दुख के रूप में अवश्य ही भोगना पड़ता है।

* इस जगत में कर्म का अटल सिद्धान्त लागू है, जो स्वत: प्रभावित है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल स्वत: मिलता है। परमात्मा कर्म की गुह्य गति का पूर्ण ज्ञाता है। परमात्मा ही आकर कर्म की गुह्य गति का ज्ञान आत्माओं को देता है और श्रेष्ठ कर्मों का रास्ता बताता है, जिस पर चलकर आत्मा सुख-शान्ति पाती है। परमात्मा का फल को देने में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। फल तो विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार स्वत: मिलता ही है। न ही परमात्मा के पास किसी के कर्मों केहिसाब-किताब का कोई लेखा-जोखा है परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ है, इसलिए वह जिसके विषय में जब भी जानना चाहे, वह सब प्रत्यक्ष की भान्ति जान सकता, देख सकता है।

* किसी के द्वारा किये गये पाप कर्म को अच्छा समझकर स्वीकार करने वाले या ऐसे कर्म के कर्ता की महिमा करने वाले पर भी उस पाप कर्म का प्रभाव पड़ता है और उसको भी उसका फल मिलता है।

* दुखी, अशान्त होना भी एक विकर्म है क्योंकि इससे देहाभिमान और दुख के वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, जो उस अनुरूप वातावरण का निर्माण करते हैं, जो अन्य आत्माओं को भी उस अनुरूप प्रभावित करता है अर्थात् दुख-अशान्ति की अनुभूति कराता हैं अर्थात् दुखी-अशान्त बनाता है। इसलिए उसके फलस्वरूप उस आत्मा की दुख-अशान्ति और बढ़ती जाती है। इसलिए बाबा हमको सदा श्रीमत देते हैं - बच्चे, सदा खुश रहो तो तुमको देखकर और भी खुश होंगे, उनकी दुआयें भी तुमको मिलेंगी।

"श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।" अ.बापदादा 5.7.74

* ये सृष्टि-चक्र भूत-वर्तमान-भविष्य के घटनाचक्र पर आधारित सतत गतिशील है। हर आत्मा का वर्तमान, भूतकाल के कर्मों का फल और भविष्य का बीज या आधार-शिला है। वर्तमान ही हमारे हाथों में है। इसीलिए गायन है - बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश... अर्थात् वर्तमान ही हमारे हाथों में है, जब हम श्रेष्ठ कर्म करके अपने सुखमय भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से न भूतकाल के कर्मों के फल से बच सकते हैं और न भविष्य के लिए कुछ अच्छा जमा कर सकते हैं। उसके चिनतन और चिन्ता से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, जो आत्मा को कमजोर बना देता है और कमजोर आत्मा विकर्मों में सहज प्रवृत्त हो जाती है।

* आत्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म अकर्म (सूक्ष्म ह्रास) होते, देहाभिमानी स्थिति में किये गये कर्म विकर्म (आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास) और आत्माभिमानी-परमात्माभिमानी स्थिति में रहकर किये गये कर्म ही सुकर्म (आत्मिक शक्ति का विकास) होते हैं, ये सुकर्म ही आत्मा की चढ़ती कला एकमात्र आधार हैं। ये ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा पुरुषोत्तम संगमयुग में ही देते हैं, तब ही आत्मा की और तत्वों सहित समस्त विश्व की चढ़ती कला होती है।

* जो जैसा कर्म करता है, वह उसका वैसा फल अवश्य ही पाता है। भगवानोवाच्य - दुख देंगे तो दुख पायेंगे, सुख देंगे तो सुख पायेंगे।

* हर कर्म कर्ता के संकल्प और भावना से प्रेरित होता है और उसके आधार पर ही उस कर्म का फल निर्धारित होता है। भक्ति में एक का एक गुणा, ज्ञान में एक का सौगुणा अर्थात् ज्ञान से कर्म का फल कई गुणा बढ़ जाता है। कर्म का ये सिद्धान्त सुकर्म और विकर्म दोनों में लागू होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - धर्मराज की ट्रिबुनल ब्राह्मणों के लिए ही बैठती है क्योंकि परमात्मा ने उनको ये ज्ञान दिया फिर भी उन्होंने विकर्म किये।

"गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।"

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

"इस समय ऐसे नहीं कि तुमको धन से साहूकार बनना है। नहीं, बाबा ने समझाया है गरीब की एक पाई, साहूकार का एक रुपया समान है। दोनों को वर्सा समान ही मिलता है। ... तुम माँ-बाप को पूरा फॉलो करो। जैसे मम्मा-बाबा पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाते हैं, वैसे तुमको भी पाना है।"

सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

* बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए बिना जाने मन्सा-वाचा किसी के सम्बन्ध में कोई गलत निर्णय करने से भी आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए ड्रामा की अटल भावी और 9जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है" के अटल सत्य सिद्धान्त को जानकर साक्षी होकर हर आत्मा के कर्म को देखो और सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखकर अपना पुण्य का खाता जमा करो। दूसरे के कर्मों का चिन्तन कर, उसके कर्मों के विषय में निर्णय कर अपना समय और शक्ति व्यर्थ न गँवाओ, अपना पाप का खाता न बढ़ाओ।

* किन्ही व्यक्तियों के मध्य निर्णय में निमित्त आत्मा अंशमात्र भी स्वार्थपरता के वशीभूत

निर्णय करता है, जिससे वे दोनो पक्ष प्रभावित होते हैं, उसका हिसाब किताब उसके साथ बनता है और उसका फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है अर्थात् उनके साथ हिसाब-किताब चुकाना पड़ता है - ये कर्म और फल का अटल सिद्धान्त है।

* समर्थ होकर पाप कर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप कर्म है। पाप कर्म या पापी की सराहना करना भी पाप कर्म है। असमर्थ होते भी समय पर या यथा स्थान सत्य को प्रगट न करना भी पाप कर्म है। भक्ति मार्ग में भी इस विषय पर महाभारत में द्रोपदी के चीर हरण के समय का वृतान्त, भीष्म पितामह के सर-शैया के विषय के वृतान्त इस विधि-विधान की सत्यता को स्पष्ट करते हैं, जिससे ये स्पष्ट होता कि दुनिया में भी मनुष्यों की ऐसी भावना और मान्यता है।

* बिना सोचे-विचारे कोई कर्म कर लेना, जिससे किसी आत्मा को दुख हो तो वह भी पाप है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है। भक्ति मार्ग में रामायण के मुख्य पात्र राजा दशरथ और श्रवण कुमार का वृतान्त इसका उदाहरण है, जिससे अनुभव होता कि दुनिया वालों में भी इस तरह की मान्यतायें हैं।

* पाप कर्म से अर्जित धन-सम्पत्ति या साधन का उपभोग भी पाप कर्म है, उससे भी आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है और पुण्य का खाता क्षीण होता है।

* यदि हम कोई अच्छा या बुरा कर्म करते हैं और उसे देखकर या सुनकर दूसरे भी करते हैं तो उनके द्वारा किये गये कर्म के फल में भी हम भागीदार बनते हैं।

* कल्प का संगमयुग ही सुकर्म करने का युग है, जो सारे कल्प के भाग्य का आधार है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म हैं और आत्मा की चढ़ती कला का एकमात्र आधार हैं।

* इस विश्व-नाटक में कर्म के अनादि-अविनाशी, अटल सिद्धान्त के अनुसार हर आत्मा को अपने अच्छे-बुरे कर्म का फल अवश्य मिलता है, इसलिए कभी यह नहीं सोचना है कि जो आज पाप-कर्म कर रहे हैं, वे सुखी हैं और जो अच्छे कर्म कर रहे हैं, वे दुखी है। ये अभिधारणा अल्पज्ञ मनुष्यों की है, परमात्मा ने हमको कर्म और विश्व-नाटक के सारे विधि-विधानों का ज्ञान दिया है, इसलिए हमारी ऐसी अभिधारणा नहीं हो सकती और न होनी चाहिए।

* हम दूसरे के लिए अशुभ या बुरा सोचते हैं, हीन भावना रखते तो ये भी पाप-कर्म है और उसका असर हमारे ऊपर भी अवश्य होगा अर्थात् उसके फलस्वरूप दूसरे भी हमारे प्रति बुरा सोचेंगे, जिससे हमको दुख-अशान्ति की अनुभूति करनी होगी। इस सम्बन्ध में बाबा ने कहा है - गुम्बज में जो आवाज़ करते हैं, वही प्रतिध्वनित होकर हमारे पास आती है।

"बाप को फॉलो करो। जब विशेष आत्मा समझकर किसको भी देखेंगे, सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे तो बाप को सामने रखने से आत्मा में स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज हो जाता है ... आत्मिक स्नेह से सदा सभी द्वारा सद्भावना, सहयोग की भावना स्वत: ही आपके प्रति दुआओं के रूप में प्राप्त होगी।" अ.बापदादा 7.3.90

"जैसे आपके दिल में उनके प्रति श्रेष्ठ भावना होती है, वैसे ही आपकी शुभ भावना का रिटर्न दूसरे द्वारा भी प्राप्त होता है। जैसे बाप के प्रति अटूट, अखण्ड, अटल प्यार है, श्रेष्ठ भावना है, निश्चय है, ऐसे ब्राह्मण आत्मायें नम्बरवार होते हुए भी उनके प्रति आत्मिक प्यार अटूट-अखण्ड है?" अ.बापदादा 7.3.90

* विश्व-नाटक में किसी आत्मा को उतना ही उपभोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि होती है, कार्यक्षमता की रक्षा होती है या उसके लिए अति आवश्यक है, उससे अधिक उपभोग पाप के खाते में या व्यर्थ के खाते में ही जमा होता है या वह उसके संचित खाते को कम करता है, जिसका पश्चाताप रोग-शोक के रूप में मनुष्य को करना ही पड़ता है। दूसरे के हिस्से के संसाधनों का उपयोग-उपभोग भी कर्मों का हिसाब-किताब बनाता है और कर्म-बन्धन का कारण बनता है। बुद्धिमान ज्ञानी पुरुष इस सत्य को जानकर जीवन में इसका अवश्य ध्यान रखते हुए ही हर कर्म करते हैं अर्थात् आवश्यकतानुसार ही साधनों का उपभोग और उपयोग करते हैं।

* यह अटल सत्य है कि कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता है परन्तु कारण का चिन्तन न कर एकाग्रता से कार्य में बुद्धि लगाने वाले के कार्य अवश्य ही सफल होते हैं।

* कर्मातीत बनने के बाद कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है। कर्मातीत आत्माओं का निवास स्थान परमधाम है।

* परमात्मा पिता से प्रतिज्ञा करके तोड़ना भी परमात्मा और ज्ञान का अपमान करना है, ये भी विकर्म है, जिसका दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* तन-मन-धन परमात्मा बाप को समर्पित करके वापस लेना या लेने का संकल्प करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है। इसके विषय में भक्ति मार्ग के शास्त्रों में अनेक वृतान्त हैं, जिनमें यह स्पष्ट किया गया है कि दान देकर वापस लेना पाप है और आत्मा को उसका दण्ड भोगना पड़ता है।

* सर्वशक्तिवान, दाता-विधाता, सर्वज्ञ परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ यथाशक्ति सम्पन्न मनुष्यात्माओं से किसी प्रकार की अपेक्षा रखना, मांगना भी परमात्मा की निन्दा कराना है, उसका दण्ड भी

आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है क्योंकि ये भी परमात्मा और ज्ञान की निन्दा कराना है। सेवा के लिए प्रेरणा देना अलग बात है परन्तु उसमें भी स्वार्थ भावना रखी तो उसका दण्ड भोगना ही पड़ेगा।

"बेहद के बाप का बनकर फिर पाप किया तो एक का सौगुणा दण्ड हो जायेगा। शिवबाबा कहते हैं - मैं धर्मराज से बहुत कड़ी सजायें दिलवाता हूँ। ... इसमें बड़े कायदे हैं। जज का बच्चा पाप करे तो जज कुछ कर थोड़ेही सकेंगा। उसकी सजा भोगनी ही पड़े।"

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

* दूसरों को शिक्षा देना और स्वयं न करना भी एक प्रकार का पाप-कर्म ही है, यह भी दूसरों को धोखा देना है, इसलिए उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है क्योंकि इससे स्वत: सिद्ध होता है कि वह उस कर्म की गति और उसके शुभाशुभ परिणाम को जानता है परन्तु करता नहीं है। इस प्रकार वह अपने को स्वयं ही धोखा देता है और दूसरों को भी धोखा देता है। फिर भी किसके कल्याण की भावना से जो शिक्षा देता है, उसका कुछ अच्छा फल भी उसको मिलता है।

"बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ, तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।"

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

* जानकर या अलबेलेपन से यज्ञ की साधन-सम्पत्ति का नुकसान करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है क्योंकि यज्ञ में जो देते हैं, उनको उसका फल तो परमात्मा को देना ही पड़ता है तो वह कौन और कहाँ से दिया जायेगा, जब वह सम्पत्ति नुकसान हो गयी और देने वाले ने जिस भावना से दिया, उस अनुसार उसका उपयोग भी नहीं हुआ। तो ये सब फल नुकसान करने वाले के खाते में ही जाता है।

* यज्ञ के Behalf पर किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना भी यज्ञ की चोरी है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* बाबा के महावाक्यों के अनुसार हम जो पुरुषार्थ कर सकते हैं और वह नहीं करते तो यह भी एक प्रकार से अलबेलेपन से किया गया विकर्म है और विकर्म के खाते में जमा होता है और उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है।

* निश्चय हो कि हम अपने कर्म के लिए स्वयं ही उत्तरदायी हैं। हमारा ही कर्म हमारे लिए सुख

और दुख का मूल कारण है और सभी तो निमित्त मात्र हैं तब कर्मों पर ध्यान रहेगा और उनमें अवश्य ही सुधार होगा। दुनिया में प्रचलित गीता में भी इस विषय में स्पष्ट लिखा है - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। इसलिए अपने कर्म के लिए दूसरे को दोषी ठहराना विकर्म है और उससे हमारा जमा का खाता कम होता है और दूसरी आत्माओं के साथ कर्म-बन्धन का खाता जुटता है।

* ये पुरुषोत्तम संगम युग ही सुकर्म करने का युग है, जिससे चढ़ती कला होती है। और तो सभी युगों में देहाभिमान वश विकर्म ही होते हैं, जिससे उतरती कला होती है। भले सतयुग-त्रेता में विकर्म नहीं कहा जाता है क्योंकि देहाभिमान, आत्माभिमान से दबा रहता है परन्तु वहाँ के कर्मों को भी सुकर्म नहीं कहा जा सकता है क्योंकि वहाँ भी आत्मा की उतरती कला ही होती है। सुकर्म और विकर्म की भेंट में बाबा ने वहाँ के कर्मों को अकर्म कहा है। वास्तव में कोई भी कर्म अकर्म नहीं होता क्योंकि ड्रामा के नियमानुसार हर कर्म का फल अवश्य होता है।

* विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार सर्व जीवात्मायें पृथ्वी-पुत्र हैं और प्रकृति उनकी पालना करती है। कोई भी मनुष्य किसी निरीह प्राणी को दुख देता है, उनको मारता है, उनको मारकर खाता है तो उनको प्रकृति से उस कर्म के फलस्वरूप दुख अवश्य भोगना पड़ता है। जैसे राजा समर्थ होता है, प्रजा की रक्षा करना राजा का धर्म है, ऐसे ही प्रकृति उन प्राणियों को पालती है। जो ऐसे निरीह प्राणियों को दुख देते हैं, उसके बदले उनको अर्थात् मारने वालों को प्रकृति दण्ड अवश्य देती है।

* ड्रमा अनुसार कोई भी कर्म फल के बिना नहीं होता अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है और कोई भी फल कर्म के बिना नहीं मिलता अर्थात् किसी भी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल मिल रहा है, वह उसके पूर्व कर्मों का परिणाम है। इसलिए किसी की प्राप्तियों से न ईर्ष्या हो, न घृणा हो और न आलोचना हो। ये भी एक प्रकार से विकर्म हो जाता है। इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ फल की आधार शिला है। ईर्ष्या-द्वेष से, फल की इच्छा करने से फल नहीं मिलेगा, कर्म करने से ही फल मिलेगा। इसलिए बुद्धिमान, ज्ञानवान आत्मायें सदा अपने को देखते हैं और अपने कर्मों पर ध्यान रखते हैं।

* ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध और कर्म का विधि-विधान इस विश्व-नाटक रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। हर कर्म से आत्मा के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब पूरे भी होते हैं तो नये बनते भी हैं। कल्पान्त में जन्म-जन्मान्तर के हिसाब-किताब चुक्ता करके आत्मायें घर जाती हैं। इसलिए अभी सभी आत्माओं को अपने सर्व विकर्मों के

हिसाब-किताब पूरे करने हैं और श्रेष्ठ कर्म करके सतयुग के लिए सुखदायी हिसाब-किताब बनाने हैं। कर्म के विधि-विधान को जानने वाली ज्ञानी आत्मा को कब किसके पार्ट, हिसाब-किताब, सुख-दुख को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए और किसी घटना को देखकर अपने संकल्प को व्यर्थ नहीं चलाना चाहिए। किसके कर्म को देखकर किसके प्रति घृणा-राग-द्वेष की भावना भी नहीं होना चाहिए क्योंकि भावना से भी आत्मा का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बन जाता है।

* अबोध व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म की अपेक्षा जानकार व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म का फल कई गुणा अधिक होता है। ज्ञानी आत्मा को साधारण मनुष्य की अपेक्षा अच्छे कर्म का सौगुणा फल भी मिलता है तो विकर्म का सौगुणा दण्ड भी मिलता है।

* ईर्ष्या-द्वेष एक मानसिक विकर्म है, जिसका फल आत्मा को मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है। यदि कोई ईर्ष्या-द्वेष की भावना से यज्ञ का हित समझकर भी किसी आत्मा के साथ व्यवहार करता है तो भी उसको अपनी ईर्ष्या-द्वेष का फल मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है, भले उसने यज्ञ के हित के लिए जो कार्य किया, उसका अच्छा फल भी उसको मिलेगा।

इस विश्व-नाटक और कर्म की गहन गति को समझना मनुष्य की शक्ति से परे है परन्तु ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है और कर्म का विधान अटल और न्यायपूर्ण है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है, उसका मन-बुद्धि श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त रहती, इसलिए वह इसके परम सुख को अनुभव करता है।

ये तो नाम-मात्र या अंश-मात्र ही कर्म के विधि-विधान की बातें हैं, जो परमात्मा ने बताई हैं, उसके आधार पर लिखी गई हैं। कर्म का विधि-विधान तो अति गुह्य है, जो पूर्ण रूप से परमात्मा ही जानता है।

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।"

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी

अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।" अ.बापदादा 20.1.86

"निमित्त बनने वाले का एक सेकेण्ड में एक का पद्मगुणा बनना भी है, प्राप्ति का चान्स है और अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिसको देख और सभी विचलित हों, तो उसका पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है।" अ.बापदादा 16.1.77

"यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा। ... किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा। ... किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"पाप और पुण्य की गहन गति को जानो। ... संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार का संकल्प पाप के खाते में जमा होता है।" अ.बापदादा 3.12.78

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

"बाप रास्ता बताते हैं। अपने ऊपर आपही कृपा, रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं, आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि माँगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं माँगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना, यह भी पाप है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आप ही करेंगे। कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पायेगा।... जिसको करना होगा, वह आप ही करेगा। तुमको माँगना नहीं है। कल्प पहले जितना जिन्होंने किया है, ड्रामा उनसे करायेगा। मांगने की क्या दरकार है। कई बुद्धू बच्चियाँ हैं, जो मांगती हैं। बाबा तो हुण्डी भरते रहते हैं सर्विस के लिए।" सा.बाबा 29.10.69 रिवा.

"बाप को याद करने से थक जाते हैं तो विकर्म विनाश भी नहीं होंगे। विकर्म रह जायेंगे तो फिर सजा खानी पड़ेगी, पद भी कम हो जायेगा। दिन प्रतिदिन इनका भी बहुतों को साक्षात्कार होता रहेगा। बाप को किसी भी बात का ख्याल नहीं रहता है। जानते हैं यह तो ड्रामा है।"

सा.बाबा 26.11.69 रिवा.

"जब कुछ ऐसी बात हो जाती है तो मनुष्य पिछाड़ी में कह देते हैं जो ईश्वर की इच्छा। अब तुम थोड़ेही ऐसे कहेंगे। तुम कहेंगे - भावी ड्रामा की। तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी

ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है - यह बाप ही समझा सकते हैं। नॉलेजफुल भी बाप है। मनुष्य समझते हैं कि वह सभी के दिलों को जानते होंगे। परन्तु हम जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर हमको ही मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता ही रहता है।"

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"कोई पाई-पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई की चोरी भी लाखों की हो जाती है। सभी कायदे बाप समझा देते हैं। ईश्वर का राइट हेण्ड है धर्मराज। यह हिसाब-किताब ऑटोमेटिकली चलता रहता है। जो जैसा कर्म करते हैं, वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।"

अ.बापदादा 3.5.77

""हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा" - इस राज़ को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। अगर यह विधि और विधान नहीं होता तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। ... नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है।... निमित्त मात्र यह विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है।"

अ.बापदादा 22.11.87

"अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी।... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। ... कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा।... तो कर्मों की गति क्या हुई ? बुराई लौटकर कहाँ आई ?"

अ.बापदादा 21.11.92

"किसी कर्म का फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है।... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।"

अ.बापदादा 11.7.71

"देवताओं को वहाँ पता थोड़ेही रहता है कि हमने यह राज्य कैसे पाया ? ... ये बड़ी समझने

की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे - हे ईश्वर बुद्धि दो। हम सबको एक जैसी बुद्धि दें तो सब नारायण बन जायें।"

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

"दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइन्स के साधनों से भी रिफाइन साधन हैं, जो स्वत: ही कार्य करते रहते हैं। ... अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वे परिवर्तन में नहीं आते हैं।... बापदादा याद और सेवा दोनों का ही रिकार्ड देखते हैं।"

अ.बापदादा 20.2.88

"बाप आकर समझाते हैं कि यह ड्रामा बना-बनाया है परन्तुकिस नियम से बना हुआ है, वह समझने की बात है। ... हमको अपना आधार अपने कर्म के ऊपर रखना है। ... इसमें बाप को भी आकर कर्म करना पड़ता है। बाप भी कहते हैं - मैं भी इसमें बांधा हुआ हूँ, मुझे भी नई दुनिया रचने के लिए काम करना पड़ता है।... इसी तरह हम भी अपने कर्म करने में बंधे हुए हैं। इसलिए किसी बात में मूंझने के बजाये, अपने कर्मों को स्वच्छ बनाना है।"

मातेश्वरी 23.4.65

"बाकी यह तो जानते हैं कि यह ड्रामा है, यह खेल है, आदि से अन्त तक कैसे चलता है, उसकी जो नॉलेज है, उसको समझना है। ... गीता में भी है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है, आपही अपना शत्रु है। इसलिए हमको पुरुषार्थ तो करना ही है। पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध। जो करेंगे सो पायेंगे।"

मातेश्वरी 23.4.65

"भल कहेंगे ड्रामा अनुसार ही हम गिरे और ड्रामा अनुसार ही हम चढ़ेगे परन्तु ड्रामा में भी कोई नियम है, तो उन नियमों को भी समझना है। ... जब हमने अपने कर्म उल्टे बनाये तभी हम गिरे, अब हम ऊंचा उठेंगे भी कर्म से। ... अगर नहीं करेंगे तो समझा जायेगा कि इनका ड्रामा में पार्ट नहीं है।"

मातेश्वरी 23.4.65

"समझो हम पूरा अटेन्शन से मोटर चलाते हैं, परन्तु उसके आगे अचानक कोई बच्चा आ गया और वह कट गया तो इसको क्या कहेंगे ? जरूर उसका कोई अगले जन्म का हिसाब रहा हुआ होगा। ... हमने कभी किसको दुख दिया है तो फिर हमको दूसरे जन्म में उससे लेना है। यह है कर्मों के लेन-देन का हिसाब।"

मातेश्वरी 23.4.65

"एक होता है जानबूझ कर किसका खून करना, एक होता है अन्जाने में हो जाना।... अचानक हमारी मोटर से कोई बच्चा मर गया, इसको क्या कहेंगे ? ड्रामा में पिछले कर्मों का कोई हिसाब-किताब था। अब उसके लिए जितना हम अच्छा कर सकते हैं या जितना हमारे से

बन सके, सो हम उसकी मदद करें।" मातेश्वरी 23.4.65

"अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है। ... अगर अपने घाटे और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना। ... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।"

सा.बाबा 3.8.68

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।" सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है अर्थात् हर आत्मा को अपने ही कर्म का फल सुख या दुख के रूप में मिलता है। श्रेष्ठ कर्म से मित्र बनती है और पाप कर्म से शत्रु बनती है। सुख और दुख दोनों में ही दूसरे तो केवल निमित्त मात्र होते हैं, मूल कारण तो अपने ही पूर्व कर्म होते हैं।

* अज्ञानवश किये गये कर्म के फल और जानकर किये गये कर्म के फल में महान अन्तर होता है।

"अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।"

सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

"बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।"

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

इस सम्बन्ध में कर्म के विधि-विधान के ज्ञाता परमात्मा के महावाक्य हैं - ट्रिबुनल ब्राह्मण बच्चों के लिए बैठेगी, अज्ञानी आत्माओं के लिए नहीं।

"अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है।"

अ.बापदादा

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।" सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है। ...ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान

होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमागुणा ज्यादा है। ... इसलिए इसमें भी अन्जान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गल्तियां हैं, यह तो होंगी ही।" अ.बापदादा 20.5.72

कर्म पर निश्चय माना - हमको जो सुख या दुख मिल रहा है, वह हमारे ही पूर्व कर्मों का परिणाम है, दूसरा कोई व्यक्ति कारण नहीं है और भविष्य में जो मिलेगा वह भी हमारे ही संचित या वर्तमान में किये गये कर्मों का परिणाम होगा, इसलिए किसी व्यक्ति को दोष देने के बजाये अपने कर्म का सुधार करना ही हमारे लिए कृत्य है और हितकर है।

* अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा में कृत्य का संकल्प स्वत: उत्पन्न होता है, उसकी शुभ कर्म में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होती है इसलिए कोई चिन्ता न करके वर्तमान में अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परमात्म-स्मृति में रहना ही आत्मा का परम कर्तव्य है।

* संकल्प भी एक कर्म है और उससे भी आत्मा प्रभावित होती है, उसका भी फल आत्मा को भोगना होता है। संकल्पों का प्रभाव एक दिशाई भी होता है और चहुँ दिशाई भी होता है, जिसको बाबा ने सर्च लाइट और लाइट हाउस से तुलना की है।

* जो जिसका चिन्तन करता है, वह वैसा बन जाता है। निराकार बाप को याद करने से निराकारी और अव्यक्त फरिश्ता रूप को याद करने से अव्यक्त फरिश्ता बन जाते हैं।

* कर्मातीत बनने के बाद कोई आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है।

* लक्ष्य, भावना और कर्म के आधार पर जीवन की दिशा निश्चित होती है और उस अनुसार ही आत्मा को सुख-दुख का अनुभव होता है।

* आत्म-स्थिति में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद सहज रहती है और उसको कर्म में थकावट नहीं होती है क्योंकि उसके संकल्प सीमित और समर्थ रहते हैं। देहाभिमानी आत्मा के संकल्प व्यर्थ और अधिक होते, जिससे आत्मिक शक्ति अधिक क्षीण होती है, जिससे थकावट अधिक होती है।

* कृत्य-अकृत्य, पुण्य-पाप के निर्णय की आवाज़ अन्तर-आत्मा स्वयं ही करती है, उस आवाज को सुनकर आत्मिक शक्ति सम्पन्न आत्मा कर्म श्रेष्ठ करती हैं और जिसमें आत्मिक शक्ति की कमी होती है, वह अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनते हुए भी उसको करने में समर्थ नहीं होती है, जिससे उसके कर्म खराब होते हैं। आत्मा की ये आवाज़ और उस आवाज़ के आधार पर किये गये कर्मों का प्रभाव स्थूल प्रकृति तथा अन्य आत्माओं पर भी होता है और

उसके आधार पर उस आत्मा को प्रकृति द्वारा फल प्राप्त होता है।

मनुष्य के द्वारा किये गये अच्छे-बुरे कर्म से किसी भी योनि की आत्मा को जो सुख या दुख मिलता है, उसके परिणाम स्वरूप उन आत्माओं में जो संकल्प उत्पन्न होते हैं, वे उस आत्मा के ऊपर दुआ या श्राप का काम करते हैं अर्थात् उन प्राणियों की वे भावनायें उस मनुष्य को अवश्य प्रभावित करती हैं।

हमारे श्रेष्ठ कर्मों को देखकर दूसरों की हमारे प्रति जो शुभाशुभ भावनायें उठती हैं, वे भावनायें हमारे लिए दुआ या श्राप बन जाती हैं अर्थात् वे हमारे सुख-दुख का आधार बनती हैं।

* कोई भी आत्मा, जिसने विकर्म नहीं किया है, उसको दुख-अशान्ति हो नहीं सकती और विकर्म का फल दुख-अशान्ति के रूप में हर आत्मा को भोगना ही पड़ेगा।

* जब मनुष्य की भावना कल्याण की होती है तो उसके द्वारा किये गये कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होते हैं।

"बिरला के पास कितनी ढेर मिल्कियत है। मन्दिर बनाते हैं, उससे कुछ भी नहीं मिलता है। गरीबों को थोड़ेही कुछ देते हैं। मन्दिर बनाया, जहाँ मनुष्य आकर माथा टेकेंगे। हाँ, गरीब को दान में देते हैं तो उसका रिटर्न में मिल सकता है। धर्मशाला बनाते हैं तो बहुत मनुष्य जाकर वहाँ विश्राम पाते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए सुख मिल जाता है।... संगमयुग पर बाप सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।"

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

"अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही कर्म-अकर्म-विकर्म की नॉलेज सुनाते हैं। आत्मा ही शरीर लेकर कर्म करने यहाँ आती है।... सतयुग में विकर्म होता ही नहीं, इसलिए वहाँ दुख होता ही नहीं।"

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

"अगर कोई अकर्तव्य कार्य देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है। ... अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी अगर टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।" अ.बापदादा 22.6.71

"कोई ने हॉस्पिटल बनाई तो दूसरे जन्म में रोग कम होगा। ऐसे नहीं कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी, धन भी जास्ती मिलेगा। उसके लिए तो सब कुछ करो। कोई धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में महल मिलेगा, ऐसे नही कि तन्दुरुस्त भी रहेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं।"

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

"मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन-वाणी-कर्म में प्योरिटी हो। ... संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो। ... अगर कोई अकर्तव्य कार्य होते देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है।"

अ.बापदादा 22.6.71

"इसलिए कर्मों की गति को जानने वाले बनो। नॉलेजफुल बन तीव्रगति से आगे बढ़ो। ... अगर पुराने संस्कार रह गये तो इस बहुत काल की गिनती धर्मराजपुरी के खाते में जमा हो जायेगी। ... अभी कर्मों की गति को अच्छी तरह से समझ समय का लाभ लो।"

अ.बापदादा 20.1.86

"यह तो बच्चे जानते हैं - जो अच्छा कर्म करता है, उनको फिर शरीर भी अच्छा मिलता है। ऐसा नहीं कि अच्छा कर्म किया तो ऊपर चले जायेंगे। नहीं, ऊपर तो कोई जा नहीं सकते। जन्म अच्छा मिलेगा फिर भी नीचे तो उतरना ही है। तुम जानते हो - हम चढ़ते कैसे हैं।"

सा.बाबा 28.8.04 रिवा.

"यह छोटे-छोटे सुक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्नरूप बनते हैं ... ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते। ... अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल की रुहानी मौज में रहो। ... कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।"

अ.बापदादा 21.11.92

"अभी कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान मर्ज हो गया है, इसलिए अलबेलापन है। ... आप लोगों की अपनी स्थिति तो न्यारी और प्यारी है लेकिन दूसरों की बातों में समय तो देना पड़ता है।... यही समय लाइट-हाउस माइट-हाउस बन वायब्रेशन्स फैलाने में जाये तो क्या हो जायेगा?"

अ.बापदादा 21.11.92 दादियों से

"कर्मों की गहन गति क्या हुई? ... कई कहते हैं - हमने किसको कहा नहीं लेकिन वे कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया। ... हाँ में हाँ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।"

अ.बापदादा 21.11.92

सृष्टि-चक्र में आत्मा के उत्थान और पतन का कार्य क्रिया और प्रतिक्रिया के सिद्धान्त के आधार पर आदि से अन्त तक चलता है। उत्थान भी क्रिया और प्रतिक्रिया के आधार पर ही संगमयुग पर होता है और पतन भी सतयुग के प्रथम जन्म से ही इस सिद्धान्त के आधार पर ही होता है। सम्बन्धों में मधुरता और कटुता भी इस सिद्धान्त के आधार पर होती है। विश्व की अनेक घटनाओं को देखें और उन पर विचार करें तो समझ में आता है कि ये सम्बन्धों की कटुता या मधुरता एकाएक नहीं हो सकती है।

क्रिया-प्रतिक्रिया के इस सिद्धान्त में मन्सा-वाचा-कर्मणा सभी प्रकार से कर्मों का प्रभाव होता है। स्वांस लेना, खाना-पीना, व्यवहारिक कर्म आदि सभी प्रकार के कर्म इसमें अपनी भूमिका निभाते हैं, जिसके आधार पर ही सतयुग की 16 कला सम्पूर्ण स्थिति कलियुग के अन्त में कलाहीन हो जाती है। क्रिया-प्रतिक्रिया का यह सिद्धान्त हर आत्मा पर प्रभावित होता है।

* दुनिया में भी अनेक समय अबोध बच्चों से भी ऐसे कुकृत्य-पापकर्म होते हैं, जिनका दण्ड तो बड़ा होता है परन्तु अबोध समझ सोचते हैं कि इनको दण्ड नहीं मिलना चाहिए परन्तु उनकी इस अबोध जीवन और कर्मों का सम्बन्ध उनके पूर्व युवा-वृद्ध जीवन से है, इसलिए परमपिता परमात्मा और प्रकृति या कहें कि धर्मराज से वे भी अपने कुकृत्य के परिणाम से बच नहीं सकते। उनको उसकी भोगना अवश्य भोगनी होगी।

* हर एक योनि की आत्मा कर्म करती है और उसके कर्मों का सम्बन्ध उसी योनि की आत्माओं से या उसके समकक्ष योनियों की आत्माओं या प्रजातियों से होता है और उसके आधार पर ही उनके कर्मों के फल का निर्णय होता है।

* किसी भी कर्म से किसी आत्मा को कोई दुख होता है तो कर्ता का उस आत्मा के साथ हिसाब-किताब बनता है और समय पर कर्ता आत्मा को उस फल दुख के रूप में भोगना ही पड़ता है। यथा - अलबेलेपन से, टोण्ट, हंसी-मज़ाक आदि।

"भावना का फल अवश्य मिलता है। आप सबकी श्रेष्ठ भावना, स्वार्थरहित भावना है, रहम की भावना, कल्याण की भावना है। ऐसी भावना का फल नहीं मिले, यह हो नहीं सकता। जब बीज शक्तिशाली है तो फल जरूर समर्थ मिलता है। सिर्फ इस श्रेष्ठ भावना के बीज को सदा स्मृति का पानी देते रहो तो समर्थ फल प्राप्त होना ही है।" अ.बापदादा 5.3.84

"बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि कौन से बच्चे भावना से बाप के पास पहुंचे हैं और कौन से बच्चे पहचान कर पाने अर्थात् बनने के लिए पहुंचे हैं। ... भावना वाले भावना का फल यथा शक्ति खुशी, शान्ति, ज्ञान वा प्रेम का फल प्राप्त कर इसी में खुश हो जाते हैं। फिर भी भक्ति की भावना और अब बाप के परिचय से बाप वा परिवार के प्रति भावना इसमें अन्तर है।... अगर छोटा-सा माया का विघ्न आया तो भावुक आत्मायें घबरायेंगी भी बहुत जल्दी क्योंकि ज्ञान की शक्ति कम होती है। ... ज्ञानी तू आत्मायें सदा स्वयं को बाप के साथ रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान समझने से माया को पार कर लेती हैं।"

अ.बापदादा 19.4.84

* किसी के अपमान को देखकर खुश होना भी विकर्म है और उस व्यक्ति के साथ कर्म-बन्धन का खाता बनाता है। ऐसे ही किसी के पतन को देखकर खुश होना भी विकर्म है और उस व्यक्ति के साथ कर्म-बन्धन का खाता बनाता है। किसी का उपहास करना भी किसको दुख देना है और उस व्यक्ति के साथ कर्म-बन्धन का खाता बनाना है।

"सर्व का सहयोग प्राप्त करने का आधार भी शुभ-चिन्तक स्थिति है। जो सर्व के प्रति शुभ-चिन्तक हैं, उनको सर्व से सहयोग स्वत: ही प्राप्त होता है। शुभ-चिन्तक भावना औरों के मन में सहयोग की भावना सहज और स्वत: उत्पन्न करेगी। शुभ-चिन्तक आत्माओं के प्रति हर एक को दिल का स्नेह उत्पन्न होता है और स्नेह ही सहयोगी बना देता है।"

अ.बापदादा 10.11.87

"अपकारी पर उपकार करना होता है। अपकारी पर उपकार कर उठाना बेहतर है। रहमदिल बनना होता है। पहले-पहले मेहनत है आत्माभिमानी बनने की। देहाभिमानी होने से बाप को भूल जाते हैं और फिर और भी भूलें होती हैं।" सा.बाबा 4.2.07 रिवा.

अहंकार और हीनता दोनों ही देहाभिमान जनित हैं और दोनों आत्मा के बड़े शत्रु हैं क्योंकि दोंनों के वशीभूत किये गये कर्म विकर्म होते हैं और उनके फलस्वरूप आत्मा को दुख अवश्य भोगना पड़ता है। आत्मिक स्वरूप इन दोनों से मुक्त है, इसलिए आत्मिक स्वरूप में किये गये कर्म ही सुकर्म हैं और उनका ही फल सुखदायी होता है।

"जो कहते हो, जो सोचते हो, वह करना ही है। उसकी सहज विधि सुनाई कि अपने ओरिजिनल निजी संस्कार को इमर्ज करो। संस्कार से कर्म स्वत: ही अच्छा हो जाता है।"

अ.बापदादा 3.4.97

"आप कहेंगे - "वाह श्रेष्ठ कर्म" ... सदा श्रेष्ठ कर्म हों, साधारण नहीं। कर्मों का कूटना तो खत्म हो गया लेकिन श्रेष्ठ कर्म ही सदा हों - इसमें अण्डरलाइन करना।"

अ.बापदादा 10.1.90

"आपको सदा काल की प्राप्ति है, तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो। ... चिन्ता से कभी भी कमाई में सफल नहीं होंगे, चिन्ता छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य में कुशलता होगी और सफलता होगी। अगर चिन्ता से कमाया हुआ पैसा आयेगा तो भी चिन्ता ही पैदा करेगा क्योंकि जैसा बीज होगा, वैसा ही फल निकलेगा।"

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 2

"भल कहेंगे ड्रामा अनुसार ही हम गिरे और ड्रामा अनुसार ही हम चढ़ेगे परन्तु ड्रामा में भी कोई नियम है, तो उन नियमों को भी समझना है। ... जब हमने अपने कर्म उल्टे बनाये तभी

हम गिरे, अब हम ऊंचा उठेंगे भी कर्म से। ... अगर नहीं करेंगे तो समझा जायेगा कि इनका ड्रामा में पार्ट नहीं है।" मातेश्वरी 23.4.65

"समझो हम पूरा अटेन्शन से मोटर चलाते हैं, परन्तु उसके आगे अचानक कोई बच्चा आ गया और वह कट गया तो इसको क्या कहेंगे ? जरूर उसका कोई अगले जन्मका हिसाब रहा हुआ होगा। ... हमने कभी किसको दुख दिया है तो फिर हमको दूसरे जन्म में उससे लेना है। यह है कर्मों के लेन-देन का हिसाब।" मातेश्वरी 23.4.65

"एक होता है जान-बूझ कर किसका खून करना, एक होता है अन्जाने में हो जाना। ... अचानक हमारी मोटर से कोई बच्चा मर गया, इसको क्या कहेंगे ? ड्रामा में पिछले कर्मों का कोई हिसाब-किताब था। अब उसके लिए जितना हम अच्छा कर सकते हैं या जितना हमारे से बन सके, सो हम करें।" मातेश्वरी 23.4.65

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

"जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सब भूल जायेंगे। कोई भी याद नहीं रहेगा। परन्तु वह अवस्था तब हो जब पक्का निश्चय हो। निश्चय नहीं तो याद भी ठहर नहीं सकती।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

यह लॉ है कि जैसा निश्चय होगा, वैसी स्मृति और कर्म अवश्य होंगे।

आध्यात्मिक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

इस विश्व-नाटक के अनेक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त, जो अटल हैं, उन का ज्ञान परमपिता परमात्मा ने हमको दिया है उन विधि-विधानों एवं नियम-सिद्धान्तों का स्पष्ट ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट हो और उन पर पूर्ण निश्चय हो तो हमारा आत्म कल्याण का पुरुषार्थ अति सहज और सरल हो जायेगा। उन नियम और सिद्धान्तों में जो आत्मा के सम्बन्ध में बाबा ने हमको बताये हैं और हमारे आत्म-कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं, उनमें से कुछ का यहाँ वर्णन कर रहे हैं। इन नियम और सिद्धान्तों को दो भागों में विचार करेंगे। एक हैं योग से सम्बन्धित नियम और सिद्धान्त तथा दूसरे आध्यात्म सम्बन्धी सामान्य नियम और सिद्धान्त।

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा उनकी सन्तान सच्चिदानन्द स्वरूप है अर्थात् आत्मा को सच्चे आनन्द को अनुभव करने के लिए किसी साधन-सम्पत्ति, पद की

आवश्यकता नहीं है क्योंकि आत्मा का स्वरूप ही आनन्दमय है। जो आत्मा इस सत्य को जानकर इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, वह परमानन्द का अनुभव अवश्य करती है। परमात्मा से हमको परम-प्राप्तियां प्राप्त हैं, जो अपनी प्राप्तियों को जानता है, वह दूसरों की प्राप्तियों के प्रति लालायित न होकर अपनी प्राप्तियों का उपयोग करता है, उनका सुख लेता है, वही इस जीवन का सच्चा सुख पाता है।

"जैसे बाप नाम-रूप से न्यारे हैं तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का ही है। ऐसे ही अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदाकाल के लिए सर्व के प्यारे स्वत: बन जायेंगे। नाम-मान के भिखारीपन के अंशमात्र का भी त्याग करो। ऐसे त्यागी ही विश्व के भाग्य-विधाता बन सकते हैं।" अ.बापदादा 27.11.78

"राजधानी स्थापन हो रही है। ... यहाँ रहते हैं तो राजधानी में तो आ जाते हैं क्योंकि बच्चे तो फिर भी बने ना। दास-दासी बनकर फिर कुछ न कुछ पद पा लेते हैं। नहीं तो दास-दासियाँ कहाँ से आयें। प्रजा को तो अन्दर आने का एलाउ हो न सके, दास-दासियां तो अन्दर रहते हैं।" सा.बाबा 9.09.03 रिवा.

"दुख की गली से निकाल कर बाबा ने तुमको टिवाटे पर खड़ा किया है। दुखधाम की गली से तो तुम जन्म-जन्मान्तर पास करते आये हो। अब बुद्धि कहती है मुक्ति-जीवनमुक्ति की तरफ जायें।... जिन्होंने इतना दुख देखा है, उन्हें सुख भी इतना देखना चाहिए। ड्रामा में बाबा ने वजन ठीक रखा है।... अगर शान्तिधाम जाना चाहते हो तो शान्तिधाम को याद करते रहो। मुक्ति को याद करना पड़े ना। पिछाड़ी वालों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने के कारण मुक्तिधाम ही जास्ती याद पड़ेगा। ... मुक्तिधाम जाना चाहते हो तो बाप को याद करो। अगर चाहो हम सदैव सुखी रहें तो वहाँ शान्ति भी है, सुख भी है।"

सा.बाबा 10.09.03 रिवा.

"रुस्तम के साथ माया भी रुस्तम होकर लड़ती है।... तुम जो अवज्ञा करते हो, वह आकर बताओ - शिवबाबा मेरे ये यह भूल हो गई, क्षमा चाहता हूँ। क्षमा नहीं लेते तो भूलें होती रहेंगी, गोया अपने सिर पर पाप चढ़ाते रहते हो।"

सा.बाबा 19.12.03 रिवा.

"अन्त में फिर वे आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना कि एक बार साक्षात्कार हो जाये। लास्ट तक जो पक्के होंगे, उन्होंको साक्षात्कार होंगे। फिर वही संगठन की भट्ठी होगी, सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ-तहाँ बिखर गये हो, फिर नदियां सब सागर में समा जायेंगी। लेकिन समय नाजुक होगा,

साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिए बुद्धि की लाइन बड़ी क्लीयर चाहिए, जो समय पर टच हो जाये कि अभी क्या करना है। एक सेकण्ड भी देरी की तो गये।... ऐसे अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया, ऐसे आकार रूप में भी बच्चों का आवाह्न करेंगे।" अ.बापदादा 6.3.85

"एक परमपिता परमात्मा में ही कभी खाद नहीं पड़ती, बाकी तो सबमें खाद पड़नी ही है। हर एक को सतो, रजो, तमो में आना ही है। यह सब प्वाइन्ट धारण कर बहुत मीठा बनना चाहिए। ऐसे नहीं कि कोई से दुश्मनी, कोई से दोस्ती।"

सा.बाबा 14.10.03 रिवा.

"बाप को आप लोगों से भी ज्यादा मालायें सुमिरण करनी पड़ती हैं। आपको तो एक ही बाप को याद करना पड़ता है और बाप को कितनी मालायें सुमिरण करनी पड़ती हैं। जितनी भक्तिमार्ग में मालायें डाली हैं, उतनी बाप को अभी सुमिरण करनी पड़ती हैं।"

अ.बापदादा 16.2.85 दादियों के साथ

* इन्द्रियों का आकर्षण = संकल्प = अन्त:पटल पर छाप - ये तीनों कार्य एक साथ होते हैं, जो जीवात्मा को प्रभावित करते हैं और आत्मा के उत्थान और पतन में समान भूमिका निभाते हैं। जब यथार्थ ज्ञान जाग्रत होता है तो उत्थान होता है और जब ज्ञान सुसुप्त हो जाता और देहाभिमान प्रभावी होता तो पतन की स्थिति होती है।

* जब तक आत्मा का देह में लगाव है तब तक इन्द्रिय सुखों की आकर्षण रहेगी ही और आत्मा को मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख भोगना ही पड़ेगा।

* आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा किसी की ऊंच-नीच (Superiority-inferiority) के भेदभाव से प्रभावित नहीं हो सकती और न ही उसकी ऊंचाई-नीचाई (Superiority - inferiority) से अन्य कोई आत्मा प्रभावित होगी क्योंकि आत्मिक स्वरूप ऊंच-नीच (Superiority - inferiority) दोनों से सदा मुक्त है।

* जो आत्मा स्वयं अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, वही दूसरे को भी आत्मिक स्वरूप में देख सकेगी और जो दूसरों को आत्मिक स्वरूप में देखेगा, वही उसको आत्मिक सुख का अनुभव करा सकेगा, परमात्मा का अनुभव करा सकेगा, परमात्मा की ओर आकर्षित कर सकेगा।

"रोना दुख की निशानी है। ... रोना तब आता है जब कोई न कोई अकल्याण होता है। सतयुग में कभी अकल्याण नहीं होता इसलिए वहाँ कभी रोते नहीं। ... ऊंच से ऊंच बाप से

वर्सा लेकर हम अपना कल्याण करें। हर एक को अपना कल्याण करना है श्रीमत पर। ... निश्चयबुद्धि को फिर रोने वा देहाभिमान में आने की बात नहीं रहती।"

सा.बाबा 23.12.03 रिवा.

"मैं निर्वाणधाम में बैठ जाता हूँ, बच्चों को विश्व का मालिक बनाता हूँ। सच्ची-सच्ची निष्काम सेवा निराकार परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं, कोई मनुष्य नहीं कर सकते।"

सा.बाबा 1.11.03 रिवा.

* प्रकृति के नियमानुसार समान गुण-धर्म वाले तत्व अपने अनुरूप गुण-धर्म वाले तत्वों को स्वत: आकर्षित करते हैं अर्थात् समान गुण-धर्म वाले तत्व अपने अनुरूप गुण-धर्म वाले तत्वों की ओर स्वत: आकर्षित होते हैं - ऐसे ही समान गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव वाली आत्मायें अपने गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव वाली आत्माओं की ओर स्वत: आकर्षित होती हैं और अपने अनुरूप गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव वाली आत्मा को आकर्षित करती हैं। ऐसे ही परमात्मा की ओर और उनके पास भी समान या निकटतम गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव वाली आत्मायें ही रह सकती हैं और रहेंगी, साकार में भी तो परमधाम में भी। अपने गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव से हम समझ सकते हैं कि हमारी स्थिति कहाँ और कैसी होगी।

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। कितनी भी पतित आत्मा हो परन्तु वह जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तो वह परम सुख, परम शान्ति, परमानन्द का अनुभव अवश्य करेगी। परन्तु विश्व-नाटक का ये नियम नहीं है कि कोई पतित आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम सुख, परम शान्ति, परमानन्द का अनुभव करे। यथार्थ रीति ये अनुभव तो पवित्र आत्मा ही करती है, जब वह परमात्मा के द्वारा विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान पाकर पुरुषार्थ करके पावन बनती है। परमपिता परमात्मा पतित-पावन है, वह अपनी शक्ति से पतित आत्माओं को भी देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित कर ये अनुभव कराते हैं, जो आत्माओं को परमात्मा का ईश्वरीय वर्सा है। ये भी विश्व-नाटक की विडम्बना है कि जब आत्मायें पावन बन जाती हैं, अपनी शक्ति से ये श्रेष्ठ अनुभव करने में समर्थ हो जाती हैं तो परमात्मा को भूल जाती हैं। इसीलिए सतयुग में कोई परमात्मा को याद नहीं करता है। गायन है - दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय।

* हमारी अन्य आत्माओं के प्रति जैसी भावना होगी, उसके अनुरूप ही उनके अन्दर हमारे प्रति भाव उत्पन्न होंगे और परिणाम स्वरूप वैसे ही कर्म होंगे अर्थात् जैसे संकल्प-कर्म हमारे अन्य आत्माओं के प्रति होंगे, उनकी उस अनुरूप ही प्रतिक्रिया उनके द्वारा हमारे प्रति होगी।

"अपने दिल में दूसरों के प्रति जैसी भावना होती है, वैसा ही दूसरों से रिटर्न मिलता है।"

अ.बापदादा 7.3.90

* पवित्र आत्मा कब दुख नहीं पा सकती अर्थात् आत्माभिमानी स्थिति में स्थित आत्मा को न कोई दुख दे सकता और न उसको कोई दुख हो सकता है।

* जो आत्मा जिस धर्म की होती है, उसको उसी धर्म की मान्यतायें अच्छी लगती हैं और वह उसी धर्म में जन्म लेती है परन्तु अन्य धर्मों की स्थापनार्थ अथवा वृद्धि के अर्थ कुछ आत्मायें एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन होती है, जो अन्त समय अपने मूल धर्म में पुन: परिवर्तित अवश्य हो जाती हैं।

"ये ज्ञान दूसरे धर्म वालों की बुद्धि में भी नहीं आयेगा। हाँ जो कनवर्ट हुए होंगे वह तो निकल आयेंगे। उनकी क्या फिकरात करनी है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाला, बहुत भक्ति करने वाला दूसरे धर्म में कनवर्ट हो न सके। वह तो अपने धर्म में ही पक्के रहते हैं। कनवर्ट होते हैं पिछाड़ी वाले।"

सा.बाबा 23.2.69 रिवा.

* जीवात्मा जो भी देखती, सुनती, स्पर्श करती उसका प्रभाव उसके जीवन पर अवश्य होता है, उसके अनुसार उसके संकल्प और कर्म होते हैं, जो उसके भविष्य जीवन के आधार होते हैं। जो देखती, सुनती, स्पर्श करती, उसमें जिसकी अनुभूति जितनी गहरी होती है, उसका प्रभाव उतना ही गहरा और दीर्घकालिक होता है। जैसे परमात्मानुभूति या किसी घटना की अनुभूति या किसी व्यक्ति को देखते-स्पर्श करते हैं तो उसका प्रभाव होता है।

* संकल्प के अनुसार ही शरीर में अनेक प्रकार की प्रक्रियायें होती है और रस स्राव होते हैं, जो जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाते हैं और जीवात्मा के विकारी या निर्विकारी बनने का कारण बनते हैं।

"ज्यादा सोचना नहीं है, सोचने से निर्णय शक्ति कम हो जाती है। कितनी भी हलचल हो लेकिन संकल्प को एक सेकेण्ड में स्टॉप कर लो - यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। स्वभाव भी समय पर धोखा दे देता है। बहुत समय के अभ्यासी होंगे तब पास हो सकेंगे।"

अ.बापदादा 30.4.77

* जब आत्मा एकान्त और एकाग्रता में स्थित होती है तो अनेक सुसुप्त शक्तियाँ, स्मृतियाँ स्वत: जाग्रत होती हैं, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति या अवनति का कारण बनती हैं।

* इस जगत में न कोई अपना है और न ही कोई पराया है। सभी आत्मायें स्वतन्त्र हैं और इस विश्व-नाटक में अपना पूर्व निश्चित पार्ट बजा रही हैं। जो आज अपना है, वही कल पराया होगा और पराया अपना होगा। इसलिए किससे ईर्ष्या-राग-द्वेष का कोई स्थान नहीं है। ज्ञानी पुरुष

इस सत्य को जानकर सबके साथ समान और प्रेम का व्यवहार करते हैं।

* जो आत्मा अपनी संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों के नशे में स्थित होगा, अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगा, उसे दुनिया के किसी भी व्यक्ति की साधन-सम्पत्ति, सत्ता प्रभावित कर नहीं सकती, उसके सिर को झुका नहीं सकती, उसमें कब हीनता की भावना आ नहीं सकती और न ही उसमें अहंकार आ सकता अर्थात् वह अहंकार के वशीभूत कब किसका अपमान कर नहीं सकता।

* समकक्ष स्वभाव, संस्कार, सेल्स (Cells) अपने समकक्ष स्वभाव, संस्कार, सेल्स को अपनी ओर अवश्य आकर्षित करते हैं जो जीवात्मा के जन्म-मृत्यु, संगठन-विघटन और स्मृति का कारण बनते हैं।

"भक्ति के संस्कार वाले जाकर मनुष्यों के पास जन्म लेंगे, ज्ञान के संस्कार वाले नई दुनिया में जाकर जन्म लेंगे। यह भी जरूर है तुम हो ब्राह्मण तो तुम ब्राह्मण कुल में ही जन्म लेंगे। न शूद्र कुल में और न देवताओं के कुल में। यह ज्ञान बुद्धि में चक्कर लगाना चाहिए। साथ-साथ बाप को भी याद करना है।" सा.बाबा 10.10.68

* जीवात्मा जिसको याद करती है, जिसके पास रहती है, जिसको देखती या स्पर्श करती है, उसके गुण-संस्कार-स्वभाव एक-दूसरे पर अवश्य प्रभावित होते हैं परन्तु शक्तिशाली का प्रभाव, शक्तिहीन पर परिलक्षित (Reflect) होता है। ऐसे ही परमात्मा की याद से उसके गुण-संस्कार आत्माओं को प्रभावित करते हैं परन्तु परमात्मा, आत्माओं के गुण-संस्कारों से प्रभावित नहीं होता है। जो जिसके समीप रहने वाले होते हैं, उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज आ जाते हैं। इसलिए गायन है कि - संग का रंग अवश्य लगता है।

* जो जिसका चिन्तन या स्मरण करता है, वह वैसा ही बन जाता है। निराकार बाप को याद करने से निराकारी आत्मा रूप और अव्यक्त फरिश्ता रूप ब्रह्मा बाप को याद करने से अव्यक्त फरिश्ता के गुण आते हैं और हम भी वैसे बन जाते हैं।

* हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्वतन्त्र है और विकारों से मुक्त है। देहाभिमानी में इन्द्रियों की दासता और दैहिक गुणों एवं विकारों की प्रवृत्ति अवश्य होगी। आत्मिक स्वरूप का ज्ञान, परमात्मा की याद और आत्मिक स्वरूप में भाई-भाई की दृष्टि ही विकारों पर विजय का एकमात्र उपाय है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में विकारों की प्रवृत्ति जाग्रत हो नहीं सकती।

* काम वासना आत्मिक शक्ति को सर्वाधिक क्षीण करती है और परिणाम स्वरूप दुख का

कारण बनती है। इसीलिए बाबा ने कहा - काम महाशत्रु है, इसको जीतो। काम जीते, जगत जीत।

* देहाभिमानी मनुष्य का चिन्तन दैहिक होने के कारण, उसकी ऊर्जा अधोगामी होती है, इसलिए उसमें काम की प्रवृत्ति अवश्य होगी और देही-अभिमानी की ऊर्जा अधोगामी नहीं हो सकती, इसलिए उसमें काम-वासना हो नहीं सकती। इसलिए सतयुग में कब विकार हो नहीं सकता। इसलिए देहाभिमानी मनुष्यों के लिए निर्विकारी बनने की कल्पना भी असम्भव है।

* कर्म, वचन और संकल्पों से आत्मिक शक्ति का क्रमश: अधिक ह्रास होता है। व्यर्थ संकल्पों से आत्मिक शक्ति सबसे अधिक ह्रासित होती है। इसलिए व्यर्थ संकल्पों वाला कब निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर नहीं सकता।

* ईश्वरीय ज्ञान ही आत्मा के लिए सच्चा धन है। जितना ये ज्ञान धन होगा, उतना ही उसका रुहानी नशा होगा और जितना नशा होगा उतनी ही खुशी आत्मा को अवश्य होगी। इसलिए ईश्वरीय ज्ञान की यथार्थ स्मृति आत्मा में जितनी अधिक जाग्रत होगी, उतनी ही उसकी प्राप्ति की खुशी आत्मा को होगी और उसका प्रभाव व्यक्ति और वातावरण पर पड़ेगा।

* मूल स्वरूप (आत्माभिमानी) में स्थित आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: उत्पन्न होता है, उसकी शुभ कर्म में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। इसलिए उसके भविष्य के प्रति संकल्प-विकल्प नहीं चलते हैं, जिससे वह सहज ही जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती है।

* जीवात्मा की पवित्रता उसके सुख-शान्ति की जननी है। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति अवश्य होगी। यदि किसी को दुख-अशान्ति का अनुभव हो रहा है तो जरूर कोई न कोई अपवित्रता है।

* निश्चयबुद्धि विजयन्ति - किसी कार्य की सफलता के प्रति हमारा निश्चय शत प्रतिशत दृढ़ है तो उसमें शत प्रतिशत सफलता अवश्य मिलेगी और यदि कहाँ असफलता है तो अवश्य ही निश्चय में कोई कमी है। ये सिद्धान्त ज्ञान और अज्ञान दोनों में ही प्रभावित होता है। ज्ञान मार्ग में यथार्थ निश्चय अर्थात् परमात्मा के नाम-रूप-गुण-कर्तव्य में पूरा निश्चय और उसके हर महावाक्य पर उसी प्रमाण निश्चय और उसके द्वारा बताये गये कार्य विशेष की सफलता के लिए निश्चय बुद्धि। जैसा जीवात्मा का निश्चय होता है, उस अनुसार उसके संकल्प और कर्म अवश्य ही होते हैं।

* अपने मूल स्वरूप (निराकारी अथवा बीज रूप अथवा अशरीरी) में स्थित आत्मा को

परमात्मा की याद स्वत: आती है और ये याद ही आत्मिक शक्ति में वृद्धि करके सम्पूर्णता को प्रदान करती है।

* जिसका परमपिता परमात्मा से प्यार होगा, उसका सर्व आत्माओं से भी अवश्य प्यार होगा और सर्व आत्माओं का उससे प्यार होगा - ये अटल सत्य है।

* इस सृष्टि में कोई भी योनि भोग-योनि नहीं है, बल्कि हर योनि की आत्मा के कर्म करने के सिद्धान्त और कर्मफल भोगने के सिद्धान्त भिन्न2 हैं। "जीवात्मा अपना आपही मित्र ... शत्रु है" का सिद्धान्त हर योनि की आत्माओं पर समान रूप से प्रभावित होता है।

* इस जीवन या देह रूपी गाड़ी का जो चालक आत्मा है, वही उसे चला सकता है, कोई दूसरी आत्मा उसकी गाड़ी को चला नहीं सकता, इसीलिए देखा जाता है कि कब किसी बीमार व्यक्ति के तन में कीड़े आदि पड़ जाते हैं और वैसे भी रक्त में अनेक जीवाणु होते भी यदि उस देह का मुख्य चालक आत्मा निकल जाती है तो उस तन में अन्य योनि की आत्माओं की उपस्थिति होते भी वह विनाश को पाता है, निर्जीव हो जाता है।

* जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित है तो आत्मिक शक्ति होगी ही और उसके संकल्प और कर्म श्रेष्ठ ही होंगे परन्तु जब आत्मा देहाभिमान में है तो विकारों का प्रभाव अवश्य होगा और उसके संकल्प और कर्म भ्रष्ट ही होंगे, जिसके परिणाम स्वरूप दुख-अशान्ति अवश्य होगी।

"सत्यता की शक्ति की निशानी है - वह सदा निर्भय होगा। जैसे मुरली में सुना है - "सच तो बिठो नच" अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त और निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिन्ता है वहाँ खुशी में नाचना हो नहीं सकता। ... चाहे कितना भी अपने को छिपाये, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखाये लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है। कोई बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता।"

अ.बापदादा 26.12.84

* प्राय: सभी आत्माओं के मूलभूत गुण एक समान ही होते हैं इसलिए एक योनि की आत्मा की दृष्टि, वृत्ति, संकल्प के प्रभाव को दूसरी योनि की आत्मा भी अवश्य अनुभव करती हैं। हमारे प्रेम, हिंसा आदि की भावना से युक्त दृष्टि-वृत्ति का प्रभाव दूसरी योनि की आत्मायें बहुत सहज अनुभव करती हैं और उनके हाव-भाव, कार्य भी उससे प्रभावित होते हैं।

* आत्मिक स्वरूप अहंकार-हीनता, प्राप्ति-पश्चाताप दोनों से मुक्त है। पश्चाताप भी देहाभिमान ही है क्योंकि देहाभिमान होगा तब ही पश्चाताप होगा और पश्चाताप भी उनको ही होगा, जिन्होंने

आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल पुरुषार्थ नहीं किया होगा, इसलिए वे पश्चाताप करके उस देहाभिमान से मुक्त होंगे और घर वापस जायेंगे। ये पश्चाताप भी आत्मा को एक दण्ड है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा तो परम प्राप्ति से सम्पन्न होती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व गुणों और शक्तियों से सम्पन्न परमानन्दमय है।

* सत्य की नाँव डोलती अवश्य है लेकिन कब डूबती नहीं है अर्थात् सत्य पथ पर चलने वाले की परीक्षा अवश्य होती है और उस परीक्षा में पास होने पर वह आगे बढ़ता है और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करता है। इस विधि-विधान को जानकर सत्य पथ पर चलने वाले को कब भी परीक्षाओं को देखकर हताश और निराश नहीं होना चाहिए।

* आत्मा देह से न्यारी अर्थात् अलग है, आत्मा ही इस देह के साथ सुख-दुख का पार्ट बजाती है अर्थात् आत्मा ही सुख-दुख का अनुभव इस देह के साथ ही करती है।

अतीन्द्रिय सुख का अनुभव भी आत्मा इस देह में रहते देह से न्यारी स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अर्थात् सूक्ष्म देह के साथ करती है। इस स्थूल वतन में और सूक्ष्म वतन में आत्मा कभी भी स्थूल या सूक्ष्म देह के बिना नहीं रहती है। परमपिता परमात्मा भी जब आते हैं तो सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा की सूक्ष्म देह में प्रवेश कर स्थूल वतन में आते हैं, इसलिए परमात्मा कहते हैं कि मैं आकर पहले सूक्ष्म वतन रचता हूँ।

आत्मा जब वापस जाती है सूक्ष्मवतन तक सूक्ष्म देह के साथ ही जाती है और जब परमधाम से आती है तब भी आत्मा को यहाँ गर्भ में निर्मित देह ही उसको आकर्षित कर नीचे लाती है।

"सारा मदार है ज्ञान और विज्ञान पर। ज्यादा समय मुक्तिधाम में रहने वाले योग ही पसन्द करेंगे। उनकी आत्मा में पार्ट ही ऐसा है और देवी-देवता धर्म वाले नॉलेज को भी पसन्द करेंगे।... कल्प पहले जिसने जो पद पाया है, जिस प्रकार से पाया है, वह सब साक्षी होकर देखते रहते हैं।" सा.बाबा 7.2.07 रिवा.

"बाबा आकर पढ़ाते हैं। ऐसे नही कि वहाँ परमधाम में बैठे यह ख्यालात चलते हैं। यह समझना बच्चों की भूल है। ... ऐसे नहीं कि बाबा हमारा सब जानते हैं। नहीं, इसको अन्धश्रृद्धा कहा जाता है। बाबा को ब्रह्मा द्वारा अपना सब समाचार देना है।"

सा.बाबा 31.1.07 रिवा.

"मुक्तिधाम में जाना है और अनेक दुखी-अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्ति-दाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना!

क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो।"

अ.बापदादा 18.1.07

"सारे विश्व के भाग्य की जन्मपत्रियां देख लो लेकिन आप जैसी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर किसी की भी नहीं हो सकती है। ... इसलिए अपने श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हुए समर्थपन के रुहानी नशे में रहो। बाहर से भले साधारण दिखाई दो लेकिन साधारणता में महानता दिखाई दे।... जब स्वयं, स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे तब दूसरों को भी अनुभव करायेंगे।"

अ.बापदादा 9.1.85

"अमृतवेले जो मुख्य प्लॉनिंग बुद्धि हैं, उनको बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है। उनको नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे।" अ.बापदादा 31.1.98

"जितना देही-अभिमानी होंगे, अपने को आत्मा अशरीरी समझेंगे, बाबा को याद करेंगे उतनी धारणा होगी। देहाभिमानी को धारणा नहीं होगी।... एक दिन भी मुरली मिस नहीं करनी चाहिए। धारणा नहीं होती तो समझना चाहिए कि देहाभिमान बहुत है।"

सा.बाबा 5.1.07 रिवा.

"जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होंगे, उतना सर्व शक्तियां सदा आर्डर में रहेंगी। जब नीचे आते हो तो शक्तियां आर्डर नहीं मानेंगी। ... जब अभी से सर्व शक्तियां आपके आर्डर में होंगी तब ही अन्त में भी आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। इसका बहुत काल का अभ्यास चाहिए।" अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 3

"चाहे इस कल्प में पहली बार मिलते हैं लेकिन मिलते ही पुरानी स्मृति, पुरानी पहचान, जो आत्माओं में संस्कार के रूप में रिकार्ड भरा हुआ है, वह इमर्ज हो जाता है और दिल से यही स्मृति का आवाज़ आता है कि यह वही मेरा बाप है।"

अ.बापदादा 13.3.90

"स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आयें। ... बापदादा आये हैं सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का चाहे जीवनमुक्ति का। लेकिन वर्सा सबको मिलना जरूर है।"

अ.बापदादा 18.1.97

"ऐसी निमित्त बनी हुई आत्माओं के प्रति कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठाना चाहिए। ... कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। ... इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझदार बच्चे हैं, वे जानें। निमित्तबनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना क्योंकि निमित्त बाप ने बनाया है ना।" अ.बापदादा 10.1.90

"चारों ही सब्जेक्ट धारण करने का आधार दिव्य बुद्धि है। ... जानना और वर्णन करना सभी को आता है लेकिन धारण करना - इसमें नम्बर बन जाते हैं। ... साधारण बुद्धि वाली आत्मायें बहुत करके वर्तमान को स्पष्ट जानती हैं लेकिन भविष्य और भूतकाल को स्पष्ट नहीं जानती हैं लेकिन दिव्य बुद्धि वाली आत्मा को पास्ट और फ्युचर भी इतना ही स्पष्ट होता है, जितना प्रैजेन्ट।"

अ.बापदादा 1.2.94

"ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं है। स्वप्न का भी आधार अपनी साकार जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंशमात्र में भी नहीं आ सकती। ... जो स्वप्न में कमजोर होता है, तो उठने के बाद भी वे संकल्प जरूर चलेंगे और योग साधारण हो जायेगा। ... सदा मायाजीत अर्थात् सदा बाप के समीप संग में रहने वाले।"

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 3

"मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार ... मेरापन के कारण ये छोड़ते नहीं हैं क्योंकि यह नियम है कि जहाँ मेरापन होता है, वहाँ अपनापन होता है और जहाँ अपनापन होता है, वहाँ अधिकार होता है। ... इसलिए वे छोड़ते नहीं हैं।"

अ.बापदादा 9.12.93

माया तब आती है, जब बाप भूलता है। यदि सर्वशक्तिवान परमात्मा साथ है तो कब माया आ नहीं सकती।

"असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है ... सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है ... असत्यता के वश जितनी मौज मनाई, उतना ही सौगुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है।"

अ.बापदादा 24.9.92

"पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी-योगी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 2

"यह सभी राज़ बाप ही समझाते हैं कि अभी हर चीज बिगड़ चुकी है। अभी मैं आया हूँ तो हर चीज को सुधारता हूँ। इसके लिए पहले मैं मनुष्यात्माओं को सुधारता हूँ, उससे सब चीजें सुधर जाती हैं।"

मातेश्वरी 24.6.65

"यह संसार का चक्र कैसे चलता है, उसे जानना, इसी का नाम है ज्ञान। बाप कहते हैं - इसी का मैं नॉलेजफुल हूँ। मेरे पास इसकी फुल नॉलेज है। यह कर्मों का खाता कैसे चलता है, कैसे नम्बरवार सब आते हैं। इन सभी बातों को मैं जानता हूँ, जिसको कोई मनुष्य नहीं जान सकता क्यों कि सभी मनुष्य इस जन्म-मरण के चक्र में आने वाले हैं। जो इस चक्र में आने वाले हैं,

वे इन बातों को नहीं जान सकते।... सभी मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में आकर अपनी पॉवर्स खो देते हैं।"
मातेश्वरी 24.6.65

"सबको सुख का रास्ता बताना चाहिए। यदि सुख नहीं देते तो जरूर दुख देंगे। ... तुम्हारी ज्योति भी बिल्कुल बुझ नहीं जाती है। कुछ न कुछ लाइट रहती है। फिर तुम सुप्रीम बैटरी से पॉवर लेते हो।"
सा.बाबा 30.7.04 रिवा.

"मनुष्य कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। परन्तु स्वर्ग है कहाँ, जानते थोड़ेही हैं। ये शब्द भी जो आत्मायें स्वर्ग में गई हैं, स्वर्ग का अनुभव है, वे ही कहती हैं। आत्मा को तो सब याद रहता है ना।"
सा.बाबा 23.1.04 रिवा.

"बच्चे, पहले-पहले तो यह दृष्टि पक्की करो कि हम आत्मा हैं, हम भाई-भाई को देखते हैं। जैसे बाप कहते हैं - मैं बच्चों को देखता हूँ, यह भाई भी अपने भाइयों को देखते हैं, तुमको भी भाइयों को देखना है। पहले यह दृष्टि पक्की चाहिए, फिर क्रिमिनल ख्यालात बन्द हो जायेंगे। ... यह है नम्बरवन सब्जेक्ट। इसमें दैवीगुण भी ऑटोमेटिकली धारण होते रहेंगे। कर्मेन्द्रियाँ चलायमान देहाभिमान में आने से ही होती है।... मन्सा तूफान भी तब आते हैं जब तुम भाई-भाई की दृष्टि से नहीं देखते हो। इसमें बड़ी मेहनत है। प्रैक्टिस अच्छी चाहिए।"
सा.बाबा 2.1.04 रिवा.

"सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं लेकिन योगी जीवन वाले हो। जीवन सदा काल की होती है, नेचुरल और निरन्तर होती है। योग अर्थात् याद तो ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है। जीवन का लक्ष्य स्वत: ही याद रहता है और जैसा लक्ष्य होता है वैसे लक्षण भी स्वत: ही आते हैं।"
"9 लाख तारे गाये हुए हैं ना। जब अभी सितारा रूपी आत्मा का अनुभव करेंगे, तब 9 लाख सितारे गाये जायेंगे। इसलिए अब सितारों का अनुभव कराओ।"
अ.बापदादा 28.1.85

"सहज गिफ्ट के रूप में प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि कमजोर होने के कारण मेहनत अनुभव करते हैं। जब भी मुश्किल वा मेहनत का अनुभव करते हो तो अवश्य दिव्य बुद्धि किसी माया के रूप से प्रभावित है तब ऐसा अनुभव होता है।"
अ.बापदादा 21.1.85

"ईश्वरीय दिव्य बुद्धि की गिफ्ट सदा छत्रछाया है। तो सहज को मुश्किल किसने बनाया और कैसे बनाया ? अपने आपको अलबेला बनाया तो माया की छाया में आ गये।"
अ.बापदादा 21.1.85

"ऐसे ज्ञान मुरली का साज़ बहुत अच्छा लगता है लेकिन साज़ के साथ राज़ समझने वाले ज्ञान खजाने के रत्नों के मालिक बन मनन करने में मगन रहते हैं। मगन स्थिति वाले के आगे कोई

विघ्न आ नहीं सकता।" अ.बापदादा 14.1.85

"सबसे ज्यादा याद का आधार होता है - एक सम्बन्ध और दूसरा प्राप्ति। जितना प्यारा सम्बन्ध होता है, उतनी याद स्वत: आती है क्योंकि सम्बन्ध में स्नेह होता है और जहाँ स्नेह होता है, वहाँ स्नेही की याद करना मुश्किल नहीं होता है लेकिन भुलाना मुश्किल होता है। ... जब बाप को सम्बन्ध और स्नेह से याद करते हो तो याद मुश्किल नहीं होती।"

अ.बापदादा 2.2.07

"निरन्तर याद की एक सहज विधि बापदादा ने सुनाई है।... मैं आत्मा हूँ और मेरा बाबा। जितना मेरापन लायेंगे बाप में, उतना याद सहज होती जायेगी।"

अ.बापदादा 2.2.07

योग से सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

योग शब्द का अर्थ है जोड़ या सम्बन्ध। इस दृष्टि से देखें तो जो भी आत्मा इस सृष्टि रंगमंच पर आती है, उसका योग किसी न किसी वस्तु या व्यक्ति से होता ही है और उसका आत्मा पर और आत्मा का उस वस्तु या व्यक्ति पर प्रभाव अवश्य पड़ता है परन्तु आध्यात्म में योग शब्द का प्रयोग आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध या परमात्मा की स्नेहयुक्त याद के लिए किया जाता है। इस याद से ही आत्मायें पावन बनती हैं, उनकी चढ़ती कला होती है, इसलिए इस विषय के अन्तर्गत उन नियम और सिद्धान्तों का वर्णन करेंगे, जो आत्मा और परमात्मा के योग के सम्बन्ध में हैं अर्थात् जिनके विषय में परमात्मा ने ज्ञान दिया है। योग में भी दो प्रकार के योगों का आध्यात्म मार्ग में वर्णन है। एक है हठयोग और दूसरा है राज़योग। दोनों के मूलभूत नियम और सिद्धान्तों में कुछ समानता भी है परन्तु कुछ विशेष अन्तर भी है, इसलिए उसको जानना भी अति आवश्यक है।

योग के प्राकृतिक नियमानुसार जो आत्मा जिस व्यक्ति या वस्तु को याद करती है, उसके कार्य में सहयोग करती है, उसकी कर्मभूमि पर रहती, उसके संग में रहती, उसके गुण-धर्म उस याद करने वाली आत्मा की स्मृति में अवश्य रहते हैं और वे उसके जीवन को स्मृति के अनुरूप प्रभावित अवश्य करते हैं।

योग के यथार्थ अर्थ को समझते हुए जो आत्मा, परमात्मा को याद करती है, उसके कार्य में सहयोगी बनती है, उसकी कर्मभूमि पर रहती है, उसकी स्मृति में परमात्मा के नाम, रूप, गुण-धर्म, कर्म की स्मृति अवश्य रहती है परन्तु हरेक की स्मृति में अन्तर अवश्य होता है और वह उसके जीवन को उसी सीमा तक प्रभावित करती है, जैसी उसकी याद होती है। जो

आत्मा सम्पूर्ण रूप से समर्पित होकर, उसकी अव्यभिचारी याद में रहता, उसका पुरुषार्थ करता है, उसको परमात्मा के गुण-धर्म, शक्तियां पूर्णतया अर्थात् अधिक प्रभावित करती हैं अर्थात् उसमें वे गुण-धर्म, शक्तियाँ पूर्णतया आ जाती है। जैसे ब्रह्मा बाबा, मम्मा और नम्बरवार अनन्य बच्चों में।

* योग शब्द का प्रयोग परमपिता परमात्मा की स्नेहयुक्त याद के लिए ही किया जाता है क्योंकि परमात्मा के साथ योग रखने से ही आत्माओं में उनके ज्ञान, गुण, धर्म, शक्तियों की धारणा होती है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है।

* योग से आत्मिक गुण-शक्तियाँ जाग्रत होती हैं और वियोग अर्थात् विस्मृति से आत्मिक गुण-शक्तियाँ विलुप्त होने लगती हैं।

* जीवात्मा जिसके साथ रहता है, जिसको याद करता है, उसके गुण-धर्म, संस्कार उसमें अवश्य आते हैं और उसका भी प्रभाव दूसरों पर पड़ता है।

* योग यथार्थ है तो आत्मा जिस समय जिस गुण, शक्ति का आवाह्न करती है, वह अवश्य हाजिर होती है और उसको आवश्यकतानुसार समय आवश्यक प्राप्ति अवश्य होती है।

* योग की सफलता का आधार और फल है - एक सेकेण्ड में देह और देह की दुनिया से न्यारा हो जाना अर्थात् अपने बिन्दु स्वरूप में स्थित हो जाना। संकल्प ही न अच्छे का चिन्तन और चिन्ता और न बुरे का चिन्तन और चिन्ता, न किसी बात का पश्चाताप। आत्मा बिन्दु, परमात्मा बिन्दु और ड्रामा में जो बीता सो बिन्दु। इसके लिए बाबा ने कहा है - ज्ञान का और सेवा का भी संकल्प न चले।

विश्व-नाटक के नियमानुसार जो परमात्मा के गुण-धर्म, शक्तियों को जिस परसेन्टेज में अपने जीवन में धारण कर जितना परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनता, वह उसी परसेन्टेज में उसकी दिव्य सम्पत्ति स्वर्ग के वर्से का अधिकारी बनता है।

"भाग्य विधाता बाप से प्राप्त इस भाग्य के अधिकार के अधिकारी बन उस खुशी और नशे में रहना और औरों को भी भाग्यविधाता द्वारा भाग्यवान बनाना, यह है अधिकारीपन के नशे में रहना। ... सारे विश्व के भाग्य की जन्मपत्रियां देख लो लेकिन आप जैसी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर किसी की भी नहीं हो सकती है।" अ.बापदादा 9.1.85

"मधुबन में जितने भण्डारे भरपूर हैं, उतने ही बेहद के वैरागी। ... साधन होते हुए भी वैराग्य वृत्ति हो, इसको कहा जाता है - बेहद के वैरागी। तो जितना जो करता है, उतना वर्तमान भी फल पाता है और भविष्य में तो मिलना ही है। वर्तमान में सच्चा स्नेह वा सबके दिल की

आशीर्वाद अभी प्राप्त होती है और अभी की यह प्राप्ति स्वर्ग के राज से भी ज्यादा है।"

अ.बापदादा 9.1.85 मधुबन निवासियों के साथ

योग की सफलता में योग के अभ्यास के समय (Duration) का भी महत्व है तो योगाभ्यास की लगन की तीव्रता का भी महत्व है। यथार्थ योग अर्थात् देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धि निकाल कर एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद में स्थित होना और योग की सफलता अर्थात् अतीन्द्रिय सुख गहन अनुभूति होना। ये अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति 50 साल से योगाभ्यास करने वाले (जो पूरा नष्टोमोहा नहीं है) से भी थोड़े समय की तीव्र लगन (पूरा नष्टोमोहा होकर अभ्यास करने वाले) वाले को अधिक हो सकती है।

योगानन्द परमानन्द है, जो आत्मा की चढ़ती कला और विश्व के नव-निर्माण का आधार है। जो जितना अधिक योगानन्द का उपभोग करता है अर्थात् उसके अनुभव में रहता है, उसका वर्तमान और भविष्य उतना ही अधिक सुखमय होता है। ऐसे ही विषयानन्द जीवन का निकृष्ट आनन्द है, जो आत्मिक शक्ति के पतन का मूल कारण है। जो आत्मा जितना अधिक इसका उपभोग करता है, उसका वर्तमान और भविष्य उतना ही अन्धकारमय और दुखमय हो जाता है।

"आत्म जो अपवित्र बनी है, उसको शुद्ध बनाना है। मेरे साथ योग लगाने से ही शुद्ध बनेंगे। योग होगा तो चढ़ती कला होगी, अगर योग नहीं होगा तो गिरती कला हो जायेगी। सर्विस का भी शौक चाहिए।"

सा.बाबा 10.09.03 रिवा.

"बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और स्वदर्शन चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजाबनेंगे।... अब बाप कहते हैं - मौत सामने खड़ा है, सबकी वानप्रस्थ अवस्था है, मैं सबको लेने आया हूँ। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, आत्मा शुद्ध हो जायेगी। फिर सबको स्वर्ग में भेज देंगे। यह निश्चयबुद्धि से किसको समझाना है, तोते मुआफिक नहीं।"

सा.बाबा 23.12.03 रिवा.

"सारा मदार योग पर है। योग से बुद्धि पवित्र होती है, तब ही धारणा हो सकती है। इसमें देही-अभिमानी अवस्था चाहिए, सब कुछ भूलना पड़े। शरीर को भी भूलना है। बस, अब हमको वापस जाना है, यह दुनिया तो खत्म हो जाने वाली है।"

सा.बाबा 20.12.03 रिवा.

* योग की सफलता का आधार और फल है - एक सेकण्ड में संकल्प करते ही देह और देह की दुनिया से न्यारा हो अपने बिन्दु स्वरूप में स्थित हो जाना। न अच्छे का चिन्तन और चिन्ता और न बुरे का चिन्तन और चिन्ता, न किसी बात का पश्चाताप। आत्मा बिन्दु, परमात्मा बिन्दु

और ड्रामा में जो बीता सो बिन्दु। इसके लिए ही बाबा ने कहा है - ज्ञान का और सेवा का भी संकल्प न चले। एकदम स्टॉप।

"सारा दिन चाहिए-चाहिए नहीं। इसको कहा जाता है लोभ। ... शिवबाबा के यज्ञ से सब कुछ ठीक मिलता है। फिर भी कुछ आश रहती है। पहले तो ज्ञान-योग की आश पूर्ण करो, जिससे सब आशायें पूर्ण हो जायेंगी।" सा.बाबा 30.1.07 रिवा.

"अभी तुम नई दुनिया के मालिक बन रहे हो। विनाश से पहले पुरानी दुनिया को फारकती देनी है। अगर फारकती नहीं देंगे तो नई दुनिया से योग भी नहीं लगेगा। ... देह सहित जो कुछ भी है, उस सभी को फारकती दो, फिर अकेली आत्मा बन मेरे पास आ जायेंगे।"

सा.बाबा 22.1.07 रिवा.

"जहाँ मेरापन आता है, वहाँ सहज याद हो जाती है। तो स्मृति ने समर्थ आत्मा बना दिया। एक शब्द "मेरा बाबा" ने भाग्य विधाता अखुट खज़ाने के दाता को मेरा बना लिया। परमात्म पालना के अधिकारी बन गये, जो परमात्म पालना सारे कल्प में एक बार ही मिलती है।"

अ.बापदादा 18.1.07

"जो जितना स्मृति में रहते हैं, वे उतना ही समर्थियों का अधिकार स्वत: ही प्राप्त करते हैं। जहाँ स्मृति है, वहाँ समर्थी है ही है। थोड़ी भी विस्मृति है तो व्यर्थ है।"

अ.बापदादा 13.3.90

"क्वेश्चन मार्क हुआ और व्यर्थ का खाता आरम्भ हुआ और जब व्यर्थ का खाता आरम्भ हो जाता है तो समर्थी समाप्त हो जाती है और जहाँ समर्थी समाप्त हुई, वहाँ माया किसी न किसी रूप में अवश्य आयेगी।... फिर योगी से योद्धे बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 18.1.97

"ज्ञानी और योगी आत्मा के हर कर्म स्वत: युक्तियुक्त अर्थात यथार्थ श्रेष्ठ कर्म होंगे। ... कोई भी कर्म रूपी बीज फल के सिवाए नहीं होता है।"

अ.बापदादा 14.1.90 पार्टी 2

"तन का भाग्य अर्थात् तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न अनुभव नहीं होगा, तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा।... कर्मभोग को चलायेगा लेकिन कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। ... योगी जीवन कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाला है।" अ.बापदादा 19.11.89

* योग का विधि-विधान है कि आत्मा जिसका कुछ पढ़ता है, सुनता है, जिसके विषय में सोचता है, जिससे ईर्ष्या-घृणा करता है ... उसकी याद स्वत: आती है और जिसकी याद बुद्धि

में होती है, उसके गुण-धर्म आत्मा पर अवश्य प्रभावित होते हैं। हमारी बुद्धि में एक निराकार परमात्मा और साकार बाबा की याद रहे, उसके लिए हमको उनसे से ही सुनना है, उनको ही देखना है।

"ज्ञान से योग का स्वत: ही सम्बन्ध है। जो "ज्ञानी तू आत्मा" है, वह "योगी तू आत्मा" अवश्य ही है। और जो ज्ञानी और योगी होगा, उसकी धारणा श्रेष्ठ होगी या कमजोर होगी ?"

अ.बापदादा 13.10.92

"कोशिश कर अपने को आत्मा निश्चय करो तो बाप की याद भी रहेगी। देह में आने से फिर देह के सब सम्बन्ध याद आयेंगे। यह भी एक लॉ है। ... किसकी रग टूटती नहीं है। पूछते हैं - बाबा यह क्या है! अरे, तुम नाम-रूप में क्यों फँसते हो। एक तो तुम देहाभिमानी बनते हो और दूसरा फिर तुम्हारा कोई पास्ट का हिसाब-किताब है, वह धोखा देता है।"

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"आत्माभिमानी होंगे तो बाप की याद आयेगी। अगर देहाभिमानी होंगे तो लौकिक सम्बन्धी याद आयेंगे। ... अभी संगमयुग पर ही तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनाया जाता है।"

सा.बाबा 6.6.05 रिवा.

"चित्र के साथ विचित्र भी याद आया ? ... विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जायेंगे। अगर सिर्फ चित्र को और उसके चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आये।"

अ.बापदादा 18.1.70

"बाप कहते हैं - देही-अभिमानी होकर बैठो। ... घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझने से परमात्मा बाप याद आयेगा। अगर देह याद आई तो देह का बाप याद आयेगा। इसलिए बाप कहते - आत्माभिमानी बनो। ... "हम आत्मा हैं" - यह पहला शब्द याद नहीं करेंगे तो कच्चे पड़ जायेंगे।"

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

"याद से याद मिलती है। ... जो बच्चे याद नहीं करते, उनको बाप भी याद नहीं करते। उनको बाप की याद भी नहीं पहुँचती है। याद से याद जरूर मिलती है। बच्चों को भी बाप को याद करना है।"

सा.बाबा 21.5.04 रिवा.

"सर्विस से, योग से बल भी आता है क्योंकि तुम्हारी कमाई होती है। कमाई करने वाले को कभी उबासी नहीं आती है, झुटका नहीं आता है। कमाई से पेट भर गया फिर नींद नहीं आती। ... उबासी देवाला निकालने वाले खाते हैं।"

सा.बाबा 17.5.04 रिवा.

"कहेंगे हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे ? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं। ... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"आशिक-माशुक एक दो को याद करते हैं तो याद करते ही वह सामने खड़ा हो जाता है।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"कोई कहे मैं 6-8 घण्टा योग में रहता हूँ तो बाबा मानेगा नहीं। ... मुरली सुनना याद नहीं है। यह तो धन कमाते हो। याद में तो सुनना बन्द हो जाता है। ... मुरली सुनने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। ... याद से ही सतोप्रधान बनेंगे।"

सा.बाबा 29.1.04 रिवा.

"कोई को समझ में भी नहीं आता कि योग किसको कहा जाता है। मंजिल बहुत ऊंची है। अपने को अशरीरी आत्मा समझना है। ... तुम्हारी यह अशरीरी होने की प्रैक्टिस है। यह प्रैक्टिस तुम यहाँ ही करते हो। ... पिछाड़ी में तुमको कोई याद न आये, शरीर ही याद न रहे तो बाकी क्या रहा। मेहनत है इसमें।"

सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

हठयोग

हठयोग में परमात्मा का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मा के मन का योग प्राय: किसी भौतिक वस्तु या व्यक्ति से ही होता है और उसमें दैहिक क्रियायें ही होती हैं इसलिए आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती। प्राय: सभी प्रकार के हठयोगों में मन को किसी स्थान विशेष, मूर्ति विशेष, व्यक्ति विशेष पर केन्द्रित करके मन को एकाग्र करने का पुरुषार्थ होता है और उनके हठयोग साधना का कोई न कोई भौतिक या परा-भौतिक सफलता प्राप्ति का लक्ष्य होता है। उस एकाग्रता के आधार पर आत्मा को विभिन्न प्रकार के अलौकिक अनुभव भी होते हैं और आत्मिक शक्तियां भी जाग्रत होती हैं। आत्मा को अनेक प्रकार के अलौकिक कार्य करने की सिद्धियां भी प्राप्त होती हैं, उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति भी होती है परन्तु जिस आराध्य से या साधन से वे सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, मन को एकाग्र करते हैं वे साधन, उनके गुण-धर्म पतनोन्मुख हैं, समयान्तर में विनाश को पाने वाले हैं, इसलिए प्राप्त करने वाले को प्राप्त सिद्धियाँ भी समयान्तर में विनाश को अवश्य प्राप्त होती हैं और परिणाम स्वरूप आत्मा की उतरती कला ही होती है।

राजयोग

राजयोग का आधार अनादि-अविनाशी, सर्वशक्तिवान परमात्मा है, इसलिए उसके द्वारा आत्मा को जो सिद्धि प्राप्त होती है, वह हठयोग से अपेक्षाकृत अधिक दीर्घकालिक होती है क्योंकि परिवर्तनशील जगत में ड्रामा के अनादि-अविनाशी नियमानुसार, काल-चक्र के अनुसार सब कुछ परिवर्तन अवश्य होता है, उस अनुसार ये सिद्धियां भी परिवर्तित होती हैं। राजयोग का ज्ञान, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही देते हैं, जिससे आत्मा का योग परमात्मा के साथ रहता है। परमात्मा अविनाशी है, आत्मा भी अविनाशी है इसलिए राजयोग के द्वारा प्राप्ति भी अविनाशी होती है और उससे आत्मा की चढ़ती कला होती है।

प्राय: हर ब्राह्मण आत्मा अर्थात् जो इस ज्ञान मार्ग में आई है या किसी भी प्रकार से सहयोगी है, उसका योग परमात्मा से है ही और उसकी चढ़ती कला अवश्य होती है परन्तु चढ़ती कला की गति में अन्तर अवश्य होता है। आत्मा की सबसे तीव्र गति की चढ़ती कला तब होती है, जब आत्मा अपने को आत्मा निश्चय करके एक परमात्मा की स्नेहयुक्त अव्यभिचारी याद में होती है, जिसमें देह और देह की दुनिया की सभी वस्तु और व्यक्तियों की याद भूली हुई हो क्योंकि उस स्थिति में आत्मा में ईश्वरीय ज्ञान, गुण और शक्तियों को ग्रहण करने की शक्ति अधिक होती है।

प्रकृति के नियमानुसार हमारे हर वायब्रेशन का प्रभाव इस विश्व के वातावरण पर पड़ता है। योगयुक्त स्थिति में जो वायब्रेशन निर्माण करते हैं वह सारे विश्व के वातावरण को प्रभावित करता है अर्थात् योगयुक्त बनाता है, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे सुख का निर्माण करता है। परमात्मा की याद अर्थात् योग के अतिरिक्त जो भी वायब्रेशन निर्माण करते हैं वह विश्व के वायुमण्डल को दूषित करता है और परिणाम स्वरूप हमारे लिए दुख का कारण बनता है।

* राजयोग सबका राजा है। जिसकी बुद्धि में यथार्थ रीति परमात्मा पिता की याद होती है, उनके बताये नियम-संयम का पालन करता है, उसको दैहिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक विधि-विधान स्वत: ही टच करता है और उसका दैहिक स्वास्थ्य भी अवश्य अच्छा रहता है।

"तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। इसलिए बाबा कहते हैं रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को योग का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो तो तुम भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का ज्ञान सुमिरण करने से तुम सुख का दान देते हो। सुख होता है

धन से।" सा.बाबा 7.1.02 रिवा.

"लगन विघ्न को समाप्त कर देती है। ... जहाँ स्नेह है, वहाँ सहयोग अवश्य प्राप्त होता है।"
अ.बापदादा 20.2.84

परमात्म का परिचय मिलते ही एक सेकण्ड में निर्णय करके परमात्मा का बन जाने वाले को परमात्मा की जो मदद और सफलता मिलती है, वह सोच-सोच कर निर्णय करने वाले को नहीं मिलती। इसके आधार पर ही प्राप्ति में भी नम्बरवार बन जाते हैं।

"ऐसे दान करने वाले जितना दूसरों को देते हैं, उतना पद्मगुणा बढ़ता है। तो यह देना अर्थात् लेना हो जाता है। ... अपना सब कुछ जमा करने का यह गोल्डन चान्स लेने वाले हो ना। अगर सोचकर किया तो सिलवर चान्स हो गया।"
अ.बापदादा 14.1.85 माताओं का ग्रुप II

बाबा ने कहा है - अपन को आत्मा समझकर मुझे याद करो तो जो जिसको याद करता है तो उसके समान बनकर ही याद कर सकता है। तो निराकार बाप को याद करना अर्थात् निराकारी स्थिति में स्थित होकर निराकार शिवबाबा को याद करना और फरिश्ता बनकर फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाबा को याद करना। निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति दोनों ही सर्व दुखों से मुक्त, सर्व प्रकार के भय से मुक्त, परम-सुख और परम-शान्तिमय हैं। दोनों ही स्थितियों में आत्मा को निर्भय, निश्चिन्त परम सुख-शान्ति की अनुभूति होती है।

"कोई भी गुरु गोसाई आदि का फोटो भी न रखना है। इसलिए बाबा फोटो निकालने को भी मना करते हैं। फोटो में तुम इस मम्मा-बाबा को देखते रहेंगे और ही वह समय तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। बाबा-मम्मा का चित्र देखने लग पड़ेंगे, शिव बाबा भूल जायेगा। तुम आत्माओं को तो निराकार बाप को याद करना है। इसलिए मैं किसके पास फोटो आदि देखता हूँ तो फाड़ भी देता हूँ। समझते हैं यह मम्मा-बाबा के फोटो देखते रहते हैं। मरने समय अगर उनको ही देखते रहे तो दुर्गति हो जायेगी। तुमको याद करना है एक शिव बाबा को। उसका फोटो निकल नहीं सकता। इसलिए बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता है। परन्तु क्या करें। बच्चे नाराज़ न हो जायें इसलिए खुश कर लेते हैं। परन्तु समझते हैं इनका शिव बाबा से योग टूटा हुआ है, तब कहते हैं बाबा हमारे साथ फोटो निकालो। वे गुरु लोग तो बहुत खुश होते हैं। बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता। कहाँ साकार में फंस कर मर न जायें।" सा.बाबा 16.7.72 रिवा.

कोई भी विकर्म या श्रीमत के विरुद्ध कर्म हम करेंगे या कर लेते हैं तो वह हमारे मन

में जाने-अन्जाने संकल्प-विकल्प अवश्य लायेगा और वे संकल्प-विकल्प हमको परमात्मा से योगयुक्त होने नहीं देंगे और जो परमात्मा से योगयुक्त नहीं, उसको निर्संकल्प और निर्विकल्प होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव हो नहीं सकता।

"अभी हम बाबा के द्वारा नॉलेजफुल बनते हैं।... बाप कहते हैं यह भी ड्रामा की भावी। ड्रामा का तुमको मालूम पड़ा है तब तो तुम अब पुरुषार्थ करते हो। जानते हो अब खेल पूरा होता है, बाबा से वर्सा लेना है। ये ड्रामा का राज़ और कोई की बुद्धि में नहीं है। बाबा ने आकर सब राज़ समझाये हैं।" सा.बाबा 22.08.03 रिवा.

"योग के साथ-साथ ज्ञान भी चाहिए। मनुष्यों के पास ज्ञान तो कुछ भी नहीं है। अनेक प्रकार के योग लगाते हैं। किसी न किसी की याद में बैठते होंगे, ज्ञान की बात नहीं। ... ज्ञान धन को भी याद करते, धन देने वाले को भी याद करते हैं। जितना याद में रहेंगे, उतना अवस्था परिपक्व होती जायेगी। ... मनुष्य बेचारे कुछ नहीं जानते हैं, इसलिए अपने को उन पर तरस पड़ता है।... अविनाशी ज्ञान रत्न हैं तो फिर दान करना चाहिए। दान नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या?" सा.बाबा 23.08.03 रिवा.

* आत्मा के विषय में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त, जिसका ज्ञान परमात्मा ने हमको दिया है और जो हमारे आध्यात्मिक जीवन की उन्नति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, वह है - आत्मा अपना आप ही मित्र और आप ही अपना शत्रु है। अपने दुख के लिए दूसरे को दोषी मानना या ठहराना अज्ञान है और ज्ञान का अपमान है। ज्ञान का अपमान सो ज्ञान-दाता का अपमान।

* आत्म-स्थिति में स्थित आत्मा की स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होती है। उसकी आवश्यकता, इच्छा और पूर्ति में पूर्ण सामन्जस्य (Balance) होता है, जिस कारण उसको कब भी अप्राप्ति का अनुभव नहीं होता है। प्राप्ति और इच्छाओं में सामन्जस्य न होना अर्थात् अप्राप्ति की अनुभूति ही जीवात्मा के दुख का मूल कारण है।

* आत्मा जब अपने यथार्थ स्वरुप, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के यथार्थ ज्ञान को भूलकर पंच तत्वों के सम्पर्क में आती है तो तत्वों की जड़ता आत्माओं को अवश्य प्रभावित करती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास अवश्य होता है और आत्मा धीरे-धीरे तमोप्रधान-पतित बनती जाती है। पावन बनने या आत्मिक शक्ति के विकास का एकमात्र साधन आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के ज्ञान को समझकर अपने को आत्मा निश्चय करके परमात्मा की स्नेह सम्पन्न याद या परमात्मा का सानिध्य ही है।

"बाप कहते हैं मेरी याद बिगर विकर्म विनाश होने का और कोई उपाय नहीं है। शिव बाबा को

याद कर उनकी गोद में नहीं आते तो गोया पर-पुरुष की गोद में आते हो, गोया पापात्मा बन पड़ते।" सा.बाबा 24.9.71 रिवा.

* निराकारी आकर्षण (निराकार आत्मा, निराकार परमात्मा, निराकारी वतन की स्मृति) ही विकारों से मुक्ति का साधन और चढ़ती कला का या पावन बनने का एकमात्र आधार है। परमात्मा की याद से ही पावन बन सकते हैं।

* स्वस्थिति में स्थित आत्मा को परमात्मा का आकर्षण अर्थात् स्मृति स्वत: आती है क्योंकि प्रकृति का विधान है कि जड़ या चेतन हर तत्व अपने मूल तत्व की ओर स्वभाविक ही आकर्षित होता है।

* अपने मूल स्वरूप (निराकारी अथवा बीज रूप अथवा अशरीरी) में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद स्वत: आती है और ये याद ही आत्मिक शक्ति में वृद्धि करके सम्पूर्णता को प्रदान करती है।

"अन्त समय बीमारी में जब ज्यादा पीड़ा होती है तो सब भूल जाता है। बाकी जिसका किसमें भाव होता है, वह सामने आ जाता है। तुम्हारा तो अन्जाम है - मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। ... पिछाड़ी में जिसके साथ जास्ती प्रीत होती है, वही याद आते हैं।"

सा.बाबा 10.2.03 रिवा.

"ब्राह्मण-ब्राह्मणी अथवा ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाकर यदि पतित होते हैं या विकार में जाते हैं तो वे बी.के. नहीं हुए। ब्राह्मण कभी विकार में नहीं जाते। विकार में जाने वाले को शूद्र कहा जाता है। ... फैमिलियरिटी का हल्का नशा भी माया का नशा है। बाबा ने समझाया है कि इससे भी बोझा चढ़ जायेगा क्योंकि तुम व्यभिचारी बन गये।"

सा.बाबा 11.2.03 रिवा.

"इस मम्मा-बाबा को याद नहीं करना है। इनको याद करने से जमा नहीं होगा। इनमें शिवबाबा आते हैं तो याद शिवबाबा को करना है। ऐसे नहीं कि इनमें शिवबाबा है इसलिए इनकी याद रहे। नहीं, शिवबाबा को वहाँ याद करना है। ... जो सच्चा-सच्चा बाबा को याद करने वाला होगा, उनकी आंख आपेही समय पर खुल जायेगी। बाबा अपना अनुभव बताते हैं कि कैसे रात को आंख खुल जाती है।" सा.बाबा 24.10.03 रिवा.

"बाबा को याद कर भोजन खाओ तो तुमको ताकत मिलेगी। अशरीरी होकर तुम पैदल आबूरोड तक चले जाओ तो भी तुमको कुछ भी थकावट नहीं होगी। बाबा शुरू में यह प्रैक्टिस कराते थे।" सा.बाबा 21.10.03 रिवा.

"दुनिया में तो रिश्वतखोरी बहुत है। तुमको रिश्वत लेने की कोई दरकार ही नहीं है। ... बाबा

कहते हैं - बच्चे किसी से भी मांगो मत। तुम दाता के बच्चे हो ना। तुमको देना है, न कि मांगना है। तुमको जो कुछ चाहिए वह शिवबाबा के भण्डारे से मिल सकता है... और कोई से लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ता है क्योंकि उसने शिवबाबा के भण्डारे में नहीं दिया।"

सा.बाबा 10.1.07 रिवा.

"अगर ब्रह्मा को याद कर दिया तो तुम्हारा जमा ही नहीं होगा। ब्रह्मा को तो लेना है शिवबाबा के खजाने से, जिससे शिवबाबा ही याद पड़ेगा। तुम्हारी चीज क्यों लेवें। ब्रह्माकुमार-कुमारियों को देना भी रांग है। बाबा ने समझाया है - तुम कोई से भी चीज लेकर पहनेंगे तो उनकी याद आती रहेगी।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"परमात्मा के लिए मात-पिता का गायन भारत में ही होता है।... मात-पिता अब दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं।... कलियुग के अन्त में राजाई है नहीं। यह है पढ़ाई से राजाई। ... यह है पढ़ाई से राजाओं का राजा बनना। एक बाप ही है, जो राजाई पद के लिए राजयोग सिखाते हैं। ... गीता से तो राजाई पद मिलता है।... जरूर भगवान ने विनाश के पहले पढ़ाया है, उसके बाद ही विनाश हुआ होगा, फिर राजयोग से सतयुग में राज्य पद पाया। यह है संगम।"

सा.बाबा 1.3.07 रिवा.

योग से विकर्म विनाश

योग से विकर्म विनाश होते हैं। योग और मृत्यु दोनों में समानता है। मृत्यु के समय आत्मा देह से अलग हो जाने के कारण आत्मा को देह और पुराने दैहिक सम्बन्धियों की विस्मृति हो जाती है और योग में भी देह और देह की दुनिया की विस्मृति हो जाती है तब ही आत्मा निर्संकल्प और निर्विकल्प होकर योग की परम सिद्धि मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। मृत्यु के समय इस जीवन की विशेष घटनायें जो प्राय: कटुता भरी ही होती हैं या वे व्यक्ति जिनसे उसका विशेष राग या द्वेष होता है वे याद आते हैं और आत्मा को देह के त्याग में बाधा डालते हैं और दुखी करते हैं, ऐसे ही योग में भी दिन की, जीवन की विशेष घटनायें या जन्म-जन्मान्तर की कटु स्मृतियां जो देहाभिमान के रूप में, विकारी संस्कारों के रूप में आत्मा में संचित हैं, वे याद आती हैं और योग की सिद्धि मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में बाधा डालती हैं। देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप की गहन स्मृति और परमात्म प्यार की लगन की अग्नि में अर्थात् ज्वाला स्वरूप की स्थिति में देहाभिमान से आत्मा में संचित सब स्मृतियों को भुला कर देही अभिमानी स्थिति के मधुर सुख और परमात्म स्मृति के मधुर सुख की गहन

अनुभूति की स्मृति आत्मा में संचित हो जाती है, जिससे आत्मा को मृत्यु के समय देहाभिमान की कटु स्मृतियां दुखी न करके आत्मिक स्वरूप और परमात्म प्यार की मधुर स्मृतियाँ सुखदायी बन जाती हैं। जैसे मृत्यु के बाद पूर्व जन्म की स्मृतियां भूल जाती हैं, नये जन्म की स्मृतियाँ जाग्रत हो जाती हैं ऐसे ही कार्य व्यवहार में भी ये योग की मधुर स्मृतियाँ जाग्रत होती रहती हैं। इसलिए योग की गहन अनुभूति और लम्बे समय की अनुभूति परम आवश्यक है। यही योग द्वारा विकर्म विनाश की प्रक्रिया या सिद्धान्त है।

किसी से प्यार कब जुटता है जब उससे प्राप्त प्राप्तियों का महत्व अनुभव होता है, उससे प्राप्त सुख की अनुभूति होती है, उसके सानिध्य में रहते हैं, उससे किसी वस्तु या सुख की प्राप्ति की आशा होती है। तो परमात्मा ने हमको क्या-क्या दिया है, क्या दे रहा है और उससे क्या-क्या प्राप्त हो सकता है - ये सब जानकारी होगी, उसका अनुभव होगा तब ही उससे लगन लगेगी। यद्यपि जिससे कोई कटु अनुभव भी होता है तो उसकी भी याद आती है परन्तु अभी समय है परमात्मा से प्राप्त मधुर स्मृतियों की लगन में मगन होकर जीवन की समस्त कटु अनुभवों की स्मृतियों को भुला देने का।

"विकर्म विनाश तो करना ही है। हिसाब-किताब चुक्तू तो होना ही है। फिर नये सिर पार्ट बजाना है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराये पावन बनाये बाप साथ में ले जाते हैं। ये सब राज़ समझने के हैं। ... भल सब याद करते हैं परन्तु बिगर परिचय। इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे।" सा.बाबा 1.8.03 रिवा.

* आत्मा में ही खाद पड़ती है। आत्मा की खाद है विस्मृति। स्मृति स्वरूप बनना ही आत्मा की खाद निकालना है अर्थात् आत्मा पर कर्मों का प्रभाव आत्मिक स्वरूप की स्मृति या विस्मृति के रूप में पड़ता है। परमात्मा आकर ज्ञान देकर हमारी देहाभिमानी स्मृति अर्थात् आत्मिक स्वरूप की विस्मृति को बदल कर आत्मिक स्वरूप की स्मृति को जाग्रत करते हैं।

"तत्व को याद करने से उन्हों के पाप नहीं कटते हैं, तत्व को याद करने से बल भी नहीं मिलता है ... बाप की याद से तुम देही-अभिमानी बनेंगे, बल मिलेगा, पाप भी कटेंगे।"

सा.बाबा 1.8.06 रिवा.

सामान्य नियम और सिद्धान्त, जो दोनों ही प्रकार के योगों पर समान रूप से प्रभावित होते हैं और जिससे आत्मा की स्थिति प्रभावित होती है -

* निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित आत्मा को संकल्प-बोल-कर्म के सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। वह किसको वरदान देता तो उसके लिए वरदान सिद्ध होता है और अभिशाप देता तो अभिशाप बन जाता है। इसलिए हठयोग में निर्विकल्प और निर्संकल्प

समाधि का वर्णन किया गया है।

* आत्माभिमानी स्थिति में स्थित आत्मा को विकारों की आकर्षण नहीं होती और न ही उसे कोई भय होता, इसलिए उसका व्यर्थ चिन्तन नहीं होता, जिसके परिणाम स्वरूप उससे कोई विकर्म नहीं होता और जब विकर्म नहीं तो दुख-अशान्ति भी नहीं हो सकती। हठयोग का अच्छा अभ्यास करने वाले भी जीवन में सुख-शान्ति का अनुभव करते हैं।

* कोई भी आत्मा सत्य मार्ग पर एक कदम उठाती है तो परमात्मा उसको हजार कदम मदद अवश्य करता है। हठ से साधना करने वालों को भी ड्रामा अनुसार परमात्मा की मदद मिलती है, उनको अनुभूति होती है।

* बाबा ने कहा है - जो जितना रुस्तम होता है, माया भी उससे उतना ही रुस्तम होकर लड़ती है, उसके सामने उतनी ही परीक्षाऐं आती हैं। परीक्षाओं में पास हो तब तो रुस्तम कहा जायेगा। हठयोग और राजयोग दोनों का अभ्यास करने वालों के सामने परीक्षायें आती ही हैं और जो उन परीक्षाओं में पास होता है, उनका ही योग सिद्ध होता है।

* लक्ष्य, भावना और कर्म के आधार पर जीवन की दिशा निर्धारित होती है और जैसा कर्म होता है, उस अनुसार ही आत्मा को सुख या दुख का अनुभव होता है।

* ज्ञानी और पवित्र आत्मा सदा सन्तुष्ट, सुखी, शान्त, निर्भय, निर्वैर ... होगी। आत्मा जितना सतोप्रधान बनती जायेगी, उतनी खुशी बढ़ती जायेगी।

* पवित्र आत्मा, परमपिता परमात्मा की स्मृति में स्थित आत्मा की यथोचित इच्छायें और आवश्यकतायें समय पर अवश्य पूर्ण होती है।

* आत्म-स्थिति में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद सहज रहती है और उसको कर्म में थकावट नहीं होती क्योंकि उसके संकल्प सीमित और समर्थ रहते हैं। देहाभिमानी आत्मा के संकल्प व्यर्थ और मात्रा में अधिक होते हैं, जिससे उसकी आत्मिक शक्ति अधिक क्षीण होती है, परिणाम स्वरूप उसको थकावट अधिक होती है। हठयोग का अभ्यास करने वाले भी व्यर्थ संकल्पों पर नियन्त्रण रखते हैं, जिससे उनकी आत्मिक शक्ति का ह्रास साधारण व्यक्ति के ह्रास के अपेक्षाकृत कम होता है।

* जिससे राग-द्वेष होगा, उसकी याद अवश्य आयेगी और वह याद अन्त में आत्मा के पतन का कारण बन जायेगी क्योंकि अन्त समय जैसी स्मृति होगी, वैसा ही भविष्य जीवन होगा।

* हम जो देखते, सुनते, पढ़ते हैं, उसका चिन्तन अवश्य होता है और जिसका चिन्तन होता

है, वह बात स्मृति पटल पर छप जाती है। स्मृति पटल पर छपी हुई बात का वर्णन भी अवश्य होता है और जैसा चिन्तन और वर्णन होता है, उसका जीवन पर वैसा प्रभाव अवश्य होता है अर्थात् उस अनुसार ही उसका जीवन बन जाता है, इसलिए आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए पुरुषार्थी को इस सत्य का अवश्य ध्यान रखना चाहिए अर्थात् अपनी दृष्टि-वृत्ति, पठन-पाठन पर पूरा ध्यान रखना चाहिए।

"अनेक तरफ विस्तार में भटकने वाली बुद्धि समेटने के शक्ति के आधार पर एक में एकाग्र हो गई है वा अभी भी कहाँ विस्तार में भटकती है ? समेटने की शक्ति और समाने की शक्ति का प्रयोग किया है या सिर्फ नॉलेज है ? अगर इन दोनों शक्तियों को प्रयोग करना आता है तो उसकी निशानी सेकेण्ड में जहाँ चाहो जब चाहो बुद्धि उसी स्थिति में स्थिर हो जायेगी।"

अ.बापदादा 17.4.83

विश्व-नाटक के आध्यात्म सम्बन्धित विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान बड़े ही कल्याणमय हैं और सत्य हैं। कोई भी विधि-विधान के कार्य में कब भी कोई भूल-चूक नहीं हो सकती। सृष्टि का हर नियम अपने समय पर बिल्कुल एक्यूरेट कार्य करता है। आध्यात्मिक उन्नति और सुखमय जीवन के लिए विश्व-नाटक के मुख्य-मुख्य विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त, जिनके विषय में ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको ज्ञान दिया है और जिनके विषय में जानना अति आवश्यक है, उनमें से मुख्य-मुख्य निम्नलिखित है:-

विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता का विधि-विधान,

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का सिद्धान्त,

विश्व-नाटक का सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त

पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल का सिद्धान्त,

सृष्टि-परिवर्तन का विधि-विधान,

आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब का विधि-विधान,

आत्माओं के पतित और पावन बनने का विधि-विधान,

परमधाम से आने और वापस जाने का विधि-विधान,

जन्म-पुनर्जन्म का विधि-विधान,

ज्ञान और भक्ति और उनके सम्बन्ध का विधि-विधान

विभिन्न धर्मों की स्थापना का विधि-विधान,

स्वर्ग और नर्क का विधि-विधान आदि आदि

सृष्टि के ये सब विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बिल्कुल सही रीति अपने समय पर कार्य करते हैं। चेतन्य तो चेतन्य लेकिन जड़ प्रकृति भी अपने नियमानुसार समय पर अपना कार्य एक्यूरेट करती है। सृष्टि के इन नियम-सिद्धान्तों को परमात्मा नहीं चलाता है, जैसी कि भक्ति मार्ग में मनुष्यों की मान्यता है और न और कोई चलाता है। ये सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार स्वत: चलते रहते हैं। परमात्मा तो इन सबका पूर्ण ज्ञाता है, जो आकर इन सब विधि-विधानों का राज़ समझाते हैं, जिनको जानककर आत्मायें इस विश्व-नाटक का परम-सुख अनुभव करती हैं, पतित से पावन बनती हैं और ये विश्व-नाटक तमोप्रधान से सतोप्रधान स्थिति में परिवर्तित होता है।

"विधि और विधान दोनों के साथ ही विधाता की याद आती है। अगर विधाता याद रहे तो विधि और विधान दोनों साथ स्मृति में रहेगा।... जब विधि और विधान दोनो साथ रहेंगे तब सफलता गले का हार बन जायेगी।" अ.बापदादा 7.6.70

इस विश्व-नाटक में कोई आत्मा किसी आत्मा के लिए न साधक है और न ही बाधक है। हर जीवात्मा की स्वतन्त्र सत्ता है और हर आत्मा अपने ही कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है। इसीलिए गीता में कहा गया है - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। एक दार्शनिक कवि ने भी लिखा है - करु बहियां बल आपनो छाड़ि बिरानी आश, जाके आंगन है नदी सो कस मरै प्यास। इस सत्य को जानकर यथार्थ पुरुषार्थ कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करो।

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का अपना-अपना अनादि-अविनाशी पार्ट है परन्तु इस कल्याणकारी नाटक की परम न्यायपूर्ण व्यवस्था है कि हर आत्मा को सुख-शान्ति-आनन्द के समान अवसर मिले हैं। हर आत्मा अपने पुरुषार्थ अनुसार किसी भी परिस्थिति में सुख-शान्ति-आनन्द का अनुभव कर सकती है क्योंकि आत्मा का आत्मिक स्वरूप सुख-शान्ति-आनन्द से परिपूर्ण है, सम्पन्न है, उसके लिए किसी साधन-सम्पत्ति, पद, व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है, वह आत्मा का अपना स्वतन्त्र स्वरूप है और उसके लिए पुरुषार्थ करने में आत्मा स्वतन्त्र है।

* विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और उसके सभी नियम-सिद्धान्त अविनाशी हैं, उन

अनादि-अविनाशी सिद्धान्तों के अनुसार हर 5000 वर्ष के बाद हर चीज को अपने मूल स्वरूप और अपने मूल स्थान पर आती ही है।

* हर तत्व अपने मूल तत्व की ओर स्वत: ही आकर्षित होता है। यथा आग की लौ सूर्य की तरफ, पानी सागर की तरफ, ऐसे ही आत्मायें परमात्मा की ओर स्वत: और सहज ही आकर्षित होती हैं।

* जैसे सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार हर तत्व अपने मूल तत्व की ओर स्वत: ही आकृष्ट होता है वैसे ही देहाभिमान से स्वतन्त्र होने पर आत्मा, परमात्मा की ओर स्वत: आकर्षित होती है। आत्माओं को परमात्मा की याद दुख-अशान्ति के समय स्वत: आती है।

* आत्मा, परमात्मा और ड्रामा अनादि-अविनाशी हैं, इनकी रचना का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है परन्तु ये विश्व-नाटक हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है और परमात्मा आकर संगमयुग पर इसका ज्ञान देकर नये चक्र का आरम्भ करते हैं। सभी आत्मायें देह रूपी वस्त्र धारण कर अपना अनादि-अविनाशी निश्चित पार्ट बजाती हैं।

* यह विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है अर्थात् जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी निश्चित ही अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम कल्याणकारी (Accurate, Just Auspicious) है - ये इस विश्व-नाटक की विशेषता है।

परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि-चक्र के पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का जो ज्ञान दिया है, वह परमात्मा के द्वारा दिये गये अनेक बहुमूल्य रत्नों में से सबसे मूल्यवान रत्न है, जो इस रत्न के महत्व को समझ लेता है, उसके जीवन में सफलता परछाई की तरह सदा साथ रहती है और वह इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करता है।

* क्रिया-प्रतिक्रिया पर आधारित यह स्वचालित नाटक है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। हर क्रिया की अवश्य प्रतिक्रिया होती ही है।

* समय और पार्ट के अनुसार मिलना और बिछुड़ना, प्राप्ति और अप्राप्ति प्रकृति का नियम है, जिस पर ये विश्व नाटक आधारित है। जो आज हमारा है वह कल पराया होगा और पराया हमारा होगा। इस विश्व-नाटक में न कोई व्यक्ति सदा काल के लिए अपना है और न ही कोई वस्तु अपनी है। जब तक हमारा उनके साथ पार्ट है, जब तक ही वे अपने हैं। पार्ट पूरा होने के बाद एक सेकण्ड भी अपने नहीं रहते।

* इस विश्व-नाटक में कोई किसी का न मित्र है और न ही कोई किसी का शत्रु है। मित्र-शत्रु का तो केवल पार्ट है, पार्ट बजाने वाली सभी आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान भाई-भाई हैं और एक ही घर परमधाम की रहने वाली हैं।

* विश्व-नाटक के अनादि नियमानुसार हर प्राप्ति सबको प्राप्त नहीं है, न ही एक समान प्राप्तियां सबको प्राप्त हैं और न ही सर्व प्राप्तियाँ किसी एक व्यक्ति को हो सकती हैं परन्तु हरेक को कोई न कोई विशेष प्राप्ति अवश्य है, जिससे वह इस विश्व नाटक में विशेषात्मा है। जो अपनी प्राप्तियों को देखता और उनका उपयोग करता, वह सदैव हर्षित रहता है। जो आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होता है, वह सर्व प्राप्ति स्वरूप स्थिति का अनुभव करता है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सम्पन्न है और उसमें स्थित आत्मा को किसी अप्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है।

* विविधता इस विश्व-नाटक की शोभा है इसलिए सबको एक समान प्राप्तियां नहीं हो सकती हैं। सतयुग-त्रेता में भी सर्व प्राप्तियाँ सबको एक जैसी नहीं होंगी। सबकी प्राप्तियों में भिन्नता अवश्य होगी परन्तु हर मनुष्य की आवश्यकता, इच्छा और प्राप्ति में पूर्ण सन्तुलन होने के कारण सबको सदा सुख-शान्ति की अनुभूति होती है।

* ये विश्व-नाटक एक सृष्टि-चक्र है, इसकी हर घटनायें चक्रवत सतत गतिशील हैं। इस सृष्टि-चक्र में अनेक चक्र हैं या कहें कि हर घटना का एक चक्र है और सभी एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होती हैं। यथा 24 घण्टे में रात-दिन का चक्र, मास में चन्द्रमा का, साल में ऋतुओं का चक्र, जन्म-मरण का चक्र, बीज और झाड़ का चक्र, सोने-जागने का चक्र आदि आदि अनेक चक्र हैं, जो निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होते हैं और सभी चक्र 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होते है। इसीलिए गायन है - बनी बनाई बन रहीं अब कछु बननी नाहिं, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये।

"तुम समझ सकते हो जो भी इस दुनिया में जड़ वा चेतन हैं, वे सभी हू-ब-हू रिपीट करेंगे।"

सा. बाबा 9.1.69

* संकल्प से उसके अनुरुप विचार तरंगें (वायब्रेशन्स) उत्पन्न होती हैं और उन विचार तरंगों से वातावरण बनता है, विचार तरंगों के साथ कोई अति सूक्ष्म तत्व अवश्य प्रवाहित होते हैं, जो वातावरण का निर्माण करते हैं और वे संकल्प, वातावरण, स्पर्श से, दृष्टि से तथा निकट रहने से एक-दो को प्रभावित करते हैं और एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं।

"किरणें सूर्य को स्वत: सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, निस्वार्थ स्नेह स्वत:

ही दाता बाप को सिद्ध करता ही है। ... यह सर्व आत्माओं की शुभ भावना, शुभ कामना का किला आत्माओं को परिवर्तन कर लेता है। ... वायुमण्डल का किला सर्व के सहयोग से ही बनता है।" अ.बापदादा 1.10.87

"खान-पान की बहुत परहेज रखना है। किसी भी विकारी द्वारा प्राप्त, बनाया हुआ या साथ में खाना पतनकारी है।" सा.बाबा 20.11.69 रिवा.

* जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता - ये अटल सत्य है अर्थात् इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु ये विश्व-नाटक हर क्षण परिवर्तनशील है। मनुष्य का कर्तव्य है साक्षी होकर इस विश्व नाटक के दर्शन का आनन्द लेना और पार्ट बजाना।

"ड्रामा को भी बहुत महीनता से समझना होता है। जो पास्ट हो गया, उसका चिन्तन नहीं। मर गया खलास। तुम अपने काम में लग जाओ। बीती को चितवो नहीं और आगे की कोई आश भी न रखो।" सा. बाबा 9.5.69 रिवा.

* जन्म और मृत्यु इस विश्व नाटक की अभिन्न और अपरिहार्य घटनायें हैं, जिनके आधार पर ये नाटक सतत गतिशील है। जन्म-मृत्यु का कारण प्रकृति, व्यक्तियों के सम्बन्ध व पार्ट का बन्धन है, जो आत्मा को परमधाम से इस धरा पर लाता है और एक शरीर छोड़, दूसरा धारण करने के लिए बाध्य करता है। वास्तव में मृत्यु इस विश्व-नाटक की सबसे अच्छी घटना है और आत्मा के लिए प्रकृति का वरदान है क्योंकि उसके कारण ही आत्मा को नया वस्त्र मिलता है परन्तु देहाभिमान के कारण वह अभिषाप बन गई है क्योंकि हर मनुष्य मृत्यु से भयभीत होता है।

* स्मृति-दृष्टि-वृत्ति-कृत्ति और सृष्टि का अनादि सम्बन्ध है, जिसके आधार पर इस विश्व नाटक में आत्माओं का पार्ट चलता है और बदलता है।

* यह विश्व लेन-देन का एक विशाल नाटक है। कल्प के आदि से अन्त तक अर्थात् 5000 वर्ष तक सभी आत्माओं का जो इस धरा पर आ जाती हैं, उनका आपस का लेन-देन का हिसाब चलता रहता है और अन्त में पुरुषोत्तम संगमयुग पर सभी का हिसाब-किताब पूरा अवश्य होता है और नये विश्व के लिए नये हिसाब-किताब का बीजारोपण होता है अर्थात् नये कल्प के लिए बनाते हैं। परमात्मा इसके लिए निमित्त बनता है।

* पुराना भूलना भी इस विश्व-नाटक में एक वरदान है। पुराना भुलाने के लिए समयानुसार नींद, मृत्यु, योग, अन्त समय में परमधाम जाने पर आत्मा अनुपाततः पुराना भूल जाती है। इस पुरानी स्मृति को भूलने के आधार पर ही आत्मा अपने को रिफ्रेश अनुभव करती है। कल्पान्त

में परमधाम जाने से पुराना सब भूल जाता है और नया खेल आरम्भ होता है।

"सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में अभी ही है ... वहाँ यह मालूम हो फिर तो सुख की भासना ही न रहे। यही सोच रह जाये कि हम फिर नीचे गिरेंगे।" सा. बाबा 11.1.69

* इस विश्व-नाटक का ज्ञान यथार्थ रीति समझने और धारण कर साक्षी स्थिति में स्थित होने से ही जीवात्मा को जीवन में रहते मुक्ति-जीवनमुक्ति की अवस्था का अनुभव होगा। वास्तव में अभी का मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है क्योंकि मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव ही नहीं होगा और जीवनमुक्ति धाम अर्थात् सतयुग में जीवनबन्ध का न ज्ञान होगा और न अनुभव होगा तो वहाँ जीवनमुक्ति के अनुभव का भी प्रश्न नहीं उठता है।

* यह विश्व एक स्व-चालित नाटक है। इस विश्व नाटक के नियमानुसार हर आत्मा को अपने कर्म एवं पुरुषार्थ अनुसार फल स्वत: मिलता है, उसका न कोई हिसाब रखता है और न ही कोई फल देता है। कर्म की भी नूँध है और कर्म-फल की भी नूँध है, जिसके अनुसार हर कर्म का फल स्वत: ही समय पर मिलता है। परमात्मा श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान देता है, जो उस ज्ञान को समझकर श्रेष्ठ कर्म करता है, वह उसका श्रेष्ठ फल पाता है।

ये भी इस विश्व नाटक का नियम है कि हर आत्मा को अन्त समय अपने पाप-कर्मो की स्मृति अवश्य आती है, जिसके आधार पर आत्मा उन कर्मों का पश्चाताप करती है।

* ये भी विश्व-नाटक का एक नियम है कि जो जितना रुस्तम बनता है, उसको उतनी ही परीक्षायें आती हैं, जिनको पास करने के बाद ही वह आगे बढ़ता है। इसके अनुसार माया भी उससे उतना ही रुस्तम बनकर लड़ती है। दुनिया में भी बड़ा पहलवान बड़े पहलवान से ही लड़ना चाहता है।

"बाप ही आकर बेहद का वर्सा देते हैं अर्थात् विश्व का मालिक बनाते हैं। कहते हैं - मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। अगर मैं मालिक बनूँ तो फिर मुझे माया से हार भी खानी पड़े। माया से हार भी तुम खाते हो और फिर जीत भी तुमको पानी है।"

सा.बाबा 12.11.03 रिवा.

"तुम कहेंगे बाबा अंग्रेजी नहीं जानते। बाबा कहते हैं - मैं कहाँ तक सब भाषायें बैठ बोलूँगा। मुख्य है ही हिन्दी। मैं तो हिन्दी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका शरीर धारण किया है, वह भी हिन्दी ही जानता है, तो जो इनकी भाषा है, वही मैं भी बोलता हूँ। और कोई भाषा में थोड़ेही पढ़ाऊंगा। मैं फ्रेन्च बोलूँ तो यह कैसे समझेगा ? मुख्य तो इनकी बात है। इनको तो पहले समझना है ना।" सा.बाबा 13.11.03 रिवा.

"बाबा कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा ही मुझे प्रिय है। ऐसे नहीं कि योगी प्रिय नहीं हैं। जो ज्ञानी होंगे, वे योगी भी जरूर होंगे। योग परमपिता परमात्मा के साथ रखते हैं। योग बिगर धारणा नहीं होगी।" सा.बाबा 18.12.03 रिवा.

"कोई भल निश्चयबुद्धि हैं परन्तु ज्ञान नहीं उठाते हैं तो उसी घराने के अन्दर दास-दासी बनते हैं। आगे जाकर एक्यूरेट साक्षात्कार होगा, पता पड़ेगा हम कौनसे नम्बर में दास-दासी बनेंगे।" सा.बाबा 17.12.03 रिवा.

"जगत अम्बा गॉडेज आफ नॉलेज है, तो उनके बच्चों में भी वही नॉलेज होगी। ... गॉड ने इनको नॉलेज दी और यह गॉडेज कहलाई। जगत अम्बा तो माता ठहरी। वही फिर दूसरे जन्म में गॉडेज आफ वेल्थ लक्ष्मी बनती है। ... नॉलेज सोर्स आफ इन्कम है। यह है सच्ची कमाई जो सच्चे बाप द्वारा होती है।" सा.बाबा 19.12.03 रिवा.

* जीवात्मा जहाँ रहती है, जहाँ से गुजरती है वहाँ पर उसकी आभा बहुत समय तक विद्यमान रहती है, जो कभी-कभी दूसरे मनुष्यों को देखने में भी आती है।

* जब जीवात्मा किसको याद करती है तो उसको उसका आभास होता है, जिसके कारण कब कब वह उसके पास पहुँच भी जाता है।

"जो बाप को याद करते हैं, उनको करेण्ट मिलती है क्योंकि याद से याद मिलती है ... यह कायदा है। ... जो अच्छी रीति बाप को याद करते हैं तो बाप की याद भी याद से मिलती है। वे ऑटोमेटीकली बाप को खैंचते हैं, याद करने के लिए।"

सा.बाबा. 2.4.69 रिवा.

* मनुष्य के अन्दर जो संकल्प या भावना होती है, उसका प्रभाव उसके बोल-वायब्रेशन से प्रगट अवश्य होता है।

"कोई ज्ञान भी अच्छा सुनाते हैं, भाषण भी अच्छा करते हैं परन्तु क्रिमिनल आई होगी तो भाषण रिफाइन नहीं होगा।" सा.बाबा 24.4.69 रिवा.

"बाप तो है एवर हैपी। वास्तव में बाप के लिए ऐसे भी नहीं कह सकते। अगर वह हैपी बने तो अनहैपी भी बनना पड़े। बाबा तो इन सबसे न्यारा है। जो बाप की महिमा है, वह तुम्हारी भी है। इस समय तुम्हारी ये महिमा है, फिर भविष्य में तुम्हारी महिमा अलग होगी।"

सा.बाबा 7.3.71 रिवा.

* कल्प के संगम युग पर ही परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं तब ही आत्माओं को ये ज्ञान मिलता है। बाकी सारे कल्प में ये ज्ञान किसी भी आत्मा में न होता है और न हो सकता है क्योंकि ये

ज्ञान देने का पार्ट परमात्मा का ही है।

* मूल वतन है निराकारी दुनिया, जहाँ न कोई पार्ट है और न ही आत्मा किसी तरह से प्रभावित होती है। सूक्ष्म वतन है फरिश्तों की दुनिया, जिनके द्वारा कोई विकर्म नहीं होता परन्तु सुकर्म अवश्य होते हैं, जिसके फल स्वरूप उनकी स्थिति पर सूक्ष्म प्रभाव अवश्य होता है।

* वातावरण में जैसे वायब्रेशन्स होते हैं, उनका प्रभाव उस वातावरण में रहने वाले के मन को भी प्रभावित करता है। योग के लिए वातावरण या तो न्युटरल हो या योग के वायब्रेशन्स से सरचार्ज हो तो मन सहज एकाग्र होता है और योग में आनन्द की अनुभूति होती है।

"भल उतरती कला तो सतयुग-त्रेता में भी है। कलायें कम होती हैं परन्तु दुख नहीं होता क्योंकि प्रारब्ध भोग रहे हैं। भल कहा जाता सतयुग-त्रेता में प्रारब्ध भोग रहे हैं परन्तु डिटेल में आयेंगे तो सीढ़ी थोड़ा-थोड़ा उतरना होता है। बाकी इतना जरूर कहेंगे कि दुख तब होता है जब तुम तमोप्रधान बनते हो।" सा.बाबा 21.5.71 रिवा.

* हर आत्मा को अपने पार्ट के समय अनुसार आधा समय सुख, आधा समय दुख में अवश्य व्यतीत करना होता है।

* हर आत्मा जब परमधाम से आती है तब वह पूर्ण जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करती है और वापस परमधाम जाती है तो उस समय अन्तिम क्षणों में भी पूर्ण जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में होती है।

* विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार समय पर यज्ञ में सहयोग करने वाले को बाप अन्त तक सहयोग अवश्य करता है।

सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार जड़ तत्वों का चेतन आत्मा पर और आत्मा के संकल्प और वायब्रेशन्स का प्रभाव जड़ तत्वों पर अवश्य ही पड़ता है परन्तु सदा ये सम्भव नहीं कि उन स्थूल 9 रत्नों को धारण करने से आत्मा की सर्व ग्रहचारी उतर जाये। यदि ऐसा होता तो सतयुग में तो आत्मायें अनेक रत्नों से मालामाल थीं, तो उन पर ग्रहचारी आनी ही नहीं चाहिए परन्तु सृष्टि के नियमानुसार उनकी आत्मिक शक्ति क्षीण होती गई और उसके अनुसार स्थूल धन-सम्पत्ति में भी कमी होती गई, जिसके परिणाम स्वरूप द्वापर से आत्मा पर विकारों की ग्रहचारी आई और आत्मा के कर्म गिरते गये, जिनके परिणाम स्वरूप दुख-अशान्ति हुई और दिनोदिन बढ़ती गई। अभी कलियुग के अन्त में ये दशा हो गई कि कोई भी आत्मा ग्रहचारी से मुक्त दृष्टिगोचर नहीं होती है, इसलिए अभी परमात्मा को सबकी ग्रहचारी उतारने के लिए आना पड़ा है। अभी परमात्मा ने जो ज्ञान रत्न दिये हैं, उनमें से किसी एक की

भी यथार्थ रीति जीवन में धारणा है तो आत्मा पर कोई ग्रहचारी आ नहीं सकती और यदि आ भी गई तो इन ज्ञान रत्नों की स्मृति आते ही ग्रहचारी समाप्त हो जायेगी। यथार्थ सत्य तो ये है कि इन ज्ञान रत्नों के प्रभाव को ही मनुष्यों ने उन स्थूल रत्नों से सम्बद्ध कर दिया है। परमात्मा के दिये गये ज्ञान रत्नों के ऐसे महत्व और प्रकृति के नियम को समझकर उनको अच्छी रीति जीवन में धारण करने से ही आत्मा सर्व प्रकार की ग्रहचारी से मुक्त हो जायेगी।

बाबा के द्वारा दिये गये 9 ज्ञान रत्न

1. आत्मा का ज्ञान,
2. परमात्मा का ज्ञान,
3. त्रिमूर्ति का ज्ञान
4. सृष्टि चक्र का ज्ञान,
5. कल्प वृक्ष का ज्ञान,
6. कर्मों का ज्ञान,
7. योग का ज्ञान
8. स्वर्ग एवं नर्क का ज्ञान,
9. संगम युग का ज्ञान,

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई स्थूल हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

* कुछ बी.के. और नॉन-बी.के. भाई-बहनों का मत है कि अभी हम आत्मायें जो संकल्प करते, उसकी विचार-तरंगे वातावरण में अनन्त काल तक रहती हैं, द्वापर युग में ऋषि-मुनि उन विचार तरंगों के आधार पर शास्त्रों की रचना करते हैं। परन्तु सृष्टि के नियमानुसार जो बनता है, वह नाश अवश्य होता है, इसलिए ये विचार तरंगें भी जो अभी बनी हैं, वे विनाश भी अवश्य होंगी और कल्प बाद फिर बनेंगी। ये भी एक प्रश्न है कि ये विचार तरंगें जो बनी वे विनाश कब और कैसे होंगी? यदि हमारे संकल्पों की विचार-तरंगें वहाँ जायें तो खराब संकल्पों की विचार-तरंगें भी जायेंगी और वहाँ भी अनेक मानसिक बीमारियों को जन्म देंगी, मानसिक परेशानियां पैदा करेंगी।

इस विषय में वास्तविकता ये है कि ये विचार तरंगे वातावरण में बहुत काल तक रहती तो हैं परन्तु अनन्त काल तक नहीं। सृष्टि के अनादि-अविनाशी नियमानुसार विनाश के समय आत्मायें और तत्व सभी पावन होकर अपने मूल स्वरूप में आ जाते हैं। वातावरण से सभी विचार-तरंगें प्राय: समाप्त हो जाती है, इसीलिए सतयुग के वातावरण में बहुत कम विचार-तरंगें होती है और जो विचार-तरंगें होती हैं, वे भी शुद्ध होती हैं, जिससे मानव-मन पर उनका बहुत कम प्रभाव होता है और वे कोई अशुद्ध प्रभाव नहीं डालती हैं, इसलिए उनको कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठते, जिससे नई विचार तरंगें भी वातावरण में कम ही सम्मिलित होती हैं। इस सम्बन्ध में बाबा के महावाक्य हैं कि मैं 5 तत्वों सहित सभी आत्माओं को पावन बनाता हूँ।

बाबा अभी जो गीता ज्ञान सुनाता है और ब्राह्मणों की इस सत्य ज्ञान के मनन-चिन्तन की विचार-तरंगें वातावरण में रहती तो हैं और अन्य आत्माओं के मन को भी प्रभावित करती हैं, उसके आधार पर ही अन्त में सभी आत्माओं को घर जाने की प्रेरणा मिलेगी और सभी आत्मायें वापस घर परमधाम जायेंगी। विनाश के बाद सभी वातावरण शान्त हो जायेगा और सभी तत्व अपने मूल स्वरूप में आ जायेंगे। ये भी एक प्रश्न है कि अभी बाबा जो ज्ञान सुनाता है, उसको भक्ति मार्ग में अंश रूप में कैसे लिखते हैं।

द्वापर युग से जब माया की प्रवेशता होती है, आत्माओं में देहाभिमान आ जायेगा और अन्य धर्मों की स्थापना होती है तो आपस में द्वन्द भी आरम्भ हो जाता है, मनुष्यों के संकल्प-विकल्पों की गति बढ़ जाती है, जिससे अनेक प्रकार की विचार-तरंगें वातावरण में बढ़ती जाती हैं, जिसके फल स्वरूप वातावरण अशान्त होता जाता है, जो आत्माओं को भी अशान्त करता है। फिर अशान्त आत्मायें शान्ति की चाहना में एकान्त में जाकर चिन्तन करते तो उस शान्त वातावरण में ड्रामानुसार उन आत्माओं को संगमयुग की कुछ स्मृतियाँ जाग्रत होती हैं, जिनके आधार पर शास्त्र लिखते हैं। किसको साक्षात्कार आदि भी होते हैं, साक्षात्कार में आकाशवाणी आदि सुनाई देती है या कुछ लिखत आदि जैसे साक्षात्कार भी होते हैं और वे शास्त्रों आदि की रचना करते हैं।

* वर्तमान जगत में अनन्त जीवात्मायें हैं, जिनकी असंख्य विचार तरंगें वातावरण में विद्यमान हैं, जो आत्माओं के मन को उद्वेलित करके अशान्त कर रहीं हैं। सतयुग में बहुत कम जीवात्मायें होंगी और विनाश के समय की वैराग्य वृत्ति और परमधाम से सतोप्रधान स्थिति में आने के कारण आत्माओं के संकल्प भी बहुत कम होंगे, संकल्पों में कोई अन्तर्द्वन्द भी नहीं

होगा, जिससे वातावरण में बहुत कम विचार तरंगें होंगी, इसलिए मन उद्वेलित नहीं होगा, सदा शान्ति और सुख का अनुभव करेगा क्योंकि जब मन उद्वेलित नहीं तो आत्माओं को मानसिक अशान्ति हो नहीं सकती। इसलिए सभी आत्मायें शान्ति में होंगी।

"आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ वानप्रस्त में। तुम मुझे पुकारते हो। ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।"

सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

* जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता है परन्तु जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा - ये एक सनातन सत्य है क्योंकि इस विश्व नाटक की हर घटना आगे आने वाली घटना का आधार है। इस पर ही ये विश्व नाटक सतत्गतिशील है।

"अपनी पॉवरफुल वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले हैं ... को भूल सोचते वातावरण बदलेगा तो मैं बदलूँगी, वातावरण अच्छा होगा तो स्थिति अच्छी होगी। लेकिन वातावरण को बदलने वाला कौन ? यह भूल जाते हो इस कारण वातावरण का प्रभाव पड़ जाता है।"

अ.बापदादा 31.5.77

* यह विश्व लेन-देन का एक विशाल नाटक है। आदि से अन्त तक अर्थात 5000 वर्ष तक हर आत्मा का अनेक आत्माओं के साथ परस्पर लेन-देन का हिसाब चलता रहता है परन्तु कल्पान्त में सभी आत्माओं का सभी के साथ का हिसाब-किताब पूरा अवश्य होता है।

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - कर्मों की इस गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो- सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।"

अ.बापदादा 3.5.77

"बच्चों को मात-पिता की सेवा कर उनका उजूरा उतार देना है। बच्चों पर माँ बाप की पालना का कर्जा चढ़ता है। अब यह बाप तुम्हारी पालना कर रहे हैं, तो तुमसे पहले ही सरेण्डर कराते हैं। सब कुछ मुझको दे दो, उससे फिर तुम्हारी पालना भी होती है।"

सा.बाबा 4.04.03 रिवा.

"सन्यासियों को भी ... यह एक लॉ है, जिसको छोड़कर भागे हो, उनका फिर कल्याण करना है। पहले तुम अच्छी रीति समझो फिर चेरिटी बिगन्स एट होम। तुमने स्त्री को छोड़ा है। अगर बाल-ब्रह्मचारी होगा तो मात-पिता को छोड़ा होगा, उनको भी समझाना है। कायदे-कानून तो पहले समझाने हैं।"

सा.बाबा 25.03.03 रिवा.

"बच्चे जानते हैं - हम परमपिता परमात्मा से भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिए आजीविका प्राप्त करते हैं। इसमें जो विघ्न डालते हैं, उन पर कितना पाप चढ़ता होगा। सो भी समझकर विघ्न डालते हैं। बेसमझ पर तो कोई दोष नहीं, वह तो सारी दुनिया बेसमझ है।"

सा.बाबा 26.03.03 रिवा.

* कोई भी अपवित्र आत्मा परमधाम वापस जा नहीं सकती, इसलिए सृष्टि के नियमानुसार हर आत्मा को पावन बनना ही है, इसलिए हर आत्मा को पुरुषार्थ अवश्य करना होता है। पुरुषार्थ क्या है ? देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी बनने का प्रयत्न ही पुरुषार्थ है। इसके लिए ज्ञान का मनन-चिन्तन करके, उसकी जीवन में धारणा और देही-अभिमानी बनने का सतत अभ्यास परमावश्यक है।

* यदि गरीबी, शारीरिक रोग-शोक, घटना के दुख की आत्मा को भासना है तो वह उसका कर्मभोग है। यदि गरीबी, रोग-शोक होते भी आत्मा को उसकी भासना नहीं तो उसको कर्मभोग नहीं कहेंगे। देह से न्यारे होने के अभ्यास द्वारा ही आत्मा इस कर्मभोग के प्रभाव से मुक्त हो सकती है। यही योग की सफलता है।

* मनुष्य जो पढ़ता है, वही सोचता है अर्थात् उस पर उसका चिन्तन अवश्य चलता है और वह चिन्तन उसके जीवन को प्रभावित करता है, जिससे वह उसके अनुरूप ही बन जाता है।

* सृष्टि के नियमानुसार योग में या किसी पवित्र स्थान पर मनुष्य अच्छा या बुरा जो संकल्प करता है, उसका प्रभाव तीव्रता से आत्मा पर पड़ता है और उस प्रकार उसका फल मिलता है।

* शुद्ध-पवित्र स्थान पर शुद्ध-पवित्र अवस्था अर्थात् योग स्थिति में कोई अच्छा संकल्प उठता है तो वह सिद्ध अवश्य होता है परन्तु कारणें-अकारणें कोई बुरा संकल्प भी उठता है तो वह भी सिद्ध होता है अर्थात् कार्य करता है परन्तु अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा ही होगा। बाबा के महावाक्य - इस पवित्र, वरदान भूमि में अपवित्र संकल्प, अपवित्र दृष्टि-वृत्ति भी महापाप के खाते में जमा होता है।

"व्यर्थ संकल्प के कारण तन और मन दोनों कमजोर हो जाते हैं। ... ऐसे समय पर मन की स्थिति भी सबसे पॉवरफुल स्टेज की चाहिए। पॉवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति। .. इसके लिए एक तो अमृतवेले की पॉवरफुल स्थिति की सेटिंग करो और दूसरी बात - जब ज्ञान की गुह्य बातें सुनते हो .. सुनना अर्थात् उस स्वरूप के अनुभवी बनना।"

27.5.77 अ.बापदादा

* मनुष्य का जहाँ लगाव होता है, जिससे प्रेम होता है, उसके प्रति आत्मा में झुकाव अवश्य होता है और उसके कारण आत्माओं से अनेक प्रकार के विकर्म होते हैं, जो उसके दुख का

कारण बनते हैं।

"लगाव की भी स्टेजें हैं। एक है सूक्ष्म लगाव, जिसको सूक्ष्म आत्मिक स्थिति में स्थित होकर ही जान सकते हैं। दूसरे हैं स्थूल रूप के लगाव, जिनको सहज जान सकते हैं। ... बिना लगाव के बुद्धि की आकर्षण वहाँ जा नहीं सकती वा बुद्धि का झुकाव वहाँ जा नहीं सकता। तो लगाव की चेकिंग हुई झुकाव।" अ.बापदादा 29.5.77

"सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन जरा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दण्ड के साक्षात्कार अनेक वण्डरफुल रूप के होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पाँव ठहर न सकेंगे, हर दाग़ स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे।"

अ.बापदादा 3.5.77

* समय और परिस्थिति के वशीभूत किये गये पुरुषार्थ और स्वेच्छा से किये गये पुरुषार्थ के फल में महान अन्तर होता है तथा स्वेच्छा से अनुकूल परिस्थिति में किये गये पुरुषार्थ और विपरीत परिस्थिति में स्वेच्छा से किये गये पुरुषार्थ के फल में भी महान अन्तर होता है। यथा- बचपन और युवावस्था में अन्तिम लक्ष्य को बुद्धि में रखकर किये गये पुरुषार्थ का फल वृद्धावस्था में मजबूर होकर किये गये पुरुषार्थ से श्रेष्ठ होगा।

* इस विश्व-नाटक में अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है अर्थात् विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाले व्यक्ति अहंकार या हीनता आ नहीं सकती। ये विश्व नाटक पूर्ण न्यायपूर्ण है। विविधता और भिन्नता ही इस नाटक की विशेषता है, जिससे ये नित्य नया और विशेष रुचिकर है।

* मनुष्य के संकल्पों-कर्मों से जड़ तत्व भी प्रभावित होते हैं। हमारे अभी के संकल्पों और कर्मों से प्राकृतिक तत्व सतोप्रधान स्थिति को पाते हैं, उनसे अच्छा खाता जमा होता है, जिसके फलस्वरूप स्वभाविक रूप में सतयुग में या अन्य समय पर उसके अनुसार कर्ता को साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, तत्व सुखदायी होते हैं। इसके विपरीत हमारे जिन कर्मों से तत्वों पर विपरीत प्रभाव होता है अर्थात् तत्वों में तमोप्रधानता आती है, तत्व दूषित होते हैं, उसके परिणाम स्वरूप आत्मा को दुख-अशान्ति अवश्य सहन करनी पड़ती है। ऐसे ही किसी साधन-सम्पत्ति हम दुरुपयोग करते हैं तो उससे भी हमारा जमा का खाता कम होता है और उसके फल स्वरूप हमको पश्चाताप करना पड़ता है।

"संगमयुग समर्थ युग है, सफलता का युग है, व्यर्थ का नहीं है।... अगर समय सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधा कल्प का पूरा समय राज्य अधिकारी बनेंगे। अगर कभी-कभी सफल

करेंगे तो राज्य अधिकारी भी कभी-कभी बनेंगे। समय सफल की प्रालब्ध यह है। स्वांस सफल कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते हार्टफेल नहीं होगी।... ज्ञान के खजाने को भी सफल करो तो ज्ञान का अर्थ है - समझ। वहाँ इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मंत्रियों की जरूरत नहीं होगी।" अ.बापदादा 31.12.02

"तुम जानते हो - बाबा हमारे द्वारा ही भारत को सुखधाम बना रहे हैं। जिसके द्वारा बना रहे हैं, जरूर वही सुखधाम का मालिक बनेंगे। बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए।"

सा.बाबा 3.2.2001 रिवा.

* मनुष्य को ज्ञान हो या न हो परन्तु समय और स्थिति अपना काम अवश्य करती है और मनुष्य को कर्मानुसार उसका सूक्ष्म आभास अर्थात् फीलिंग अवश्य होता है। वर्तमान संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव सर्वोत्कृष्ट अनुभव है, चढ़ती कला का अनुभव है। सतयुग में जीवनमुक्त स्थिति है परन्तु उस जीवनमुक्ति और वर्तमान की जीवनमुक्ति में रात-दिन का अन्तर है और ये आभास सतयुग में भी आत्मा को सूक्ष्म में रहता ही है, जो द्वापर से दुख-अशान्ति के कारण प्रत्यक्ष होता जाता है।

"अमृतवेले की टचिंग सदा यथार्थ होगी। अमृतवेले मन का भाव मिक्स करके नहीं बैठो लेकिन प्लेन बुद्धि होकर बैठो फिर टचिंग यथार्थ होगी।"

अ.बापदादा 20.1.84 डबल विदेशी बच्चों प्रति

"बच्चों को ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त की स्मृति आई है। और धर्म वालों को स्मृति नहीं आ सकती। विस्मृति भी तुमको हुई है, स्मृति भी तुमको आई है। ... ड्रामा प्लेन अनुसार ऐसे हुआ था।" सा.बाबा 11.10.02 रिवा.

"बापदादा भी तीन बार माफ करते हैं। तीन बार फिर भी चान्स देते हैं, इसलिए कोई भी संकोच नहीं करे। संकोच को छोड़कर स्नेह में आ जायें तो फिर से अपनी उन्नति कर सकते हैं।" अ.बापदादा 20.2.84

* आत्मा की वृत्ति और वायब्रेशन का प्रभाव अन्य आत्माओं पर भी उसी क्षण पड़ता ही है भले दोनों उसे स्पष्ट अनुभव करें या न करें परन्तु उसकी प्रतिक्रिया सूक्ष्म में होती अवश्य है, जो उसके हाव-भाव से प्रगट होती है। वृत्ति और वायब्रेशन का मूल है संकल्प। जैसा संकल्प वैसे वृत्ति और वायब्रेशन और उस अनुरूप उनका प्रभाव और प्रतिक्रिया अवश्य होती है।

* शरीर (स्थूल या सूक्ष्म) के साथ ही आत्मा की शक्ति रेडियेट होती है - जैसे दीपक जलता है तो ही प्रकाश होता है। परमधाम में किसी प्रकार शक्ति रेडियेट नहीं हो सकती।

* इस विश्व-नाटक का अन्तर्जाल (Internate) इतना प्रभावशाली है कि भारत में किये गये

कर्म या कर्म के बोये हुए बीज का फल आत्मा को लन्दन में भी भोगना पड़ेगा। आत्मा अपने कर्म का फल भोगने के लिए बाध्य है। भारत में बैठी आत्मा के संकल्प का प्रभाव लण्डन में बैठी हुयी आत्मा को भी प्रभावित करता है।

"भारत महान है तो भारतवासी भी महान हैं।... डबल विदेशियों को भी मधुवन व भारत से प्यार क्यों है? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे। यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलासॉफी से भी प्यार नहीं होता, भारत की कल्चर से भी प्यार नहीं होता। प्यार है, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो।"

अ.बापदादा 25.10.02

* साधन-सम्पत्ति-सत्ता परिवर्तनशील है परन्तु जिसको वह अपने शुभ कर्म और न्यायपूर्ण ढंग से प्राप्त होती है, वही उसका यथार्थ स्वामी होता है, उसको उसके उपभोग और उपयोग का पूर्ण अधिकार होता है। वह उसका सदुपयोग करता है तो उसका वर्तमान और भविष्य जीवन सुखमय होता है। जो साधन-सम्पत्ति हम अनाधिकार रूप से प्राप्त करते हैं, ऐसी सम्पत्ति का उपभोग करते हैं तो वह हमारे ऊपर बोझा होता है और हमारा भविष्य दुखमय होता है, उससे हमारा कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब बनता है।

* जो जिसके विषय में सोचता है, चिन्तन करता है, उसका रूप उसके सामने अवश्य आता है। एक परमात्मा की ही याद रहे, उसके लिए, इस सत्य का विशेष ध्यान रहना चाहिए कि हमारी बुद्धि में किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का चिन्तन न चले।

* आत्मा की सूक्ष्म प्राप्तियाँ (ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, अतीन्द्रिय सुख) हर आत्मा को परमपिता परमात्मा के द्वारा वर्से के रूप में ड्रामा के पार्ट और समय अनुसार सर्व आत्माओं को समान रूप से प्राप्त होती हैं परन्तु इस विविधतापूर्ण नाटक में स्थूल प्राप्तियों में समानता हो नहीं सकती। विविधता ही इसकी शोभा है। ये स्थूल प्राप्तियाँ हर आत्मा को अपनी सूक्ष्म प्राप्तियों की धारणा अनुसार अपने पुरुषार्थ से प्राप्त होती हैं। इसलिए किसी की प्राप्तियों से ईर्ष्या न करके, हीनता और अहंकार से मुक्त होकर अपनी प्राप्तियों का सदुपयोग करना ही सुखी जीवन का आधार है।

* यह सृष्टि एक सुख-दुख का बहुत कल्याणकारी खेल है। दुख भी कल्याणकारी है क्योंकि दुख के अनुभव के बाद ही सुख का अनुभव सम्भव है। यह विश्व-नाटक बहुत ही न्यायपूर्ण है क्योंकि इसमें हर आत्मा के दुख और सुख दोनों का अद्वितीय सन्तुलन है।

* परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव दूसरों को भी देने

अर्थात् सुनाने से वृद्धि को प्राप्त होता है। स्थूल जगत में भी कोई ज्ञान या कला दूसरों को सिखाने से विकास को पाती है।

"खजाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि को प्राप्त करना। चाहे स्वयं को सम्पन्न बनाने के कार्य में लगायें, चाहे स्वयं की सम्पन्नता द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा के कार्य में लगायें। विनाशी धन खर्चने से खुटता है परन्तु अविनाशी धन खर्चने से पद्मगुणा बढ़ता है, इसलिए कहावत है खर्चो और खाओ।"

अ.बापदादा 17.4.84

* हर आत्मा जो साकार शरीर धारण करती है, उसका सूक्ष्म शरीर होता ही है, उस सूक्ष्म शरीर के साथ ही आत्मा एक स्थूल शरीर छोड़कर दूसरे में प्रवेश करती है। ये सूक्ष्म शरीर भी जन्म, समय, संकल्प और कर्मों के अनुसार परिवर्तन होता है।

* सतयुग-त्रेता युग में पाप-पुण्य नहीं होता है क्योंकि दुख की फीलिंग नहीं होती इसलिए पाप-पुण्य का संकल्प ही नहीं, केवल प्रारब्ध भोगते हुए स्थिति पतनोन्मुख रहती है। द्वापर से दुख आरम्भ होता इसलिए उस भावना से कर्म होते हैं और पाप-पुण्य भी आरम्भ होता है परन्तु द्वापर से पाप की गति तीव्र और पुण्य की गति मन्द होती है, इसलिए स्थिति के पतन की गति तीव्र हो जाती है। संगम पर ज्ञान और परमपिता परमात्मा के संग के कारण पुण्य की गति तीव्र और पाप की मन्द हो जाती है, इसलिए स्थिति उत्थानोन्मुख होती है। संगमयुग में भी आत्मा से पुण्य और पाप दोनों ही होते हैं। परन्तु पाप-कर्म दिनोंदिन कम होते जाते हैं और पुण्य कर्म दिनोंदिन बढ़ते जाते हैं।

* बाबा किसी की मदद करे और किसी की न करे, ऐसा नहीं है। बाबा तो न्यायकारी, समदर्शी है। उसने हमको विश्व-नाटक के सभी नियम-सिद्धान्त बता दिये हैं। सृष्टि के नियमानुसार जो परमात्मा को याद करेगा, उसको ड्रामा अनुसार परमात्मा की मदद अवश्य मिलेगी ही और जो उसकी याद में होगा, उसकी रक्षा भी अवश्य होगी। ये इस विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है।

"यहाँ तुम समझते हो ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ब्रह्मा मुख द्वारा पढ़ाते हैं। बाप आया हुआ है। भक्तों के पास भगवान को आना ही है। नहीं तो भक्त भगवान को क्यों याद करते हैं?"

सा.बाबा 6.2.03 रिवा.

"फांसी की सजा कोई कड़ी सजा नहीं है, वह तो बहुत इजी है। मनुष्य आपघात भी बहुत खुशी से करते हैं। शिव पर, देवताओं पर झट बलि चढ़ जाते हैं।... वे आपघात करने वाले ऐसे

नहीं समझते हैं, वे तो शरीर को खत्म कर देते हैं, दुख के कारण। फिर भी दुखी जन्म ही पाते हैं।... जीवघात करने वालों में भी वेराइटी होती है। जैसे कोई-कोई स्त्री पति के पिछाड़ी अपना शरीर होमती है। वह बात अलग है।" सा.बाबा 6.2.03 रिवा.

"ये जगत अम्बा, जगत पिता जो स्थापना अर्थ निमित्त बने हुए हैं, वे ही फिर स्वर्ग में पालन-कर्ता बनेंगे।" सा.बाबा 6.2.03 रिवा.

* ज्ञान देना ज्ञानदाता का कर्तव्य है, उस ज्ञान को धारण करना और अभ्यास एवं चेकिंग करके स्थिति बनाना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है, जिसके आधार पर आत्माओं के प्राप्ति के नम्बर बनते हैं। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होना। विचार करो - बाप ने तुमको क्या दिया ? ज्ञान दिया, श्रेष्ठ बुद्धि दी, सफलता का अवसर दिया... हमने उसको पाकर क्या किया ?

"अभी सभी विंग्स वाले प्रैक्टिकल सबूत दो, जो सब तरफ फैल जाये कि मेडीटेशन द्वारा सब कुछ हो सकता है। सबका अटेन्शन मेडीटेशन के तरफ हो, आध्यात्मिकता की तरफ हो। समझा। मेडिकल वाले भी और बीमारियों का भी कर सकते हैं। थोड़ा ट्रायल करते जायेंगे तो फैलता जायेगा। दुआ भी सब कुछ कर सकती है - यह प्रत्यक्ष करो।"

अ.बापदादा 15.12.03

* इस सृष्टि की हर घटना एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होती है और 5000 वर्ष अर्थात कल्प के बाद हू ब हू पुनरावृत्त होती है। जैसे 24 घण्टे के बाद दिन-रात, भूख-प्यास, निन्द्रा का संकल्प स्वत: आता है, 30 दिन के बाद चन्द्रमा का चक्र अर्थात् मास का चक्र पुनरावृत्त होता है, 365 दिन के बाद सूर्य-पृथ्वी का चक्र अर्थात् साल पुनरावृत्त होता है, ऐसे ही कुछ अन्य घटनायें 12 वर्ष के बाद या एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत्त होती हैं, 5000 वर्ष के बाद कल्प का चक्र हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। यह पुनरावृत्ति ही इस सृष्टि की अनादि-अविनाश्यता का आधार है।

* आत्मा का किसी भी व्यक्ति या घटना की ओर कहाँ भी अंशमात्र भी आकर्षण होगा तो उसकी तरफ संकल्प अवश्य अवश्य उठेगा और कोई भी संकल्प जो मन में उठता है, वह आत्मा की स्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। उसके प्रभाव से आत्मा या तो चढ़ती कला में या उतरती कला में अवश्य जायेगी। परमपिता परमात्मा का, ज्ञान का, ईश्वरीय सेवा का आकर्षण आत्मा की चढ़ती कला का आधार बनता है और देह और देह की दुनिया की किसी भी व्यक्ति, वस्तु, दृश्य का आकर्षण आत्मा की उतरती कला का निमित्त बनता है।

* जैसे समान तत्व अपने मूल तत्व या समान तत्व की ओर आकर्षित होते हैं, ऐसे ही समान सेल्स भी एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं और यह आकर्षण आत्माओं के विकारी और निर्विकारी बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कोई पुरुष और स्त्री काम विकार विकार में जाते हैं तो ये सेल्स एक-दूसरे में प्रवाहित हो जाते हैं, जिससे उनका आकर्षण बढ़ जाता है। ये सेल्स स्पर्श से या एक दूसरे के उपयोग किये संसाधनों के द्वारा भी एक-दूसरे में प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए ही बाबा ने एक-दूसरे के विस्तर पर बैठना, एक-दूसरे के प्रयोग की हुई चीजों को उपयोग करने के लिए मना की है। ये सेल्स ज्ञानेन्द्रियों से दूर होते भी प्रवेश कर जाते हैं। ये सेल्स के प्रवेश होने की किया ही योगबल की सन्तानोत्पत्ति में अहम् भूमिका निभाती है। ये प्रभाव एक-तरफा भी होता है तो दोनों तरफ से भी हो सकता है।

किसी दृश्य को देखने और स्मृति करने से अन्त:पटल पर प्रभाव होता है, जिससे बाद में भी वह स्मृति आती रहती है, इसलिए ही बाबा ने कहा है कि जब किसको देखते हो और मन में चंचलता आती है तो उस स्थान से तुरन्त हट जाना चाहिए।

* यह विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है। इस नाटक के अवलोकन का और पार्ट बजाने का अपना विशेष सुख है, जो अलौकिक है। साक्षी होकर इसे देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने में ही इसका सच्चा सुख है परन्तु विश्व-नाटक सुख-दुख का एक खेल है, इसलिए इसके अनादि-अविनाशी नियमानुसार आत्माओं को अज्ञानता के वश भी होना ही है। जहाँ अज्ञानता है, वहाँ देहाभिमान की प्रवेशता अवश्य होगी और जहाँ देहाभिमान है, वहाँ 5 विकार अवश्य होंगे। विकारों के कारण मनुष्यों के विकर्म होते हैं और उसके परिणाम स्वरूप आत्माओं को दुख की अनुभूति होती है। सत्यता ये है कि दुख ही सुख की अनुभूति का आधार है और सुख ही दुख की अनुभूति का आधार है। इसलिए दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। ""मैं कौन हूँ?" इसमें ही ज्ञान सागर का सारा सार समाया हुआ है। यह तो आप सब जान गये हो ना! यही रुहानी नशा सदा साथ रहे। इतनी श्रेष्ठ आत्मायें हो, इतने महान हो। आपका हर कदम, हर संकल्प, हर कर्म यादगार बन रहा है, विधान बन रहा है। ... जो मैं करूँगा, वह विश्व के लिए विधान और यादगार बनेगा।"

अ.बापदादा 11.5.84

* जहाँ पवित्रता होती है, वहाँ साधन-सम्पत्ति, सत्ता, सुख-शान्ति-सम्पन्नता स्वत: आती है जैसे तालाब में बरसात का पानी स्वत: इकट्ठा होता है। ऐसे ही जब समय और कर्मों अनुसार आत्मा में अपवित्रता प्रवेश करती है तो वह साधन-सम्पत्ति स्वत: ही विलीन होने लगती है, जैसे

पहाड़ पर वर्षा हुआ पानी स्वत: ही पहाड़ से बह जाता है अथवा सूखे तालाब को छोड़कर पक्षी अन्यत्र चले जाते हैं।

* हमारे कहने से कोई किसकी मदद करता है, किस पर कोई अहसान करता है तो हमारे ऊपर भी अहसान करने वाले का बोझा चढ़ता है और अहसान लेने वाले के साथ हिसाब-किताब जुटता है।

"बाप तो कभी किसी पर गुस्सा नहीं करते, कभी और दृष्टि से नहीं देखते परन्तु किसकी चलन ऐसी देखते हैं तो समझते हैं - यह आसुरी मत का है, माया एक ही घूंसे से एकदम खत्म कर देती है। फिर कितना विघ्न डालते हैं। उनका जितना बड़ा पाप बनता है, उतना अज्ञानी मनुष्य का भी नहीं बनता। ... कितनी अबलायें बेचारी बाँध हो जाती हैं, उन सबका पाप उन पर पड़ता है। ... अगर यहाँ आकर और फिर चले जाये तो सब कहेंगे शायद ईश्वर नहीं है। जो ऐसे छोड़कर निकलते हैं, उनको देखकर कितने संशयबुद्धि बन पड़ते हैं। उन सबका पाप उन पर चढ़ जाता है।" सा.बाबा 8.04.03 रिवा.

* आध्यात्मिक प्राप्तियों (ज्ञान-गुण-शक्तियों) से सम्पन्न आत्मा को समय और आवश्यकतानुसार भौतिक प्राप्तियाँ भी अवश्य प्राप्त होती हैं परन्तु भौतिक प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा को आध्यात्मिक प्राप्तियों की भी प्राप्ति हो ये सम्भव नहीं है। भौतिक प्राप्तियों की इच्छा-आकांक्षा के जाल में फंसी आत्मा से आध्यात्मिक प्राप्तियाँ और ही दूर होती जाती हैं। इस सत्य को जानकर आध्यात्मिक प्राप्तियों के लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ करने वाला ही जीवन में सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है।

* सभी आत्मायें परमपिता परमात्मा के प्रिय बच्चे हैं और विश्व-नाटक के अविनाशी पार्टधारी हैं। हर आत्मा को ड्रामा के पार्ट और आवश्यकता अनुसार ईश्वरीय प्राप्तियाँ प्राप्त हैं और होनी ही हैं परन्तु हरेक का प्राप्ति का विधि-विधान अलग2 होता है, इसलिए दूसरों की प्राप्तियों से ईर्ष्या न करके अपनी प्राप्तियों का सदुपयोग करने वाला सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट रहता है और जीवन के सच्चे सुख को अनुभव करता है। विचार करो परमपिता परमात्मा ने तुमको क्या नहीं दिया है!

* संकल्प-वायब्रेशन्स-वातावरण फिर संकल्प का एक चक्र है। जीवात्मा के संकल्प के अनुसार उससे वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं और वातावरण का निर्माण करते हैं। संकल्प के परिवर्तन होते ही वायब्रेशन्स स्वत: ही परिवर्तन हो जाते हैं और उसके अनुरूप ही वातावरण का निर्माण करने लगते हैं, जो उसके सम्पर्क में आने वाली अन्य आत्माओं पर भी प्रभावित

होते हैं। जैसे कोई बहुत प्रेम-स्वरूप हो किससे मिल रहा है तो स्वभाविक उससे प्रेम के वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं और उसी अचानक किसी उसके किसी प्रिय के मरने का समाचार सुना दिया तो तुरन्त ही उससे दुख के वायब्रेशन्स प्रवाहित होने लगेंगे।

"मधुबन निवासियों की विशेषता है - मधुरता भी अति और वैराग्यवृत्ति भी अति। ऐसे बैलेन्स रखने वाले सदा ही सहज और स्वत: आगे बढ़ने का अनुभव करते हैं। मधुवन की इन दोनों विशेषताओं का प्रभाव विश्व में पड़ता है। ... जितना यहाँ का यह वायब्रेशन होता है, उतना वहाँ समझते हैं कि यह कुछ न्यारे हैं। ... अल्पकाल की वैराग्य वृत्ति का भी प्रभाव जरूर पड़ता है। ... यह वायुमण्डल-वायब्रेशन मन को स्वत: ही खींचता है।"

अ.बापदादा 9.1.85 मधुबन निवासियों के साथ

* जीवात्मा के संकल्प के अनुसार वायब्रेशन्स परिवर्तन होते हैं और उनका प्रभाव एक दिशायी भी होता है और चहुदिशायी भी होता है। जिसको बाबा ने सर्च-लाइट और लाइट-हाउस की संज्ञा दी है।

* जीवात्मा के संकल्प से निर्मित वायब्रेशन्स जड़, जंगम और चेतन तीनों प्रकृतियों को प्रभावित करते हैं और उन तीनों प्रकृतियों का प्रभाव भी जीवात्मा को प्रभावित करता है। इसी तरह अन्न का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव अन्न पर होता है।

* मनुष्य की दृष्टि-वृत्ति, संकल्प का प्रभाव तुरन्त ही अन्य आत्माओं पर पड़ता है। यदि हम अपने को सूक्ष्मता से चेक करें तो इस प्रभाव को अनुभव करेंगे। जब आत्मिक स्थिति में स्थित होते हैं और दृष्टि आत्मिक होती है, दूसरे को भी भृकुटी में आत्मा रूप में ही देखते हैं तो उनको भी आत्मिक स्मृति का आभास होता है और उनको अपनी देह का भी भान नहीं रहता है और जैसे ही हमारी दृष्टि बदल कर दैहिक होती है तो तुरन्त उनको भी अपने देह का भान आता है और अनेक दैहिक प्रक्रियायें उनमें आरम्भ हो जाती हैं। इसका बहुत ही सुन्दर उदाहरण भागवत में कुछ नहाती हुई स्त्रियों और शुकदेव और उनके पिता व्यासदेव का दिया गया है।

* यथार्थ ज्ञान आत्मा को निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्मान बनाता है और अतीन्द्रिय सुख देने वाला होता है। इससे हम अपनी ज्ञान की स्थिति को चेक कर सकते हैं।

* मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... जय-पराजय में समान रहना अर्थात् आत्मा, परमात्मा और ड्रामा सबको निर्दोष समझना और साक्षी होकर देखते हुए सदा हर्षित रहना ही ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की पहचान है।

* इस विश्व नाटक के अनादि-अविनाशी विधान के अनुसार हर आत्मा को अपने पार्ट के समय

अनुसार आधा समय सुख, आधा समय दुख में अवश्य व्यतीत करना पड़ता है और पार्ट के अनुसार साधन-सम्पत्ति भी अवश्य प्राप्त होते हैं।

* ब्रह्म तत्व में परमात्मा की स्थिति सूर्य के समान है। जैसे सूर्य एक स्थान पर रहते भी सौरमण्डल के सभी तारों को प्रकाशित करता है, सबके साथ सम्बन्ध है, ऐसे ही परमात्मा का हर आत्मा के साथ सम्बन्ध है भले वह ब्रह्म तत्व के किसी भी कोने में स्थित हो परन्तु किसी को कोई भी प्रकार की अनुभूति वहाँ नहीं होती है और न ही हो सकती है।

* मनुष्य जो पढ़ता है, सुनता है, सुनाता है, वह उसके जीवन को अवश्य प्रभावित करता है। उससे उसके जीवन का पता चलता है और वह उसके जीवन की दिशा निर्धारित करता है। इसीलिए कहा गया है कि - Man what he read, so he think and what he think so he become.

* अल्पज्ञता के कारण या किसी विषय में यथार्थ से अनभिज्ञ होते हुए कोई आत्मा दृढ़ निश्चय बुद्धि होकर कोई भी गलत या सही बात कहता है तो उसका प्रभाव सुनने वालों पर सही की तरह ही पड़ता है और उनके अन्त:करण को स्पर्श करता है। जैसे सर्वव्यापी का सिद्धान्त दुनिया में प्रचलित हुआ और अभी भी है।

"अभी तुम ईश्वरीय सन्तान बने हो, फिर तुम ही विष्णु की सन्तान बनेंगे परन्तु खुशी अभी है। देवताओं को ईश्वरीय सन्तान से ऊंचा नहीं कहेंगे। तो ईश्वरीय सन्तान को कितनी खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 28.3.2002 रिवा.

* प्रकृति की शुद्धता, अशुद्धता आत्मा के सुख-दुख का मूलाधार है और उसकी शुद्धता-अशुद्धता के लिए हर आत्मा (किसी भी योनि की हो) मन्सा-वाचा-कर्मणा उत्तरदायी है, भागी है। इसके कारण ही विभिन्न योनियों की आत्माओं के साथ अच्छे-बुरे सम्बन्धों का निर्माण होता है और किसी-किसी घटना से विभिन्न योनियों की आत्मायें भी सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से प्रभावित होती हैं अर्थात् सुख या दुख पाती हैं।

* मनुष्य संसार का सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसका चिन्तन सबसे अधिक इस विश्व के वातावरण को प्रभावित करता है, जिससे अन्य योनियों की आत्मायें भी प्रभावित होती हैं। उसका जैसा चिन्तन होता है, उसकी जो प्रक्रियायें होती हैं, समयान्तर में वे प्रक्रियायें ही अन्य योनियों की आत्माओं की भी हो जाती हैं। जैसे प्रजनन की प्रक्रियायें मनुष्यों के अनुसार अन्य योनि की आत्मायें जो गर्भ से जन्म लेती हैं, उनमें भी होती हैं और समयानुसार मनुष्यों के साथ ही उनमें भी परिवर्तन होता है।

"लिख दो - स्वर्ग के वर्से के तुम हकदार हो, आकर समझो। ... हमारे जो बिछुड़े हुए बच्चें होंगे, उनको यह अक्षर लगेंगे, कहेंगे पता तो निकालें कि यह क्या समझाते हैं।"

सा.बाबा 5.7.02 रिवा.

"बाप बुद्धिमानों की बुद्धि है तो क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता लेकिन ड्रामा का बहुत कल्याणकारी नियम बना हुआ है कि परमात्म कार्य में फुरी-फुरी से तलाब होना है, अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है।"

अ.बापदादा 16.12.2000

* किसी की साधन-सम्पत्ति का जाने-अन्जाने भी हम उपभोग करते हैं तो उससे हमारा हिसाब किताब बनता है और उपभोग करने वाले व्यक्ति को उसका हिसाब उस साधन-सम्पत्ति वाले को चुकाना पड़ता है - इस सत्य को समझकर किसी के साधन-सम्पत्ति का अनाधिकार उपभोग नहीं करना चाहिए और किसी भी वस्तु का अनावश्यक उपभोग नहीं करना चाहिए।

* हर आत्मा को किस न किस प्रकार उसकी अवस्था अनुसार बाप का परिचय मिलना ही है क्योंकि सभी आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं। उस परिचय के आधार पर ही हर आत्मा को देश-काल-परिस्थिति और पार्ट के अनुसार परमात्मिक सुख का अनुभव अवश्य होता है जिस अनुभव के कारण दुख के समय उसको परमात्मा की याद आती है।

* परमधाम पावन धाम है, जहाँ आत्मायें निर्संकल्प रहती हैं, इसलिए पवित्र, शुद्ध, कल्याणमय शुभ संकल्प से ही आत्मा निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो सकती है, उदासीन या उपेक्षायुक्त भावना से नहीं।

"बाप ने समझाया है - मैं धर्मराज हूँ। इन्डायरेक्ट कुछ करते थे तो हद की अल्पकाल की सजा भोगते थे, अब डायरेक्ट आकर समझाते हैं फिर भी बाबा की मेहनत बरबाद करते हो तो बहुत सजा खानी पड़ेगी।"

सा.बाबा 23.04.03 रिवा.

"डबल विदेशियों को भी मधुबन व भारत से प्यार क्यों है? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे। यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलासॉफी से भी प्यार नहीं होता, भारत की कल्चर से भी प्यार नहीं होता। प्यार है, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो। ... आपको सेवा के लिए वहाँ जन्म मिला है। खुशी होती है ना कि हम भारत के हैं। थे, हैं और होंगे।"

अ.बापदादा 25.10.02

"इस जन्म का तो पता लग जाता है, आगे के जन्मों का तो पता नहीं पड़ता है। समझाते हुए फिर भी नहीं समझते, नहीं सुधरते तो समझा जाता है - शायद आगे कोई पतित होंगे, जो संस्कार सुधरते नहीं। ... धारणा नहीं होती है तो समझना चाहिए मैं कोई बहुत मैला हूँ, आगे

जन्म में शायद हम बहुत गन्दे थे।" सा.बाबा 28.04.03 रिवा.

"दातापन के संस्कार वाले को सर्व तरफ से सहयोग स्वत: प्राप्त होता है। न सिर्फ आत्माओं द्वारा लेकिन प्रकृति भी समय प्रमाण उसकी सहयोगी बन जाती है। यह सूक्ष्म हिसाब है कि जो सदा दाता बनता है, उस पुण्य का फल समय पर सहयोग, समय पर सफलता उस आत्मा को सहज प्राप्त होता है।" अ.बापदादा 13.2.03

* ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के सत्य सिद्धान्तों का स्पष्ट ज्ञान दिया है, उनका जितना ज्ञान हो, उनका अनुभव होगा और धारणा होगी, उतना ही हमारे कर्मों में शुद्धता होगी और ये ब्राह्मण जीवन सरल और सुखमय अनुभव होगा। भक्तों का भी अनुभव है -

जाको राखै साइयां मार सके ना कोई,
बाल न बांका करि सके जो जग वैरी होये।

जा पर कृपा राम की होई,
ता पर कृपा करै सब कोई।

* हर आत्मा और वस्तु पावन से पतित, नई से पुरानी होती है। परमात्मा पतित-पावन है, वह कल्पान्त में आकर आत्माओं और तत्वों सहित सारे विश्व को पावन बनाता है। पावन बनकर ही आत्मायें वापस परमधाम घर जाती हैं। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु की आत्मायें भी मनुष्य आत्माओं के आधार से पावन बनती है और वापस परमधाम जाती हैं। कल्प के बीच में कोई भी आत्मा वापस नहीं जा सकती है।

इस विशाल संसार की हर बात और सिद्धान्त को तो हम नहीं समझ सकते हैं या हर बात की तह तक तो हम नहीं पहुंच सकते हैं लेकिन ज्ञान सागर परमपिता ने हमको अनेक सत्य सिद्धान्तों का ज्ञान दिया है, उनको समझकर, उनके आधार पर इस विश्व की हर बात के विषय में समझ सकते हैं।

"थोड़े समय की यह समर्थ स्थिति आत्माओं को यथाशक्ति भावना के फलस्वरूप कुछ पापों से भी मुक्त कर देगी। इसलिए आत्मायें स्वयं को यथा शक्ति हल्का अनुभव करेंगी। इसलिए ही गाते हैं - पाप हरो देवा वा पाप नष्ट करने वाली देवी बोलते हैं। ... अपने को देखो हम बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप में स्थित हैं? पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते हैं, जब याद के ज्वाला स्वरूप बनेंगे। ... दर्शन सदा सम्पन्न स्वरूप का ही होता है।"

अ.बापदादा 21.11.84

* यह विश्व एक विविधतापूर्ण नाटक है और अभी राजाई स्थापन हो रही है, जिसमें विभिन्न

पद होंगे, विभिन्न कार्य व्यवहार और स्वभाव-संस्कार वाले व्यक्ति होंगे, उसकी स्थापना के लिए अभी भी ज्ञान में विभिन्न स्वभाव-संस्कार वाली आत्मायें अवश्य होंगी और उनका पुरुषार्थ भी अपने पद, कर्म और पार्ट अनुसार ही होगा। इसलिए हम किसी के पुरुषार्थ या स्वभाव-संस्कार को देखकर न आश्चर्यचकित हों और न प्रभावित हों तब ही हम अपना अभीष्ठ पुरुषार्थ कर सकेंगे और इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे क्योंकि आश्चर्यचकित होने या प्रभावित होने से हमारा पुरुषार्थ भी अवश्य ही प्रभावित होगा। ये भी एक लॉ है।

"कई बच्चे बड़े चतुर हैं। चतुर सुजान से भी चतुराई करते हैं। ... होती अपनी इच्छा है लेकिन बाहर का रूप सेवा का बना देते हैं। इसलिए बापदादा मुस्कराते हुए, जानते हुए, देखते हुए, चतुराई समझते हुए भी कई बच्चों को बाहर से इशारा नहीं देते। लेकिन ड्रामा अनुसार इशारा मिलता जरूर है। वह कैसे ? ... मन की उलझन के रूप में इशारा मिलता रहता है।"

अ.बापदादा 5.12.84

"बापदादा समय के पहले सब बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में भरपूर भण्डार के रूप में, इच्छामात्रम् अविद्या, तृप्त स्वरूप में देखना चाहते हैं क्योंकि अभी से ये संस्कार नहीं भरेंगे तो अन्त में संस्कार भरने वाले बहुत काल की प्राप्ति के अधिकारी नहीं बन सकते।"

अ.बापदादा 5.12.84

"मैं पतित सृष्टि को आकर पावन बनाता हूँ तो जरूर पतित ही याद करेंगे। सतयुग में पावन तो याद नहीं करेंगे।" सा.बाबा 7.06.03 रिवा.

* ये संगमयुगी ईश्वरीय नियम है कि परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वज्ञ है, वह (Direct or indirect अर्थात् निमित्त आत्मा के द्वारा) जिस कार्य के लिए जिसको निमित्त बनाता है, जिम्मेवारी का ताज किसके सिर पर रखता है, वह आत्मा उस कार्य को करने में समर्थ हो जाती है और परमात्मा भी उसको उस कार्य को करने की शक्ति देता है, उसका मार्ग-दर्शन करता है। जो आत्मायें इस सत्य सिद्धान्त को समझती हैं, वे कब भी परमात्मा की आज्ञा का उलंघन नहीं करती, उसमें संशय नहीं लाती हैं। वे सदा ही निश्चयबुद्धि होकर परमात्मा की हर आज्ञा का पालन करते हैं और सफलता को पाते हैं। इसीलिए निश्चयबुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है।

सतयुगी राजाई इस पढ़ाई के आधार पर बनती है, सतयुग-त्रेता का वर्सा ईश्वरीय वर्सा है, जो अभी की पढ़ाई के आधार पर मिलता है। जो आत्मा परमात्मा के नाम पर यज्ञ में

तन-मन-धन से सहयोग करता है, उसे परमात्मा के द्वारा उस अनुसार अभी भी फल मिलता है और भविष्य में सतुयग-त्रेता में भी फल मिलता अवश्य है।

"आप बाप पर अभी बलिहार जायेंगे तो बाबा भी 21 बार बलिहार जायेंगे। अगर बलिहार नहीं जायेंगे, सौतेले बनेंगे तो 21 बार प्रजा में आयेंगे। बाबा कहते हैं - तुम मेरे को याद करो तो हम भी मदद करेंगे।" सा.बाबा 5.07.03 रिवा.

परमात्मा के साथ योग से, परमात्मा के सानिध्य से, परमात्मा के स्पर्श से, दृष्टि से जो करेण्ट आती है, प्रसाद के प्रभाव से आत्मा के संस्कारों में परिवर्तन आता है, उसके कारण अनेक दैहिक प्रक्रियायें होती हैं, जिनसे विकारी प्रक्रियायें परिवर्तन होकर दैवी प्रक्रियायें जन्म लेती हैं। आत्मा में आसुरी संस्कार विनाश होकर दैवी संस्कारों की धारणा होती है। उससे अनेक प्रकार के दैहिक और मानसिक रोगों का भी निदान हो जाता है।

* स्मृति के नियमानुसार हम जो साहित्य पढ़ते हैं, उसके लेखक की स्मृति सूक्ष्म में हमारे मन में अवश्य रहती है, जिसके कारण उसके गुण-संस्कारों का प्रभाव भी पाठक के ऊपर अवश्य पड़ता है।

* आत्मा शरीर के साथ जिन तत्वों को स्पर्श करती है, उन पर उसका और उनका उस पर प्रभाव होता है। इस सम्बन्ध में रामायण में भी लिखा है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहँ जहँ नाथ पॉव तुम धारा। धर्म पिताओं ने भी जहाँ2 जाकर कोई कर्तव्य किये या स्वयं रहे हैं वे स्थान उस धर्म के अनुयायियों के लिए तीर्थ बन गये और उस धर्म में उन स्थानों की मान्यता है। शिवबाबा ने भी ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने पर महावाक्य उच्चारे या स्पष्ट किया कि ये पंच तत्व (ब्रह्मा बाबा की देह) पंच तत्व में विलीन होकर पंच तत्वों को भी पावन करेंगे।

इस विश्व-नाटक के क्रिया-प्रतिक्रिया के नियमानुसार हमारी अन्य आत्माओं के प्रति जैसी भावना होती है, वैसी ही भावना उनकी हमारे प्रति होती है। हम अन्य आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखते हैं तो उनकी भी हमारे प्रति शुभ भावना अवश्य ही होगी। इसलिए हम दूसरों से अपने प्रति शुभ भावना चाहते, व्यवहार अच्छा चाहते तो हमको दूसरों से शुभ भावना की भीख मांगने की अपेक्षा हमको सबके प्रति शुभ भावना रखनी चाहिए।

"आप सब बच्चे निर्भय हो ना! क्यों ? क्योंकि आप सदा निर्वैर हो। आपका किसी से भी वैर नहीं है। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। ऐसी शुभ भावना, शुभ कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। ... छत्रछाया के अन्दर निर्भय हैं।"

अ.बापदादा 17.12.84

"निमित्त शिक्षक अर्थात् उड़ती कला के एग्जाम्पुल। जैसे आप उड़ती कला के एग्जाम्पुल बनते हो, वैसे दूसरे भी बनते हैं। न चाहते भी जिनके निमित्त बनते हो, उनमें वह वायब्रेशन स्वत: आ जाते हैं।" अ.बापदादा 19.12.84

* यदि हम जड़ प्रकृति के नियम के विरुद्ध कोई कार्य करते हैं, कुछ खाते-पीते हैं, किसी चीज का दुरुपयोग करते हैं तो वह हमारी प्रकृति अर्थात् शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अर्थात् हमारे जीवन में रोग-शोक अवश्य लायेगा या किसी चीज का दुरुपयोग करेंगे तो हमको कभी न कभी उसकी कमी अवश्य ही महसूस होगी। इसलिए सदा सुखी जीवन के लिए हर चीज का आवश्यकतानुसार समझकर उपयोग करना ही अच्छा है।

* आध्यात्मिक और विश्व-नाटक के भौतिक नियम-सिद्धान्तों को जानने वाला ही इस देह और देह की दुनिया से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर ही इस ईश्वरीय जीवन के और विश्व-नाटक के परम-सुख को अनुभव कर सकता है। ये सत्य ज्ञान और उसकी क्रिया-प्रतिक्रिया का ज्ञान, उसकी प्रक्रिया (Technic) का ज्ञान, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही संगमयुग में आकर हम आत्माओं को बतलाते हैं तब ही आत्मायें इस पुरुषार्थ को करके इस परम-सुख को अनुभव करती और कराती हैं, वे परम-भाग्यशाली हैं।

"इस समय के पुरुषार्थ की वह प्रालब्ध है। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए, जिससे 21 जन्म की प्रालब्ध बनती है। वहाँ पुरुषार्थ-प्रालब्ध की बात होती नहीं है। वहाँ तो अप्राप्त वस्तु ही नहीं, जिसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े।" सा.बाबा 18.07.03 रिवा.

* योग्यता आत्मा को स्वत: वेल्युबुल बनाती है, रुहानी ज्ञान की धारणा सबसे बड़ी योग्यता है, जिससे आत्मा वेल्युबुल बनती है। ज्ञान-योग की योग्यता जिन आत्माओं में होगी, उनकी इस ज्ञान यज्ञ में सदा और सर्वत्र वेल्यू अवश्य होगी, उसके उपयोग का अवसर हमको अवश्य मिलेगा, मांगने की आवश्यकता नहीं है।

* विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमों और सिद्धान्तों के अनुसार हर आत्मा को उसकी योग्यता और ड्रामा के पार्ट के अनुसार साधन-सुविधायें समय पर अवश्य मिलेंगी ही परन्तु ये साधन-सुविधायें सबको समान रूप से मिलना सम्भव नहीं है, इसलिए आध्यात्म मार्ग के पथिक को ड्रामा के सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी सिद्धान्त को सदा स्मृति में रख, उस पर निश्चय करके निश्चिन्त होकर अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील रहना ही चाहिए।

* मनुष्य लेने से भरपूर नहीं होता है परन्तु देने से भरपूर होता है।

कला उपयोग करने से विकसित होती है छिपाने से नहीं।

कार्यक्षमता कार्य करने से बढ़ती है, अकर्मण्य बनकर बैठने से नहीं।

* इस विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान जितना स्पष्ट होगा, जीवन में उसकी धारणा होगी, उतने ही उसके संकल्प, कर्म श्रेष्ठ होंगे। ये सत्य ज्ञान संगमयुग पर ही परमपिता परमात्मा द्वारा मिलता है, जिससे आत्मा श्रेष्ठ संकल्प, कर्म करने में समर्थ होती है, जो ज्ञान सारे कल्प में अंश रूप में आत्माओं में नीहित रहता है, जिसके आधार पर आत्मायें संकल्प-कर्म करके जीवन में उसका सुख अनुभव करती हैं। परमात्मा तो ज्ञान का सागर है और उसने सारा ज्ञान दिया परन्तु आत्मायें अपने पार्ट और पुरुषार्थ अनुसार उसको धारण करती हैं और उस अनुसार संकल्प-कर्म करके उसका फल पाती हैं।

"पुराने संस्कार, पुरानी स्मृतियां, पुरानी वृत्तियां, पुरानी देह की स्मृति के भान से परे रहने वाले, सर्व पुरानी बातों को विदाई देने वालों को बापदादा सदा के लिए बधाई दे रहे हैं। ... पुराने को विदाई नहीं तो नवीनता की बधाई अनुभव नहीं कर सकते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.84

* किसी पुरुषार्थी आत्मा ने यज्ञ के नियम-संयम का उलंघन करके, अपने कर्तव्य को भूलकर लौकिक सम्बन्धों में बुद्धियोग लगाया, आकर्षण में गया तो वह मोहजाल उसको अपनी तरफ अवश्य ही खींच लेगा और वह श्रेष्ठ पुरुषार्थ से विमुख हो जायेगा।

"चाहिए की तृप्ति का आधार है - जो चाहिए, वह ज्यादा से ज्यादा देते जाओ। मान दो, लो नहीं। ... देना ही लेने का आधार है। जैसे भक्ति मार्ग में भी यह रसम चली आई है कि कोई भी चीज की कमी होगी तो प्राप्ति के लिए उसी चीज का दान कराते हैं। ... कोई भी हद की चाहना वाला माया का सामना नहीं कर सकता है। ... जहाँ सन्तुष्टता नहीं, वहाँ प्राप्ति भी अप्राप्ति के समान है और जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ थोड़ा भी सर्व समान है।"

अ.बापदादा 7.1.85

* मनुष्य की भावना का प्रभाव जड़ और चेतन दोनों पर पड़ता है। जिसने जिस भावना और जैसे कर्म से धन कमाया, जिस भावना से दिया, उसका प्रभाव उसके उपयोग करने वाले पर अवश्य पड़ता है।

* किसकी आह, अभिशाप, आशीर्वाद का प्रभाव आत्माओं पर अवश्य पड़ता है और वह समय पर अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है। इसके अनेक अनुभव वर्तमान जीवन में भी अनुभव में आते हैं और शास्त्रों में भी इसके अनेक उदाहरण है। जैसे दशरथ को श्रवणकुमार के माता-पिता का श्राप, भीष्म को काशीराज़ की पुत्री अम्बा का श्राप आदि। ऐसे ही वरदानों या आशीर्वाद के भी अनेक उदाहरण शास्त्रों में हैं और मनुष्यों अनुभव में भी आते हैं।

* जो भी जड़ तत्व या चेतन आत्मायें जिस आत्मा के सम्पर्क में आते हैं, उन पर उस आत्मा के स्वभाव, संस्कार, गुण-धर्म अवश्य प्रभावित होते हैं। यथा दूध जिस पशुधन या स्त्री का होगा, उस पर उसके गुण-धर्म, स्वभाव-संस्कार का प्रभाव अवश्य होगा और उसके उपयोग करने वाले पर भी उसका वैसा ही प्रभाव पड़ेगा।

जहाँ लगाव होता है, वहाँ मन-बुद्धि अवश्य जाती है। इस देह और देह की दुनिया का लगाव ही आत्मा के बन्धन का कारण है। जो इस सत्य को समझ लेता है वह इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर नष्टोमोहा होकर इनसे मुक्त होकर सर्व बन्धनों से मुक्त जीवन की परमप्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता है।

हम जो संकल्प करते हैं, स्मरण करते हैं, उस संकल्प और स्मृति से जो प्रकम्पन होते हैं, वे इस समस्त विश्व के वातावरण को प्रभावित करते हैं और उनसे इस विश्व के व्यक्ति और जड़ तत्व प्रभावित होते हैं, जिससे आत्माओं का सुख या दुख प्रभावित होता है, परिणाम स्वरूप उस निमित्त आत्मा का भविष्य प्रभावित होता है, उन आत्माओं के साथ उस आत्मा के हिसाब-किताब बनते हैं। उज्ज्वल भविष्य की अभिलाषी आत्मा को इस सत्य पर निश्चय और विचार करके अपने संकल्प, स्मृति और कर्म को करना चाहिए।

"राज्य अधिकारी अर्थात् सर्व सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्दियों के अधिकारी क्योंकि स्वराज्य है ना! ... तो कभी-कभी राजा बनते हो या सदा राजा रहते हो? ... सदा राज्य अधिकारी। सदा चेक करो - जितना समय और जितनी पॉवर से अपनी कर्मेन्दियों, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अभी अधिकारी बनते हो, उतना ही भविष्य में राज्य अधिकारी बनते हो। अगर परमात्म पालना, पढ़ाई और श्रीमत के आधार पर यह संगमयुग का जन्म सदा अधिकारी नहीं तो 21 जन्म कैसे राज्य अधिकारी बनेंगे। इस समय का स्वराज्य अर्थात् स्व का राजा बनने से ही 21 जन्म की गारन्टी है।" अ.बापदादा 17.10.03

* कोई भी आत्मा इस आकाश तत्व के अन्दर बिना स्थूल या सूक्ष्म शरीर के रह नहीं सकती और जब आत्मा को स्थूल या सूक्ष्म शरीर है तो संकल्प की उत्पत्ति स्वभाविक है क्योंकि आत्मा देह में कर्म के बिना रह नहीं सकती। जब आत्मा में संकल्प है तो संकल्प वातावरण को प्रभावित अवश्य करेगा। इसलिए विनाश के बाद कोई भी किसी भी योनि की आत्मा इस आकाश तत्व में रहीं रह सकती, सब को परमधाम जाना ही है।

"शीतलता की शक्ति अर्थात् आत्मिक स्नेह की शक्ति। ... ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो जो चारो ओर की आग (विनाश की आग, विकारों की आग,

ममता की आग, पश्चाताप की आग) का सेक स्वयं को न लग जाये। ... अगर जरा भी चारो प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा तो चारो ओर की आग अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी। जैसे आग को आग पकड़ लेती है।" अ.बापदादा

"शरीर छोड़कर फिर आत्मा भटकती भी है। उस समय भी हिसाब-किताब भोग सकते हैं। सब साक्षत्कार होता है। अन्दर ही साक्षात्कार करते हैं और भोगना भोगते हैं।"

सा.बाबा 4.11.03 रिवा.

"अभी बाप ने तुम बच्चों को अपना परिचय दिया है। कायदा भी है बाप को ही आकर परिचय देना है। यहाँ ही आकर लायक बनाना है, पावन बनाना है। वहाँ बैठे अगर पावन बना सकते तो फिर इतने ना लायक बनते ही क्यों?" सा.बाबा 8.11.03 रिवा.

"तुम मात-पिता ... महिमा भी उस बाप की ही है। भगवान को भक्ति का फल भी यहाँ ही आकर देना है। भक्ति का फल क्या है, यह तुम समझ गये हो। जिसने बहुत भक्ति की है, उनको ही फल मिलेगा। ... बाप ही त्रिकालदर्शी है। और कोई मनुष्य दुनिया में त्रिकालदर्शी नहीं। वास्तव में जो पूज्य हैं, वे ही फिर पुजारी बनते हैं। भक्ति भी तुमने की है। जिन्होंने भक्ति की है, वे ही पहले नम्बर में ब्रह्मा फिर ब्रह्मा मुख वंशावली हैं।"

सा.बाबा 8.11.03 रिवा.

"तुम मम्मा-बाबा कहते हो तो आपस में भाई-बहन हो गये। गन्दी वृत्ति होनी नहीं चाहिए - लॉ ऐसा कहता है। भाई-बहन की आपस में कभी शादी हो न सके।"

सा.बाबा 10.11.03 रिवा.

"ब्रह्मा बाप से आपका प्यार है ना। डबल विदेशियों का सबसे ज्यादा प्यार है। जिसका ब्रह्मा बाबा से जिगरी, दिल का प्यार है, वे हाथ उठाओ। ... जिससे प्यार होता है तो प्यार की निशानी है, जो उसको अच्छा लगता है, वह प्यार करने वाले को भी अच्छा लगता है। दोनों के संस्कार, संकल्प, स्वभाव टेली करते हैं तब ही वह प्यारा लगता है।"

अ.बापदादा

"नॉलेज है ऊंची, उसमें ही समय लगता है। पिछाड़ी में तुम्हारे में ज्ञान और योग की शक्ति रहती है। यह ड्रामा में नूँध है।" सा.बाबा 13.11.03 रिवा.

"सरेण्डर किया है, फिर सर्विस भी करनी है तो रिटर्न में मिलेगा। अगर सरेण्डर हुआ, सर्विस नहीं करता तो भी उनको खिलाना तो पड़े ना, तो उन पैसों से ही खाते-खाते अपना खत्म कर लेते हैं। ... मुख्य है बाबा की रुहानी सर्विस करनी है, जिससे मनुष्य ऊंचे बनें।"

सा.बाबा 16.11.03 रिवा.

"ब्राह्मण खिलाते हैं तो आत्मा को बुलाते हैं ना। फिर वह आत्मा ब्राह्मण में आकर बोलती है। अब आत्मा को गये कितना समय हो गया, फिर वह आत्मा कैसे आती है, क्या होता है? ... क्या आत्मा निकलकर आई? बाप समझाते हैं मैं भावना का भाड़ा देता हूँ और वे खुश हो जाते हैं। यह भी ड्रामा में राज़ है।" सा.बाबा 18.11.03 रिवा.

"यह एक ही राजयोग का इम्तहान है। कितने चढ़ते और गिरते हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाता है। रिजल्ट फिर भी वही रहेगी, जो कल्प पहले हुई होगी। यह ड्रामा है, हम एक्टर्स हैं। पूरा नष्टोमोहा बनें तब बाप से पूरी प्रीत जुटे।"

सा.बाबा 27.10.03 रिवा.

* इस विश्व नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है कि सुख देंगे तो सुख पायेंगे और दुख देंगे तो दुख पायेंगे।

* विश्व-नाटक की यथार्थता को भूलकर जो वस्तु या व्यक्ति अपना नहीं है परन्तु उसको अपना समझकर समयानुसार उसके गुण-विशेषताओं, कर्मों से प्रभावित होकर गौरवान्वित होता है, सुख का अनुभव करता है, उसको उसके फलस्वरूप कब न कब दुख की अनुभूति भी अवश्य करनी होती है क्योंकि ये भी कर्म-बन्धन बनाता है। ये भी अज्ञानता है, लगाव है। इस जगत में न कोई अपना है और न ही पराया। सभी इस विश्व-नाटक के पार्टधारी हैं। इसमें जो आज अपना है, वही कल पराया हो जाता है और पराया अपना हो जाता है। जो आत्मा ड्रामा के इस सत्य को जानकर लगाव-झुकाव-घृणा सबसे न्यारा नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप होकर रहता है, वही इस विश्व-नाटक के परम सुख मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करता है।

जो मनुष्य सुख देता है, वह दुख भी अवश्य देता है अर्थात् दुख का कारण भी बनता है क्योंकि ये सुख और दुख का एक खेल है। अनेक जन्मों का आत्माओं का ये हिसाब-किताब है। एक परमात्मा ही है, जो सुख देता है परन्तु कब दुख नहीं देता है। ये संगमयुगी जीवन ईश्वरीय प्राप्तियों के लिए है, व्यक्तियों से प्राप्ति के लिए नहीं। आत्माओं के साथ दुख के हिसाब-किताब खत्म करने का है, नया बनाने का नहीं।

"राज़धानी स्थापन हो रही है, उसका प्लेन बता देते हैं। सूर्यवंशी में इतनी गद्दियां, चन्द्रवंशी में इतनी गद्दिया। जो नापास होते हैं, वे बनते हैं दास-दासियां। दास-दासियों से फिर नम्बरवार राजा-रानी बनते हैं। अनपढ़े अन्त में पद पाते हैं।... वास्तव में नया भारत स्वर्ग को, पुराना भारत नर्क को कहा जाता है।" सा.बाबा 12.12.03 रिवा.

* प्रकृति के नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान ज्ञानी-अज्ञानी, गरीब-अमीर, छोटे-बड़े सब पर समान रूप में अपने पूर्व निश्चित नियमानुसार प्रभावित होते हैं, उनमें कोई भेदभाव नहीं होता है

क्योंकि वे इस विषय में कुछ सोचते नहीं हैं। विश्व-नाटक में ये सब कम्प्युटर की तरह अनादि-अविनाशी नूँध है।

* इस विश्व में कोई भी खाने-पीने, साधन-सम्पत्ति का उपभोग, दैहिक सम्बन्ध आत्मिक शक्ति का ह्रास अवश्य करते हैं। प्रकृति का ये नियम सतयुग में भी प्रभावित होता है तो कलियुग में भी प्रभावित होता है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित एक निराकार परमात्मा की याद ही आत्मिक शक्ति का विकास करती है और उसका पुरुषार्थ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होता है।

* विश्व-नाटक के नियमानुसार जब आत्मा पवित्र होती है तो देह रूपी वस्त्र भी पवित्र मिलता है और जब अपवित्र है तो देह और दैहिक सम्बन्ध भी वैसे ही मिलते हैं। इसके लिए बाबा ने कहा है - जैसा आसामी होता है, वैसा ही उसका फर्नीचर होता है।

* आत्मा जब आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में कोई काम करती है तो उसको थकावट नहीं होती है क्योंकि आत्मिक स्थिति में स्थित होने से और परमात्मा की याद से आत्मिक और शारीरिक दोनों शक्तियों का विकास होता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने कहा है - तुम शिवबाबा की याद में आबू से दिल्ली तक चले जाओ तो भी थकावट नहीं होगी। केवल आत्मिक स्थिति में स्थित होकर कर्म करने से आत्मिक और शारीरिक शक्ति बढ़ती तो नहीं है परन्तु उनका ह्रास बहुत कम होता है।

"राम और रावण नाम मशहूर हैं। रावण का अर्थ कोई भी समझते नहीं हैं। ... वह है रामराज्य, अभी है रावणराज्य। रावण को जलाते हैं। आधा कल्प रामराज्य और आधा कल्प के बाद रावण राज्य होता है। इस स्वदर्शन चक्र को तुम अभी ही जानते हो। तुम सब अभी गॉड फादरली चिल्ड्रेन हो।" सा.बाबा 12.2.07 रिवा.

* यद्यपि हम परमधाम में जाते उससे पहले सतयुग के संस्कार भरते, सम्बन्ध-सम्पर्क बनाते परन्तु परमधाम जाने के बाद यह सब ज्ञान की स्मृति भूल जाती है, इसलिए सतयुग में आते तो पीछे का कुछ याद नहीं रहता है। यह भूलने का विधि-विधान भी इस विश्व-नाटक में एक वरदान है, जो वर्तमान पार्ट को सफलतापूर्वक बजाने के लिए अति आवश्यक है।

"पूज्य भी तब बनते हो जब श्रेष्ठ कर्म का खज़ाना जमा करते हो।... रिगार्ड देने वाले को रिगार्ड मिलता जरूर है, यह एक अनादि नियम है। देना अर्थात् लेना और लेना अर्थात् गंवाना। ... तो देने वाले दाता के बच्चे हो।" अ.बापदादा 10.1.91 पार्टी

"नेचर नेचुरल काम वही करती है। सोचना नहीं पड़ता ... अपने को चेक करो - मेरी नेचुरल नेचर क्या है। अगर कोई भी पुरानी नेचर अंशमात्र भी है तो हर समय वह कार्य में आते-आते

पक्का संस्कार बन जाता है। ... न चाहते भी हो जाता है, उसका कारण है - परिवर्तन करने की शक्ति कम है।"

अ.बापदादा 15.12.06

"सर्व खज़ाने ज्यादा से ज्यादा जमा करना है तो मन्मनभव के मन्त्र को यन्त्र बना दो। जिससे सदा बाप के साथ और पास रहने का स्वत: अनुभव होगा। ... एक पास रहना, दूसरा जो बीता सो पास हुआ और तीसरा पास विद् ऑनर होना। अगर ये तीनों पास हैं तो आपको राज्य अधिकारी बनने की फुल पास है।... निश्चयबुद्धि विजयी हैं ही।"

अ.बापदादा 30.11.06

"यह साइन्स का हुनर भी वहाँ रहता है। सीखी हुई चीजें दूसरे जन्म में भी काम आती हैं। कुछ न कुछ याद रहता है।... वहाँ नई दुनिया में विमान आदि बनाने वाले भी होंगे।... भल उन्हों में यह ज्ञान नहीं है परन्तु वे आयेंगे जरूर और आकर नई-नई चीजें बनायेंगे।"

सा.बाबा 25.12.06 रिवा.

"सुख और दुख आधा-आधा जरूर होगा। यह एक ईश्वरीय लॉ है ... एक-दो जन्म लेंगे तो भी सुख-दुख आधा-आधा जरूर होगा।"

सा.बाबा 2.11.06 रिवा.

"पहले-पहले तुम आये हो तो बाप भी पहले-पहले तुम से ही मिलते हैं। यहाँ बाप और बच्चों का, आत्मा और परमात्मा का मेला लगता है। हिसाब है ना - हमको 5000 वर्ष हुए बाप से विदाई लिए ... अभी तुम बाप के पास आ गये हो, बाकी थोड़े जो होंगे, वे भी आ जायेंगे।"

सा.बाबा 3.11.06 रिवा.

"यह भी समझाया है कि अन्त मती सो गति होगी। समझो कोई ज्ञान लेते-लेते शरीर छोड़ते हैं, तो ज्ञान के संस्कार ले जाते हैं तो छोटेपन में ही इस तरफ उनको खींच होगी। ... छोटेपन से ही संस्कार अच्छे, सुखदायी होंगे।"

सा.बाबा 20.10.06 रिवा.

"साइन्स का भी बुद्धिबल है लेकिन दिव्य बुद्धिबल नहीं है, संसारी बुद्धि है। इसलिए इस संसार के प्रति, प्रकृति के प्रति ही सोच सकते हैं और कर सकते हैं। दिव्य बुद्धिबल मास्टर सर्वशक्तिवान बनाता है। ... दिव्य बुद्धि बल अति श्रेष्ठ बल है।"

अ.बापदादा 1.3.90

"जो आत्मायें बहुतकाल परमधाम से अलग रहती हैं, उनका भी हिसाब है। बाप जब परमधाम में थे, उस समय जो आत्मायें उनके साथ मुक्तिधाम में रहती हैं, वे पिछाड़ी में आती हैं।... जो पहले-पहले बाप से बिछुड़ते हैं, उनका ही अब मेला होता है।"

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

"यह ज्ञान है ही एक बाप के पास, वही पतित-पावन निराकार है। मैंने इस तन का लोन लिया है। शरीर बिगर आत्मा कैसे बोल सकेगी। ... मैं गर्भ में नहीं आता हूँ। गर्भ में आने वाले को तो पुनर्जन्म में आना ही पड़े। मैं तो पुनर्जन्म रहित हूँ।"

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

"ऐसी निमित्त बनी हुई आत्माओं के प्रति कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठाना चाहिए। ... कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। जिनको बाप ने निमित्त बनाया, उनका भी जिम्मेवार बाप है।... ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझकर ड्रामा के लॉ-मुजिब निमित्त बनाया गया है।"

अ.बापदादा 10.1.90

"सच्ची दिल वालों को सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग़ युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: ही करेगा। उनको दुआओं के कारण यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प ड्रामानुसार समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग़ में आयेगी क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि बाप को राज़ी किया हुआ है।"

अ.बापदादा 15.11.89

"पवित्र की ही पूजा करते हैं। कोई भी मनुष्य की पूजा नहीं कर सकते। जो विकार से पैदा होते हैं, उनकी पूजा नहीं हो सकती। पूजा देवताओं की होती है, जो सदैव पवित्र होते हैं।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"बाप के साथ-साथ तुम आत्माओं की भी पूजा करते हैं क्योंकि तुम बहुतों का कल्याण करते हो। बाप के साथ तुम भारत की खास और दुनिया की आम रुहानी सेवा करते हो। इसलिए बाप के साथ तुम बच्चों का भी पूजन होता है।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"बाप आकर समझाते हैं कि यह ड्रामा बना-बनाया है परन्तुकिस नियम से बना हुआ है, वह समझने की बात है। ... हमको अपना आधार रखना है अपने कर्म के ऊपर। अगर कोई बात समझ में नहीं आती है तो उसमें अटकना नहीं है। ... इसमें बाप को भी आकर कर्म करना पड़ता है।"

मातेश्वरी 23.4.65

"ब्रह्मा अब सूक्ष्म शरीरधारी बन कितना तीव्रगति से आगे बढ़ और बढ़ा रहे हैं ...सूक्ष्म शरीर की गति इस दुनिया के सबसे तीव्रगति के साधनों से भी तेज है। एक ही सेकेण्ड में उसी समय अनेकों को अनुभव करा सकते हैं। ... फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। भल सेवा का बन्धन है ... जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा।"

अ.बापदादा 12.3.88

"असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है ... सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है ... असत्यता के वश जितनी मौज

मनाई, उतना ही सौगुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है।"

अ.बापदादा 24.9.92

"बाप कहते हैं - मैं निष्काम सेवाधारी हूँ, मनुष्य कोई निष्काम हो न सके। ... मैं तो अभोक्ता हूँ। ... यह ड्रामा का राज़ भी तुम जानते हो।"

सा.बाबा 14.6.05 रिवा.

"सभी आत्माओं का एक ही समय यह जन्मसिद्ध अधिकार लेने का पार्ट नहीं है। परिचय तो जरूर मिलना है, पहचानना भी है लेकिन कोई का पार्ट अभी है, कोई का पीछे। ... बिन्दी रूप में न होने के कारण फर्ज भी मर्ज हो जाता है।" अ.बापदादा 26.1.70

"आत्माओं का स्टॉक है ना। जितना मनुष्यों का स्टॉक पूरा होगा, उतना ही वहाँ आत्माओं का स्टॉक होगा। एक्टर्स एक भी कम जास्ती नहीं होंगे। ये सब बेहद के ड्रामा के एक्टर्स हैं।"

सा.बाबा 27.8.04 रिवा.

"दिल बड़ी करेंगे तो साकार में पहुँचना भी सहज हो जायेगा। जहाँ दिल है, वहाँ धन आ ही जाता है। दिल धन को कहाँ न कहाँ से ले आता है। इसलिए दिल है और धन नहीं है - यह बापदादा नहीं मानते हैं।"

अ.बापदादा 22.01.86 देश-विदेश के सभी बच्चों के प्रति सन्देश मुरली के साथ

"बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो। पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने, तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। चक्र है ना। पहले-पहले तुम ही माला में पिरोये जायेंगे। ... रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है।"

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"बाप खुद कहते हैं - मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ, जो सबसे पतित बना है, फिर पावन भी वही बनेंगे। ... देरी से आने वाले ज्ञान भी थोड़ा सुनेंगे फिर देरी से ही आयेंगे।" सा.बाबा 14.8.04 रिवा.

"स्मृति रहे तो औरों को जरूर समझायें। ... अभी तुमको ज्ञान और भक्ति की स्मृति आई है। गोया तुम सारे ड्रामा को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जान गये हो। ... कल्प-कल्प पुनरावृत्ति का यह ज्ञान भी तुमको अभी है, वहाँ नहीं होगा।"

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

"ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है। ज्ञान अर्थात् सृष्टि-चक्र की नॉलेज जो तुम अभी धारण करते हो। विज्ञान माना शान्तिधाम। ... ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है। ज्ञान से भी परे जाना है। ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना। विज्ञान सूक्ष्म है, इसमें तो आवाज से

परे शान्ति में जाना होता है।" सा.बाबा 22.7.04 रिवा.

"यह भी कायदा है कि जब बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो माया भी अपना भभका दिखाती है। ... आंखें कुछ न कुछ धोखा जरूर देती हैं। ड्रामा किसको जल्दी सिविलाइज्ड नहीं बनायेगा। खूब पुरुषार्थ कर अपनी जांच करनी है।"

सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

"मैं चाहता नहीं हूँ लेकिन फिर भी हो जाता है। अब उसकी समझ अर्थात् नॉलेज होनी चाहिए। ... मेरा-मेरा कहकर दुख का रूप बना दिया है।... जब कारण है तो उसको मिटाने का इलाज भी जरूर होगा। ... इन सब दुखों से छूटने का रास्ता खुद बाप बैठकर समझा रहे हैं, फिर भी कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है।"

मातेश्वरी 15.12.63

Q. मनुष्यों की बुद्धि में क्यों नहीं बैठता है और कब बैठेगा?

"पहले-पहले मेरे से तुम बिछुड़ते हो, फिर तुम ही पहले आकर मिलते हो।... यह सुख और दुख का खेल है।" सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

* ये विश्व-नाटक सत्य-न्यायपूर्ण-कल्याणकारी है, परमात्मा न्यायकारी-समदर्शी है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसमें पार्ट बजाता है, वह इसके परम सुख को अर्थात् अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करता है, उसमें राजा-प्रजा, दास-दासी, साधन-सम्पत्ति की कोई सीमा नहीं है अर्थात् बन्धन नहीं है।

"यहाँ और कोई ख्यालात में नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो तुम औरों को नुकसान पहुँचाते हो। फायदे के बदले और ही नुकसान करते हो। ... जो याद में नहीं रहते, व्यर्थ ख्यालात चलाते रहते हैं वे जैसे विघ्न डालते हैं क्योंकि बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती है।"

सा.बाबा 19.6.04 रिवा.

"मनुष्य, मनुष्य को कभी सच्चा ज्ञान दे नहीं सकते। सच्चा है ही एक निराकार बाप। इनका नाम तो ब्रह्मा है, यह किसी को ज्ञान दे न सकें। ब्रह्मा में ज्ञान कुछ भी था नहीं। अभी भी कहेंगे इनमें सारा ज्ञान तो है नहीं। ... तुम जब सत् बन जायेंगे तो फिर यह शरीर नहीं रहेगा।... मनुष्य सभी पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे ही गिरते आये हैं।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण को सत् कह सकते हैं? यदि हाँ तो क्यों और कैसे, यदि नहीं तो क्यों? क्योंकि लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी मनुष्य हैं और उनकी कलायें भी गिरती आई हैं।

"आत्मा जब शरीर में है तो जीवात्मा है तो दोनों इकट्ठे सुख अथवा दुख भोगते हैं। ... बाप

को कहाँ याद करें। चलते-फिरते कहाँ भी बाप को याद करो। ... यह चिन्तन सतयुग में नहीं चलता है। ... यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए। मैं तुमको प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा एडाप्ट करता हूँ।" सा.बाबा 1.6.04 रिवा.

"हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजाकर फिर जब परमधाम जायेगी तो अपनी-अपनी जगह पर जाकर खड़ी रहेगी। अपने-अपने धर्म में अपनी जगह पर नम्बरवार खड़े होंगे, फिर नम्बरवार नीचे आना है। ... निराकारी दुनिया में आत्माओं की बहुत छोटी जगह होगी, इसलिए इन चित्रों में दिखाया गया है। यह बना-बनाया नाटक है। ... मनुष्य जब तक ज्ञान को पूरा नहीं समझते हैं तब तक अनेक प्रश्न पूछते हैं। ज्ञान है तुम ब्राह्मणों के पास।... बाप बहुत सहज करके समझाते हैं।" सा.बाबा 1.6.04 रिवा.

"देह-अभिमान में आने से भूलें ही होंगी। फिर पद तो भ्रष्ट हो जायेगा। भल किसको पता नहीं पड़ता है परन्तु पद तो भ्रष्ट हो ही जायेगा। इसमें दिल की सफाई बहुत चाहिए तब तो ऊंच पद पायेंगे। ... भल अभी किसी की भी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। कर्मातीत अवस्था वाले के सब दुख दूर हो जाते हैं।" सा.बाबा 15.5.04 रिवा.

"बहुतों नाम-रूप आदि में बहुत टाइम वेस्ट जाता है। मंजिल बहुत ऊंची है। बाप सब कुछ समझा देते हैं, जो स्टूडेण्ट ऐसा न समझें कि बाबा ने फलानी प्वाइन्ट नहीं समझाई। यह है मुख्य याद और सृष्टि चक्र की नॉलेज।" सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"तुमको याद है - तुम पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही आये फिर 84 जन्म ले पतित बने हो, अब फिर पावन बनना है। ... जो पहले नम्बर में आते हैं, वे ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। तो फिर पहले वे ही जाने चाहिए। ... यह खेल है, इसको अगर समझेंगे नहीं तो स्वर्ग में कभी आयेंगे नहीं।" सा.बाबा 1.5.04 रिवा.

"बाप की दृष्टि तो सब आत्माओं की तरफ जाती है, सबका कल्याण करना है। सबको वापस ले जाना है। न सिर्फ तुमको परन्तु सारे वर्ल्ड की आत्माओं को याद करते होंगे। उसमें पढ़ाते तुम बच्चों को हैं। यह भी समझते हो - जैसे नम्बरवार जो आये हैं, वे फिर जायेंगे भी ऐसे। सब आत्मायें नम्बरवार आती हैं। तुम भी नम्बरवार कैसे जायेंगे, वह सब समझाया जाता है। ... ड्रामा में मेरा पार्ट ही है सबको पावन बनाने का। ... बाप सभी रूहों का बाप है।"
सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

"बाप बेहद का वर्सा देते हैं। बेहद का वर्सा है - पवित्रता-सुख-शान्ति का। सतयुग को पूरा सुखधाम कहा जाता है। त्रेता है सेमी क्योंकि दो कला कम हो जाती है। कला कम होने से

रोशनी कम होती जाती है। चन्द्रमा की भी कलायें कम होती है। ... बाकी जाकर लकीर बचती है। बिल्कुल निल नहीं होता है। तुम्हारा भी ऐसे है। निल नहीं होते।"

सा.बाबा 2.4.04 रिवा.

"बाप सब आपही देते रहते हैं। मांगने से मरना भला। कोई भी चीज मांगनी नहीं होती है। ... एक तो बाप कहते हैं - बीती को कभी चितवो नहीं, ड्रामा में जो कुछ हुआ पास्ट हो गया, उसका विचार नहीं करो। ... अन्दर में सिर्फ बेहद के बाप को याद करना है। दूसरा डायरेक्शन क्या देते हैं? 84 के चक्र को याद करो क्योंकि तुमको देवता बनना है।"

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

"नाटक में तो सब एक्टर्स चाहिए ना। अन्त में जब सब आ जाते हैं, जब एक भी नहीं रहेगा, तब वापस जायेंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं, सब चले जायेंगे, बाकी थोड़े बचेंगे। वह कहेंगे सबको सी ऑफ किया।" सा.बाबा 12.3.04 रिवा.

"कोशिश कर अन्तर्मुखी होकर बाप को याद करेंगे तब ही पाप कटेंगे। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। सबसे जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। जो बहुत ऊंच बनते हैं, वे ही बिल्कुल नीच भी बनते हैं। जो प्रिन्स बनते हैं, उनको ही फिर बेगर भी बनना है। ड्रामा को अच्छी रीति समझना है।... यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी याद रखना चाहिए।"

सा.बाबा 17.3.04 रिवा.

"यह अलौकिक ब्राह्मण जीवन है ही सदा स्वस्थ जीवन। वरदाता से "सदा स्वस्थ भव" का वरदान मिला हुआ है। ... "मास्टर सर्वशक्तिवान" - यह श्रेष्ठ स्थिति भी है और साथ-साथ डायरेक्ट परमात्मा द्वारा "परम टाइटिल" भी है। ... इस एक टाइटिल की स्थिति रूपी सीट पर सेट रहो तो यह सर्वशक्तियाँ सेवा के लिए सदा हाजिर अनुभव होंगी।"

अ.बापदादा 29.10.87

"ऐसे भी नहीं कि सब नई दुनिया में चलेंगे, सब मुक्तिधाम में बैठ जायें, यह भी कायदा नहीं है, प्रलय हो जाये। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया और नई दुनिया का बहुत ही कल्याणकारी संगमयुग है। अब चेन्ज होनी है, फिर शान्तिधाम में जायेंगे। वहाँ सुख-दुख की भासना की भी कोई बात नहीं।" सा.बाबा 28.1.04 रिवा.

* जो किसी व्यक्ति की महिमा से अविभूत होता है, उसको सारे कल्प में कभी न कभी उनकी निन्दा से भी प्रभावित होना ही पड़ता है। परमात्मा न किसकी महिमा से अविभूत होता है, न निन्दा से प्रभावित होता है। वह ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा साक्षी-दृष्टा होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है। बुद्धिवान ज्ञानी पुरुष का कर्तव्य है कि वह निन्दा-

स्तुति, मान-अपमान ... आदि से परे साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखे और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाये।

"नॉलेजफुल अर्थात् रचता को भी जानने वाले, रचना को भी जानने वाले और माया के भिन्न-भिन्न रूपों को भी जानने वाले। ऐसे नॉलेजफुल सदा पॉवरफुल सदा विजयी होंगे।"

अ.बापदादा 28.1.77 कुमारों से

"यह जल इत्र-फुलेल का कार्य करेगा। जैसे जड़ी-बूटियों के कारण गंगा जल अभी भी और जल से पवित्र है। ऐसे खुशबूदान जड़ी-बूटियाँ होने के कारण जल में नेचुरल खुशबू होगी। जैसे यहाँ दूध शक्ति देता है, ऐसे वहाँ का जल ही शक्तिशाली होगा, स्वच्छ होगा। इसलिए कहते हैं कि दूध की नदियां बहती हैं।"

अ.बापदादा 30.1.85

* अन्त और आदि का गहरा सम्बन्ध है। अन्त समय जिसका जैसा स्वभाव-संस्कार होता है, वैसा ही स्वभाव संस्कार आदि में अर्थात परमधाम से जब नये कल्प में आते हैं तो पहले जन्म में होता है।

"बापदादा ने होमवर्क दिया था कि खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे, उतनी बढ़ेगी। ... खुश रहना है। कारण नहीं निवारण करना है, समस्या नहीं समाधान स्वरूप बनना है।... ओ.के. रहे हैं। अगर लक्ष्य रखेंगे तो लक्ष्य से लक्षण स्वत: ही आते हैं।"

अ.बापदादा 2.2.07

"सद्गति तो एक सेकण्ड में मिल सकती है। श्रीमत कहती है - मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... वह सर्व का सद्गति दाता है। तुम किसकी सद्गति नहीं कर सकते हो। ... मुक्ति तो एक सेकण्ड में मिल सकती है। मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति तो है ही।"

सा.बाबा 26.2.07 रिवा.

विश्व-नाटक के आध्यात्मिक विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त और उनका पुरुषार्थ से सम्बन्ध

पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

पुरुषार्थ क्या, क्यों और कैसे ? मानव जीवन का यथार्थ पुरुषार्थ है - अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी स्थिति में इस विश्व-नाटक को देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना। निराकार परमपिता परमात्मा सुख-दुख दोनों से न्यारा है, ऐसे ही यथार्थ आत्मिक स्वरूप भी सुख-दुख से न्यारा है। यह विश्व-नाटक 5000 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो प्रश्न उठता है कि पुरुषार्थ क्यों करें ? पुरुषार्थ ही जीवन है अर्थात पुरुषार्थ करना जीवात्मा का स्वभाव है अर्थात् कोई भी जीवात्मा इस कर्मक्षेत्र पर कर्म अर्थात् पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती। परन्तु अभी तक हम जो पुरुषार्थ करते आये हैं, वह भौतिक जगत की प्राप्तियों के लिए करते हैं, अब हमको पुरुषार्थ पुरुष अर्थात् आत्मा के कल्याण के लिए करना है। इसलिए अध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुषार्थ आत्मिक कल्याण के लिए किये गये कर्म के लिए ही प्रयोग किया जाता है। अभी हमको परमात्मा के द्वारा यथार्थ ज्ञान मिला है, जिसके आधार पर हम आत्मिक कल्याण के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकते हैं। यथार्थ पुरुषार्थ के लिए अभी हम जहाँ पर खड़े हैं, वहीं से हमारा भविष्य जीवन आरम्भ होता है, इसलिए हम जहाँ खड़े हैं वहाँ ही अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायें तो ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है और उसस हमारा भविष्य भी सुखमय होगा। इसलिए अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ आवश्यक है। इसलिए देहाभिमान को छोड़कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है। हमको न इस जीवन से ऊबना है, न पुरुषार्थ से ऊबना है और न ही पुरुषार्थ में अलबेला होना है।

जब किसी चीज या कर्म का महत्व अनुभव होता है तब ही उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ होता है और जब पुरुषार्थ यथार्थ होता है तब उसका सुख अनुभव होता है। इस संगमयुगी ईश्वरीय जीवन में ज्ञान-योग का, परमात्मा के साथ का, साक्षी स्थिति का, ईश्वरीय सेवा का जीवन में कितना महत्व है और भावी जीवन से उसका कितना सम्बन्ध है, उसका महत्व अनुभव होगा तब ही इसका सुख अनुभव होगा और जीवन में नशा और खुशी रहेगी तथा उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ होगा।

* जिस कार्य की उपयोगिता आत्मा अनुभव करती है, उसको करने का और जिस वस्तु की उपयोगिता और आवश्यकता आत्मा अनुभव करती है, उसको प्राप्त करने के लिए संकल्प और पुरुषार्थ अवश्य होता है और पुरुषार्थ अनुसार सफलता भी अवश्य मिलती है क्योंकि ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्राप्ति के सिद्धान्त पर ही आधारित है।

आत्मा परमात्मा की वंशधर है और आत्मा स्वत: में परिपूर्ण और परमानन्दमय है। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, यश-अपयश ... दोनों के प्रभाव से मुक्त होती है और सदा परम आनन्द का अनुभव करती है। इसलिए इन बातों के लिए पुरुषार्थ न करके अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ ही सर्वोत्तम पुरुषार्थ है, जिसमें देह और देह की दुनिया स्वत: भूल जाती है। मूल पुरुषार्थ है ही आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, जिसमें सारा पुरुषार्थ समाया हुआ है। बाकी और सारा पुरुषार्थ है इस पुरुषार्थ की सफलता में आने वाली बाधाओं को दूर करने का।

* आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही सर्व समस्याओं का समाधान और सर्व प्राप्तियों का साधन है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न है। कब दूसरे की प्राप्तियों को देख-सुनकर उनके प्रति आकर्षित नहीं होना चाहिए। जो दूसरे की प्राप्तियों की ओर आकर्षित होता है, वह अपनी प्राप्तियों का सुख अनुभव नहीं कर सकता है। ड्रामा अनुसार परमात्मा और प्रकृति ने हर आत्मा को कुछ न कुछ विशेश प्राप्तियां अवश्य दी हैं, उनका सुख लेने वाला ही इस जगत में सुखी है। विश्व की सर्व प्राप्तियाँ किसी एक व्यक्ति को न प्राप्त हैं और न हो सकती हैं और न एक समान प्राप्तियाँ सभी को प्राप्त होना सम्भव है। इसलिए दूसरों को न देख अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अपनी प्राप्तियों को देखना और उसका सुख लेना ही यथार्थ पुरुषार्थ है।

"कोई किसको डिफेम करते हैं तो उन पर केस करते हैं। परन्तु यह है ड्रामा, इसमें कोई की बात नहीं चल सकती। बाप जानते हैं कि तुम दुखी हुए हो फिर भी यह होगा। ... बच्चे कहते बाबा हम आपका कितना शुक्रिया मानें। ड्रामा अनुसार हमको आपको वर्सा तो देना ही है, हमें आपको बच्चा बनाना ही है। इसमें शुक्रिया क्या करेंगे। ... बाप को तो अपनी फर्ज अदाई करनी ही है।... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग में आयेंगे। ऐसे नहीं कि बाबा भेज देंगे। ऑटोमेटिकली जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग में आ जायेंगे। बाकी इसमें शुक्रिया की कोई बात नहीं है। हम वण्डर खाते हैं कि बाबा ने क्या खेल दिखाया है। आगे तो

हम जानते नहीं थे, अब जाना है। क्या बाबा फिर हम ये ज्ञान भूल जायेंगे ? हाँ बच्चे हमारी और तुम्हारी बुद्धि से ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। फिर समय पर ज्ञान इमर्ज होगा, जब ज्ञान देने का समय होगा।" सा.बाबा 11.5.02 रिवा.

* समस्त चेतना को समेटकर चेतन आत्मा में स्थित हो जाना ही सुसुप्त अवस्था या डेड साइलेन्स की अवस्था है। समस्त झाड़ के ज्ञान से अपने को समेटकर आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही बीज रूप स्थिति है, जो सर्व पुरुषार्थ का सार है और सर्व प्रकार के पुरुषार्थ का आधार है।

* पुरुषार्थ का फल अवश्य मिलता है और प्राप्ति भी पुरुषार्थ से होती है। इसलिए हमको कब पुरुषार्थ के फल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए और न ही किसकी प्राप्तियों को देखकर उनसे ईर्षा करनी चाहिए। इस सत्य को जानकर जो निश्चिन्त, निर्संकल्प, निरासक्त, निर्भय होकर अपने पुरुषार्थ को करता है, वही अपने अपने पुरुषार्थ में सफल होता है अर्थात् अपने अभीष्ठ लक्ष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव करता है। पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है।

* बाबा का बनकर अगर हमको अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं हो रहा है और बुद्धि किन्हीं वस्तु या व्यक्तियों में जा रही है तो निश्चित समझो कि यथार्थ पुरुषार्थ की कमी है और कहाँ न कहाँ हमो यज्ञ के नियम-संयम का, बाबा की श्रीमत का उलंघन हो रहा है। अगर हमने समय रहते उसको चेक करके ठीक नहीं किया तो वह हमको श्रेष्ठ पुरुषार्थ से विमुख कर देगी।

"बाप सत्य है, हम सत्य बन रहे हैं। बाप कभी भी रांग बात नहीं सुनायेंगे। ... जब तक परिपूर्ण बनें, तब तक कुछ न कुछ हो सकता है। परन्तु तुम्हारा काम है शिवबाबा से। मनुष्य तो कुछ भी भूल कर सकते हैं। ... विकारों से विदाई तो अन्त में ही होनी है, तब तक कुछ न कुछ खामियां रहती हैं, उनको हटाने का पुरुषार्थ करना है।"

सा.बाबा 4.1.07 रिवा.

"जनक बच्ची की बड़ी दिल नम्बरवन है, क्यों-क्या नहीं सोचती है और हो ही जाता है। ... बापदादा ने सुना कि खर्चा तो हुआ लेकिन और ही बचत हुई। बच गया, तो और ही बढ़ गया, कम नहीं हुआ। तो यह किसकी कमाल है ? बड़े दिल की।"

अ.बापदादा 31.10.06

"स्वमान को भूलने के कारण ही देहभान, देहाभिमान आता है और परेशान भी होते हैं ... स्वमान की शान में रहना और इस शान से परे परेशान रहना - दोनों को जानते हो। बापदादा देखते हैं - सभी बच्चे मैजारिटी नॉलेजफुल तो अच्छे बने हैं लेकिन पॉवर में फुल पॉवरफुल

नहीं हैं, परसेन्टेज में हैं।" अ.बापदादा 16.11.06

"विश्व सेवा के प्रति समय-संकल्प लगाने से स्व का पुरुषार्थ ऑटोमेटिक हो ही जायेगा। रहेगा नहीं लेकिन बढ़ेगा। किसी भी आत्मा की आशायें पूरी करेंगे, दुख के बजाये सुख देंगे , निर्बल आत्माओं को शक्ति देंगे, गुण देंगे, तो वे कितनी दुआयें देंगे और दुआयें लेना सबसे सहज साधन है, आगे बढ़ने का।" अ.बापदादा 31.10.06

"बाकी यह तो जानते हैं कि यह ड्रामा है, यह खेल है, आदि से अन्त तक कैसे चलता है, उसकी जो नॉलेज है, उसको समझना है। ... गीता में भी है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है, आपही अपना शत्रु है। इसलिए हमको पुरुषार्थ तो करना ही है। पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध। जो करेंगे सो पायेंगे।" मातेश्वरी 23.4.65

"आजकल पुरुषोत्तम आत्माओं को प्रकृति साधनों और सेलवेशन के रूप में प्रभावित करती है। साधन वा सेलवेशन के आधार पर योगी जीवन है।... साधन साधना का आधार नहीं हों लेकिन साधना साधनों को स्वत: आधार बनायेगी। इसको कहा जाता है प्रयोगी।"

अ.बापदादा 25.11.93

"पुरुषार्थ की प्रालब्ध अवश्य मिलेगी। यहाँ सहज पुरुषार्थी हो और वहाँ सहज प्रालब्धी हो। ... यह भी बेहद ड्रामा के खेल में छोटे-छोटे खेल हैं।"

अ.बापदादा 13.2.92

"बापदादा चाहते हैं कि कोटों में कोई, कोई में भी कोई मेरे बच्चे अभी से एवर-रेडी हो जायें। क्यों ? कई सोचते हैं कि समय आने पर हो जायेंगे ... क्रियेशन को अपना शिक्षक बनायेंगे ? दूसरी बात जानते हो कि बहुत काल का हिसाब है। बहुत काल की सम्पन्नता बहुत काल की प्राप्ति कराती है। तो अभी समय की समीपता प्रमाण बहुत काल का जमा होना आवश्यक है।"

अ.बापदादा 3.2.05

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के पुरुषार्थ और प्रालब्ध के निमित्त और निर्माण के कर्म फिलॉसाफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।" अ.बापदादा 20.1.86

"पुरुषार्थ तो सब करते हैं परन्तु जो जास्ती पुरुषार्थ करते हैं, वे जास्ती प्राइज़ लेते हैं। यह तो एक कॉमन कायदा है, यह कोई नई बात नहीं है। ... जिन्होंको ऊंच पद मिला है, उन्होंने जरूर पुरुषार्थ किया है। ... पुरुषार्थ ऐसा करना है जो अन्त समय एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये।" सा.बाबा 13.5.04 रिवा.

"इस चित्र से चेक करना, हर रोज चेक करना। क्योंकि बहुत काल का पुरुषार्थ, बहुत काल के राज्य-भाग्य प्राप्ति का आधार है। अगर आप सोचो कि अन्त के समय बेहद का वैराग्य तो आ ही जायेगा, लेकिन अन्त समय आयेगा तो बहुत काल हुआ या थोड़ा काल हुआ ? बहुत काल तो नहीं कहेंगे ना ! यह बहुत काल के पुरुषार्थ का बहुत काल की प्रालब्ध का कनेक्शन है, इसलिए अलबेले नहीं बनना। ... विश्व का अन्त काल सोचने के पहले अपने जन्म का अन्तकाल सोचो।"

अ.बापदादा 18.1.04

"मेहनत से छूटने के लिए सिर्फ यह एक अभ्यास सदा करते रहो - "मैं निराकार सो साकार के आधार से यह कार्य कर रहा हूँ।" करावनहार बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराओ। अपने निराकारी वास्तविक स्वरूप को स्मृति में रखेंगे तो वास्तविक स्वरूप के गुण-शक्तियाँ स्वत: ही इमर्ज होंगे। ... स्मृति स्थिति को स्वत: बनाती है।"

अ.बापदादा 15.3.85

धन-सम्पत्ति और उसकी प्राप्ति का विधि-विधान

पदार्थों की नश्वरता और अधिकार परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त

इस विश्व की हर वस्तु नश्वर है अर्थात् हर वस्तु सतो-रजो-तमो और फिर विनाश अर्थात् रूप परिवर्तन को प्राप्त करती है। किसी भी वस्तु के विषय में ये परिकल्पना करना कि ये सदा ही एक समान रहेगी और सदा ऐसे ही सुखदायी होगी, आत्मा की भूल है। ये भूल ही आत्मा के दुख का कारण बनती है। सभी वस्तुयें परिवर्तनशील होने के साथ-साथ उन पर आत्माओं का अधिकार भी परिवर्तनशील है। जो वस्तु आज एक व्यक्ति के अधिकार में है, वही विश्व-नाटक के पार्ट अनुसार कल दूसरे के अधिकार में होगी। किसी भी वस्तु पर एक ही व्यक्ति का सनातन अधिकार नहीं है। इसलिए किसी वस्तु को अपना समझना और सदा के लिए उस पर अपने अधिकार की परिकल्पना करना या उसके प्रति मोह आत्मा को दुखी करता है। ये आत्मा की अज्ञानता है। पदार्थो की नश्वरता और अधिकार परिवर्तन की ये प्रक्रिया आत्माओं के कर्मों और आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब पर आधारित है। ये देह आत्मा की सबसे श्रेष्ठ भौतिक सम्पत्ति है, जो भी नश्वर है, इसलिए ही बाबा ने कहा है - देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर मुझे याद करो। आत्मा का सबसे अधिक मोह इस देह में ही हो जाता है।

* संगमयुग पर ही ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर विश्व-नाटक के ज्ञान के साथ कर्म की गहन गति का ज्ञान, विश्व-नाटक के विभिन्न भौतिक राज़ों का ज्ञान, नियम और उसके सिद्धान्तों को बताते हैं और इस सब ज्ञान को सर्व आत्माओं को देने के लिए ज्ञान-कलष माताओं-बहनों के सिर पर रखते हैं। माताओं-बहनों को ज्ञान कलष देकर परमात्मा संगम पर ही पुरुष-प्रधान सृष्टि को सन्तुलित करते हैं। परमपिता परमात्मा के द्वारा रचित सतयुग-त्रेता की सृष्टि में स्त्री-पुरुष के अधिकार समान रहते हैं, द्वापर से देहाभिमान के कारण पुरुष-प्रधान समाज का बीजारोपण होता है और समाज दिनोदिन पुरुष-प्रधान बनता जाता है, जो असन्तुलन कलियुग के अन्त में अति में हो जाता है, उस असन्तुलन को सन्तुलित करने के लिए संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा का अवतरण होता है और परमात्मा ज्ञान कलष माताओं-बहनों के सिर पर रखकर, उनका मान-मर्तबा बढ़ाकर उस असन्तुलन को मिटाते हैं, जिससे ऐसे नये समाज और सभ्यता का निर्माण होता है, जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों के अधिकार समान होते हैं।

ये भी सृष्टि का विधान है कि ज्ञान से हिसाब-किताब बनता भी अधिक है तो चुक्ता भी जल्दी

होता है। कार्य भी सहज होता है। स्त्री-पुरुष के अधिकारों के 25 सौ साल के असन्तुलन को ज्ञान के आधार पर परमात्मा संगमयुग के 100 साल में ही सन्तुलित कर देते हैं। 2500 साल का विकर्मों का खाता संगम के थोड़े से समय में पूरा करके कर्मातीत बना देते हैं, 2500 साल के देहाभिमान को मिटाकर थोड़े समय में ही देही-अभिमानी बना देते हैं।

संक्षेप में देखें तो ये सृष्टि सतयुग-त्रेता में सन्तुलित, द्वापर-कलियुग में पुरुष प्रधान अर्थात् असन्तुलित, संगमयुग पर स्त्री-प्रधान समाज। फिर से समाज में स्त्री-पुरुष दोनों के अधिकारों और कर्तव्यों को सन्तुलित करने के लिए शिवबाबा ने ज्ञान कलष माताओं के सिर पर रखा और साकार बाबा ने माताओं-बहनों को मान-सम्मान देकर आगे बढ़ाया और भाइयों को भी कहा कि पुरुषों को भी माताओं को आगे रखना चाहिए, बहनों को सम्मान देना चाहिए।

वास्तव में ज्ञान-गुण-शक्तियां आत्मा की सबसे श्रेष्ठ धन-सम्पत्ति है, जो सदा, सर्वदा और सर्वत्र उसके काम आती हैं, जो उपयोग करने से बढ़ती हैं। इस सम्पत्ति का उपयोग करना ही इनके संचय का आधार है। इनका उपयोग न करने से इनमें गिरावट आती है अर्थात् ये क्षीण होने लगते हैं।

स्थूल धन-सम्पत्ति भी आत्मा को क्यों और कैसे मिलती है, उसका विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है। सतयुग-त्रेता की धन-सम्पत्ति अभी संगमयुग पर परमात्मा के प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियों के उपयोग और प्राप्त स्थूल-साधन सम्पत्ति को ईश्वरीय सेवा में लगाने से मिलती है अर्थात् उसके लिए वहाँ कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है। इसलिए उसको परमात्मा पिता का वर्सा कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में स्थूल साधन-सम्पत्ति वहाँ के पुरुषार्थ के अनुसार मिलती है। इस साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति में आत्मा का पुरुषार्थ और पार्ट दोनों का ही महत्व है।

"विल पॉवर कैसे आ सकेगी ? विल पॉवर आने का साधन कौनसा है ? ... साकार में कर्म करके दिखाया। पहला-पहला कदम कौनसा उठाया ? सभी कुछ विल कर दिया, विल करने में देरी तो नहीं की। ... अगर कोई सोच-सोच कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता।" अ.बापदादा 18.1.70

विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और परमात्मा

परमात्मा विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्तों और विधि-विधानों का पूर्ण ज्ञाता है परन्तु वह भी उन नियम-सिद्धान्तों से बंधायमान है अर्थात् वह भी किसी नियम तो न तोड़ सकता है और न ही तोड़ता है अर्थात् वह भी उनके विरुद्ध नहीं जा सकता अर्थात् वह भी उन नियम-सिद्धान्तों और विधि-विधानों का पूर्ण पालन करता है। वही आकर हमको विश्व-नाटक के सर्व नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान देता है और हमको भी पालना करना सिखाता है, जिसके आधार पर ही हम भविष्य में श्रेष्ठ प्रालब्ध का उपभोग करते हैं।

"मनुष्यों को मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जाने। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं।" सा.बाबा 30.10.03 रिवा.

"भक्ति मार्ग में कितना बड़ा आलीशान हीरे-जवाहरों का शिवबाबा का मन्दिर बनाया है। जिनको शिवबाबा द्वारा स्वर्ग का वर्सा मिला है, उन्हों ने ही उनका मन्दिर इतना ऊंच बनाया है। ... बाप कहते हैं - मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं तो भक्ति मार्ग में तुम कितना भारी मन्दिर बनाते हो।" सा.बाबा 13.12.03 रिवा.

"बाप समझाते हैं कि बाप सबको तो नहीं पढ़ायेंगे परन्तु सबको साथ जरूर ले जायेंगे। ड्रामा प्लैन अनुसार मैं बांधा हुआ हूँ सबको साथ ले जाने के लिए।... हाँ, इतना सब बच्चे समझेंगे कि बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 21.10.06 रिवा.

"धन का भाग्य अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकतानुसार समय पर आराम से मिलेगा ... सेवा के लिए भी धन की खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। सेवा के समय पर भाग्यविधाता किसको निमित्त बना ही देते हैं।"

अ.बापदादा 19.11.89

"दिल्ली वाले जब यज्ञ में आवश्यकता थी तब सहयोगी बने। तो जो समय पर सहयोगी बनता है, उसको ऑटोमेटिकली विशेष सहयोग मिलता है। ... बापदादा किसका रखता नहीं है। अभी ही देता है और एक का पद्मगुणा करके देता है।"

अ.बापदादा 1.12.89 P-2

"अभी तुम बच्चे अविनाशी ज्ञान रत्नों की लेनदेन करते हो। ... बाप तो सबको देने वाला है, लेने वाला नहीं है। एक देवे, 10 पाये। गरीब 2 रुपया देते हैं तो पदम मिल जाते हैं। भारत

सोने की चिड़िया था ना। बाप ने कितना धनवान बनाया। सोमनाथ के मन्दिर में कितना अकीचार धन था। ... फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। ... बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं, जिससे तुम अथाह धनवान बन जाते हो।"

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"सिर्फ बाप को याद करना है। ... शिवबाबा को कोई शास्त्र आदि पढ़ने की दरकार नहीं है। यह ब्रह्मा पढ़ा हुआ है। तुमको तो शिवबाबा पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी पढ़ा सकते हैं परन्तु तुम सदैव समझो शिवबाबा पढ़ाते हैं, उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 23.6.04 रिवा.

"दुख में भगवान को ही याद करते हो। फिर अगर उसी ने दुख भी दिया तो दुख देने वाले को क्यों याद करना चाहिए? ... कष्ट होता है तो उसे ही याद करते हैं। ... मांग करते हैं तो जरूर वह उसका दाता है, सुख देने वाला है तब तो उनसे मांगते हैं। मांगते हैं तो जरूर हर बात का इलाज उसके पास है।"

मातेश्वरी 15.12.63

"सर्व शक्तियां बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"अभी तुम ईश्वरीय गोद में आये हो। वास्तव में सब आत्मायें परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं। मनुष्य सृष्टि प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान है। ... ब्रह्मा तन से ब्रह्मा मुख वंशावली को वर्सा देता हूँ। ब्रह्मा द्वारा तुमको दादे का वर्सा मिलता है। दादे के वर्से पर सभी आत्माओं का हक है।"

सा.बाबा 26.09.03 रिवा.

"मुख्य है शिवबाबा को याद करना। शिवबाबा यहाँ आते हैं पढ़ाने के लिए। सारा दिन तो बाबा इसमें नहीं बैठ जायेगा। सेकेण्ड की बात है। तुम याद करो और आ जायेगा।"

सा.बाबा 22.2.07 रिवा.

विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और ब्रह्मा बाबा

विश्व-नाटक के नियम और सिद्धान्त का दर्पण है ब्रह्मा बाबा का जीवन। शिवबाबा ने ब्रह्मा तन से इस विश्व-नाटक के सभी नियम और सिद्धान्तों का ज्ञान दिया और कर्तव्य करके दिखाया। ब्रह्मा बाबा ने उन सभी नियम और सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण कर उसका प्रत्यक्ष स्वरूप अर्थात् उदाहरण बनकर दिखाया है। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की आत्मा ने ब्रह्मा तन से जो कर्तव्य किये वे विश्व के लिए नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान बन गये, उनको यथार्थ रीति से फॉलो करने वाला सदा ही श्रेष्ठ कर्म करता है, जिसके फलस्वरूप वह परम सुख का अनुभव करता है। बाबा हमको भी कहते हैं - इस समय तुम जो कर्म करते हो, वह दूसरों के लिए और भक्ति मार्ग के विधान बन जाता है, इसलिए अपने हर कर्म पर पूरा ध्यान रखो।

"आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं। ... चैतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में, फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था? ... आपकी हर चलन से ऐसे महसूस करें कि यह न्यारे और अलौकिक हैं। ... फिर बाप की प्रत्यक्षता होगी। आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता होगी, इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।"

अ.बापदादा 15.12.03

* ये पंच तत्व ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ और परमपिता परमात्मा के सानिध्य से पावन बन गये और ये पंच तत्व का शरीर पंच तत्वों में विलीन होकर सभी तत्वों को पावन बनाते हैं। - अन्तिम संस्कार के बाद अव्यक्त बापदादा ने इस सत्यता का ज्ञान दिया था।

ब्रह्मा बाबा के शरीर का दाह संस्कार के बाद अव्यक्त बापदादा ने ऐसे महावाक्य उच्चारण किये थे कि ये 5 तत्व, पंच तत्वों में विलीन होकर पंच तत्वों को भी पावन करेंगे।

"सतगुरु का सम्बन्ध - सतगुरु द्वारा श्रीमत ... चेक करो - हर कदम श्रीमत पर चलता है? भाग्य तो प्राप्त है लेकिन भाग्य के प्राप्ति का जीवन में अनुभव है? हर कदम श्रीमत पर है, कभी मनमत-परमत मिक्स नहीं होती - इसकी परख है - अगर कदम श्रीमत पर है तो हर कदम में पदमों की कमाई जमा का अनुभव होगा। कदम श्रीमत पर है तो सहज सफलता है।"

अ.बापदादा 15.12.03

* स्थिति का आधार स्मृति है और स्मृति का आधार आकर्षण है। आत्मा का आकर्षण उस

तरफ ही जिसके गुण, कर्तव्य, विशेषताओं की आत्मा को स्मृति होती है। जिसका प्यार-स्नेह हमारे प्रति होता है, जिसने हमारे लिए कोई मेहनत की हुई होती है, उसकी स्मृति स्वत: आती है और उसके प्रति आकर्षण रहता है। यद्यपि शिवबाबा ड्रामा अनुसार ही आता है और ड्रामा अनुसार ही सारे कर्तव्य करता है, ब्रह्मा बाबा ने भी ड्रामा अनुसार ही सारे कर्तव्य किये हैं परन्तु उनके गुण-कर्तव्य, विशेषतायें महान है, आत्माओं के कल्याणार्थ किये गये उनके कर्तव्य महान हैं, हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। आत्माओं पर उनका अहसान है, इसलिए उनकी स्मृति को बुद्धि में जाग्रत रखने से ही हमारी स्थिति महान बन सकती है। सदा उनकी स्मृति रखना ही चाहिए।

* परमपिता परमात्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है परन्तु वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देता है, ब्रह्मा बाबा के द्वारा। जो ब्रह्मा बाबा के गुण, कर्तव्य, नियम-संयम, स्वभाव-संस्कार को यथार्थ रीति जानते हैं, वे उसका अनुसरण करके परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त कर सकते हैं।

"बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम अगर बीज नहीं बोयेंगे तो तुम्हारा पद कम हो जायेगा। फॉलो फादर। तुम्हारे सामने यह दादा बैठा है। बिल्कुल ही शिवबाबा और शिव-शक्तियों को ट्रस्टी बनाया। शिवबाबा थोड़ेही बैठ सम्भालेंगे। यह अपने पर थोड़ेही बलि चढ़ेगा। इनको माताओं पर बलि चढ़ना पड़े।" सा.बाबा 10.12.03 रिवा.

"शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा यह रुद्र यज्ञ रचा है। यह यज्ञ अन्त तक चलना ही है। इसमें सारी पुरानी दुनिया की सामग्री स्वाहा होने वाली है।... इस रुद्र यज्ञ से सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी डिनॉयस्टी स्थापन हुई।" सा.बाबा 26.1.07 रिवा.

"बाबा का सीढ़ी के चित्र पर सारी रात विचार चल रहा था... शिवबाबा तो ज्ञान का सागर है, यह बाबा भी ज्ञान की उछालें देते रहते हैं। इसको कहा जाता विचार सागर मन्थन।... हर एक की बुद्धि चलनी चाहिए।" सा.बाबा 30.12.06 रिवा.

"सबका उद्धार होना है। तुमको भी ऑटोमेटिकली प्रेरणा होगी। बाबा गरीब निवाज़ है तो हम भी गरीबों को समझायेंगे। भीलनियों से भी निकलेंगे।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

"जैसे स्थूल आंखों से देखा जाता है, वैसे अनुभव भी एक आंख है। सबसे बड़ी आंख है अनुभव। अनुभव की आंख से देखा तो भी देखा कहेंगे। ... ब्रह्मा बाप के चित्र के आगे बैठते हो तो भी चेतन्यता का अनुभव करते हो ... रेस्पान्स भी मिलता है ना। तो बाप है तभी तो सुनता है और रेस्पान्स देता है। इस अनुभव से वंचित नहीं रह जाना।"

अ.बापदादा 9.3.94

"बाप की और सर्वात्माओं की दुआयें मिल रही हैं, उसकी निशानी है - दुआओं के प्रभाव से दिल सदा सन्तुष्ट रहेगी, मन सदा सन्तुष्ट रहेगा। ... अगर डबल लाइट नहीं रहते तो समझो मन सन्तुष्टता नहीं है। ... तो दिल की सन्तुष्टता वा आज्ञाकारी की दुआयें स्वयं को भी लाइट और दूसरों को भी लाइट बनायेगी।"

अ.बापदादा 19.1.95

"तुम सूक्ष्मवतन में उनके (ब्रह्मा के) फीचर्स तो वही देखते हो, वैकुण्ठ में भी वही देखते हो। जानते हो कि यह मम्मा-बाबा ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। ... इस समय तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो, तुमको बाप सिखला रहे हैं।"

सा.बाबा 1.5.06 रिवा.

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रक्टिकल की। ... सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे, आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।"

अ.बापदादा 31.12.05

"ऐसे भी हैं, जो समझते हैं - इस साकार से हमारा क्या काम है। याद उनको करना है परन्तु थ्रू तो इनके कहते हैं। फिर नम्बरवार रिगार्ड रखना होता है। रिगार्ड वे ही रखेंगे, जो नम्बरवर गद्दी पर बैठने वाले होंगे।"

सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"कोई अभिमान के कारण हिम्मत द्वारा मदद की विधि को भूल जाते हैं ... यह है अटेन्शन रखने में अलबेलापन। जहाँ तक जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का, बेहद की वैराग्य वृत्ति का अटेन्शन रखना ही है। ब्रह्मा बाप को देखा... नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते हुए भी अलबेले नहीं रहे।"

अ.बापदादा 22.11.87

"आज के दिन ब्रह्मा बच्चे ने सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने का सबूत दिया। ... सेवा में हद की रॉयल इच्छायें भी हिसाब-किताब के बन्धन में बांधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।"

अ.बापदादा 18.1.87

"बापदादा हर एक की विशेषता को विशेष रूप से याद करते हैं और विशेषता से सदा आगे बढ़ाते हैं।बापदादा किसकी कमजोरियां नहीं देखते हैं, सिर्फ इशारा देते हैं। ... जितनी किसकी विशेषता को वर्णन करेंगे तो उसको स्वयं ही अपनी कमजोरी अनुभव होगी। ... जब तक अपनी कमजोरी स्वयं ही अनुभव न करें तब तक परिवर्तन कर नहीं सकते।"

अ.बापदादा 20.2.86

"सिवाए एक बाप के और कोई की याद नहीं रहेगी तब ही कर्मातीत अवस्था होगी। अगर कुछ भी अपना होगा तो वह याद जरूर आयेगा। कुछ भी याद न आये, ये बाबा मिसाल है, इनको क्या याद आयेगा ?" सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"आत्मा को देखने से कट उतरेगी, शरीर को देखने से कट चढ़ती है। कभी चढ़ती, कभी उतरती - यह चलता रहता है। यह होते-होते पिछाड़ी कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। मुख्य हर बात में आंखें ही धेखा देती है, इसलिए शरीर को न देखो।"

सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

"ऊंच पद कैसे पाना है, वह तो बाप ने समझाया है। फालो फादर। जैसे इसने सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया। फादर को देखो कैसे सब कुछ दे दिया।... बाप दिखलाते हैं बच्चों को कि देखो, यह मेरे पर कैसे वारी गया। सब कुछ दे दिया।... प्रवेश भी उसमें करते हैं, जो हीरे जैसा था फिर कौड़ी जैसा बना।... वही सबसे पतित बनते हैं, उनको ही फिर पावन बनना है। यह ड्रामा बना हुआ है।" सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

"यह साकार पालना कोई साधारण पालना नहीं है। इस अमूल्य पालना का रिटर्न अमूल्य बनना और बनाना है। विशेष पालना का रिटर्न, जीवन के हर कदम में विशेषता भरी हुई हो। ... तो आज ऐसे भाग्यवान बच्चों से मिलने आये हैं।" अ.बापदादा 23.5.83

ब्रह्मा बाप बच्चों के स्नेह में बोले - सदा हर कदम में सहज और श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार मुझ बाप समान एक बात सदा जीवन में ब्रह्मा बाप की ताबीज़ के रूप में याद रखें - "छोड़ो तो छूटो"। चाहे अपने तन की स्मृति भुलाये देही-अभिमानी बनने में, ... चाहे स्वभाव-संस्कारों के परिवर्तन करने में।

विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और आत्माओं के परस्पर सम्बन्ध

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का अन्य आत्माओं और जड़ प्रकृति अर्थात् पंच तत्वों के साथ सम्बन्ध है। कोई भी आत्मा किसी स्थान पर वहाँ का हिसाब-किताब या पार्ट पूरा होने के बाद एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकती। ऐसे ही किसी आत्मा को उसके पार्ट के अनुसार जिस समय जो चीज मिलनी है, वह अवश्य मिलेगी।

आत्माओं का आत्माओं के साथ भी ऐसा ही हिसाब-किताब रहता है, जिस हिसाब-

किताब के अनुसार ही आत्माओं का आत्माओं के साथ अच्छा या बुरा व्यवहार होता है, मिलते और बिछुड़ते हैं। आत्माओं के हिसाब-किताब की यह प्रक्रिया कल्प के आदि से चलती आती है और कल्प के अन्त में सारे हिसाब-किताब पूरे होते हैं और आत्मायें सारे कल्प के हिसाब-किताब पूरा करके वापस परमधाम घर जाती हैं।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि जब सारे हिसाब-किताब पूरे करके आत्मायें घर जाती हैं तो सतयुग में किस आधार पर सम्बन्ध बनते हैं और किस आधार पर हर आत्मा को साधन-सामग्री प्राप्त होती है। सतयुग के हिसाब-किताब का निर्माण संगम पर परमात्मा के माध्यम से होता है। संगम पर परमात्मा की श्रीमत पर हम जो लेनदेन और व्यवहार करते हैं, उसके आधार पर सतयुग-त्रेता के हिसाब-किताब बनते हैं, इसलिए वे सदा सुखदायी होते हैं। और सारे कल्प में जो आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बनते हैं, वे सुखदायी और दुखदायी दोनों ही प्रकार के होते हैं। सतयुग-त्रेता के बाद भी जो आत्मयें आती हैं, उनके हिसाब-किताब का निर्माण भी डायरेक्ट या इन्डायरेक्ट परमात्मा के माध्यम से ही होता है, इसलिए परमात्मा को सर्व आत्माओं का पिता कहा जाता है और सबको उसका वर्सा मिलता है।

"ब्राह्मणों का ही सर्वोत्तम कुल है। पहला नम्बर कुल कहेंगे ब्राह्मणों का। ब्राह्मण कुल अर्थात् ईश्वरीय कुल। ... तुम ब्राह्मण आपस में भाई-बहन हो। ... शिववंशी तो सब हैं परन्तु जब साकार में आते हैं तो प्रजापिता का नाम होने के कारण भाई-बहन हो जाते हैं।"

सा.बाबा 13.9.06

""भविष्य किसने देखा"... यह है असत्य की जजमेन्ट। भविष्य तो वर्तमान की परछाई है, बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता।... अल्पकाल के मान-शान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्वात्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं पा सकते।"

अ.बापदादा 24.9.92

"कहाँ-कहाँ आत्माओं का अल्पकाल का प्रभाव पड़ जाता है, उन्होंको नोट करते हो कि यह कैसे करते हैं, कैसे बोलते हैं, इस कारण अपनी अथॉर्टी का जो फोर्स होना चाहिए वह दूसरी तरफ दृष्टि जाने से कमजोर हो जाता है। यह बड़ा सूक्ष्म नियम है।"

अ.बापदादा 9.10.71

"एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो। ... जहाँ सच्चाई-सफाई होती है, वहाँ समीपता होती है। ... वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आयेंगे ? जब यहाँ दिल समीप होगी।"

अ.बापदादा 9.10.71

"मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन-वाणी-कर्म में प्योरिटी हो। ... संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो। ... अगर कोई अकर्तव्य कार्य होते देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है।"

अ.बापदादा 22.6.71

"जितना अटूट स्नेह होगा, उतना ही अटूट सहयोग मिलेगा। सहयोग नहीं मिलता, उसका कारण स्नेह में कमी है। ... संकल्प और समय दोनों ही संगमयुग के विशेष खजाने हैं, जिनसे बहुत कमाई कर सकते हो।... अगर समय प्रमाण युक्ति न होती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है।"

अ.बापदादा 26.1.70

"पुरुषार्थ से पद तो स्पष्ट हो ही जाता है। एक होते हैं विश्व के राजे तो विश्व-महाराजन के साथ अपने राज्य के राजे भी होते हैं। ... जो विश्व-महाराजन बनने हैं उनका इस विश्व अर्थात् ब्राह्मण कुल के हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। ... जो पूरा दैवी परिवार है उन सर्व आत्माओं का किस न किस प्रकार से सहयोगी बनना होगा।"

अ.बापदादा 25.12.69

"दैवी कुल तो भविष्य में है परन्तु इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी, उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी। ... जैसे साकार में कर्म करके दिखाया, वही फालो करना है।"

अ.बापदादा 18.1.70

"पूज्य भी तब बनते हो जब श्रेष्ठ कर्म का खज़ाना जमा करते हो। ... रिगार्ड देने वाले को रिगार्ड मिलता जरूर है। यह एक अनादि नियम है। देना अर्थात् लेना और लेना अर्थात् गँवाना।"

अ.बापदादा 10.1.91 पार्टियाँ

"अनुभव से सम्पर्क वाला सम्बन्ध में आता रहेगा। सम्बन्ध के बिना वर्से के अधिकारी नहीं बन सकते। तो अनुभव सम्बन्ध में लाने वाला है।"

अ.बापदादा 31.12.03

* कोई भी व्यक्ति जब किसी से कोई चीज अपने स्वार्थ के लिए लेता है तो उसका प्रभाव उसकी चेतना पर अवश्य पड़ता है अर्थात् वह उसके अहसान में दब जाता है, जिससे वह समय पर यथार्थ निर्णय नहीं कर सकता है।

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)
चढ़ती कला और उतरती कला का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

भगवानुवाच्य - ये विश्व-नाटक चढ़ती कला और उतरती कला का एक खेल है। इसमें हर वस्तु व व्यक्ति अर्थात् आत्मायें या तो चढ़ती कला (Upward tendency) में रहती हैं या उतरती कला (Downward tendency) में रहती हैं क्योंकि इस विश्व-नाटक में कोई भी चीज स्थिर (Static) नहीं है। एकरस अर्थात् स्थिर स्थिति एक परमपिता परमात्मा की ही है क्योंकि वही इस सृष्टि-चक्र का केन्द्र-बिन्दु है, इसका आधार है, इसका बीजरूप है। वही इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों एवं नियम-सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञाता है।

ज्ञान-सागर परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक में जड़ प्रकृति और चेतन आत्माओं की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान दिया है, जिससे हम दोनों का तुलनात्मक दृष्टि से समझकर चढ़ती कला के विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों को पालन करते हुए अपनी चढ़ती कला कर सकें। हमक सारे कल्प में उतरती कला में रहते हैं, कल्प के संगम युग पर ही आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला होती है, जब ज्ञान सागर परमात्मा आकर इन सबका ज्ञान देते हैं और उनका अन्तर बताते हैं। जब हमारी बुद्धि में इन दोनों का ज्ञान होगा, निश्चय होगा, अनुभव होगा तब ही हम चढ़ती कला में जा सकेंगे।

चढ़ती कला का विधि-विधान है - विश्व-नाटक के विधि-विधान को जानते हुए अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर एक परमपिता परमात्मा की अव्यभिचारी याद और परमधाम घर की याद, जिसका ज्ञान परमपिता परमात्मा स्वयं ही देते हैं। चढ़ती कला का ज्ञान परमात्मा देते हैं और उसके लिए पुरुषार्थ करना होता है परन्तु उतरती कला स्वत: ही होती है, जिसका कारण आत्मा का पंच तत्वों से सम्पर्क अर्थात् देह, देह के सम्बन्ध में आना और देहाभिमान होता है। इसलिए सतयुग आदि से ही आत्मा की उतरती कला आरम्भ हो जाती है। चढ़ती कला के लिए परमात्मा निमित्त बनता है परन्तु उतरती कला के लिए कोई निमित्त नहीं बनता है। ये विश्व-नाटक का स्वचालित विधि-विधान है।

"पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बनाने वाला है ही परमपिता परमात्मा बेहद का बाप। इस समय तुम्हारी बुद्धि पारस है क्योंकि तुम बाप के साथ हो। फिर सतयुग में एक जन्म में भी फर्क जरूर पड़ता है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड कला कम होती जाती है। इस समय तुम्हारा जीवन एकदम परफेक्ट बनता है जब तुम बाप मिसल ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर बनते

हो।" सा.बाबा 21.7.04 रिवा.

"सतयुग में यह ज्ञान नहीं रहेगा। अभी हमारी चढ़ती कला है। इसके पहले हम उतरती कला में थे। बाबा हमको चढ़ती कला में ले जाते हैं परन्तु किसकी बुद्धि में यह ज्ञान ठहरता नहीं है क्योंकि बुद्धियोग मेरे साथ नहीं है।" सा.बाबा 4.3.07 रिवा.

"बाबा आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं। जो पावन बनते हैं, वे ही फिर पतित बनते हैं, फिर उनको ही पावन बनाने बाप को आना पड़ता है।... बलिहारी इस समय परमपिता परमात्मा के पार्ट की है।" सा.बाबा 21.2.07 रिवा.

पवित्रता का सिद्धान्त (Law of Purity)

"पवित्रता ही जीवन है और अपवित्रता ही मृत्यु है" अर्थात् पवित्रता सुखमय जीवन का आधार है और अपवित्रता मृत्यु-दुख का मूल कारण है। पवित्रता अर्थात् शत प्रतिशत आत्माभिमानी स्थिति अर्थात् आत्मिक स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति। जैसे शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की। परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है क्योंकि वह सदा पावन है और वही आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं। पवित्रता को सुख-शान्ति की जननी है अर्थात् जहाँ पवित्रता है, वह सुख-शान्ति निश्चित ही होगी। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होती हैं, इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति होती है, सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की धारणा सहज और स्वत: ही होती है, जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में कृत्य का संकल्प स्वत: आता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। पवित्र आत्मा की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना होती है परिणाम स्वरूप दूसरों की भी उसके प्रति शुभ-भावना होती है।

"जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, तो पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। "पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।" किसी भी प्रकार अपवित्रता दुख वा अशान्ति का अनुभव अवश्य कराती है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।"

अ.बापदादा 14.11.87

* पवित्र आत्मा किसी के दुख-सुख से भी प्रभावित नहीं होती है परन्तु दूसरों को दुखी देखकर रहमदिल बनकर उसके दुख को दूर करने का पुरुषार्थ अवश्य करती है। जैसे

शिवबाबा आकर आत्माओं के कल्याणार्थ कर्म करते हैं।

"चाहे दुख का नजारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दुख के नज़ारे में दुख का अनुभव नहीं करेंगे लेकिन दुख-हर्ता, सुख-कर्ता बाप समान दुख के वायुमण्डल में दुखमय व्यक्तियों को सुख-शान्ति के वरदानी बन सुख-शान्ति की अंचलि देंगे। मास्टर दुखहर्ता बन, दुख को रुहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन करेंगे।"

अ.बापदादा 14.11.87

"पवित्रता की शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम में आयेगी। तो समझा, पवित्रता की गुह्य गति क्या है! सदा सुख-शान्ति की जननी आत्मा - यह है पवित्रता की गुह्यता।"

अ.बापदादा 14.11.87

"ब्राह्मणों का धर्म और कर्म क्या है, वह जानते हो? धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है - सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो।"

अ.बापदादा 28.1.77

"सबसे ऊंच भी तुम थे, सबसे जास्ती गिरे भी तुम हो।... अपने को आत्मा समझो, अपने को शरीर क्यों समझते हो। शरीर समझने से फिर ज्ञान उठा नहीं सकते। यह भी भावी।"

सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं आता भी वानप्रस्थ अवस्था में हूँ। वानप्रस्थ अवस्था का कायदा भी यहाँ से ही शुरू होता है। ... वाणी से परे जाने के लिए बाप को याद कर पूरा पवित्र बनना है। पवित्र बनने का तरीका तो एक ही है। ... बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।"

सा.बाबा 1.3.04 रिवा.

"ब्राह्मणों का धर्म और कर्म क्या है, वह जानते हो? धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है - सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो।"

अ.बापदादा 28.1.77

"तुम जितना याद करेंगे, उतना ही पाप कटेंगे।... जितना याद करेंगे, उतना ही पवित्र बनेंगे। प्योरिटी से धारणा अच्छी होगी। पतित न याद कर सकेंगे, न धारणा होगी।"

सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

"इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। जितना बाप को याद करेंगे, उतना बुद्धि का ताला खुलता जायेगा। अगर विकार में गया तो एकदम ताला बन्द हो जायेगा। ... पतित बना, फिर धारणा हो न सके।"

सा.बाबा 6.10.03 रिवा.

"कुमारी का मान बहुत होता है। सगाई हो गई फिर भल पवित्र रहते हैं फिर भी युगल तो हो गये ना। फिर कुमारी का नाम बदल जाता है। (फिर इतना मान नहीं रहता है)"

सा.बाबा 18.09.03 रिवा.

"काम-कटारी चलाने से तुम्हारी यह हालत हो गई है, दुखी हो गये हो। पवित्रता में ही सुख है। सन्यासी पवित्र रहते हैं तब तो पूजे जाते हैं।"

सा.बाबा 5.3.07 रिवा.

"तुम बच्चे ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बनते हो तो कहाँ कुल को कलंक नहीं लगाना। बहन-भाई का नाता कभी उल्टा नहीं होता। लॉ नहीं जो बहन-भाई आपस में शादी करें।"

सा.बाबा 2.3.07 रिवा.

"यह जो कहावत है - दृष्टि से सृष्टि। जैसे सतयुग में योगबल की रचना होती है, वैसे अन्त में आप सबकी दृष्टि से सृष्टि बनेगी। ... दृष्टि धोखा भी देती है और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है।... आत्मिक दृष्टि, दिव्य-दृष्टि और अलौकिक दृष्टि बनानी है।"

अ.बापदादा 17.10.70 - 18.2.07 रिवा.

विश्व-नाटक में संगमयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त / विश्व-नाटक में सतयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त / विश्व-नाटक में कलियुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त / सतयुग और कलियुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों में तुलना

सारे कल्प के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान और संगमयुग के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान में महान अन्तर है। संगमयुग आत्मा की चढ़ती कला का युग है। और तो सारे कल्प में आत्मा की कलायें उतरती ही रहती हैं। भले ही सतयुग में आत्मा में पवित्रता की शक्ति होती है, जिससे कोई विकार नहीं होता है और कोई विकर्म न होने के कारण आत्मा को कोई दुख नहीं होता है। संगम युग पर आत्मा को सारा ज्ञान होता है इसलिए आत्मा की श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति होती है और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति होती है।

संगमयुग पर एक श्रेष्ठ कर्म का सौगुणा अच्छा फल मिलने का विधि-विधान है, जो अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के कर्मों पर प्रभावित होता है अर्थात् जैसे श्रेष्ठ कर्मों का सौगुणा फल मिलता है, वैसे ही अगर कोई विकर्म करते हैं तो उसका सौगुणा दण्ड भी मिलता है।

इस विश्व-नाटक में कुछ विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त तो अटल एवं अपरिवर्तनशील हैं, जो तीनों कालों और सारे चक्र में समान रूप से प्रभावित होते हैं। जैसे कर्म और फल का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त, विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्ति एवं सतत गतिशीलता का सिद्धान्त, जैसा कर्म वैसा जन्म का सिद्धान्त आदि आदि परन्तु कुछ व्यवहारिक नियम-सिद्धान्त ऐसे हैं, जो व्यवहारिक हैं और समय की गति के साथ हर युग में परिवर्तन होते हैं। जैसे सतयुग में स्त्री और पुरुष को समान अधिकार होते हैं परन्तु द्वापर-कलियुग में पुरुष प्रधान समाज हो जाता है और पुरुषों के अधिकार अधिक हो जाते हैं, जन्म का विधि-विधान, आदि आदि।

* संगमयुग पर अपनी स्थूल व सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर राज्य करने वाला ही भविष्य सतयुग में राज्य अधिकारी बन सकता है क्योंकि सतयुग तो संगमयुग की परछाई मात्र है अर्थात् वह संगमयुग की प्राप्तियों और पुरुषार्थ का ही फल है।

* शत प्रतिशत ज्ञान को समझे हुए, धारणा वाले निश्चयबुद्धि आत्मा की विकार की तरफ बुद्धि जा नहीं सकती, विकार की आकर्षण हो नहीं सकती क्योंकि वह आत्मा सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहेगी। यदि विकार की आकर्षण होती है तो समझो ज्ञान में कोई न कोई कमी है और उसको समझकर दूर करने का पुरुषार्थ करो।

* जो इस ईश्वरीय ज्ञान को समझ लेता है, वह दुनिया के भौतिक सुख, मान-शान के आकर्षण में आ नहीं सकता, उसे इन्द्रिय सुखों में सुख अनुभव हो नहीं सकता। इसलिए ड्रामा के नियमानुसार कोई भी आत्मा जो इस धरा पर परमधाम से आती है, वह अपने सुख का खाता भोग कर ही ज्ञान को समझती है। बाबा ने भी कहा है - अगर तुमको सतयुग में ये ज्ञान हो जाये तो राज़ाई का सुख ही गुम हो जाये। चिन्ता लग जाये कि हम नीचे गिरेंगे।

सतयुग से कलियुग अन्त तक किसी भी आत्मा को इस सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान हो जाये तो उसके जीवन का सुख ही उड़ जाये। ये संगमयुग ही ऐसा युग है, जब ये ज्ञान होते भी हमारे सुख का पारा ऊपर ही चढ़ता जाता है क्योंकि अभी आत्मा की चढ़ती कला है। साधू-सन्यासी, धनी-निर्धन, पंडित-विद्वान, राजा-प्रजा इस सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण ही अपनी मान-शान का, साधन-सम्पत्ति का, विषय-वासनाओं का सुख अनुभव करते हैं और ये विश्व-नाटक कलियुग अन्त तक चलता है। इसलिए ये अज्ञानता भी कल्याणकारी है। इस सत्य के ज्ञाता होने के कारण शिवबाबा को किससे भी घृणा नहीं होती, गुस्सा नहीं आता, सबके प्रति रहम और कल्याण की भावना रहती है। ऐसे ही इस सत्य को जानने वाले व्यक्ति की भी किससे घृणा नहीं होगी, सबके प्रति रहम और कल्याण की भावना होगी।

"लॉ कहता है कलियुग के अन्त में सबको पतित होना ही है। ... इस समय है तमोप्रधान दुनिया। तमो कलियुग के आदि से शुरू होता है, फिर अन्त में कहेंगे तमोप्रधान।"

सा.बाबा 16.1.07 रिवा.

"पतित दुनिया में कोई भी पावन नहीं है, पावन दुनिया में फिर कोई भी पतित नहीं होता। ये लॉ नहीं है। ... सतयुग में काम-कटारी नहीं चलती थी।"

सा.बाबा 10.2.07 रिवा.

Q. पतित और पावन की कसौटी (Critaria) क्या है?

योगबल से जन्म लेना या भोगबल से जन्म लेना, काम कटारी चलाना।

"सतयुग है निर्विकारी दुनिया। तब यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता है कि वहाँ पैदाइश कैसे होगी। रावण को जलाते हैं ... रावण का अब खात्मा होना ही है। अभी है संगमयुग। अभी तुम सम्पूर्ण बन रहे हो। ... सतयुग की जब आदि होती है तब वहाँ एक भी विकारी हो न सके। संगम पर विकारी और निर्विकारी दोनों हैं।" सा.बाबा 7.2.07 रिवा.

"मनुष्य को देवता बनाने वाला भगवान है। ... लक्ष्मी-नारायण भी दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं।

दैवी गुण वाले फिर आसुरी गुणों में जरूर आते हैं।"

सा.बाबा 29.1.07 रिवा.

* सतयुग-त्रेता में कोई पुत्रहीन नहीं होता, दुखी नहीं होता, वहाँ सन्तान योगबल से होती, कब अकाले मृत्यु नहीं होती।

"देवताओं और पतित मनुष्यों की एक भाषा हो नहीं सकती। वहाँ की जो भाषा होगी, वही चलेगी। यह पूछने का भी रहता नहीं है। पहले तो बाप से वर्सा ले लो। जो कल्प पहले हुआ होगा, वही होगा।" सा.बाबा 6.4.06 रिवा.

"गिरते तो सब हैं। देवताओं की भी आहिस्ते-आहिस्ते कला उतरती है परन्तु वहाँ सुख ही सुख है। ... काम चिता पर चढ़ने से ही दुख शुरू होता है।"

सा.बाबा 19.12.05 रिवा.

"कलियुग में हैं कनिष्ट पुरुष, जो उत्तम पुरुष लक्ष्मी-नारायण को नमन करते हैं। सतयुग में कोई भी किसको नमन नहीं करते हैं। यहाँ की यह सब बातें वहाँ होती नहीं हैं।"

सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"ब्राह्मण विश्व की किसी भी आत्माओं को देखते हैं, उनको सिर्फ कल्याण की ही भावना से देखते हैं। सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं। सिर्फ ईश्वरीय सेवा के भाव से देखते। पंच तत्वों को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए, प्रकृति के वश नहीं होंगे। ... अभी जो प्रकृति को वश नहीं कर सकते, वे भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते।"

अ.बापदादा 13.6.73

"जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना। वह आगे चलकर महसूस होगा।... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे।... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे।... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।" सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

"मालिक बन इस रचना देह को सेवा में लगाते हो ? जब चाहे जो चाहें मालिक बन कर सकते हो ? पहले-पहले इस देह के मालिकपन का अभ्यास ही प्रकृति का मालिक वा विश्व का मालिक बना सकता है। अगर देह के मालिकपन में सम्पूर्ण सफलता नहीं तो विश्व के मालिकपन में भी सम्पन्न नहीं बन सकते हो। वर्तमान समय की यह जीवन भविष्य का दर्पण है।" अ.बापदादा 14.12.85

"आप आत्माओं ने परमात्मा बाप को जाना, दिल से कहा "मेरा बाबा" और बाप ने कहा "मेरे बच्चे" और रंग लग गया। बाप ने कौनसा रंग लगाया? ज्ञान का गुलाल, गुणों का रंग, शक्तियों का रंग लगाया, जिस रंग से आप देवता बन गये और आपके पवित्र चित्र अभी कलियुग के अन्त तक देवात्माओं के रूप में पूजे जाते हैं।"

अ.बापदादा 3.3.07

विश्व-नाटक में पुरुषोत्तम संगमयुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों का महत्व

सतयुग और कलियुग के विधि-विधान और नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान हमको संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं। संगमयुग के विधि-विधान और नियम-सिद्धान्त क्या है, वह भी परमात्मा ही आकर बताते हैं और उन पर चलना सिखलाते हैं, जिससे हम कलियुग के विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों को छोड़कर सतयुगी विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्तों को अपनाने का पुरुषार्थ करते हैं। संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा विश्व-नाटक के विधि-विधान, कर्म के विधि-विधान आदि का यथार्थ ज्ञान मिलता है। और तो सारे कल्प में ये ज्ञान अंशमात्र ही होता है।

"ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात मशहूर है। जब रात पूरी होती है तो मैं आता हूँ। लक्ष्मी-नारायण का दिन और रात नहीं कहेंगे क्योंकि उनको तो यह ज्ञान ही नहीं है।"

सा.बाबा 25.1.07 रिवा.

"जो ज्ञान बाबा में है, वह अभी तुम्हारे में भी है परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... लक्ष्मी-नारायण को त्रिलोकी का ज्ञान नहीं रहता है। इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान नहीं रहता है। ... इस समय तुम आनन्द को फील करते हो क्योंकि तुम बहुत दुखी थे। अभी तुम सुख और दुख की भेंट कर सकते हो।"

सा.बाबा 17.1.07 रिवा.

"इस ज्ञान मार्ग में कायदे बड़े कड़े हैं। बाप पवित्र बनें और बच्चा न बनें तो वह बच्चा हकदार नहीं हो सकता है, उसको बच्चा नहीं समझेंगे। ... गृहस्थ व्यवहार में ट्रस्टी होकर रहना है। ... अभी तुमको राइट-रांग की बुद्धि मिली है तो कोई भी रांग काम नहीं करना।"

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

"अनेक बार तुम इस राजयोग के अभ्यास द्वारा दैवी राज्य स्थापन करते हो। वहाँ सतयुग में यह बातें याद नहीं रहेंगे। अगर वहाँ यह बातें याद रहें तो फिर सुख ही न भासे। चिन्ता लग

जाये। ... अभी आत्मा को ज्ञान मिलता है कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है।"

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"अभी जितना समय, श्वांस, संकल्प, ज्ञान, गुण, शक्तियों के सफल करते हो, उतना ही उस रूप में ये सब सुखदायी रूप में प्राप्त होते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.92

"ब्राह्मण बनना अर्थात् खाता जमा करना क्योंकि इस एक जन्म के जमा किये हुए खाते के प्रमाण 21 जन्म प्रालब्ध पाते रहेंगे। न सिर्फ 21 जन्म प्रालब्ध प्राप्त करेंगे लेकिन जितना पूज्य बनते हो अर्थात् राजपद के अधिकारी बनते हो, उसी हिसाब अनुसार आधा कल्प भक्ति मार्ग में पूजा भी होती है।... जो अष्ट बनते हैं, वही इष्ट भी इतने ही महान बनते हैं।... यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। "अब नहीं तो कब नहीं"... ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी ? कब नहीं, लेकिन अब करना है। "तुरत दान महापुण्य" कहा जाता है।"

अ.बापदादा 24.3.85

"अभी संगमयुग पर तुम सबसे ऊंचे हो, फिर सतयुग-त्रेता में तुम्हारी डिग्री कम हो जाती है। अब तुम ईश्वरीय दरबार में बैठे हो। ... तुम भाषण आदि करते हो तो बहुत आते हैं, उनकी शमा के साथ महफिल नहीं कहेंगे। शमा के साथ महफिल तो यहाँ है।"

सा.बाबा 1.9.03 रिवा.

पुरुषोत्तम संगमयुग का सफल कर सफलता का सिद्धान्त

जीवन में सच्ची सफलता क्या है? मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा की मूलभूत प्यास है। संगमयुग ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का समय है। किसी भी प्रकार के सुख के अनुभव के लिए उसके विपरीत अनुभव होना भी आवश्यक है, उसका ज्ञान आवश्यक है। संगमयुग पर आत्माओं को दुख-अशान्ति का अनुभव तो होता ही है और जब परमात्मा के द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलता है, तो उसकी धारणा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का जो अनुभव होता है, वह परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से अनन्त गुणा श्रेष्ठ है। इस अनुभव के लिए आत्मा को परमात्मा की श्रीमत पर अपने तन-मन-धन को सफल कर नष्टोमोहा बनकर एक बाप के साथ ही बुद्धियोग लगाना अति आवश्यक है।

परमात्मा के महावाक्य हैं - "सफल करो और सफलतामूर्त बनो" अर्थात् संगमयुग पर अपने तन-मन-धन सबको सफल कर सफलतामूर्त बनने का समय है। परमात्मा की श्रीमत पर जो

अपने तन-मन-धन को सफल करता है, उसका जीवन ही सफलतामूर्त बन जाता है अर्थात् वह जो संकल्प करता है, जो शब्द बोलता है, जो कर्म करता है, वे सब सफल होते हैं। उसका जीवन ही वरदानीमूर्त बन जाता है। ऐसे श्रीमत पर अपने तन-मन-धन को सफल करने वाले का ये जीवन तो सफल होता ही है, लेकिन आधे कल्प तक सफलता उसके साथ रहती है। "श्रीमत को कभी भूलना नहीं है। इसमें बड़ी सावधानी चाहिए। जो कुछ करो, बाप से पूछो - बाबा हम इसमें मूँझते हैं, इसे करने में हमारे ऊपर कोई पाप तो नहीं लगेगा।"

सा.बाबा 19.10.03 रिवा.

"हर मास यही गीत गाते हैं - बाप से मिलना है, जाना है, जमा करना है। तो यह लगन भी मायाजीत बनने का साधन बन जाती है। ... इसलिए बूँद-बूँद जमा करने में बाप की याद समाई हुई होती है। इसलिए यह भी ड्रामा में जो होता है, कल्याणकारी है। अगर ज्यादा पैसे मिल जायें तो फिर माया आ जाये, फिर सेवा भूल जायेगी। ... अपनी सच्ची कमाई का जमा करना, इसी में बल है। सच्ची कमाई का धन बाप के कार्य में सफल हो रहा है।"

अ.बापदादा 27.2.85

"इसलिए तन-मन-धन तीनों ही लगा रहे हैं। इसलिए संगमयुग पर कमाया और ईश्वरीय बैंक में जमा किया - यह जीवन ही नम्बरवन जीवन है। ... कमाया और अविनाशी बैंक में जमा किया तो एक का पद्मगुणा बनता है, 21 जन्मों के लिए जमा हो जाता है। दिल से किया हुआ दिलाराम के पास पहुँचता है। अगर कोई दिखावा की रीति से करते हैं तो दिखावे में ही खत्म हो जाता है, दिलाराम तक नहीं पहुँचता है।"

अ.बापदादा 27.2.85

"जब पूरी दुर्गति हो तब तो भगवान मिलेगा सद्गति के लिए। यह हिसाब-किताब भी तुम जानते हो। ... सबको काला बनना ही है, फिर गोरा बनाने बाप को आना पड़े। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगम युगे-युगे आता हूँ, न कि युगे-युगे।"

सा.बाबा 26.11.03 रिवा.

"अपने को देही समझो, मुझे याद करो। बस यह है मेहनत।... हर एक को अपनी शकल देखनी है - हम क्या बनने लायक हैं? ... भल सरेण्डर किया है, उसका भी हिसाब-किताब है। सरेण्डर किया है परन्तु कुछ सर्विस नहीं करते, सिर्फ खाते-पीते रहते हैं तो जो दिया वह खाकर खत्म करते हैं। फिर और भी बोझा चढ़ जाता है। यहाँ रहते हैं जो दिया सो खाया। जो भल नहीं देते हैं परन्तु सर्विस बहुत करते हैं तो वे ऊंच पद पा लेते हैं। मम्मा ने कुछ नहीं दिया परन्तु पद बहुत ऊंच पाती है क्योंकि बाबा की रुहानी सर्विस बहुत करती है।"

सा.बाबा 29.10.03 रिवा.

* यज्ञ में या कहाँ भी उपभोग से भाग्य का जमा का खाता कम अवश्य होता है और ईश्वरीय सेवा से खाता जमा होता है। दोनों का अर्थात् जमा और ना (Plus-minus) का हिसाब आत्मा की उतरती या चढ़ती कला का आधार बनता है। इसके आधार पर सतयुग से कलियुग अन्त तक उतरती कला ही होती है और संगमयुग पर ही आत्मा की चढ़ती कला होती है, जब परमात्मा के साथ बुद्धियोग रखकर आत्माओं की सेवा करते हैं।

"एकता सफलता का साधन है। आप एक-एक सफलता के सितारे हो। ... जो पुरुषार्थ करते हैं, उसकी प्रालब्ध तो मिलती ही है और सफलता तो बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है।"

अ.बापदादा 15.12.03

"बाप तो है ही दाता। दो कणे के बदले महल दे देते हैं। ... अब सब कुछ खत्म होने वाला है, इस कारण इस कार्य में लगाकर सफल कर लो तो तुमको भविष्य में मिलेगा। ... गरीब बच्चे ही बलिहार जाते हैं।"

सा.बाबा 13.2.07 रिवा.

"बाप के आगे संकल्प द्वारा वचन लिया है। दुनिया वाले भी कहते हैं शरीर चला जाये लेकिन वचन नहीं जाये। मरना पड़े ... सहन करना पड़ें लेकिन वचन में दृढ़ रहने वाला हर कदम में सफलतामूर्त है क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है।"

अ.बापदादा 31.12.06

"दादी ने ब्रह्मा बाप से भी ज्यादा समय सेवा का पार्ट बजाया है, तो विशेष हीरो एक्टर है ना। ... देखो, बीमारी कितनी भी हो लेकिन दर्द की फीलिंग नहीं हो तो वह बीमारी भी आराम देती है। हीरो एक्टर है ना, शान्ति की देवी है।"

अ.बापदादा 31.10.06

"सर्व के सहयोगी तब बनेंगे जब सर्व के स्नेही बनेंगे। स्नेही नहीं तो सर्व के सहयोगी भी नहीं बन सकते। ... सम्बन्ध में भी सहयोगी बनना है और सफलतामूर्त बनना है।"

अ.बापदादा 30.7.70

"आज बापदादा सर्व बच्चों के ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन देख रहे थे। फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। जहाँ निश्चय है, वहाँ हर संकल्प में, हर कार्य में विजय हुई पड़ी है। सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में स्वत: और सहज प्राप्त होती है।"

अ.बापदादा 14.11.02

संगमयुग अर्थात् ज्ञानमार्ग और भक्ति मार्ग के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और दोनों में सम्बन्ध

परमपिता परमात्मा संगमयुग पर आकर जो विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त सिखलाते हैं, भक्ति मार्ग में उनकी ही कापी करते हैं या अंशमात्र में उनका ही अनुकरण करते हैं, जिससे उसके फलस्वरूप अंशमात्र ही उनका फल पाते हैं। संगमयुग पर परमात्मा याद की यात्रा सिखाते हैं, भक्ति मार्ग में तीर्थों की यात्रायें करते हैं, संगमयुग पर परमात्मा पवित्रता का व्रत धारण कराते तो भक्ति मार्ग में उपवास आदि रखते हैं और तीर्थ यात्रा आदि के समय अल्पकाल के लिए ब्रह्मचर्य का पालन भी करते हैं। इस प्रकार भक्ति मार्ग में भी जो परमात्मा के नाम पर करते हैं, उसका फल उनको अल्पकाल के लिए अवश्य मिलता है। भक्ति मार्ग में भी जो तीर्थ-यात्रा, उपवास आदि करते हैं, उससे उनको शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। अभी जो परमात्मा पर बलिहार जाते हैं, उसकी यादगार में काशी कलवट आदि खाते थे। उसके लिए भी परमात्मा ने कहा है उससे भी वे अपने बहुत से पिछले पापों से मुक्त हो जाते हैं परन्तु सम्पूर्ण पावन नहीं बन सकते। इस प्रकार हम देखें तो संगमयुग के नियम-संयम, विधि-विधान संगमयुग के नियम-संयम, विधि-विधानों की यादगार मात्र या अंशमात्र हैं और संगमयुग पर भक्ति मार्ग के नियम-संयम, विधि-विधानों से ही परमात्मा नये युग के विधि-विधानों, नियम-संयम की कलम लगाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, जिन्होंने बहुत भक्ति की है, वे ही ज्ञान मार्ग में भी तीखे जाते हैं।

भक्ति मार्ग में परमात्मा के नाम पर दान-पुण्य, त्याग-तपस्या करते, आत्म-कल्याण के लिए त्याग-तपस्या करते, उएसका फल अवश्य मिलता है। ज्ञान मार्ग में भी परमात्मा की श्रीमत पर आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण के लिए त्याग-तपस्या करते, उसका भी फल अवश्य मिलता है परन्तु ज्ञान मार्ग में अभी भी मिलता है और भविष्य में नई दुनिया में भी मिलता है क्योंकि अभी परमात्मा प्रत्यक्ष में है। कोई नास्तिक भी कोई कर्म शुभ भावना और शुभ कामना या विश्व-कल्याण के अर्थ करते हैं तो उनको भी उसका फल मिलता है अर्थात् उनका नाम-मान-शान होता है, उनको भी जीवन में सुख-शान्ति की अनुभूति होती है परन्तु अल्पकाल के लिए।

"सृष्टि को तमोप्रधान बनना ही है। फिर भक्ति में इतनी जो साधना करते हैं, उससे कुछ मिलता है या नहीं। उस समय यह विचार भी नहीं किया जाता है। अब समझते हैं, कुछ भी मिलता नहीं।"

सा.बाबा 25.03.03 रिवा.

* भक्ति मार्ग में परमात्मा के नाम पर त्याग-तपस्या-सेवा करते हैं, उसका फल करने वाले को अवश्य मिलता है, ज्ञान मार्ग में भी जो त्याग-तपस्या-सेवा केरते हैं, उसका फल अभी भी मिलता है और उसके फलस्वरूप सतयुग में भी मिलता है क्योंकि अभी परमात्मा डायरेक्ट है, इसलिए अभी के कर्म का फल भक्ति मार्ग से कई गुणा मिलता है। नास्तिक भी कोई कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना, विश्व-कल्याण का संकल्प रखकर करते हैं तो उनको भी उसका फल अवश्य मिलता है, उनका नाम-मान-शान अवश्य होता है, उनको भी जीवन में सुख-शान्ति की अल्पकाल के लिए अनुभूति होती है।

"वह आत्मा आकर भासना लेती है। यूँ तो है सब ड्रामा, परन्तु फिर भी भावना का भाड़ा मिल जाता है। ... आत्मा तो भासना लेती है, बाबा तो भासना भी नहीं लेते हैं क्योंकि वह तो अभोक्ता है। ... शिव तो निराकार है।" सा.बाबा 8.2.07 रिवा.

"मनुष्य चारो धामों का फेरा लगाते हैं। अब उनका फेरा क्यों लगाते हैं ? जितना बाप को याद करेंगे, चक (सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग) को फिरायेंगे, उतना ही विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 7.2.07 रिवा.

"भक्ति में भी श्रेष्ठ आत्मा की मन-बुद्धि-संस्कारों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर रहती है। ... भक्ति का फल भक्ति की विधि प्रमाण सन्तुष्टता, एकाग्रता, शक्ति और खुशी को प्राप्त करता है। लेकिन राज्य-पद और भक्ति की शक्ति की प्राप्ति का आधार यह ब्राह्मण जन्म है।"

अ.बापदादा 7.3.90

"इस ब्राह्मण जीवन में मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी बनते हो। इस समय की प्राप्ति सारा कल्प राज्य रूप और पुजारी के रूप में चलती रहती है। ... जितना शक्तिशाली राज्य पद वा पूज्य पद मिलता है, उतना ही भक्ति मार्ग में भी श्रेष्ठ पुजारी बनते हो।"

अ.बापदादा 7.3.90

"भक्त भगवान से मिलने की कितनी मेहनत करते हैं। अब भगवान से मिलने भगत जायेंगे या भगवान को यहाँ आना पड़ेगा ? पतित आत्मा तो वहाँ जा न सके।... अल्फ और बे को याद करना है। इससे तुम पवित्र बनेंगे, उड़ भी सकेंगे और ऊंच पद भी पायेंगे।"

सा.बाबा 25.10.06 रिवा.

"बहुत काल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुत काल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। ... जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबन्ध वाली आत्माओं का बन्धन समाप्त करेगा। यह सेवा नहीं करनी है क्या ? ... सब बन्धनों में पहला है देह-भान का बन्धन, उससे मुक्त बनो। ... ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया।"

अ.बापदादा 18.1.97

"जगदम्बा है ज्ञान-ज्ञानेश्वरी। ... जगदम्बा के मन्दिर और लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में बहुत फर्क है। जगदम्बा का मन्दिर बहुत छोटा होता है परन्तु भीड़ बहुत होती है। ... लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में कब मेला नहीं लगता है, जगदम्बा के मन्दिर पर बहुत मेले लगते हैं। ... अनेक प्रकार की आशायें रखकर जगदम्बा के मन्दिर में जाते हैं। तुम जगदम्बा के बच्चे भी सबकी सर्व मनोकामनायें पूर्ण करते हो।"

सा.बाबा 10.8.06 रिवा.

"बाप आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं। ... जिसने सबसे जास्ती भक्ति की है, उनको जरूर जास्ती फल मिलेगा। ज्ञान का पुरुषार्थ भी वे जास्ती करेंगे। ... जरूर वे ज्ञान में भी तीखे जायेंगे।"

सा.बाबा 6.7.06 रिवा.

"पूजा भी किसकी विधिपूर्वक होती है और किसकी काम चलाऊ होती है। ... योग में भी काम चलाऊ बैठते ... धारणा में भी काम चलाऊ होते हैं।... किसके हर कर्म की पूजा होती है।"

अ.बापदादा 13.12.95

"पहले-पहले जो भी देवी-देवताओं के पुजारी हैं, उनपर पुरुषार्थ करो समझाने का, उन्हों ने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं। वे ही अच्छी रीति समझ सकेंगे। ... ये बातें सुनेंगे भी वे जो देवताओं के पुजारी होंगे और जो गीता पढ़ने वाले होंगे।"

सा.बाबा 15.5.06 रिवा.

"ड्रामा प्लेन अनुसार तुम सब वर्सा लेकर फिर धीरे-धीरे सीढ़ी उतरते हो। ... भक्ति करते तुम सीढ़ी नीचे उतरते ही आये हो, ऊपर तो चढ़ नहीं सकते। लॉ नहीं कहता कोई बीच में सीढ़ी चढ़ सके। ... अभी तुम बच्चों ने ड्रामा को समझ लिया है।"

सा.बाबा 25.4.06 रिवा.

"विधाता, वरदाता के साथ-साथ विधि-विधाता भी आप ब्राह्मण आत्मायें हो। ... इस समय के श्रेष्ठ कर्मों की विधि भक्तिमार्ग की विधि बन जाती है। तो पूज्य रूप में भी इस समय की विधि जीवन के श्रेष्ठ विधान के रूप में चलती है।"

अ.बापदादा 19.3.88

"जो सदा याद में रहते हैं, सदा श्रीमत पर चलते हैं, उनकी पूजा भी सदा होती है। जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसके हर कर्म की पूजा होती है। बड़े-बड़े मन्दिरों में हर कर्म की पूजा होती है।"

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 5

"तुम्हारे में जिन्होंने सबसे जास्ती भक्ति की है, वे ही सबसे जास्ती ज्ञान आकर लेंगे। ... फिर हमको ही बाबा पहले-पहले स्वर्ग में भेज देते हैं। यह है ज्ञानयुक्त बात।"

सा.बाबा 28.3.05

"अन्त समय वरदान देने की सर्विस ज्यादा होगी। इसलिए अन्त समय वरदान लेने वाली आत्माओं में वे ही संस्कार मर्ज हो जायेंगे और वे ही मर्ज हुए संस्कार द्वापर में भक्त के रूप में इमर्ज होंगे। तो अभी ज्ञान के दाता की सर्विस है, फिर होगी वरदाता की सर्विस। ... अभी वारिस बनाने की सर्विस है, फिर होगी सिर्फ प्रजा और भक्त बनाने की सर्विस।"

अ.बापदादा 20.5.71

"स्नेह भाषा को भी नहीं देखता। स्नेह की भाषा सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है। ... सेवा पुण्यात्मा बनाती है। पुण्यात्मा ही पूज्य आत्मा बनती है। अभी पुण्यात्मा नहीं तो भविष्य में पूज्य आत्मा नहीं बन सकते। पुण्यात्मा बनना भी जरूरी है।"

अ.बापदादा 27.3.86

"हर आत्मा का कोई न कोई मूल संस्कार है, जो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूप से समस्या बनकर आता है और उसमें समय भी बहुत लगाया है, शक्ति भी लगाई है। अब शक्तिशाली संस्कार दाता, विधाता, वरदाता का इमर्ज करो तो यह यह महा-संस्कार उस कमजोर संस्कार को स्वत: समाप्त कर देगा। ... भक्ति में यह नियम होता है कि जिस वस्तु की कमी होती है तो उसका ही दान करते हैं। दान करने से देना लेना हो जाता है।"

अ.बापदादा 18.2.86

"इस समय की कमाई न सिर्फ 21 जन्म चलती लेकिन द्वापर में भी भक्त आत्मा होने के कारण कोई कमी नहीं होगी। ... रॉयल फेमिली को कमाने की जरूरत नहीं होती। प्रजा को कमाना पड़ेगा। ... रॉयल फेमिली पुरुषार्थ की प्रालब्ध राज्य प्राप्त करती है। ... अब बजट बनाओ, बचत की स्कीम बनाओ।"

अ.बापदादा 15.1.86

"जिसने शुरू से भक्ति की है, वह ज्ञान को भी जल्दी समझ लेंगे क्योंकि उनको आगे नम्बर में जाना है। ... आत्मा अशरीरी बाप को याद करती है क्योंकि उनसे ऐसा सुख का वर्सा मिला है, इसलिए याद करने बिगर रह नहीं सकते। भल इस समय तमोप्रधान बने हैं तो भी उस बाप को जरूर याद करते हैं।"

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

"रक्षाबन्धन के बाद आती है जन्माष्टमी, फिर होता है दशहरा। वास्तव में दशहरे के पहले तो कृष्ण आ न सके। दशहरा पहले होना चाहिए फिर कृष्ण आना चाहिए। ... जिसने बहुत जन्म लिये होंगे, वह अच्छी रीति समझेंगे। पिछाड़ी में आने वाले को इतनी खुशी नहीं होगी क्योंकि भक्ति कम की है। भक्ति का फल देने बाप आता है।"

सा.बाबा 31.7.04 रिवा.

"भक्ति मार्ग पूरा आधा कल्प चलता है और यह ज्ञान चलता है एक जन्म। फिर दो युग है ज्ञान की प्रालब्ध, ज्ञान नहीं चलता है। ज्ञान सिर्फ एक ही बार मिलता है फिर उसकी प्रालब्ध 21 जन्म चलती है।" सा.बाबा 31.7.04 रिवा.

"बाप ने यह भी बताया है कि जिन्होंने पहले-पहले भक्ति की है, वे ही ज्ञान में तीखे जायेंगे। भक्ति जास्ती की है हो फल भी उनको जास्ती मिलना चाहिए। कहते हैं भगवान भक्ति का फल देते हैं। वह है ज्ञान का सागर तो जरूर ज्ञान से ही फल देंगे। भक्ति का फल है ज्ञान, जिससे स्वर्ग का सुख मिलता है।... जिन्होंने सबसे जास्ती भक्ति की है, ज्ञान में भी वे ही तीखे जायेंगे।" सा.बाबा 3.7.04 रिवा.

"कहते हैं - भक्ति से भगवान मिलता है। किसको मिलता है ? जो पहले-पहले आते हैं, वे ही पहले-पहले भक्ति शुरू करते हैं, उनको ही पहले भगवान मिलता है।"

सा.बाबा 20.5.04 रिवा.

"तुमको यह ज्ञान मिलता है। वह भी कर्मों अनुसार ही कहेंगे। शुरू से लेकर भक्ति की है तो यह अच्छे कर्म किये हैं। इसलिए शिवबाबा भी अच्छी तरह बैठ समझाते हैं। जितनी जास्ती भक्ति की होगी, शिवबाबा राजी हुआ होगा तो अभी भी ज्ञान जल्दी उठायेंगे।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"यहाँ जो भी आते हैं, वे बहुत पुराने भक्त हैं।... शुरू से भक्ति करने वाले जरूर बाप से वर्सा पाने आयेंगे।" सा.बाबा 13.3.04 रिवा.

"दूसरे शास्त्र आदि पढ़ने वाले क्या जानें, उनको टच भी नहीं होगा। तुम आकर सुनते हो तो तुमको झट टच होता है। है सारा गुप्त।... यह सब बातें जो यहाँ का सेपलिंग होगा, उनकी बुद्धि में बैठेंगी।" सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

"पहले तो बाप मिला, उसकी खुशी होगी। कनेक्शन जुटा फिर है याद की यात्रा। जिसने जास्ती भक्ति की होगी, उनकी जास्ती याद की यात्रा होगी। ... अगर ज्ञान की धारणा होगी तो वे अपना और दूसरों का कल्याण करने बिना रह नहीं सकते।"

सा.बाबा 25.2.04 रिवा.

"जो आदि सनातन हिन्दू होंगे, वे ही असुल देवी-देवता होंगे और वे ही देवताओं को पूजने वाले भी होंगे। उनमें भी जो शिव के या लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण, सीता-राम आदि देवताओं के भक्त हैं, वे देवता घराने के हैं।"

सा.बाबा 28.2.04 रिवा.

"सृष्टि के लॉ मुजिब सबको तमोप्रधान बनना ही है। जब तमोप्रधान बनें तब बाप आकर सबको

सतोप्रधान बनाये। ... सबसे जास्ती भक्ति कौन करते हैं? उनको तो पहले मिलना चाहिए ना। बाप ने समझाया है तुम ही पहले-पहले भक्ति शुरू करते हो तो तुमको ही पहले ज्ञान मिलना चाहिए।" सा.बाबा 25.8.03 रिवा.

"अभी आप रंग की होली मनायेंगें तो भक्त भी आपको कापी करेंगे ना। आप भगवान के साथ होली खेलते हो तो भक्त भी होली कोई न कोई आप देवताओं के साथ खेलते हैं।"

अ.बापदादा 3.3.07

"आज बापदादा उस भगत आत्मा बच्चे को भी मुबारक दे रहे हैं, जिसने आपके इस विचित्र जन्म दिन को मनाने की कापी की है। आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते हैं और उस भगत आत्मा ने भावना और श्रृद्धा के रूप में मनाने की कापी अच्छी की है। कापी करने में अच्छा पार्ट बजाया है।" अ.बापदादा 15.2.07

"संगमयुग पर जो रीति-रस्म यथार्थ चलती है, वह भक्ति मार्ग में बदलकर चलती है। ... टीका सौभाग्य की निशानी है। जो बातें सुनी, उन बातों में टिकने की निशानी टीका है। ... एक है शक्तिशाली बनने का टीका (इनजेक्शन) और दूसरा है सदा सुहाग और भाग्य में स्थित रहने का टीका।"

अ.बापदादा 17.10.70 - 18.2.07 रिवा.

स्थापना और विनाश की क्रिया का विधि-विधान

जैसे मकान बनाने में मेहनत करनी होती है परन्तु समय की गति के साथ मकान पुराना स्वत: ही होता है और अन्त में गिरता भी स्वत: ही है। ऐसे ही नई दुनिया की स्थापना में पुरुषार्थ करना होता है परन्तु दुनिया समय के साथ होती ही है और पुरानी दुनिया का विनाश भी ड्रामानुसार स्वत: होता है, जिसकी तैयारी भी हो रही है। नई दुनिया की स्थापना के लिए परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं और पुरुषार्थ कराते हैं। इसलिए उनको करन-करावनहार कहा जाता है। जो उनकी श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं और नई दुनिया की स्थापना में सहयोगी बनते हैं, वे ही उस दुनिया का सुख उपभोग करते हैं।

स्थापना और विनाश की तैयारी का कार्य साथ-साथ चलता है और जब स्थापना का कार्य सम्पन्न हो जाता है, तब ही विनाश का कार्य आरम्भ होता है अर्थात् विनाश होता है। जिसके लिए बाबा ने कहा है - पहले नया मकान बनाया जाता है, फिर पुराना तोड़ा जाता है। इस स्थापना और विनाश के कार्य में 100 साल के लगभग लगते हैं। विनाश के कार्य के निमित्त साइन्स बनती है और स्थापना के निमित्त साइलेन्स बनती है।

ये भी परमात्मा ने बताया है कि जब आत्मायें योगबल से पावन बन जाती हैं तो उनके लिए प्रकृति भी पावन चाहिए, इसलिए प्रकृति भी पुरानी दुनिया के विनाश में सहयोगी बनती है। आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब भी पूरे होने हैं, इसलिए सिविल वार भी होती है। इस प्रकार विनाश के कार्य में एटॉमिक वार, सिविल वार और नेचुरल केलेमिटीज़ तीनों की मुख्य भूमिका है।

"ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज़ होनी चाहिए क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।"

अ.बापदादा 3.2.74

"तुम्हारी स्थिति सर्व आत्माओं को मुक्ति दिलायेगी, विनाश को समीप लायेगी।"

अ.बापदादा 17.3.03

"इस समय साइन्स से जो भी विमान आदि निकले हैं। ये सब चीजें फिर भविष्य में काम आने वाली हैं। इनके द्वारा अभी सब कुछ विनाश हो जायेगा, फिर यही सुख के काम आयेंगे।"

सा.बाबा 10.2.07 रिवा.

"परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया रचते हैं। ऐसे नहीं कि सृष्टि होती ही नहीं है, फिर ब्रह्मा पैदा हुआ, उनके मुख से मनुष्य रचे जाते हैं। नहीं, अगर कोई भी मनुष्य न हो तो फिर मुख वंशावली भी पैदा हो न सकें। ... सृष्टि तो सारी है, उसकी कलम लगाई जाती है।"

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

"विशाल बुद्धि वे हैं जो धारण कर और फिर दूसरों को कराते हैं। ... भक्ति भी जरूर वृद्धि को पाती रहेगी क्योंकि उनसे ही यह कलम लगता रहेगा। जिन्होंने कल्प पहले समझा है, वे ही इन बातों को समझ सकते हैं।... सृष्टि तो सारी है, उनकी कलम लगाई जाती है, यह नई-नई बातें समझने की हैं।"

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

"पहले सतयुग में ये एरोप्लेन आदि थे, तो फिर संगमयुग पर ही होना चाहिए। जो सुख फिर तुमको स्वर्ग में मिलना है। एरोप्लेन जो बनाते हैं, वह भी वहाँ होंगे। ... अभी बनाते हैं विनाश के लिए, फिर वहाँ सुख के काम में आयेंगे। ... ब्राह्मणों के द्वारा ही यज्ञ रचते हैं, फिर सुख भी ब्राह्मणों को मिलता है। ब्राह्मण वर्ण ही देवता वर्ण बनता है।"

सा.बाबा 13.1.07 रिवा.

"उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे, उतना वे विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे। ... कमाल है बाप के स्वर्ग स्थापन करने की। अभी तुमको स्मृति आई है। वे तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते ही नहीं है, तुम जानते हो।"

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

"मूसलाधार वरसात, अर्थ-क्वेक आदि सब होना है। अभी तुम बच्चों ने ड्रामा का सब राज़ समझा है। ... तुम बच्चों को सब बातें अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है, खुशी में भी रहना है। ... भल कितने भी दुख, मौत आदि होंगे, तुम उस समय खुशी में होंगे। तुम जानते हो मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है, फिकरात की कोई बात नहीं।"

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

"तुम सब आशिकों का एक माशूक है।... अनेकों को एक को याद करना तो सहज है। एक कैसे अनेकों को याद करेंगे।... याद तुमको करना है पतित से पावन होने के लिए।... तुम्हारा ज्ञान-योग और उनका मौत का सामान इक्वल हो जाता है तब विनाश होगा।"

सा.बाबा 19.7.04 रिवा.

"जो इस झाड़ का सेपलिंग है, उनको तुम्हारे ज्ञान का तीर लग जाता है। समझते हैं - यह तो क्लीयर बात है। ... 5 विकार रूपी रावण का कुसंग मिलता है, उनको कहा ही जाता है

रावण सम्प्रदाय। अभी तुम बन रहे हो राम सम्प्रदाय। जब तुम राम सम्प्रदाय बन जायेंगे, फिर ये रावण सम्प्रदाय नहीं रहेगा।"

सा.बाबा 26.5.04 रिवा.

"पूछते हैं कि विनाश में बाकी कितना समय है। बोलो, यह पूछने की बात नहीं है। पहले तो यह हमको किसने समझाया है, उनको जानो।... यह हमारा बाप-टीचर-गुरु है। जब कम्पलीट दैवीगुण आ जायेंगे तो लड़ाई भी लगेगी। समय अनुसार तुम खुद समझेंगे कि अब कर्मातीत अवस्था को पहुँच रहे हैं। अभी कर्मातीत अवस्था हुई कहाँ है। अभी बहुत काम है। बहुतों को पैगाम देना। बाप से वर्सा लेने का तो सबको हक है।"

सा.बाबा 1.1.04 रिवा.

"एडवान्स पार्टी अभी तो सम्बन्ध और देश के समीप हैं इसलिए छोटे-छोटे ग्रुप उन्हों के भी कारणें-अकारणें आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं। यह पूर्ण स्मृति नहीं है लेकिन यह बुद्धि में टचिंग है कि हमें मिलकर कोई नया कार्य करना है।"

अ.बापदादा 18.1.85

"दुनिया वालों के पास तीन शक्तियां (सत्तायें) हैं। राज्य-सत्ता, धर्म-सत्ता और साइन्स की सत्ता। ... विश्व में आध्यात्मिक शक्ति की कमी है। आप में चार सत्तायें हैं। ... आप राज्य सत्ता अर्थात् अपनी कर्मेन्दियों के राजा बने हो ... धर्म-सत्ता भी है। धर्म का अर्थ है दिव्य गुणों की धारणा ... जहाँ चरित्र नहीं तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। साइन्स की सत्ता अर्थात् साइलेन्स की साधना और आध्यात्मिक सत्ता। ... जब चारो ही सत्तायें इकट्ठी होती हैं, तब विश्व परिवर्तन होता है।"

अ.बापदादा 2.2.07

"दिन-प्रति दिन भ्रष्टाचार-पापाचार बढ़ रहा है, अति में जा रहा है लेकिन आप जानते हो कि अति के बाद क्या होता है? अन्त आती है। और अन्त किसको लाती है? आदि को।"

अ.बापदादा 2.2.07

"सभी मनुष्य तो देवता नहीं बनेंगे। जो पहले देवी-देवता धर्म वाले होंगे, उन्हों का ही फिर सेपलिंग लगेगा।... बच्चे जानते हैं हम कल्प पहले भी जो राजयोग सीखे थे, वह अब भी सीख रहे हैं।"

सा.बाबा 22.2.07 रिवा.

विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना का विधि-विधान

कैसे धर्म-पिताओं की नई आत्मायें दूसरे के तन में आकर अपने धर्म की स्थापना करतीं हैं और परमपिता परमात्मा कैसे आकर देवी-देवता धर्म की कलम लगाते हैं, उसका विधि-विधान क्या है, वह राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है। हर धर्म की अपनी-अपनी आत्मायें हैं, जिनका निराकारी दुनिया में भी ग्रुप है। फिर कैसे सबकी कलम लगती है, वह विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है।

बाबा ने जिन धर्म स्थापना के जिन विधि-विधानों का ज्ञान दिया है, उसके अनुसार धर्म-स्थापना के निम्नलिखित गुह्य विधि-विधानों की जानकारी मिली है -

* कोई भी पतित आत्मा धर्म की स्थापना नहीं कर सकती। धर्म-स्थापनार्थ नई आत्मायें आती हैं और पर-माया प्रवेश करके अपने धर्म वंश की स्थापना करती हैं।

* धर्म-पिताओं की जो आत्मायें धर्म की स्थापना करती हैं, उनको पुनर्जन्म लेकन अपने उस धर्म वंश की पालना भी करनी होती है, इसलिए धर्म-स्थापना के बाद कोई आत्मा परमधाम वापस नहीं जा सकती है।

* परमात्मा आकर देवी-देवता धर्म की जो स्थापना करते हैं, उसमें धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता एक के ही हाथ में होती है। द्वापर युग देहाभिमान आने से विकारी बनने के कारण धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता अलग-अलग हो जाती है, इसलिए द्वापर के बाद जो धर्मवंश स्थापन होते हैं, उनमें धर्म-सत्ता और राज्य सत्ता अलग-अलग हो जाती है अर्थात् दो भागों में बंट जाती है। धर्म-स्थापक पहले जन्म में धर्म सत्ता के मुख्य बनते हैं और जिसके तन में वे प्रवेश करते हैं, वह आत्मा अपने त्याग-तपस्या के फलस्वरूप पुनर्जन्म लेकर राज्य सत्ता के अधिकारी बनते हैं।

* धर्म स्थापना के समय से लेकर अनेक आत्मायें उस नये धर्म में परिवर्तित होती रहती हैं और अन्त में सभी अपने मूल धर्म में अवश्य परिवर्तित होती हैं।

* संगमयुग पर परमात्मा पिता आकर इस कल्प-वृक्ष का सारा ज्ञान देते हैं और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं, अन्य सभी धर्म-स्थापक भी अन्त समय परमात्मा के पास आकर अपने धर्मवंश की स्थापनार्थ सन्देश लेकर जाते हैं। उस सन्देश के आधार पर ही उनके धर्म वंश की आत्मायें पावन बनकर घर वापस जाती हैं। परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता है, प्रजापिता ब्रह्मा आदि सनातन धर्म का आदि पिता और अन्य धर्मों का भी पिता है।

* आदि सनातन देवी-देवता धर्म की परमात्मा के द्वारा कलम लगती है और नये कल्प-वृक्ष की स्थापना होती है परन्तु अन्य धर्मवंशों की स्थापना के समय नये वृक्ष की स्थापना नहीं होती है, वे सभी इस कल्प-वृक्ष की शाखाओं के रूप में आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश रूपी तने से निकलती हैं और विस्तार को पाती हैं।

* नये वृक्ष की कलम के लिए कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं, जिसके आधार पर उसकी स्थापना होती है परन्तु अन्य धर्मवंश वाले किसी न किसी दिव्य गुण के आधार पर स्थापना करते हैं। इसलिए बुद्ध की अहिंसा, क्राइस्ट की सहन शक्ति विशेष गाई हुई है।

"देवी-देवता धर्म का ही सेपलिंग लगना है। कोई किस धर्म में, कोई किस धर्म में चले गये हैं। वे ही निकल आते हैं। इस धर्म की स्थापना कितनी वण्डरफुल है।... कोई समझ न सके कि देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे होती है।" सा.बाबा 7.3.07 रिवा.

सतयुगी राजाई, उसकी स्थापना और पतन का विधि-विधान

वर्तमान विश्व में प्राय: सभी देशों में प्रजातन्त्र ही राज-व्यवस्था है परन्तु परमात्मा आकर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं, उस राजाई की स्थापना का क्या विधि-विधान है, वह भी परमात्मा ने बताया है, जिस विधि-विधान को जानकर हम पुरुषार्थ करके अपना पद और प्राप्ति निश्चित कर सकते हैं।

"किसको तख्त मिलता है और किसको रॉयल फेमिली मिलती है, इसके भी गुह्य रहस्य हैं। जो संगमयुग पर बाप के दिल तख्तनशीन सदा और स्वत: रहता है ... स्वप्न में भी अपवित्रता को टच नहीं करता है, ब्राह्मण परिवार का हर एक दिल से सम्मान करता है, ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन बनती हैं। ... अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है, वे नम्बरवार रॉयल फेमिली में आ जाते हैं।" अ.बापदादा 13.12.95

"जितना अभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे, उतना ही राज्य के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते तो राज्य क्या चलायेंगे! ... संस्कार तो यहाँ ही भरना है ना!" अ.बापदादा 19.1.95

"बाप का वर्सा ही है स्वराज्य और विश्व का राज्य। तो बाप के वर्से के अधिकारी... जहाँ अधिकार है, वहाँ अधीनता नहीं है और जहाँ अधीनता है, वहाँ अधिकार नहीं है।"

अ.बापदादा 25.1.94 पार्टी 2

"सतयुग आदि में 9 लाख थे, जो वृद्धि होकर सतयुग अन्त में 2 करोड़ हो गये ... फिर त्रेता में 12 जन्म... फिर भारतवासियों के विकारी होने से रावणराज्य शुरू हुआ, अर्थक्वेक हुई, जिससे सोने, हीरे-जवाहरातों के महल अन्दर चले गये। कहते भी हैं - सोने की द्वारका अन्दर चली गई।"

सा.बाबा 27.4.06 रिवा.

"सतयुग की राजाई में श्रेष्ठ सीट उसको मिलेगी, जो संगमयुग की सीट पर सेट होगा और जो सीट पर सेट होगा, वह कभी अपसेट हो नहीं सकता।"

दादी गुल्जार 18.2.07

"और कोई जगतजीत बन नहीं सकते। बाबा ने समझाया था - अगर क्रिश्चियन लोग आपस में मिल जायें तो सारी सृष्टि की राजाई ले सकते हैं परन्तु लॉ नहीं है, जो कोई बाहुबल से जगतजीत बनें।"

सा.बाबा 20.02.06 रिवा.

"बाप सब बच्चों को ज्ञान की रोशनी देते हैं, जिससे सबका ताला खुलता जाता है। ... मैं इसलिए थोड़ेही आया हूँ कि एक-एक की बुद्धि का ताला खोलूँ। फिर तो सबकी बुद्धि खुल जाये, सब महाराजा-महारानी बन जायें। ... सबका ताला खुल जाये तो प्रजा कहाँ से आयेगी। यह तो कायदा नहीं है। हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है।"

सा.बाबा 8.7.05 रिवा.

"सतयुग में वज़ीर होता नहीं है क्योंकि राजा में पॉवर रहती है। वज़ीर आदि से राय लेने की दरकार नहीं रहती है। नहीं तो राय देने वाला बड़ा हो जाये।... भारत की ही बात है।... सिंगल ताज वाले डबल ताज वाले राजाओं को माथा टेकते हैं।... भारत ही पैराडाइज़, बहिश्त था।"

सा.बाबा 14.6.05 रिवा.

"हर एक को अपनी जिम्मवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर जिम्मेवार है तो इससे सिद्ध होता है कि आप को भविष्य में उनकी प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। ये भी अधीन रहने के संस्कार हुए ना!... अधीन रहने वाला अधिकारी नहीं बन सकता है।"

अ.बापदादा 30.5.73

"भविष्य का ताज और तख्त इस ताज और तख्त के आगे कुछ भी नहीं है। ... विश्व के महाराजन बनने से भी अभी का ताज और तख्त श्रेष्ठ है। अगर संगमयुग के राजा नहीं बने तो भविष्य के भी नहीं बन सकते।"

अ.बापदादा 6.6.73

"जो यह नॉलेज सुनेंगे, वे ही विश्व के मालिक बनेंगे। ... मैं इस समय तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ तो पतित शरीर में आकर बैठता हूँ। फिर भक्ति मार्ग में तुम हमको हीरों के सोमनाथ

के मन्दिर में बिठाते हो क्योंकि तुम जानते हो बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इसलिए खातिरी करते हो। बाप ने यह सब राज़ समझाया है।"

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

"बाप का बनकर अन्दर (यज्ञ में) रहकर रुहानी सर्विस नहीं करते, वे जाकर दास-दासियाँ बनते हैं, फिर पिछाड़ी में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताज मिल जाता है। उन्हों (दास-दासियों) का भी घराना होता है, वे प्रजा में नहीं आ सकते। कोई बाहर का आये अन्दर वाला नहीं बन सकता। वल्लभाचारी बाहर वालों को कभी अन्दर आने नहीं देते। यह सब समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

"बनने आये हैं राजयोगी, राज्य अधिकारी लेकिन अधीनता के संस्कार कारण विधाता के बच्चे होते हुए भी राज्य अधिकारी नहीं बन सकते।... बहुत काल के अधीन बनने के संस्कार अधिकारी बनने नहीं देंगे।... बहुत काल का स्व-अधिकार का संस्कार बहुत काल के विश्व अधिकारी बनायेगा।"

अ.बापदादा 06.1.86

"जो जास्ती ज्ञान नहीं धारण कर सकते, वे ऊंच पद भी पा नहीं सकते। ... याद की भी मेहनत है तो ज्ञान धारण करने की भी मेहनत है। दोनों में सब होशियार हो जायें सो भी तो हो न सके क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है।"

सा.बाबा 12.7.04 रिवा.

"थोड़ा भी सुना तो वह प्रजा हो गई। ज्ञान कभी विनाश को नहीं पाता है। एक बार सुना, शिवबाबा आया है, ये जाना तो बस। प्रजा में आ जायेंगे।... ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट सर्विस चल रही है।"

सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

Q. सतयुगी राजाई में कौन, क्यों और कैसे राजाई पद पाते हैं?

अभी हम परमात्मा के द्वारा ज्ञान और राजयोग सीखकर, ज्ञान-धन दान करके, सेवा करके राजाई पद पाते हैं। द्वापर युगी और कलियुगी राजायें स्थूल-धन दान कर राजा बनते हैं। परमात्मा अभी कलियुग के अन्त में आकर सतयुगी दैवी राजाई की स्थापना करते हैं।

"तुम्हारी पढ़ाई है ऊंच से ऊंच, जिससे तुम राजाई पद पाते हो। वह तो दान-पुण्य करने से राजा के पास जन्म लेते हैं, फिर राजा बनते हैं। परन्तु तुम इस पढ़ाई से राजा बनते हो। ... बाप ही तुमको राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हैं।"

सा.बाबा 21.6.04 रिवा.

"यह भी ड्रामा बना हुआ है। नॉलेज समझने में बहुत सहज है परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है। ... इस समय बाप तुमको कर्म-अकर्म-विकर्म की गति

बैठ समझाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं, सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं। ... यह कितना वण्डरफुल ड्रामा है। ... अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो, तुम्हारी माया के साथ युद्ध है।" सा.बाबा 16.6.04 रिवा.

"तुम बच्चों को बड़ा नशा रहना चाहिए कि हम साहेबजादे हैं, साहेब की मत पर फिर से अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हैं। मुरली सुनने से तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। ... कोई चीज न मिली तो बस रूठ पड़ेंगे। बाबा को तो वण्डर लगता है बच्चों की अवस्था पर। माया की जंजीरों में फंस पड़ते हैं। तुम्हारा मान, तुम्हारी कारोबार, तुम्हारी खुशी वण्डरफुल होनी चाहिए। जो मित्र-सम्बन्धियों को नहीं भूलते हैं, वे कभी बाप को याद कर नहीं सकेंगे। फिर क्या पद पायेंगे!" सा.बाबा 3.6.04 रिवा.

"राजधानी की स्थापना की बातें बड़ी गुह्य-गोपनीय हैं। बेहद का बाप बच्चों को मिला है तो कितना हर्षित होना चाहिए। ... तुम जो बाप के मददगार बनते हो, वे ही ऊंच पद पाते हैं। वास्तव में तो मदद अपने को ही करनी है। पवित्र बनना है।"

सा.बाबा 5.6.04 रिवा.

"स्टूडेण्ट फिर टीचर को सौगात देते हैं। यह बाप तो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो तुम फिर भक्ति मार्ग में उनको याद करते रहते हो। ... हरेक को पढ़कर अपने को राजतिलक देना है। बाप को तो है पढ़ाने की ड्युटी। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं। फिर तो सभी पर आशीर्वाद करनी पड़े।" सा.बाबा 3.2.04 रिवा.

"जो याद करेंगे, उनको जरूर खुशी रहेगी। अगर राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी पड़े, नहीं तो कैसे समझेंगे कि हम राजा बनने वाले हैं। जो सेन्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं, उनकी भी कमाई होती है। ... उनका हिस्सा जमा हो जाता है। मिलकर माया के दुख का छप्पर उठाते हैं। ... सब कुछ करने का समय तो यही है।"

सा.बाबा 15.1.04 रिवा.

"तुम योगबल से श्रीमत पर स्वर्ग के मालिक बन सकते हो। वहाँ योगबल से बच्चे भी पैदा होंगे। बाहुबल से सारी सृष्टि पर कोई राज्य नहीं कर सकते हैं।"

सा.बाबा 2.10.03 रिवा.

"राज्य अधिकारी बनना है या राज्य में आने वाला बनना है?... फिर तो स्नेही हो तो भी ठीक है। राज्य अधिकारी बनना है तो स्नेह के साथ पढ़ाई की शक्ति अर्थात् ज्ञान की शक्ति, सेवा की शक्ति भी आवश्यक है। इसलिए हिम्मत करो, बाप मददगार है ही। स्नेह के रिटर्न में सहयोग मिलना ही है।" अ.बापदादा 18.1.85

"बापदादा देख रहे हैं कि काल कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुत काल का हिसाब है। ... हर बात में बहुत काल चाहिए। बहुत काल राज्य-भाग्य प्राप्त करना है तो बहुत काल का संस्कार चाहिए।"

अ.बापदादा 15.2.07

"आप एक नहीं हो, आपके पीछे आपकी राजधानी में आपकी रॉयल फेमिली, आपकी रॉयल प्रजा .. आपके भक्तों की लम्बी लाइन है। जो आप करेंगे, वही आपके पीछे वाले करते हैं। आप बहानेबाज़ी करते हो आपके भक्त भी बहुत बहानेबाज़ी करते हैं। ब्राह्मण परिवार भी आपको कापी करते हैं। तो अभी दृढ़ संकल्प करो।"

अ.बापदादा 15.2.07

"बाप को न जानने के कारण, नास्तिक बनने के कारण दुख ही दुख है। बाप का बच्चा बनने से सदा सुख ही सुख है। बाप है स्वर्ग का रचयिता। वहाँ सभी तो नहीं चलेंगे। इसलिए लिमिटेड नम्बर ही आयेंगे बाप से वर्सा लेने के लिए। बाकी सब धर्म वाले मुक्ति का वर्सा लेने आते हैं।"

सा.बाबा 2.3.07 रिवा.

जन्म, मृत्यु और मृत्यु-विजय का विधि-विधान
सतयुग की, कलियुग की और संगमयुग की मृत्यु का विधि-विधान

मृत्यु इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटना है, जो इस विश्व-नाटक का आत्मा को परम वरदान है, जिसके फलस्वरूप ही आत्मा पुराना वस्त्र त्याग कर नया वस्त धारण करती है। परन्तु अज्ञानता जनित देहाभिमान के कारण मोहवश यह वरदान अभिषाप बन गया है अर्थात् इससे सभी आत्मायें दुखी और भयभीत हैं। अभी परमात्मा ने इसका यथार्थ राज़ समझाया है, जिससे हम यथार्थ पुरुषार्थ करके मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त हो जीवन के परम सुख का अनुभव करते हैं।

आत्मा तो अविनाशी है, वह वस्त्र के समान एक शरीर छोड़कर दूसरा धारण कर इस विश्व-नाटक में अपना पार्ट बजाती है। देह में रहते देह से न्यारे होने का अभ्यास ही मृत्यु-विजय, सुखमय मृत्यु या अमरत्व को प्राप्त करने का विधि-विधान है और इसके लिए यथार्थ पुरुषार्थ है। इस पुरुषार्थ में सफल अभ्यासी ही समय पर मृत्यु पर जीत पा सकते हैं। मृत्यु पर जीत पाने का ये अर्थ नहीं कि वह कभी मरेगा ही नहीं। नहीं, हर आत्मा को पुरानी देह का

त्याग करना ही है लेकिन वह स्वेच्छा से सुखी मन से देह का त्याग करेगा। परमात्मा आकर हम आत्माओं को ये जीते जी मरने का अभ्यास सिखाते हैं, जिससे आत्मा मृत्यु-भय से मुक्त अमरत्व का अनुभव करती है और अभी का ये अभ्यास ही भविष्य 21 जन्मों तक मृत्यु-भय से मुक्त अमरपद का आधार बनता है, अमरत्व का अनुभव कराता है।

मृत्यु का विधि-विधान भी संगमयुग, सतयुग और कलियुग का अपना-अपना है अर्थात् अलग-अलग है। सतयुग में आत्मा को समय पर संकल्प आता है कि इस पुरानी देह को त्याग कर नई लेना है और आत्मा खुशी से देह का त्याग कर देती है और सम्बन्धी भी नष्टोमोहा होने के कारण खुशी से छुट्टी देते हैं अर्थात् उनका संकल्प भी जाने वाली आत्मा को जाने में बाधा नहीं डालता है। कलियुग में आत्मा के विकर्म होने के कारण आत्मा को देह का त्याग करने में दुख होता है। जाने वाला भी मोहवश दुखी होता है और सम्बन्धी भी मोहवश दुखी होते हैं और जाने वाले के लिए बाधा बनते हैं, इसलिए आत्मा मजबूरी से देह का त्याग करती है। सतयुग में सभी आत्मायें स्वेच्छा से देह का त्याग करते हैं परन्तु कलियुग में परमधाम से आने वाली नई आत्माओं के देह त्याग और पहले से पार्ट बजाते आने वाली आत्माओं के देह त्याग में अन्तर होता है। इसलिए कलियुग में कुछ आत्मायें सहज देह का त्याग करती है और कुछ कर्मभोग के कारण बहुत दुखी होकर देह का त्याग करती हैं।

संगमयुग पर परमात्मा पिता सारे विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं और सारे विधि-विधान बताते हैं तथा जीते जी मरने का, देह से सहज न्यारे होने का अभ्यास कराते हैं, जिससे आत्मायें देह के त्याग के समय दुखी नहीं होती हैं लेकिन संगमयुग पर अन्त तक आत्माओं को कर्मभोग रहता ही है क्योंकि आत्माओं को कर्मातीत बनकर घर वापस जाना होता है, जो सतयुग में नहीं होता है। सतयुग में कोई बीमारी आदि भी नहीं होती है। सतयुग से कलियुग के अन्त तक आत्माओं को एक देह का त्याग कर नई देह धारण कर यहाँ ही पार्ट बजाना होता है परन्तु संगमयुग पर पार्ट पूरा करके, हिसाब-किताब खत्म करके वापस घर जाना होता है, इसलिए अन्त तक कर्मभोग रहता ही, जो चुक्ता करना होता है। इसलिए बाबा ने कहा है - अगर आत्मा कर्मातीत बन जाये तो एक सेकेण्ड भी इस धरा पर, इस देह में नहीं रहेगी। "सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज तुमको अच्छी तरह है। ... पहले अपने घर जाना है तो खुशी से जाना है। जैसे सतयुग में देवतायें खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, वैसे इस पुराने शरीर को भी खुशी से छोड़ना है। इससे तंग नहीं होना है। यह बहुत वैल्युबुल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है।"

सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

"व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो, वह निभा नहीं सकते। तो आप सब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करेंगे, तब ही विजयी बनेंगे।"

अ.बापदादा 5.12.74

"बाबा की याद में इस पुरानी दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की टेव पड़ जायेगी तो जैसे याद में बैठे-बैठे अन्कान्शस हो जायेंगे, अशरीरी हो जायेंगे, शरीर का भान नहीं रहेगा। .. पिछाड़ी में शरीर खुशी से हर्षित मुख होकर छोड़ना चाहिए। बस, हम कहाँ जा रहे हैं।"

सा.बाबा 9.7.71 रिवा.

"यह जो आत्मा का शरीर है, इसमें आत्मा का बहुत मोह पड़ गया है, इसलिए थोड़ी भी बीमारी आदि होती है तो डर लगता है - कहाँ शरीर न छूट जाये। ... वहाँ आत्मा और शरीर दोनों पवित्र रहते हैं। फिर वह बल खलास हो जाता है तो 5 तत्वों का बल आत्मा को खींचता है। ... आत्मा का 5 तत्वों के पुतले से मोह हो गया है, इसलिए इसको छोड़ने की दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहता है - शरीर छूट जाये और हम बाबा के पास चले जायें।"

सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

आत्माओं के परमधाम से आने और जाने का विधि-विधान

आत्मायें जब परमधाम से आती हैं तो उनको सूक्ष्म शरीर नहीं होता है परन्तु जब कल्पान्त में वापस परमधाम जाती हैं तो सूक्ष्म शरीर होता है, जो सूक्ष्म वतन तक साथ रहता है, उसके बाद आत्मा अपने बिन्दुरूप में हो जाती है। इसलिए बाबा कहते हैं सूक्ष्मवतन संगमयुग पर होता है, और सारे कल्प में सूक्ष्म वतन नहीं होता है परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान पर विचार करें तो कोई स्थान विनाश नहीं होता है, केवल उसका रूप परिवर्तन होता है। ऐसे ही सूक्ष्म वतन तो रहता है परन्तु वहाँ कोई एक्टीविटी नहीं होती है, जैसे संगमयुग पर होती है। इसलिए आत्मायें भी उसको पार करके ही आयेंगी और जायेंगी परन्तु जाते समय उसका आभास होगा, आते समय कोई आभास नहीं होगा क्योंकि उस समय सूक्ष्म शरीर नहीं होगा।

परमधाम से आने के समय इस स्थूल जगत में पंच तत्व, पंच तत्वों से बना शरीर और यहाँ का पार्ट आत्मा को आकर्षित करता है और आत्मायें परमधाम से आती रहती हैं। जाने के समय परमात्मा आत्माओं को आकर्षित करते हैं और यहाँ पर पार्ट खत्म होने के कारण आत्मा को घर जाने की आकर्षण होती है। ये आने और जाने का विधि-विधान ड्रामा अनुसार अनन्त काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है।

"जब तुम आये थे तो कोई की याद नहीं थी। ... अब फिर जाना भी ऐसे है। हम एक बाप के हैं और कोई उनके सिवाए बुद्धि में याद न आये। ... जो भी जीवात्मायें हैं, वे सब बाप के अविनाशी बच्चे हैं। ... बाप का प्यार तो सब रूहों पर है। भल तमोप्रधान हैं तो भी जानते हैं - यह सब जब घर में थे तो सतोप्रधान थे।"

सा.बाबा 16.7.04 रिवा.

"पतित आत्मायें तो मेरे पास मुक्तिधाम में आ न सकें। वह है ही पवित्र आत्माओं का घर। यह है मनुष्यों का घर। यह शरीर बनते हैं 5 तत्वों से, तो 5 तत्व यहाँ रहने के लिए आत्मा को खींचते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पांच तत्व वहाँ नहीं होते। यह विचार सागर मंथन करने की युक्तियाँ हैं।" सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

"मनुष्य कहते हैं हमको ले चलो, हमें कुछ नहीं चाहिए। परन्तु पतितों को ले नहीं जा सकते, इसलिए पावन बनाने आया हूँ। पावन तब बनेंगे, जब अपने को अशरीरी आत्मा समझेंगे, देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलेंगे और मुझ एक बाप को याद करेंगे।"

सा.बाबा 19.09.03 रिवा.

अन्न और संग का विधि-विधान अर्थात् उनके प्रभाव का विधि-विधान

अन्न और संग की जीवन में क्या भूमिका है और उसका जीवन पर क्या प्रभाव होता है, उसके विधि-विधान को जानना भी अति आवश्य है। बाबा ने ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए खान-पान के विधि-विधान का ज्ञान भी दिया है, जिस विधि-विधान का पालन करने वाले ही इस ब्राह्मण जीवन में सफल होते हैं और उसका सुख अनुभव कर सकते हैं।

ये जीवन जड़ और चेतन दोनों प्रकृतियों के सहयोग से अस्तित्व में आया है, इसलिए दोनों के गुण-धर्मों का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं। जड़ तत्वों से बना यह यह शरीर अन्नमय है और इसको चलाने वाली आत्मा है, जो ज्ञानमय है अर्थात् चेतन सत्ता है। इस प्रकार हम देखें तो अन्न और संग दोनों ही जीवन को प्रभावित करते हैं। आत्मा का अनन अर्थात खान-पान पर और खान-पान का आत्मा पर गहरा प्रभाव

पड़ता है। हमारा ये आध्यात्मि जीवन सदा सुखमय हो, उसके लिए हमारे खान-पान और संग के विधि-विधान को जानने से ही दोनों की शुद्धता रहेगी, जो परमावश्यक है। कैसे एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है, ज्ञान सागर बाबा ने हमको दोनों के विषय में ज्ञान दिया है और दोनों का परहेज बताया है। जो इन दोनों में ईश्वरीय नियमों का पालन करता है, वही इस जीवन में सफल होता है। उसकी कब हार हो नहीं सकती।

जड़ और चेतन के प्रभाव के विधि-विधान के अनुसार अन्न का मन पर और मन का अन्न पर गहरा प्रभाव होता है। वह प्रभाव क्या होता है, यह एक विस्तृत विषय है, जिस पर बाबा ने मुरलियों में बहुत स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला है। सत्यता ये है कि अन्न में प्रयोग पदार्थों का प्रभाव तो आत्मा पर होता ही है परन्तु अन्न पर उसको कमाने वाले, बनाने वाले, खाने वाले, देखने वाले, वातावरण आदि सबका प्रभाव होता है, इसलिए बाबा ने अन्न के परहेज के लिए इन सब बातों की परहेज़ रखने के लिए श्रीमत दी है। अन्न के विषय में हठयोग के मूल प्रेणाता महर्षि पतन्जलि के पातन्जलि योग के एक भाष्य में कहा गया है - एक योगी के हाथ का अन्न भोगी खाता रहे तो एक दिन भोगी अवश्य ही योगी बन जायेगा और एक योगी भोगी के हाथ का अन्न खाता रहे तो ये निश्चित है कि वह योगी अवश्य ही भोगी बन जायेगा अर्थात् योगी जीवन से विमुख हो जायेगा।

अन्न पर दृष्टि के प्रभाव को स्पष्ट करने और बच्चों को शिक्षा देने के लिए एक बार एक सेन्टर पर भोग बनाया गया, जिसको बनाया तो सेन्टर की योगी बहनों ने था परन्तु एक अज्ञानी-पतित व्यक्ति के देखरेख और निर्देशानुसार बनाया गया था। जब उस भोग को सन्देशी बाबा के पास लेकर गई तो बाबा ने स्वीकार नहीं किया और उस भोग को वापस लौटा दिया। बाबा ने उसका राज़ भी बताया कि उस भोग पर पतित-विकारी आत्मा की दृष्टि पड़ी है, इसलिए बाबा स्वीकार नहीं कर सकता। बाबा पर तो उसका कोई प्रभाव होने वाला नहीं था परन्तु बाबा बच्चों के जीवन का बहुत ध्यान रखता है इसलिए उसका विधि-विधान बताना आवश्यक था। इस प्रकार देखें तो बच्चों को सचेत अवश्य करता है, जिससे बच्चे विधि-विधान को भूलकर अलबेले न हो जायें। अपने अमूल्य इस आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए अन्न के ऐसे प्रभाव को समझकर उसका परहेज रखना अति आवश्यक है।

जैसे आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए अन्न का महत्व है, वैसे ही संग भी बहुत महत्वपूर्ण है। संग के लिए भी गायन है - जैसा संग, वैसा रंग अर्थात् एक बुरा व्यक्ति अच्छे व्यक्तियों के संग में रहे तो निश्चित ही अच्छा बन जायेगा और एक अच्छा व्यक्ति बुरे व्यक्तियों के संग में रहे तो एक दिन अवश्य ही बुरा हो जायेगा। संग के विधि-विधान के

विषय में भी बाबा ने ज्ञान भी दिया है और उन विधि-विधानों को प्रैक्टिकल में भी करके सिखाया है। इसके लिए बाबा ने न केवल थ्योरी में ज्ञान दिया बल्कि यज्ञ में अनेक प्रकार विधि-विधानों का प्रैक्टिकल में नियम बनाकर सिखाया है। जैसे एक-दूसरे के विस्तर पर बैठने, एक-दूसरे की प्रयोग की हुई चीज़ को प्रयोग करने, अशलील साहित्य पढ़ने-सुनने, आदि-आदि अनेक प्रकार की मना थी।

इन विधि-विधानों पर विचार करें तो जीवात्मा इन्द्रियों द्वारा जो देखती, सुनती, पढ़ती, स्पर्श करती, खाती उसका प्रभाव उसके मन पर अवश्य होता, जो उसके भविष्य जीवन की दिशा और दशा को निश्चित करता है, जिससे उसके कर्म-संस्कार प्रभावित होते हैं और वे कर्म-संस्कार उसके भावी जीवन के सुख-दुख का आधार बनते हैं। जैसे बाबा का संग बुद्धि से ही होता है ऐसे इन सब बातों का भी बुद्धि से सम्बन्ध है और उनका भी बुद्धि पर प्रभाव होता है। ये सब बातें भी बुद्धि के संग की ही हैं।

इस अन्न और संग के विषय में हम अपने यज्ञ के भाई-बहनों की उन्नति और अवनति के इतिहास को देखते हैं तो दोनों के ऐसे प्रभाव का सहज स्पष्टीकरण होता है। जिन्होंने ज्ञान सागर बाप के द्वारा बताये गये विधि-विधानों को समझकर निश्चयबुद्धि बनकर आदि से अन्न और संग का परहेज रखा, वे अमर रहे हैं और आदि से ही उन्नति के पथ पर अग्रसर रहे हैं तथा जिन्होंने दोनों में से किसी एक का भी उलंघन किया, उनकी नैया डूब ही गयी और यदि किसी की डूबी नहीं तो डोली अवश्य है, जिससे वे जो सुख इस जीवन का अनुभव कर सकते थे, उससे वंचित रह गये।

"शुद्ध अन्न पेट में पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिवबाबा का साक्षात्कार हो सकता है।... शिवबाबा को याद करते भोजन बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत भर जाती है। ... ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना।"

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

"यह नॉलेज कितनी वण्डरफुल है, जिसको तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जानते हैं। बाप की याद में रहने बिगर धारणा भी नहीं होगी। खान-पान आदि का भी फर्क पड़ने से धारणा में फर्क पड़ जाता है। इसमें प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिए।" सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

"एक होता रियल लव, दूसरा होता है आर्टिफिशियल लव। बाप से लव तब हो, जब अपने को आत्मा समझें। ... एक तो बाजार की छी-छी गन्दी चीजें न खाओ और मामेकम् याद करो। ... संग भी अच्छा चाहिए, जिसको बाइस्कोप की आदत पड़ी वे पतित बनने बिगर रह

नहीं सकेंगे।" सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"जो समीप रहने वाले होते हैं, उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज ही आ जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि संग का रंग अवश्य लगता है।... वैसे ही कुसंग में रहने वाली आत्माओं का मायावी रंग भी छिप नहीं सकता।"

अ.बापदादा 19.4.73

"चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का जरा भी इफेक्ट होने का कारण डिफेक्ट होता है। ... संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके तरीके जानते हो तो अपने को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो। ... अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबुल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है।"

अ.बापदादा 26.6.72

"अगर बुद्धि की लगन सदा एक के संग में है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपनी तरफ खींच लेते हैं।"

अ.बापदादा 22.6.71

"कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रुप में आयेंगे लेकिन आकर्षित न होना। ... माया संकल्पों के रुप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों को वा माया के आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना।"

अ.बापदादा 11.6.71

"वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है। इससे भी अपने को बचाना। और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर कब भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में ला देता है।"

अ.बापदादा 11.6.71

"अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में, न भविष्य में पास रह सकेंगी। एक संगदोष तीनों लोकों से दूर हटा देता है। एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों के तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो।"

अ.बापदादा 11.6.71

"बुरा न देखना, न सुनना, न बोलना, न सोचना। अगर इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगे तो फिर सदा हंस बनकर बाप जो सर्व गुणों का सागर है, उस सागर के किनारे पर सदैव बैठे रहेंगे।" अ.बापदादा 11.6.71

"तो सदा संगदोष से बचना है और ईश्वरीय संग में रहना है। एक संग छोड़ना है और एक संग

जोड़ना है। ईश्वरीय संग सिर्फ शरीर से नहीं होता लेकिन बुद्धि द्वारा भी ईश्वरीय संग में रहना है।"

अ.बापदादा 11.6.71

"अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जाएंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।"

अ.बापदादा 25.3.71

"कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है।... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।"

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

"सभी से ग्लानि की चीज है विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध रहता है क्योंकि 9जैसा अन्न वैसा मन", गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज नहीं खाते, पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उसमें भी असर तो रहता है ना।"

सा.बाबा 2.8.71 रिवा.

"तुम हो ब्राह्मण, तुमको शूद्र के हाथ का खाना नहीं है। बाप को याद जरुर करना है। लाचारी हालत में खाओ तो भी याद कर खायेंगे तो ताकत भर जायेगी। परन्तु तुम याद कर खाते कहाँ हो।"

सा.बाबा 18.6.71 रिवा.

"तुमको किससे कुछ मांगना नहीं है। तुम कोई से कुछ ले नहीं सकते हो, किसके हाथ का खा नहीं सकते हो। अपने हाथ से बनाकर खाने से ताक़त बहुत आयेगी। ... अपनी देही-अभिमानी अवस्था जमाने के लिए बड़ी मेहनत चाहिए।"

सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

"कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है। ... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।"

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

परमात्म-प्यार की अनुभूति का विधि-विधान

परमात्म-प्यार का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

परमात्मा का प्यार क्या है और कब और कैसे प्राप्त होता है, उसका अनुभव क्या है, यह सब ज्ञान और उसके अनुभव का विधि-विधान भी अभी ही परमात्मा बताते हैं। जिस विधि-विधान को जानकर परमात्मा का प्यार का अनुभव जो आत्मायें अभी करती हैं, उस प्यार के अनुभव की संचित स्मृति के आधार पर भक्ति मार्ग में आत्मायें उसको याद करती हैं और परमात्मा का गुण-गान करती हैं। मनुष्यों ने तो परमात्मा के प्यार के अनुभव को 9गूंगे का गुड़9 की संज्ञा दी है अर्थात् उसके प्यार के अनुभव को वर्णन नहीं किया जा सकता है, जो अनुभव करे, वही जाने। यह प्रभु-प्यार का अनुभव आत्माओं को संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है, आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और परमात्मा का संग मिलता है। भले ही भक्ति मार्ग में परमात्मा के प्यार के अनुभव को गूँगे का गुड़ कहा है परन्तु अभी परमात्मा ने हम आत्माओं को ये परमात्म-प्यार का अनुभव कराया है और अन्य आत्माओं को भी कराने का काम भी दिया है अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर इस प्यार का अनुभव अन्य आत्माओं को कराया जा सकता है।

परमात्मा प्यार का सागर है, उसका प्यार का भण्डार अखुट है। प्यार का अखुट भण्डार होने के कारण परमात्मा के प्यार का भण्डार तो सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से सदा खुला रहता है परन्तु ड्रामा के नियमानुसार जो आत्मा परमात्मा को जितना प्यार करती है, वह उतना ही उससे प्यार पाती है। परमात्मा का प्यार तो सागर के जल के समान अगाध है। पाने वालों में जिसका बुद्धि रूपी बर्तन जितना है, वह उतना ही उस प्यार का अनुभव करता है। परमात्मा के प्यार पाने के विधि-विधान ज्ञान भी परमात्मा ने अभी बताया है कि एक कदम आत्मा का और हजार कदम परमात्मा बाप का प्यार मिलता है। रास्ता बताना बाप का काम है, जो वह सर्व आत्माओं को बताता है, करना और पाना आत्माओं का काम है। परमात्मा का प्यार पाने के लिए पहला कदम आत्मा को उठाना है, ये ड्रामा की अविनाशी नूँध है। परमात्मा ने हम आत्माओं को ड्रामा के इस विधि-विधान का ज्ञान दिया, यह भी उसका आत्माओं के प्रति प्यार ही है।

"अब संगम पर श्रेष्ठ आत्मायें हो। क्या श्रेष्ठता है? स्वयं बापदादा - परम-आत्मा और आदि-आत्मा अर्थात् बापदादा दोनों द्वारा पालना भी लेते हो, पढ़ाई भी पढ़ते हो, साथ में सत्गुरु द्वारा श्रीमत लेने के अधिकारी बने हो।" अ.बापदादा 15.12.99

"ब्राह्मण आत्मा अर्थात् सदा सम्पन्न आत्मा। ... बापदादा को आप सब में निश्चय है कि आप सभी बच्चे प्यार का रिटर्न अव्यक्त ब्रह्मा बाप समान अवश्य बनेंगे। बनेंगे ना! बापदादा छोड़ेगा नहीं। प्यार है ना! ... लक्ष्य रखो - हमें फरिश्ता बनना ही है।"

अ.बापदादा 31.12 .99

"जहाँ केवल स्नेह होता है, वह कब टूट भी सकता है लेकिन स्नेह और शक्ति दोनों का जहाँ मिलाप होता है, वहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलाप भी अविनाशी अर्थात् अमर रहता है।"

अ.बापदादा 16.6.69

"दिल का अनुभव दिलाराम जाने। समाने का स्थान दिल कहा जाता है, दिमाग़ नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग़ है। ... दिल से दिमाग़ की मेहनत आधी हो जाती है। जो दिल से सेवा करते हैं वा याद करते हैं, उनकी मेहनत कम और सन्तुष्टता ज्यादा होती है।"

अ.बापदादा 13.3.87

"वास्तव में यह शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। वैसे जितना और उतने का हिसाब होता है, जो करेगा, वह पायेगा, उतना ही पायेगा - यह हिसाब है। लेकिन भोलानाथ क्यों कहते ? क्योंकि इस समय देने में जितने और उतने का हिसाब नहीं रखता। एक का पदमगुणा हिसाब है।"

अ.बापदादा 7.03.86

"ईश्वर तो है निराकार, उनके साथ लव तो साकार में चाहिए ना। निराकार को कैसे लव करेंगे। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो लव नहीं होता। आत्मा और परमात्मा जब साकार में मिलें, तब लव हो। निराकार रूप में भल गाते हैं - तुम मात-पिता ... परन्तु उसका अनुभव नहीं होता।"

सा.बाबा 20.1.07 रिवा.

"सारी परमात्म प्राप्तियां "मेरा बाबा" कहने से, जानने से, मानने से आपकी अपनी प्राप्तियाँ हो गई। ... जहाँ प्राप्तियाँ होती हैं, वहाँ याद करनी नहीं पड़ती लेकिन स्वत: ही आती है, सहज ही आती है क्योंकि मेरी हो गई ना!"

अ.बापदादा 18.1.07

"बाप और आप यही सेफ्टी की लकीर है और यह लकीर ही परमात्म छत्रछाया है। जब तक इस छत्रछाया के अन्दर हैं, तब तक कोई माया के आने की हिम्मत नहीं।"

अ.बापदादा 19.3.90

"जैसे आपने अति प्यार से दिल से बाप को याद किया, उतना ही भक्त आत्मायें आप इष्ट आत्माओं को दिल से, अति प्यार से याद करती हैं। ... जहाँ दिल का स्नेह है और अति प्यार

का सम्बन्ध है अर्थात् अति समीप हैं, वहाँ याद भूलना मुश्किल है।"

अ.बापदादा 13.3.90

"जब चीज़ में स्नेह भर जाता है तो वह छोटी चीज़ भी बहुत महान बन जाती है। तो बापदादा चीज़ को नहीं देखते हैं, उसमें समाये हुए दिल के स्नेह को देखते हैं। ...जब बाप एक-एक प्यार की गिफ्ट को देखते हैं तो देखते ही बच्चे की सूरत उसमें दिखाई देती है।"

अ.बापदादा 6.3.97

"अकेला बाप इस साकार दुनिया में सिवाए बच्चों के कोई भी कार्य कर नहीं सकता। इतना बच्चों से प्यार है। पहले बच्चों को निमित्त बनाते, फिर बैकबोन होकर वा कम्बाइण्ड होकर, करावनहार होकर निमित्त बच्चों से कार्य कराते हैं। ... प्यार भी अति है और फिर न्यारे भी अति हैं, इसीलिए बाप की महिमा है न्यारा और प्यारा।"

अ.बापदादा 6.3.97

"रहम आता है ... रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा।"

अ.बापदादा 18.1.97

"निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा जो शिक्षा मिलती या डॉयरेक्शन मिलते हैं, उनको उस समय महत्व देने से अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेवार नहीं होंगे। ... ऐसी निमित्त बनी हुई आत्माओं के प्रति कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठाना चाहिए। ... नुकसान भी बदलकर फायदे में हो जायेगा। यह बाप की गारण्टी है। जिनको बाप ने निमित्त बनाया, उनका भी जिम्मेवार बाप है।"

अ.बापदादा 10.1.90

"शिवबाबा को याद करने से हम पुण्यात्मा बन जायेंगे।... बाप को याद करने से माया एकदम भाग जायेगी। बाप को प्यार से याद करो तो तूफान उड़ जायेंगे।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"अमृतवेले से रात सोने तक के लिए जो आज्ञायें मिली हुई हैं, ... आज्ञाकारी को सर्व सम्बन्धों से परमात्म-दुआयें मिलती है। यह नियम है। ... परमात्म-दुआओं के कारण आज्ञाकारी आत्मा सदा डबल लाइट उड़ती कला वाली होती है। साथ-साथ आज्ञाकारी आत्मा को आज्ञा पालन करने के रिटर्न में बाप द्वारा विल पॉवर विशेष वरदान और वर्से के रूप में मिलती है।"

अ.बापदादा 17.12.89

"एक होता है मुख से कहना "मेरा बाबा", एक होता है दिल से लग जाये "मेरा बाबा"। जो दिल से मेरा मान लेते हैं, वे कभी भूलते नहीं हैं।"

अ.बापदादा 31.12.94

"सर्व सम्बन्धों का अनुभव... एक है दिमाग़ से नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध को याद करना और दूसरा है दिल से उस सम्बन्ध के स्नेह में, लव में लीन हो जाना। ... कोई बात दिमाग़ में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है लेकिन जो दिल में समा जाती है, उसको चाहे सारी दुनिया भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती।"

अ.बापदादा 18.2.94

""दिल के स्नेह" और "स्नेह" में अन्तर है। स्नेह सभी का है। स्नेह के कारण ही तो कुर्बान हुए हैं। दिल के स्नेही, बाप के दिल की बातों को वा दिल की आशाओं को जानते भी हैं और पूर्ण करते हैं। ... दिल के स्नेही अर्थात् जो बाप के दिल ने कहा, वह बच्चों ने दिल में समाया और जो दिल में समाया, वह कर्म में स्वत: ही होगा।"

अ.बापदादा 31.3.88

"अगर संकल्प में भी एक बाप के सिवाए और कोई व्यक्ति या प्रकृति के साधन को सहारा स्वीकार किया तो ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी बहुत फास्ट गति से कार्य करती है। ... सेकेण्ड में मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है।"

अ.बापदादा 24.9.92

"जिसमें स्नेह और शक्ति दोनों का बैलेन्स है, वही बाप समान बनता है।... देहधारी के सम्बन्ध का आधार देहभान में सहज अनुभव होता है और बाप का आधार देह भान से परे होने से अनुभव होता है।"

अ.बापदादा 16.12.93

"अगर न्यारे नहीं रहते तो परमात्म प्यार का अनुभव भी नहीं कर सकते और परमात्म प्यार ही ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है।... जितना न्यारा, उतना प्यारा।"

अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 2

"बाप कभी भी कोई बच्चे से दिल शिकस्त नहीं होते हैं। सदा शुभ उम्मीदें रखते हैं।... कहाँ जायेंगे ... फिर भी वर्सा हर आत्मा को बाप से ही मिलना है। चाहे कोई बाप को गाली भी दे तो भी बाप उसको मुक्ति का वर्सा तो दे ही देंगे।... सर्व आत्माओं को बाप द्वारा वर्सा मिला है तब तो बाप कहकर पुकारते हैं ना।"

अ.बापदादा 16.3.92

"छोटेपन से भी कुछ खराब काम किया है तो वह भी बाबा को सुनाते हैं तो आधा माफ हो जाता है।... बाप कहते हैं क्षमा तो होती नहीं है, बाकी सच बताते हो वह हल्का हो जायेगा।"

सा.बाबा 9.12.05 रिवा.

"जो सर्विस नहीं करते, उनको बाप प्यार थोड़ेही करेंगे। भल बाप समझते हैं कि तकदीर अनुसार ही पढ़ेंगे, फिर भी प्यार किस पर रहेगा? वह तो कायदा है ना।... विवेक ऐसा

कहता है - भल टाइम है परन्तु शरीर पर कोई भरोसा थोड़ेही है।" सा.बाबा 29.3.05

"सुनाने वाले कितने बच्चे होते हैं लेकिन दिल का आवाज दिलाराम बाप एक ही समय में अनेकों का सुन सकते हैं। प्रतिज्ञा करने वालों को बापदादा बधाई देते हैं लेकिन इस प्रतिज्ञा को सदा अमृतवेले रिवाइज करते रहना।" अ.बापदादा 18.1.85

"आपका यादप्यार तो बापदादा के पास जब आप संकल्प करते हो तब ही पहुँच जाता है। ... यही तो परमात्म प्यार की विशेषता है। यह एक-एक दिन कितना प्यारा है। चाहे गाँव में हैं, चाहे बहुत बड़े शहरों में हैं। गांव वालों के पास याद भेजने के साधन न होते हुए भी उनकी याद बाप के पास पहुँच जाती है क्योंकि बाप के पास स्प्रीचुअल साधन हैं।"

अ.बापदादा 3.3.07

"चाहे लास्ट नम्बर भी है, फिर भी बापदादा का उस बच्चे पर भी अति प्यार है ... बापदादा हर बच्चे के महत्व को जानते हैं। बच्चे गीत गाते - वाह बाबा वाह, बाप आपसे भी 100 गुणा ज्यादा गीत गाते हैं - वाह बच्चे वाह।" अ.बापदादा 15.2.07

इन्द्र, इन्द्र सभा और उसके विधि-विधान

भारत में इन्द्रदेव, इन्द्र-सभा और उसके विधि-विधानों का भी बहुत गायन है। कहते हैं इन्द्र सभा में परियां डान्स करती हैं, उस सभा में कोई विकारी प्रवेश नहीं कर सकता है। इन्द्रलोक की कोई परी किसी विकारी को छिपाकर इन्द्र-सभा में ले आई तो दोनों ही श्रापित हो गये। इन्द्रदेव के लिए साधारण मनुष्य समझते हैं किउनके कहने से ही बादल जल बरसाते हैं।

अब यह इन्द्र कौन हैं और ये इन्द्र-सभा क्या है, परियां कौन हैं, इन्द्र कौनसा जल बरसाते हैं, इन्द्र-सभा का क्या विधि-विधान है, इन सबका रहस्य अभी परमात्मा ने बताया है कि ब्रह्मा तन में साकार रूप में पधारे परमपिता परमात्मा ही इन्द्र हैं और उनकी अभी की ये सभा ही सच्ची इन्द्र-सभा है। अगर इस सभा में कोई ब्राह्मणी बहन इन्द्र अर्थात् ब्रह्मा तन में पधारे परमात्मा से बिना पूछे किसी विकारी मनुष्य को छिपाकर ले आती है तो दोनों ही श्रापित हो जाते हैं अर्थात् दोनों पर ही पाप चढ़ जाता है। इस सभा में परमात्मा और बहनों के द्वारा ज्ञान डान्स ही परियों का डान्स है। परमात्मा के द्वारा दिया जा रहा ज्ञान ही जल है, जो ज्ञान-सागर परमात्मा बरसाते हैं और जिस ज्ञान-जल को अपने में भरकर अर्थात् धारण कर आत्मा रूपी बादल जाकर दुनिया में बरसते हैं, जिससे आत्मायें सर-सब्ज होती हैं। यह सब रहस्य अभी ही परमात्मा द्वारा पता पड़ा है। परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही सर्व आत्माओं की जीवन

कहानी को जानते हैं, इसलिए उनकी श्रीमत पर चलने में ही आत्माओं का कल्याण है। परमात्मा ने इस सभा में आने, बैठने-उठने, सुनने-सुनाने आदि आदि सब बातों के विषय में विधि-विधान बताये हैं, जो उन विधि-विधानों को समझकर चलता है, उससे इन्द्र अर्थात् परमात्मा भी खुश होते हैं और इस इन्द्र-सभा की सर्व आत्मायें भी खुश होती हैं और उनकी शुभ-भावनायें, शुभ-कामनायें भी उनको सहज ही मिलती हैं, जिससे वे दिनोदिन उन्नति को पाते रहते हैं और जो उनका उलंघन करता है, वह आपही श्रापित हो जाता है। परमात्मा किसी को श्राप नहीं देते हैं।

"कोई बादल तो खूब बरसते हैं और कोई थोड़ा बरसकर चले जाते हैं। तुम भी बादल हो ना। ज्ञान सागर से ज्ञान-जल खींचते हो और बरसते हो। ... संग भी उनका करना चाहिए जो अच्छा बरसते हैं।" सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

"तुम इस समय देवताओं से भी ऊंच हो क्योंकि बाप के साथ हो। बाप इस समय तुमको पढ़ाते हैं। ... यह इन्द्र-सभा है, जहाँ ज्ञान वर्षा होती है। ... अगर बिगर पूछे कोई विकारी को ले आते हैं तो बहुत सजा मिल जाती है, पत्थरबुद्धि बन जाते हैं।"

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

"ये हैं नई बातें, इनको नया कोई समझ न सके। इसलिए नये को एलाउ नहीं किया जाता है। यह है इन्द्र सभा।... पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बाप के सिवाए कोई बना न सके। बरोबर भारत सोने की चिड़िया था। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे।"

सा.बाबा 18.2.05 रिवा.

"यहाँ बादल आते हैं रिफ्रेश होने, फिर जाकर वर्षा कर दूसरों को रिफ्रेश करेंगे। ... बाप राय देते हैं - बहुतों को रास्ता बतायेंगे तो वे तुम पर कुर्बान जायेंगे।"

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

"जो बादल सागर के साथ हैं, उनके लिए ही बरसात है।... तुम भी सागर के पास आते हो भरने के लिए। ... बच्चों को ज्ञान की धारणा करनी और करानी है।"

सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"ईश्वर की गोद में आकर ...एक ने भी अगर हाथ छोड़ा, विकारी बना तो उनका पाप ले आने वालों पर आ जायेगा। ऐसे को इन्द्र सभा में न ले आना चाहिए।... बाबा पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थरबुद्धि बन जाते हैं।"

सा.बाबा 28.5.71 रिवा.

"अपवित्र कोई बैठ न सके। नहीं तो पत्थर-भित्तर बन जायेंगे। बाबा कोई श्राप नहीं देते हैं।

यह तो एक लॉ है। ...बाबा का बच्चा बना तो बीमारी सारी जोर से उथल खायेगी। डरना न है।" सा.बाबा 28.5.71 रिवा.

"ईश्वर से प्यार नहीं गोया असुरों से प्यार है। ... फिर खुद भी असुर बन जायेंगे। एक कहानी भी बताते हैं कि इन्द्र के दरबार में कोई परी विकारी को साथ ले आई ... दोनों को नीचे फेंक दिया। ... यह है ईश्वर की ज्ञान इन्द्र सभा।"

सा.बाबा 29.1.07 रिवा.

"यह सब इच्छायें छोड़कर एक बाप को याद करो। बन्धन आदि हैं, यह सब कर्मों का हिसाब है। ... कई सेन्टर्स पर भी आते रहते हैं और काला मुँह भी करते रहते हैं। ... इन्द्रप्रस्थ की भी कहानी है। पत्थरबुद्धि बन पड़ेंगे। ... पुरुषार्थ नहीं करते, यह भी ड्रामा में नूँध है। राजधानी में नम्बरवार चाहिए।" सा.बाबा 10.1.07 रिवा.

"यह है इन्द्र सभा। इन्द्र शिवबाबा है, जो ज्ञान वर्षा बरसाते हैं।... इस सभा में कोई भी विकार में जाने वाले को नहीं ला सकते हो ... लाते हैं तो बहुत भारी सज़ा मिल जाती है।"

सा.बाबा 21.7.06 रिवा.

"इन्द्र सभा में कोई परी किसी विकारी को छिपाकर ले आई तो इन्द्र सभा में बांस आने लगी। तो ले आने वाली पर दण्ड पड़ गया, वह पत्थर बन गई। ऐसे कुछ कहानी है। बाप पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थर बन जाते हैं।... बाबा कोई यह श्राप नहीं देते हैं परन्तु यह तो एक लॉ है।" सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

परमात्मा की मदद का विधि-विधान
परमात्मा की मदद लेने और देने का विधि-विधान
परमात्मा द्वारा एक का हजारगुणा प्राप्ति का विधि-विधान

परमात्मा की मदद ही आत्माओं की चढ़ती कला का आधार है। परमात्मा पिता की मदद तो सर्व आत्माओं के लिए सदा है ही है। उनके लिए यह नहीं कहा जा सकता है कि वह किसको मदद करता है और किसको नहीं करता है। परन्तु यह सत्य है कि हिम्मतवान को उनकी मदद विशेष मिलती है क्योंकि परमात्मा की मदद का नियम है - एक कदम बच्चों का और हजार कदम मदद बाप की। इसीलिए गायन है - हिम्मते मर्दा, मदद दे खुदा।

परमात्मा सर्वशक्तिवान है, उसकी शक्ति से ही आत्मा विकारों पर विजय प्राप्त कर सकती है। परमात्मा तो सबका पिता है और सर्व आत्माओं पर उसका समान प्यार है। जो

आत्मा हिम्मत से अपना एक कदम उसकी श्रीमत अनुसार उठाती है तो उसको हजार कदम परमात्मा बाप की मदद अवश्य मिलती है। एक कदम हमारा, हजार कदम बाप की मदद का विधान इस ड्रामा में नूँधा हुआ है। इसलिए पहले एक कदम हिम्मत का आत्माओं को उठाना है, तब ही वे बाप की हजार कदम मदद का अनुभव कर सकेंगे।

बाप आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं तो बाप को भी बच्चों की मदद लेनी होती है, जिस मदद का प्रतिफल कई गुणा बाप की मदद के रूप में अभी भी मिलता है और नई दुनिया में भी मिलता है। बाप को याद कर पावन बनना और दूसरी आत्माओं को पावन बनने का रास्ता बताना, दूसरी आत्माओं को पावन बनने में मदद करना ही बाप की मदद करना है। इसके लिए बाप ने इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना की है। जो जितना तन-मन-धन से और मन्सा-वाचा-कर्मणा इसमें मदद करता है, वह उतना ही उसका फल पाता है। इसका फल केवल नई दुनिया में ही नहीं मिलता है बल्कि अभी संगमयुग पर जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, वह उसका प्रत्यक्ष फल है, जो सुख सतयुग के सुख से कोटि-कोटि गुणा श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है। सतयुग का सुख तो संगमयुग के सुख की परछाई मात्र है।

"हिम्मत से बाप की मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। ... कोशिश करेंगे। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते हैं। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय की होगी।" अ.बापदादा 24.1.70

""हिम्मते बच्चे मदद दे बाप", बच्चों की हिम्मत और सारे परिवार तथा बापदादा की मदद है ही है, इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जो चाहो वह कर सकते हो।"

अ.बापदादा 13.3.86

"अगर हिम्मत हो तो मदद जरूर मिलेगी। इसलिए मददगार के साथ कुछ हिम्मतवान भी बनो। ... हिम्मत कैसे आयेगी ? हर समय, हर कदम पर हर संकल्प में बलिहार होने से।"

अ.बापदादा 19.7.69

"सच्ची दिल और बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। ...जो हिम्मत रखता है, उसको एक्स्ट्रा मदद जरूर मिलती है। ... हिम्मत वाले अवश्य विजयी होने ही हैं। होंगे या नहीं होंगे ? नहीं, होने ही हैं।" अ.बापदादा 30.3.2000

"एक है याद का बल, दूसरा है स्नेह का बल, तीसरा है सहयोग का बल और चौथा है सहन का बल। ... बापदादा की भी प्रतिज्ञा की हुई है बच्चों से कि हिम्मते बच्चे मदद दे बाप।"

अ.बापदादा 2.4.70

"पंख तो मिल गये हैं ना! उमंग-उत्साह और हिम्मत के पंख सबको मिले हैं और बाप का

वरदान भी है। याद है वरदान ? एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की ... बाप ने अपनी मोहब्बत से भटकने के बजाये तीन तख्त के मालिक बना दिया।"

अ.बापदादा 15.12.04

"जब हिम्मत रखते हैं तो बाप की मदद भी मिलती ही है। एवर-रेडी जरूर रहना चाहिए। ... अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। ... बाप का इशारा मिला तो कुछ भी सोचने की जरूरत ही नहीं है। ... बेपरवाह, निर्भय होकर सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो बाप की पदमगुणा मदद भी मिलती है।"

अ.बापदादा 27.2.86

"हिम्मत रखने से मदद स्वत: ही मिलती है। हिम्मत में कुछ कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। ... पहले हिम्मते बच्चे, फिर मदद दे बाप है। आपकी एक गुणा हिम्मत, बाप की सौगुणा मदद। ... सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा, यह भी पुरुषार्थहीन के लक्षण हैं।"

अ.बापदादा 6.8.72

"फरिश्ता बनने वाली आत्माओं की बुद्धि इस देह रूपी धरती पर नहीं रह सकती। यही निशानी है फरिश्तेपन की। ... दैवी परिवार के रिश्तों में भी फरिश्ते नहीं आते। वे तो सदैव न्यारे रहते हैं। ... अगर किससे रिश्ता जोड़ा तो एक से वह रिश्ता हल्का हो जायेगा। ... टूटे हुए दिल को बाप स्वीकार नहीं करते, यह भी रिश्तों की गुह्य फिलासॉफी है।"

अ.बापदादा 21.9.75

"संकल्प में भी कोई आत्मा न आये।... कैसी भी परिस्थिति हो। चाहे तन की, चाहे मन की या सम्पर्क की परन्तु कोई भी आत्मा संकल्प में भी न आये।... मुश्किल के समय बाप के सहारे का ही गायन है न कि किसी आत्मा के सहारे का। ... किसका सहारा ले लेते तो बे-सहारे हो जायेंगे।"

अ.बापदादा 21.9.75

"दिल से, मुहब्बत से कहो - "मेरा बाबा", तो मेहनत मोहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज़ पहुँच जाता है और बाप एक्स्ट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जबान का सौदा नहीं है। दिल का सौदा है।"

अ.बापदादा 15.10.04

"हिम्मत से बाप की मदद भी मिल जाती है। नाउम्मीद में भी उम्मीदों के दीपक जग जाते हैं। ... हिम्मत और उमंग के पंख जब लग जाते हैं तो जहाँ भी उड़ना चाहें उड़ सकते हैं। बच्चों की हिम्मत पर बापदादा सदा बच्चों की महिमा करते हैं।"

अ.बापदादा 4.03.86

"ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से ही बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद

नहीं दे सकते। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।" सा.बाबा 17.10.68

"जितना आप अपने में निश्चय रखते हैं, उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को सहयोग अवश्य मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है तो पहले स्नेही बनना है। ... कब भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए।" अ.बापदादा 28.9.69

"जो सपूत हैं, ज्ञान को धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे योगी और ज्ञानी हैं, वे मुझे प्यारे लगते हैं। ... तुम बच्चे इस समय नर्क को स्वर्ग बनाने वाले हो। ... योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपही आंख खुल जायेगी, खटिया हिल जायेगी। ब्रेहद का बाप कितना रहम करते हैं।" सा.बाबा 8.12.04 रिवा.

"जो मददगार हैं, उनको मदद तो सदैव मिलती है।... यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का सम्बन्ध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन।... ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेकों के साथ स्नेह समाप्त हो जाता है।"

अ.बापदादा 26.1.70

"एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। ... जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्होंको ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा, इस रहस्य को! ... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।"

अ.बा. 18.1.86

"अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझा कर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का जमा अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुणा मिलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है।"

अ.बापदादा 24.12.74

"अपने को सदा बापदादा के साथ अनुभव करते हो या अकेला अनुभव करते हो? ... जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है।" अ.बापदादा 23.1.76

"जब बाप स्वयं साथ देने का आफर कर रहे हैं, उस आफर को स्वीकार करना चाहिए

ना ?...जैसे स्थूल में कोई किसी को कोई चीज ऑफर करे, वह स्वीकार न करे तो इसको सभ्यता नहीं समझेंगे। यह इज्जत कहेंगे ? यह तो गॉड की ऑफर है। सदा बाप के साथ अर्थात् निरन्तर योगी बनो।" अ.बापदादा 23.1.76

* परमपिता परमात्मा न्यायकारी, समदर्शी, सर्व आत्माओं का पिता है। वह आधा कल्प के लिए सभी आत्माओं को वर्सा देता है, किसी को मुक्ति का और किसी को जीवनमुक्ति का। द्वापर-कलियुग में पुरुषार्थ से प्रालब्ध का विधान चलता है।

"बाप के साथ बड़ा सच्चा रहना चाहिए। जितना जो सच्चाई से चलेंगे, उतना उनकी रक्षा होती रहेगी। झूठे चलने वाले की रक्षा नहीं हो सकती। उनको तो फिर सजा कायम हो जाती है।"

सा.बाबा 27.4.72 रिवा.

"बहुतों को सिर्फ मुरली पढ़ने से भी नशा चढ़ जाता है। बड़ी आफतें आनी हैं। मदद उनको मिलेगी, जो मददगार बनेंगे, अच्छी रीति सर्विस करेंगे। तो उनको अन्त में सहायता भी तो मिलती है ना।" सा.बाबा 24.5.02 रिवा.

"अभी तुमको इन्श्योर करना है बाप के पास। ... यह तो तुम डायरेक्ट इन्श्योर करते हो। कोई सब कुछ इन्श्योर करेगा तो उनको बादशाही मिल जायेगी। जैसे बाबा अपना बतलाते हैं- सब कुछ दे दिया। बाबा के पास फुल इन्श्योर कर लिया तो फुल बादशाही मिलती है।"

सा.बाबा 10.6.02 रिवा.

"बाप सभी को सुख-शान्ति देता है। बाप के तो सभी बच्चे हैं। ऐसे थोड़ेही कि कोई को दे, कोई को न दे। बाप तो सभी को माया की जंजीरों से छुड़ाने वाला है, इसलिए ही उनको सब याद करते हैं।" सा.बाबा 29.6.02 रिवा.

"विल की हुई चीज बिना श्रीमत के एक सेकण्ड या एक पैसा भी यूज नहीं कर सकते।... थोड़ा भी धन बिना डायरेक्शन के कहाँ भी कार्य में लगाया, तो वह धन आपको भी उस तरफ खींच लेगा। धन, मन को खींच लेगा और मन, तन को खींच लेगा और परेशान करेगा।"

अ.बापदादा 20.1.84 डबल विदेशी बच्चों प्रति

* परमपिता परमात्मा न्यायकारी समदर्शी है, वह आकर सर्व आत्माओं को कल्याण का रास्ता बताता है, उस पर निश्चय करके जो जितना और जैसे चलता है, वह उस अनुसार फल पाता है। सही रास्ता बताना ही परमात्मा की मदद है, उसके बाद जो उसकी श्रीमत पर चलते हैं, अपना तन-मन-धन सफल करते हैं, उनको उसकी उसी आधार पर अतिरिक्त मदद मिलती है।

"अगर देही-अभिमानी होकर बाप को याद करते रहें तो बाप मदद भी करे। जो जितना याद

करते हैं, उनको उतनी मदद मिलती है।"

सा.बाबा 11.2.03 रिवा.

"जितना संग होगा, उतना रंग पक्का होगा। संग कच्चा है तो रंग भी कच्चा होगा। ... हिम्मत है तो बाप की मदद भी मिलेगी, हिम्मत कम तो मदद भी कम।"

अ.बापदादा 7.1.85 कुमारियों से

* किसी वस्तु के देने और लेने में वस्तु से भी अधिक महत्व देने और लेने वाले की भावना का होता है और भावना के अनुसार उसका हिसाब-किताब होता है, उसके फल का निर्धारण होता है। परमात्मा के साथ भी आत्माओं के लेनदेन का हिसाब रहता है, इसीलिए परमात्मा को सौदागर भी कहा जाता है। परमात्मा के साथ हिसाब-किताब में भी भावना का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

"बापदादा को अनेक बच्चों की अनेक सौगातें अनेक संख्या में मिलीं। ... जितना अटूट और सर्व सम्बन्ध का स्नेह था, उतने वेल्यू की सौगात थी। ... जितने वर्ष बीते हैं, उतने वर्षों के स्नेह की वेल्यू ऑटोमेटिक जमा होती रहती है और उतनी वेल्यू की सौगात बापदादा के सामने प्रत्यक्ष हुई।"

अ.बापदादा 2.1.85

"विधाता अर्थात् हर समय, हर संकल्प द्वारा देने वाले।... विधाता अर्थात् बाप के सिवाए और किसी आत्मा से लेने की भावना रखने वाले नहीं, और सबको सदा देने वाले।... जैसे बाप लेते नहीं, देते हैं। अगर कोई बच्चा अपना पुराना कखपन देता भी है तो उसके बदले में इतना देता है, जो लेना, देने में बदल जाता है। ऐसे मास्टर विधाता।"

अ.बापदादा 7.1.85

"हर एक को अपनी टिकट लेनी है। पुरुष को अपनी, स्त्री को अपनी टिकट लेनी है। स्त्री को चान्स जास्ती है क्योंकि पुरुष जो करते हैं तो उसका आधा हिस्सा स्त्री को मिल जाता है। स्त्री जो सौदा करती है, वह कुछ भी देती है तो उसका हिस्सा पति को नहीं मिलता क्योंकि पुरुष तो रचयिता है, पैसे उनके हाथ में रहते हैं, वह जो करेगा, उसका हिस्सा स्त्री को मिल जाता है।"

सा.बाबा 1.9.03 रिवा.

* परमात्मा को सौदागर भी कहा जाता है। वह भोला भण्डारी है और उसका भण्डार सभी आत्माओं के लिए सदा खुला हुआ है परन्तु उस भण्डार से लेने का एक विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है। वह विधान है एक का हजार गुणा प्राप्ति। ड्रामानुसार इस विधान के अनुसार जो तन-मन-धन से जितने कदम उसके मार्ग पर बढ़ाता है, वह उस अनुसार उसके भण्डार से लेने का अधिकारी बनता है। बिना अपना कदम उठाये कोई कुछ प्राप्ति नहीं कर सकता है और कदम

उठाने वाला नियमानुसार कभी भी प्राप्ति से वंचित नहीं रह सकता है।

* सृष्टि के नियमानुसार आत्माओं का परमात्मा के साथ भी लेनदेन का हिसाब किताब है अर्थात् हम परमात्मा की पहले भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमको ही पहले ज्ञान देता है और परमात्मा हमको ज्ञान देता है तो हम भक्ति मार्ग में उनके मन्दिर बनाते हैं, उनकी महिमा करते हैं, उनका गुणगान करते हैं। ये भी परमात्मा के साथ लेनदेन का एक हिसाब-किताब का सम्बन्ध है।

"पिछाड़ी में जब हाहाकार होगा, तब फिर तुमको साक्षात्कार होंगे। हंगामें होंगे तो तुम बच्चे आकर यहाँ इकट्ठे होंगे, इसलिए मधुबन में जास्ती मकान बनाते रहते हैं। ... परन्तु यहाँ आना मासी का घर नहीं है। जो सपूत बच्चे बाबा के मददगार होंगे, वे ही आ सकेंगे।"

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

* जो जितना तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वभाव-संस्कार... से समर्पण होता है, वह उतना ही परमात्मा पिता के उस रूप में वर्से का अधिकारी बनता है - ये सृष्टि का अटल नियम है।

"अगर बाप का और ब्राह्मण परिवार का सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो न्यारे बनो। सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है, वही सबसे न्यारा बन सकता है। ... परमात्म प्यार अखुट है लेकिन प्राप्त करने की विधि है - न्यारा बनना। विधि से सिद्धि मिलती है।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 4

"अर्थक्वेक आदि होंगे, बहुत आफतें आने वाली हैं। उस समय जो सच्चे योगी होंगे, जिनको पूरा ज्ञान होगा, वे तो डांस करते रहेंगे। जो सच्चे सर्विसएबुल बच्चे हैं वे ही पिछाड़ी में हनूमान मिसल स्थेरियम रह सकेंगे।" सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

"आज के दिन दृढ़ संकल्प की शक्ति से पुराने संस्कार को विदाई दे नये युग के संस्कार को, जीवन को बधाई देने की हिम्मत है?... बापदादा को खुशी है कि हिम्मत वाले बच्चे हैं। ... क्योंकि जानते हैं कि एक कदम हमारी हिम्मत का और हजारों कदम बाप की मदद का तो मिलना ही है। अधिकारी हो।" अ.बापदादा 31.12.06

"कब-कब कोई बच्चे दिलशिकस्त होकर कहते - पता नहीं हमारा भाग्य है या नहीं है ... आपकी हिम्मत और बाप की मदद है ही। ... हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती ही है और मिलनी ही है। यह गारण्टी है। ... समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण यूज़ करना, इसको कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।"

अ.बापदादा 6.3.97

"माया की नज़र से सदा बचे रहने वाले, अपनी नज़रों में सदा बाप को समाने वाले। जब बाप

नज़रों में है तो माया की नज़र लग नहीं सकती।"

अ.बापदादा 18.1.97

"कोई भी कार्य करो तो कभी भी कोई हलचल के वातावरण के प्रभाव में नहीं आओ, अपना प्रभाव डालो। ... हिम्मत का बहुत महत्व है। कभी किसी भी बात में घबराओ नहीं। हजार भुजाओं वाले आप भी हो। बाप की भुजायें आपकी भी तो हुई ना।"

अ.बापदादा 10.1.90

"जो मनन शक्ति वाले होते हैं, उनको बाप की भी मदद मिलती है, जिससे जो मुश्किल काम होता है, वह सहज हो जाता है। ... इसलिए हिम्मत और बाप का साथ ये नहीं छोड़ना।"

अ.बापदादा 16.2.96 पार्टी

"मन के भाग्यवान सदा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति वाले होते हैं। ... मन का लगाव व झुकाव किसी व्यक्ति व वस्तु की तरफ नहीं होगा ... मन को बाप के तरफ लगाने में मेहनत नहीं होगी लेकिन सहज ही मन बाप की मोहब्बत के संसार में रहेगा।"

अ.बापदादा 19.11.89

"जो बापदादा के दिल तख्तनशीन है और जिनके दिल में सदा बापदादा रहते हैं, उनके संकल्प तो क्या स्वप्न में भी दुख की लहर, दुख की लैस भी नहीं आ सकती। ... जो भरपूर चीज़ होती है, उसमें हलचल नहीं होगी।"

अ.बापदादा 28.3.06

"सर्व सम्बन्धों का स्नेह समय प्रमाण अनुभव करने वाले... इसको कहा जाता है - नम्बरवन यथार्थ स्नेही आत्मा। यथार्थ दिल के स्नेह के कारण ऐसी आत्मा को समय पर बाप द्वारा हर कार्य में स्वत: ही सहयोग की प्राप्ति होती रहती है।"

अ.बापदादा 12.3.88

""हिम्मते बच्चे मदद दे बाप" के वरदान प्रमाण पुरुषार्थ में नम्बरवार आगे बढ़ते रहे हैं। बच्चों के एक कदम की हिम्मत और बाप की पद्म कदमों की मदद हर एक बच्चे को प्राप्त होती है - यह बापदादा वायदा और वर्सा सब बच्चों के प्रति है।"

अ.बापदादा 22.11.87

"जो मददगार हैं, उनको मदद तो सदैव मिलती है।... यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का सम्बन्ध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन। ... ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेकों के साथ स्नेह समाप्त हो जाता है।"

अ.बापदादा 26.1.70

"तुम बाबा के मददगार बनते हो, औरों को रास्ता बताने के लिए। जो मदद करेगा, उनको

ऊंच पद मिलेगा। यह तो कायदा है। बाप और वर्से को याद करो और बहुतों को रास्ता बताओ।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"विदेही को युगल बनायेंगे तो विदेही बनने में सहयोग मिलेगा। विदेही बनने में सहयोग कम मिलता है, सफलता कम देखने में आती है तो समझना चाहिए कि विदेही को युगल नहीं बनाया है।"

अ.बापदादा 18.1.70

"एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। ... जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्होंको ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा - इस रहस्य को! ... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।"

अ.बापदादा 18.1.86

"यह भी ड्रामा बना हुआ है, इसलिए इसमें कुछ भी गम या खुशी नहीं होती। सब हमारे बच्चे हैं। ... ऐसी गुह्य बातें कोई समझ थोड़ेही सकते हैं, इसमें चाहिए सोने का बर्तन। वह याद की यात्रा से ही बन सकता है। ... लिखते हैं बाबा कृपा करो, शक्ति दो, रहम करो। बाबा लिखते हैं - शक्ति आपही योगबल से लो। अपने ऊपर कृपा रहम आपही करो। बाप युक्ति बताते हैं।"

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

"बापदादा का वायदा है, वरदान है - एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की। चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो लेकिन कभी हिम्मत नहीं हारो। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप मददगार है, कम्बाइण्ड है और सदा हाजिर है।"

अ.बापदादा 3.3.07

"आप हिम्मत से सर्वशक्तिवान कम्बाइण्ड बाप के ऊपर अधिकार रखो और दृढ़ रहो, होना ही है। बाप मेरा और मैं बाप की हूँ - यह हिम्मत नहीं भूलो... होगा, कैसे होगा... हुआ ही पड़ा है। बाप बँधा हुआ है दृढ़ निश्चयबुद्धि वाले को मदद देने के लिए।"

अ.बापदादा 3.3.07

"कई कहते हैं - झूठी बात पर हमको ज्यादा क्रोध आता है ... सारी झूठी दुनिया एक तरफ हो और एक बाप आपके साथ है तो विजय आपकी निश्चित हुई पड़ी है। कोई आपको हिला नहीं सकता।"

अ.बापदादा 15.2.07

"क्यों नहीं होगा। जहाँ दृढ़ता है, वहाँ सफलता है ही है। सफलता की चाबी है दृढ़ संकल्प। यह चाबी सदा साथ रखना। अभी आप साथी बन गई। आशीर्वाद तो शुभ कार्य और हिम्मत

वाले को स्वत: मिलती है।... बाप का वायदा है - एक कदम आपकी हिम्मत का, हजार कदम बाप की मदद का। ... जब मनुष्य विश्व का अकल्याण कर सकते हैं तो कल्याण क्यों नहीं कर सकते।"

अ.बापदादा 2.2.07 राज. की गवर्नर

दान-पुण्य का विधि-विधान

विश्व-नाटक में दान-पुण्य का विधि-विधान भी अविनाशी नूँधा हुआ है। बाबा ने दान-पुण्य का राज़ भी समझाया है। दान करना अच्छी बात है परन्तु उसके फल के विधि-विधान को भी जानना अति आवश्यक है। जो आत्मा उस विधि-विधान को जानकर दान-पुण्य करती है, उसको उस दान-पुण्य का विशेष फल प्राप्त होता है। दान-पुण्य का यथार्थ विधि-विधान न जानने के कारण कहाँ-कहाँ किया हुआ दान-पुण्य पाप के खाते में भी जमा हो जाता है। जिसके विषय में भी बाबा ने बताया है। कोई धन दान करता है परन्तु वह दान किसी विकारी, पतित मनुष्य को दिया, किसी भ्रष्टाचारी-अत्याचारी को दिया और उसने उसका दुरुपयोग किया अर्थात् पाप-कर्म में प्रयोग किया तो देने वाला भी उसके फल में भागीदार बनता है। दुनिया में पतित मनुष्य पतितों को दान-पुण्य करते हैं और समझते हैं कि उनका भाग्य जमा होता है परन्तु वह पाप के ही खाते में ही जमा होता है क्योंकि पतितों को दिया दान तो पतितों के द्वारा पतित कार्यों में ही प्रयोग होता है, आत्माओं का पाप का खाता बढ़ता ही जाता है, जिससे दुनिया और ही पतित बनती जाती है। सच्चा दान-पुण्य तो वही है, जो अभी संगमयुग पर परमात्मा की मत पर परमात्मा के अर्थ किया जाता है, परमात्मा की श्रीमत अनुसार आत्माओं की आध्यात्मिक सेवार्थ किया जाता है, जिससे आत्माओं की भी चढ़ती कला होती है और दान देने वाले की भी चढ़ती कला होती है। उस दान-पुण्य से आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह मिलती है। किसको परमात्म-मिलन की राह दिखाना, परमात्मा से मिलाना सबसे बड़ा दान है। परमात्मा के महावाक्य हैं - अविनाशी ज्ञान रतनों का दान सबसे श्रेष्ठ दान है साथ-साथ स्थूल धन भी परमात्मा की श्रीमत अनुसार ईश्वरीय सेवा में लगाना भी श्रेष्ठ दान है, जिससे विशेष फल मिलता है। बाबा ने योग-दान की भी विधि बताई है, जिससे आत्मायें और जड़ प्रकृति भी पावन होती है, उसका भी आत्मा को विशेष फल मिलता है। योग-दान से आत्माओं का बहुत पुण्य जमा होता है।

"श्रेष्ठ कुमारियां श्रेष्ठ काम करेंगी ना! सबसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे बाप का बनाना। ... तो अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो।"

अ.बापदादा 17.5.83

"अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी धन का। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बनते जाते हो। ... औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा।"

सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

"भक्ति की रस्म-रिवाज अलग है और ज्ञान मार्ग की रस्म-रिवाज अलग है। सतयुग में दान-पुण्य होता नहीं है क्योंकि वहाँ कोई गरीब-दुखी होता नहीं है, जिसको दान-पुण्य करें।"

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

"अभी हम अपना सबकुछ ईश्वर को दे देते हैं, ईश्वर स्वीकार करते हैं। वह स्वीकार न करें तो फिर देवे कैसे ? वह हमारा न स्वीकार करे तो भी दुर्भाग्य। बाप स्वीकार करते हैं ताकि हमारा ममत्व मिट जाये। यह राज भी तुम बच्चे ही जानते हो।"

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

"भक्तिमार्ग में लक्ष्मी को महादानी दिखाते हैं तो महादानी की निशानी कौनसी दिखाई है ?...सम्पति झलकती रहती है। यह शक्तियों का यादगार है। लक्ष्मी अर्थात् सम्पति की देवी। वह स्थूल सम्पति नहीं, नॉलेज की सम्पति, शक्तियों रुपी सम्पति की देवी अर्थात् देने वाली है। तो यह चित्र बनाया है ऐसी सम्पति की देवी बनना है। चाहे नॉलेज देवे, चाहे शक्तियाँ देवे।"

अ.बापदादा 23.1.76

"जो सदा महादानी हैं उनकी पूजा भी सदा और हर कर्म की होती है, जैसे कई देवियों के वस्त्र बदलने की, हर कर्म की पूजा होती है। इससे सिद्ध है कि उन्होंने हर कर्म करते, सारा समय दान किया है - जिसको "महादानी" कहेंगे।" अ.बापदादा 23.1.76

"जिन बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग की स्मृति रहती है, वे ज्ञान रत्नों का दान करने बिना रह नहीं सकते। जैसे मनुष्य पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य करते हैं, ऐसे इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम्हें ज्ञान रत्नों का दान करना है।" सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

"बाबा राय देते हैं - बच्चे, गरीबों को दान देने वाले तो बहुत हैं।... दान आदि में भी बहुत खबरदारी चाहिए। ... धन को व्यर्थ नहीं गंवाना है। जो लायक ही नहीं हैं, ऐसे पतित को कभी दान नहीं देना चाहिए। नहीं तो दान देने पर भी बोझा आ जाता है।"

सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

"बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस-किस को देते रहते हो। दान उसको देना चाहिए, जो पाप न करे। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर भी उसका असर आ जायेगा क्योंकि तुमने पैसा दिया।" सा.बाबा 12.5.72 रिवा.

"धन हमेशा पात्र को दिया जाता है। अगर कोई शराबी को दिया तो देने वाले पर भी दोष आ जाता है। कपूत बच्चे को दिया तो उनका पाप भी सिर पर चढ़ जाता है। इसलिए हिसाब-किताब चुक्तू करो। सरेण्डर हुए फिर एलाउ नहीं करेंगे, किसको देने के लिए। दिया तो फिर पाप हो जायेगा। कन्या को तो देना ही है, अगर स्वर्ग का मालिक नहीं बनती, स्वर्ग में नहीं चलती, नर्क में ही गोता खाने चाहती है तो।" सा.बाबा 5.6.73 रिवा.

"आत्माओं को बुलाते हैं ... उनके निमित्त ब्राह्मणों को दान देते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि हम ईश्वर अर्थ दान करते हैं। वह ईश्वर अर्थ नहीं हुआ। वह तो प्राणी को देते हैं। ईश्वर अर्थ करे तब तो ईश्वर अर्थ दान कहा जाये। प्राणी को देते हैं तो उसका ईश्वर थोड़ेही फल देगा। दान में भी देखो कितनी गुह्यता है। ईश्वर अर्पण नम: कहते हैं। अगर कृष्ण अर्पण करेंगे तो कृष्ण क्या देंगे ? हाँ कोई कृष्ण अर्पणम् कह देते तो भी कृष्ण को ईश्वर समझ देते हैं तो उसका फल मिलता है। परन्तु अधूरा। अभी तो डायरेक्ट मैं आया हूँ ... 21 जन्मों का राज्य तुमको रिटर्न में देता हूँ।" सा.बाबा 5.11.72 रिवा.

"अन्त में जितनी सजायें खायेंगे, उतना पद कम हो जायेगा, इसलिए बाबा कहते हैं योगबल से हिसाब-किताब चुक्तू करो। याद से जमा करते जाओ।... दान भी पात्र को देना है। पापात्माओं को देने से फिर देने वाले पर भी उसका असर पड़ जाता है।"

सा.बाबा 5.8.05 रिवा.

"यह तो है पाप की दुनिया। पापात्माओं को दान न करो। .. पापात्माओं को ही देते तो और ही पापात्मा बनते जाते हैं।... मेरे बने हो तो मेरी राय पर चलो। पतित को पैसा नहीं देना है क्योंकि वह पैसे से पाप करेंगे।... अगर पापात्माओं को दिया तो उसका बोझा चढ़ जायेगा।"

सा.बाबा 16.4.72 रात्रि क्लास रिवा.

* दान देने और दान लेने वाले के मध्य में परमात्मा एक मध्यस्थ है, जिसकी मध्यस्थता में देने और लेने के परिणाम का निर्णय होता है। दोनों को परमात्मा पर निश्चय होता है। यद्यपि ये सब ड्रामा में नूँध है परमात्मा उसके विधि-विधान का ज्ञान देता है, जो हमको बताता है। जो उस विधि-विधान को जानकर दान-पुण्य करते हैं, वे पाप से बच जाते हैं और उनको उस दान-पुण्य का विशेष फल प्राप्त होता है।

"कई गरीबों को गुप्त दान देते हैं। किसी की कन्या की शादी करानी होती है तो गुप्त दे आते हैं। गुप्त दान का फल भी ऐसा मिलता है। शो करने से उनकी ताकत आधी हो जाती है।"

सा.बाबा 10.05.03 रिवा.

"बाबा समझाते हैं पहले दास-दासी बनें, फिर थर्ड क्लास राजा-रानी बनना, इससे तो प्रजा में

साहूकार बनना अच्छा है। दान-पुण्य कर साहूकार बन जायें। दास-दासी का नाम तो न पड़ेगा। भल वे दास-दासी बन राजाई में जाते हैं परन्तु उनसे वे साहूकार जास्ती सुखी हैं। ... यहाँ अगर पूरा श्रीमत पर नहीं चलते तो दास-दासी बन जाते हैं।"

सा.बाबा 29.1.07 रिवा.

"यहाँ गरीब अथवा साहूकार की बात नहीं है ... अब तुम बाप के पास अपने को इन्श्योर करो ... साहूकार का एक हजार और गरीब का एक रुपया - दोनों को एक समान फल मिलता है। ... साहूकार कभी नहीं आयेंगे और न बाबा को उनकी दरकार है। ... यहाँ पैसे आदि की कोई बात नहीं है। बाप सिर्फ कहते हैं - मन्मनाभव।"

सा.बाबा 25.1.07 रिवा.

"योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। बाबा कहते हैं - रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को शान्ति-सुख का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो तो तुम न सिर्फ भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का ज्ञान सुमिरण करने से तुम सुख का दान देते हो।"

सा.बाबा 16.1.07 रिवा.

"कितने अखण्ड खज़ानों के मालिक हो, रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड हो। खज़ाने अखुट और अखण्ड हैं। जितने देंगे, उतने बढ़ते जाते हैं।"

अ.बापदादा 31.10.06

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज़। दान हमेशा गरीबों को ही दिया जाता है। सुदामा की बात है ना - चावल चपटी ले उनको महल दे दिये। समझो कोई के पास 25-50 रुपया है, उसमें से 20-25 पैसे देता है और साहूकार 50 हजार दे तो भी इक्वल हो जाता है।"

सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"ये समझने की बातें हैं। जो समझते हैं तो औरों को भी समझायेंगे जरूर। धन दिये धन न खुटे। धारणा होती रहेगी।... स्वर्ग में जो दास-दासियाँ होंगे, वे भी दिल पर चढ़े हुए होंगे। ऐसे नहीं कि सब आ जायेंगे।"

सा.बाबा 13.7.04 रिवा.

"पापात्माओं को दान करते हैं तो पुण्य के बदली पाप हो जाता है। पैसा देने वाले पर भी पाप हो जाता है।"

सा.बाबा 23.6.04 रिवा.

"बाप कहते हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर एक बार भी पतित बना तो की कमाई चट हो जायेगी। ... जब तक जीना है, ज्ञान अमृत पीना है। ... कभी यह ख्याल नहीं आना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। अरे तुम इससे तो तुम पदमपति बनते हो। देने का ख्याल आया तो

ताकत कम हो जाती है। मनुष्य ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं लेने के लिए।"

सा.बाबा 5.6.04 रिवा.

"बिरला के पास कितनी ढेर मिल्कियत है। मन्दिर बनाते हैं, उससे कुछ भी नहीं मिलता है। गरीबों को थोड़ेही कुछ देते हैं। मन्दिर बनाया, जहाँ मनुष्य आकर माथा टेकेंगे। हाँ, गरीब को दान में देते हैं तो उसका रिटर्न में मिल सकता है। धर्मशाला बनाते हैं तो बहुत मनुष्य जाकर वहाँ विश्राम पाते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए सुख मिल जाता है।... संगमयुग पर बाप सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।"

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज, गरीबों को ही पढ़ाता हूँ। साहूकारों को ताकत नहीं है पढ़ने की। ... गरीब ही साहूकार बनते हैं, साहूकार गरीब बनेंगे - यह कायदा है। दान कभी साहूकारों को दिया जाता है क्या ? ये भी अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान है। ... बाप से कुछ भी मांगना नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए। ... जिसे याद किया जाता है, वह जरूर कभी आयेगा भी। याद करते ही हैं फिर से रिपीट होने के लिए।"

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

"भक्ति मार्ग में भी मनुष्य इन्श्योर करते हैं। ईश्वर अर्थ दान करते हैं।... हर एक अपने को इन्श्योर करते हैं। अभी तुम्हारा है डायरेक्ट ईश्वर के साथ इन्श्योर। वह है इन्डायरेक्ट, यह है डायरेक्ट इन्श्योर करना।"

सा.बाबा 2.10.03 रिवा.

अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

अतीन्द्रिय सुख संगमयुग पर आत्माओं को भासता है, जब आत्मायें परमात्मा के प्रत्यक्ष में बच्चे बनते हैं, उनके द्वारा विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान प्राप्त करते हैं। सतयुग में भौतिक सुख तो होता है लेकिन वहाँ अतीन्द्रिय सुख नहीं होता है और न ही उनको उसका ज्ञान होता है और न ही वे उसकी आवश्यकता अनुभव करते हैं क्योंकि प्रकृति पावन होने के कारण उनको वहाँ किसी प्रकार की दुख-अशान्ति नहीं होती है।

"ड्रामा में इस समय तुम सबसे जास्ती मर्तबे वाले हो क्योंकि परमपिता परमात्मा की गोद ली है ... यह ईश्वरीय सुख बहुत ऊंच है। ... सतयुग में अगर यह ज्ञान हो तो अन्दर ही घुटका खाते रहें। ... संगमयुग पर ही बाबा आकर ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर त्रिकालदर्शी बनाते हैं।"

सा.बाबा 23.1.07 रिवा.

Q. सतयुग में अगर यह ज्ञान हो तो घुटका खायेंगे परन्तु अभी ज्ञान होते भी घुटका क्यों नहीं खाते हैं?

संगमयुग पर आत्माओं की चढ़ती कला होती है और परमात्मा का साथ होता है, इसलिए सृष्टि-चक्र का ज्ञान होते भी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और नई दुनिया के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ होता है परन्तु वहाँ से गिरेंगे, उसका दुख और चिन्ता नहीं होती है।

"यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में टपकना चाहिए, तब तुमको खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे, उनकी बुद्धि में ऐसी-ऐसी बातें चलती रहेंगी। ... इसमें कोई थकावट नहीं होती है परन्तु सारा समय उस अवस्था में नहीं रह सकते, फिर माया के तूफान आते हैं तो थका भी देते हैं। ... बाकी बाप को याद करते रहेंगे, टापिक आदि निकालते रहेंगे तो उसमें और ही माथा भरपूर हो जायेगा। यह बाबा का अनुभव है।"

सा.बाबा 23.1.07 रिवा.

"अविनाशी बाप है तो वह जो देगा वह अविनाशी ही देगा। अविनाशी खज़ाने का नशा भी अविनाशी रहता है। ... एक बाप, दूसरा न कोई। दूसरा-तीसरा आया तो खिटखिट होगी। एक बाप है तो एकरस स्थिति होगी।"

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 4

"सच्चे सेवाधारी की निशानी यही है कि हर कर्म में उस द्वारा बाप दिखाई दे। उसका हर बोल बाप की स्मृति दिलाये, हर विशेषता दाता की तरफ इशारा दिलाये। ... अगर आपको देखा, बाप को नहीं देखा तो यह सेवा नहीं हुई। यह द्वापरयुगी गुरुओं के मुआफिक बाप से बेमुख किया, बाप को भुलाया न कि सेवा की। यह गिराना है न कि चढ़ाना है। यह पुण्य नहीं, यह पाप है क्योंकि बाप नहीं है तो जरूर पाप है।" अ.बापदादा 11.12.85

"आप सब बच्चे बाप के साथ सेवाधारी हो। सेवा के लिए ही यह तन-मन-धन आप सबको बाप ने ट्रस्टी बनाकर दिया है। सेवाधारी का कर्तव्य क्या है? हर विशेषता को सेवा में लगाना। अगर आपकी विशेषता सेवा में नहीं लगती है तो कभी भी वह विशेषता वृद्धि को प्राप्त नहीं होगी।" अ.बापदादा 11.12.85

"जो देही-अभिमानी होकर रहते हैं, अतीन्द्रिय सुख उनको ही रह सकता है। सिर्फ भाषण से काम नहीं होगा।... याद से ही तुम्हारे में जौहर भरेगा। ज्ञान का बल नहीं कहा जाता है, योगबल कहा जाता है। योगबल से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। ... तुम्हारे योग की ताकत से विश्व भी पवित्र बन जाता है।"

सा.बाबा 14.1.04 रिवा.

मन्सा सेवा, मन्सा सुख एवं मन्सा भोगना का विधि-विधान

मन आत्मा की मूल शक्ति है और किसी भी कर्म के करने में, सुख-दुख की महसूसता में मन की मुख्य भूमिका है। बिना मन के आत्मा न कोई कर्म कर सकती है और न ही किसी प्रकार की अनुभूति कर सकती है। मनुष्य के मन्सा संकल्पों का प्रभाव चेतन आत्मा और जड़ प्रकृति दोनों पर पड़ता है और मन्सा संकल्पों की गति शब्द से कई गुणा तीव्र होती है।

मन्सा अच्छे या बुरे दोनों प्रकार के कार्यों में महत्व है। ईश्वरीय सेवा में भी मन्सा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मन्सा सेवा बोल और कर्मणा से अधिक महत्वपूर्ण है और अधिक प्रभावशाली है। ऐसे ही मानसिक भोगना शारीरिक भोगना से बहुत अधिक दुखदायी है। किसी आत्मा के प्रति संकल्प करते ही, उस आत्मा पर उसका प्रभाव होता है। ऐसे ही आत्मा के विकर्म में प्रवृत्त होते ही अर्थात् संकल्प करते ही मानसिक भोगना का दण्ड आरम्भ हो जाता है अर्थात् उसकी मन्सा उसको खाने लगती है। भले ही कोई उसे उस समय अनुभव करे या न करे परन्तु समय आने पर अनुभव होता ही है। मन्सा भोगना का प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है और शारीरिक भोगना का भी कारण बन जाता है। अनेक प्रकार शारीरिक रोग मन्सा के दूषित होने से ही उत्पन्न होते हैं। जैसे कर्म का बीज संकल्प है वैसे शारीरिक भोगना का बीज है मानसिक भोगना। दुनिया में जीवघात मन्सा भोगना का ही परिणाम है अर्थात् जब आत्मा मन्सा भोगना को सहन नहीं कर सकती तब ही जीवघात करती है। परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान और कर्म-दर्शन के परिपेक्ष में हम विचार करें तो भी आत्मा जीवघात के बाद भी उस मन्सा भोगना से छूट नहीं सकती है।

* मन्सा से उत्पन्न हुए संकल्पों के साथ प्रवाहित होने वाले सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण दुनिया के किसी भी कोने में बैठी आत्मा को प्रभावित करते हैं और कर सकते हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति की भावना पर आधारित होता है। इस सत्य को जानकर खान-पान, व्यवहार को करने वाला ही इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सफल होता है। इसीलिए बाबा ने खान-पान की परहेज बताई है। आदरणीय दादी जी के लिए योग से प्रभावित जल की दवाई भी बाबा ने बताई। विश्व में इसके अनेक उदाहरण सुनते हैं।

मनुष्य के संकल्प परिवर्तन होते ही उसकी वृत्ति, वायब्रेशन्स परिवर्तन हो जाते हैं और वे उस अनुरूप वातावरण का निर्माण करते हैं, जो वातावरण अन्य आत्माओं को भी उससे प्रभावित करता है।

"मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं। ... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते।... क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। कर्मयोगी कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।"

अ.बापदादा 29.10.87

"श्रेष्ठ कल्याण का संकल्प है, वह सिद्ध जरूर होता है और मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण मन कभी मालिक को धोखा नहीं दे सकता है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"संगमयुग है ही एक का पदमगुणा जमा करने का युग।... कैसा भी कमजोर तन हो, रोगी हो लेकिन वाचा-कर्मणा नहीं तो मन्सा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। ... कैसे भी बीमार हो अगर दिव्य-बुद्धि सालिम है तो अन्त घड़ी तक भी सेवा कर सकते हैं।"

अ.बापदादा 18.2.85

"संकल्प शक्ति अर्थात् मन द्वारा एक स्थान पर होते हुए भी चारो ओर वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बना सकते हो। ... तो एक जन्म के मन की सेवा सारा कल्प चेतन्य स्वरूप से वा चित्र से शान्ति का स्वरूप बनेगा।" अ.बापदादा 18.2.85

* एक आत्मा दूसरी आत्मा के संकल्प को प्रभावित कर सकती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा दूसरी आत्मा को निर्संकल्प स्थिति में स्थित कर परमशान्ति का अनुभव करा सकती हैं। देहाभिमान के वशीभूत आत्मा दूसरी आत्मा के संकल्प को प्रभावित कर विकारी वासनायुक्त संकल्प उत्पन्न कर सकती है परन्तु ये सब आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब और ड्रामा के पार्ट तक ही सीमित है अर्थात् ड्रामा के पार्ट तक ही दूसरे के संकल्प को प्रभावित कर सकते हैं।

* मानसिक रोग अर्थात् दृष्टि-वृत्ति, भय-चिन्ता, व्यर्थ चिन्तन अनेक दैहिक रोगों को जन्म देते हैं और परिणाम स्वरूप वे ही दैहिक रोग आत्मा के दुख के कारण बन जाते हैं। मनुष्य की दैहिक दृष्टि-वृत्ति, काम वासना को जाग्रत करती है, वासना से वीर्य नाश होता है, जो अनेक दैहिक रोगों का कारण है। काम विकार आत्मिक शक्ति के पतन का मूल कारण है। मानसिक बीमारी बहुत बड़ी बीमारी है, जो अनेक दैहिक बीमारियों का मूल कारण है, उसका एकमात्र निदान मन-बुद्धि की एकाग्रता है। बाह्य एकाग्रता से भी कुछ हद तक इसका निदान होता है परन्तु स्थाई निदान मन-बुद्धि का अपने आत्मिक स्वरूप में एकाग्र होना ही है, जिसका एकमात्र

साधन है यथार्थ आत्मिक ज्ञान और परमात्मा की अव्यभिचारी याद।

"बापदादा सदा कहते हैं - कितने भी बड़े हों, उनके पास पॉवर है परन्तु आपके पास परमात्म विल-पॉवर है। ... सिर्फ स्वयं एक संकल्प हो - होना ही है। ... चाहे देश में, चाहे विदेश में - क्यों, कैसा, ऐसा तो नहीं - इस संकल्प से कभी कोई कार्य अर्थ सामने नहीं जाओ।... जब सामने जाते हो तो सदा दृढ़ संकल्प से जाओ - होना ही है।"

अ.बापदादा 31.1.98

"स्थूल में आप सभी सामने बैठे हो लेकिन सूक्ष्म स्वरूप में चारो ओर के बच्चे बापदादा के दिल में हैं ... बापदादा सभी बच्चों को सामने देख दिल ही दिल में गीत गा रहे हैं - वाह बच्चे वाह! ... बाप कहते हैं - बाप के पास तो जब संकल्प करते हो, साधन द्वारा याद पीछे मिलती है लेकिन स्नेह का संकल्प साधन से पहले पहुँच जाता है।"

अ.बापदादा 30.11.06

"अनुभवी मूर्त कभी भी न माया से धोखा खा सकता, न दुख की अनुभूति कर सकता। ... उसका कारण है - अनुभवी मूर्त की कमी है। अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ है। ... आत्मायें अनुभव करना चाहते हैं। तो अनुभवी ही अनुभव करा सकता है।"

अ.बापदादा 15.12.06

"महारथियों के संकल्प भी ऐसे ही होते हैं, जो संकल्प प्रैक्टिकल में सम्भव हो सकते हैं। करें न करें ... सोचने की भी उनको आवश्यकता नहीं है। ... इसमें पहले कन्ट्रोलिंग पॉवर विशेष चाहिए। अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है तो व्यर्थ मिक्स होने के कारण सिद्धि प्राप्त नहीं होती। जब व्यर्थ संस्कारों को कन्ट्रोल करें, तब उसके बदली में समर्थ संस्कार अपने में जमा कर सकें।"

अ.बापदादा 30.7.70

"जिस समय कोई विशाल कार्य कहाँ भी होता है, उस समय दूर बैठे भी उतने समय तक सदा हर एक के मन में विश्व-कल्याण की श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना जरूर होनी चाहिए। ... आप सभी विशेष आत्माओं की शुभ भावना, शुभ कामना उस कार्य को अवश्य सफल बनायेगी। ... कोई साकार में वाणी से, कोई कर्म से, कोई मन्सा सेवा से निमित्त बनेंगे।"

अ.बापदादा 30.12.85

"श्रेष्ठ कल्याण का संकल्प है, वह सिद्ध जरूर होता है और मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण मन कभी मालिक को धोखा नहीं दे सकता है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"अभी वाणी के साथ मन्सा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है।... जिस आत्मा की मन्सा सेवा

अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे, वह आत्मा आपको दुआयें देगी और आपके खाते में स्व-पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा।"

अ.बापदादा 15.12.2001

"पास नहीं लेकिन पास विद् ऑनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सज़ा नहीं खायें। धर्मराज की सजाओं की बात तो पीछे है लेकिन अपने संकल्पों में उलझन अर्थात् सजाओं से परे रहें। ... सर्व के सहयोगी बनेंगे तो स्नेह मिलता रहेगा।"

अ.बापदादा 17.10.70 - 18.2.07 रिवा.

संकल्प, वृत्ति और वायुमण्डल का विधि-विधान

मनुष्य अपने वातावरण की उपज भी है तो उसका निर्माता भी है अर्थात् आत्मा के संकल्पों का प्रभाव वातावरण पर पड़ता है। जैसा संकल्प, उस अनुसार वातावरण बनता है और उसका प्रभाव जड़-जंगम और चेतन पर पड़ता है। ऐसे ही मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उस वातावरण का प्रभाव उसके जीवन पर अवश्य पड़ता है और उसके अनुरूप उसके स्वभाव-संस्कार तथा शरीर का निर्माण होता है। जड़-चेतन प्रकृति का यह नियम है, जो जड़-चेतन पर स्वत: प्रभावित होता है।

जैसा संकल्प, वैसा वृत्ति, वायब्रेशन और वातावरण बनता है। संकल्प से वृत्ति का निर्माण होता है, वृत्ति से वायुमण्डल बनता है और वायुमण्डल दूसरी आत्माओं के मन को प्रभावित करता है अर्थात् उनके अन्दर भी उस अनुरूप संकल्पों को जन्म देता है। संकल्प परिवर्तन होते रहते हैं और जैसे ही संकल्प परिवर्तन होता है, उसी क्षण वृत्ति-वायब्रेशन और वातावरण परिवर्तन हो जाता है या होने लगता है। भले उसका प्रभाव कुछ समय बाद देखने और समझने में आता है।

* आवाज की गति और प्रभाव आकाश तत्व तक ही है, संकल्प की गति और प्रभाव सूक्ष्म वतन तक ही है, उसके आगे शान्ति ही शान्ति है।

मनुष्य के दैहिक सम्बन्ध और संकल्पों से जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रभावित होते हैं और जड़-जंगम-चेतन का प्रभाव मनुष्य पर भी पड़ता है।

"अभी हर एक अपने को मन के मालिक अनुभव कर एक सेकण्ड में मन को एकाग्र कर सकते हो ? एक सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुँच जाओ, एक सेकेण्ड में अपने राज्य स्वर्ग में पहुँच जाओ ... अभी अभ्यास करो कि एक सेकेण्ड में सभी अपने स्वीट होम में पहुँच

जाओ। ... मन की सकाग्रता स्वयं को भी और वायुमण्डल को भी पॉवरफुल बनाती है।"

अ.बापदादा 31.12.06

"अगर आप स्वयं हर जोन में निर्विघ्न बनकर दिखायेंगे तो आपकी वृत्ति का वायुमण्डल फैलेगा। यह नहीं सोचना कि वायुमण्डल फैला या नहीं फैला। अवश्य फैलेगा।... उमंग-उत्साह से कोई भी संकल्प करेंगे तो विजय है ही है। तो याद रखना - यूथ का स्लोगन है - करना ही है। बुरा नहीं, अच्छा करना। विजयी बनना ही है, सफलता का सितारा बनना ही है।"

अ.बापदादा 15.12.06 युवा पदयात्री

"तपस्या का वातावरण वाणी के समारोह से भी ज्यादा आत्माओं को बाप की तरफ आकर्षित करेगा। तपस्या रुहानी चुम्बक है, जिससे आत्माओं को शान्ति और शक्ति का अनुभव का दूर से भी होगा।"

अ.बापदादा 31.12.90

"अभी तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हो, तो उनकी श्रीमत पर चलना है। ... बाप की श्रीमत पर न चलने से भूलें होती रहेंगी। श्रीमत पर चलने से खुशी का पारा चढ़ेगा। ... अन्दर की खुशी चेहरे से भी दिखाई पड़ती है।"

सा.बाबा 30.10.06 रिवा.

"सबको माया से छुड़ाना बाप का काम है। आप स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो, तो आपके वायब्रेशन्स से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरों की माया सहज भाग जायेगी।"

अ.बापदादा 18.1.97

"शिवबाबा की याद में रहने से हमारे जो भी विकर्म हैं, वे भस्म हो जायेंगे और हम विकर्माजीत बन जायेंगे। यह आत्मा की ड्रिल है - शरीर को भूल जाना अर्थात् यह शरीर है ही नहीं। ... यहाँ बैठे कोई अपने मित्र-सम्बन्धियों, धन्धे आदि को याद करते हैं तो वे वायुमण्डल में विघ्न डालते हैं।"

सा.बाबा 21.7.06 रिवा.

"परमात्म सर्व प्राप्तियों के प्रत्यक्ष स्वरूप में प्रसन्नता ही चेहरे पर दिखाई देती है। ... रुहानी प्रसन्नता स्वयं को तो प्रसन्न करती ही है परन्तु रुहानी प्रसन्नता के वायब्रेशन्स अन्य आत्माओं तक भी पहुँचते हैं। उनके सम्पर्क से अन्य आत्मायें भी शान्ति और शक्ति की अनुभूति करती हैं।"

अ.बापदादा 5.12.89

"संकल्प आधार है। संकल्प किया मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी और संकल्प किया - मैं तो कमजोर आत्मा हूँ ... सेकण्ड में संकल्प से खुशी गायब हो जायेगी।"

अ.बापदादा 25.3.95

"जब वृत्ति में श्रेष्ठता है तो सृष्टि श्रेष्ठ ही नज़र आयेगी क्योंकि वृत्ति से दृष्टि और कृत्ति का

कनेक्शन है। ... आपकी विशेष सेवा विश्व-परिवर्तन की शुभ भावना से है। वृत्ति से वायब्रेशन-वायुमण्डल बनाते हो।" अ.बापदादा 1.3.92

"विचार-सागर मंथन करना है। विचार सागर मंथन करने में बड़ा एकान्त चाहिए। रामतीर्थ के लिए बताते हैं - जब वह लिखता था तो चेले को कहा - तुम दो माइल दूर चले जाओ, नहीं तो वायब्रेशन आयेगा।" सा.बाबा 24.3.04 रिवा.

"अभी वहाँ हॉस्पिटल में कमरे में या बाहर ऐसा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाना, जो कोई भी आये तो वह एक सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव करे। यह शक्तिशाली दवाई है। ... सब यह समझें कि हमको यह सेवा करनी है। प्यार का रिटर्न तो यही है।"

अ.बापदादा 3.3.07

"दृढ़ता, एकाग्रता और एकॉनामी ... संकल्प, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क, हर संस्कार-स्वभाव में भी एकॉनामी ... जितना संकल्पों की एकॉनामी होगी, उतनी यज्ञ की एकॉनामी के बिना रह नहीं सकेंगे। यज्ञ की एकॉनामी का नहीं आता है, संस्कार इमर्ज नहीं होता है, इससे समझो - समय, संकल्प के खज़ाने के एकॉनामी की आदत नहीं है। ... तो दृढ़ता, एकाग्रता और एकॉनामी।"

अ.बापदादा 15.2.07

"एक-एक माता जगतमाता बन जाये। वृत्ति से हर समय, हर संकल्प से जगत माता के स्वरूप में स्थित हो जाये तो कितने वायब्रेशन वर्ल्ड को मिलेंगे ... माँ की भावना जल्दी पहुँचती है। ... ऐसे आप सभी को बच्चे समझकर पालना करो, वायब्रेशन फैलाओ। ... इसमें स्व-उन्नति ऑटोमेटिक है।" अ.बापदादा 15.2.07

"अभी तक मास्टर रचयिता कहाँ-कहाँ रचना की आकर्षण में आकर्षित हो जाते हैं। इसलिए जो जितना और जैसा स्वयं है, उतना और वैसा ही सबूत दे रहे हैं।... वायब्रेशन ऐसे थे, समस्या ऐसी थी इसलिए हार हो गयी। कारण देना गोया अपने को कारागार में दाखिल करना है।" अ.बापदादा 22.10.70

"तुम बच्चों में कुदृष्टि, क्रोध आदि कुछ नहीं होना चाहिए। उससे अपना ही नुकसान करते हो। कुदृष्टि होती है तो सामने वाले को भी उसका वायब्रेशन आता है, दूसरे को भी कशिश होती है। ... अभी अगर कोई विकर्म किया तो सौगुणा दण्ड हो जाता है।"

सा.बाबा 24.2.07 रिवा.

"दृष्टि के ऊपर बहुत ध्यान देना है। दृष्टि बदल गई तो कभी धोखा नहीं देगी।... सदैव अपने को चेक करो कि अभी कोई भी सामने आये तो मेरी दृष्टि द्वारा क्या साक्षात्कार करेंगे। जो आपकी वृत्ति में होगा, वैसे अन्य आपकी दृष्टि से देखेंगे। अगर वृत्ति देहाभिमान की है, चंचल

है तो आपकी दृष्टि से ऐसा ही साक्षात्कार भी होगा।"

अ.बापदादा 17.10.70 - 18.2.07 रिवा.

"अगर वृत्ति देहाभिमान की है, चंचल है तो आपकी दृष्टि से ऐसा ही साक्षात्कार भी होगा। औरों की भी दृष्टि-वृत्ति चंचल होगी। ... अपनी वृत्ति के सुधार से अपनी दृष्टि को और दिव्य बनाना। ... सृष्टि न बदलने का कारण है दृष्टि का न बदलना और दृष्टि न बदलने का कारण है वृत्ति का न बदलना।"

अ.बापदादा 17.10.70 - 18.2.07 रिवा.

ईश्वरीय सेवा का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

सर्व आत्माओं की ईश्वरीय सेवा करना अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना ब्राह्मण जीवन का धर्म और कर्म है परन्तु इस धर्म और कर्म का सफल्तापूर्वक निर्वाह वही कर सकता है, जिसको इस ईश्वरीय सेवा के विधि-विधान का पता होग। बाबा ने सेवा के सारे विधि-विधान बताये हैं, जिससे हम ईश्वरीय सेवा में सफलता प्राप्त कर सकें।

"माया के भी नॉलेजफुल हो ... टीचर्स माया के नॉलेजफुल हो ? ... टीचर्स सदा स्वयं हिम्मत में रहने वाली और दूसरों को हिम्मत देने के निमित्त बनने वाली हैं। ... सफल टीचर की पहली निशानी होगी कि वह कभी भी हिम्मतहीन नहीं बनेंगी। जो खुद हिम्मत में रहता है, वही दूसरों को भी हिम्मत दे सकता है।" अ.बापदादा 7.3.90

"विजय का तिलक सदा मस्तक पर चमकता रहे। यही विजय का तिलक औरों को भी खुशी दिलायेगा क्योंकि विजयी आत्मा का चेहरा सदा ही हर्षित रहता है। ... आगे चलकर आपके चेहरे की खुशी की आकर्षण से और आत्मायें नज़दीक आयेंगी।"

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 3

"धन के भाग्यवान कभी भी अपने नाम, मान, शान की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। यदि नाम-मान-शान की इच्छा है तो ऐसे समय पर भाग्यविधाता सहयोग नहीं दिलायेगा। ... सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राज़ी होने की निशानी है - भण्डारा भी भरपूर और भण्डारी भी भरपूर।" अ.बापदादा 19.11.89

"जो देही-अभिमानी बनते, उनमें फिर दूसरों को आप समान बनाने की ताक़त रहती है। ... आप समान बनाये बाप के सेवा का फल देना पड़े। नहीं तो माला कैसे बनेगी। बाप का वारिस

कैसे बनायेंगे। प्रजा भी चाहिए और वारिस भी चाहिए।"

सा.बाबा 27.6.06 रिवा.

"स्वमान और नशे की बातें रोज़ रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो, तब खुशी और नशा चढ़ेगा और जब स्वयं को नशा और खुशी होगी तब औरों मो भी अनुभव करा सकेंगे। स्वमान में स्थित आत्मा का कोई अपमान कर नहीं सकता।"

दादी गुल्जार 18.2.07 मधुवन

"जब किसको समझाते हो तो बोलो हम कभी भी किसी से भीख नहीं मांगते। ... हम अपने ही तन-मन-धन से सेवा करते हैं। ब्राह्मण अपनी कमाई से ही यज्ञ को चला रहे हैं, शूद्रों के पैसे यज्ञ में नहीं लगा सकते।"

सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

"यह ब्राह्मण परिवार सर्वात्माओं का परिवार है। ब्राह्मण सभी धर्मों में बिखर गये हैं। ऐसा कोई धर्म नहीं, जिसमें ब्राह्मण न पहुंचे हों। अब सब धर्मों से निकल-निकल कर आ रहे हैं। ... सेवा के निमित्त बनना कोई कम भाग्य नहीं है। यह बहुत श्रेष्ठ भाग्य है। बड़े से बड़े पुण्यात्मा बन जाते हैं। ... यह लास्ट सो फास्ट जाने की विशेष गिफ्ट है।"

अ.बापदादा 25.2.86

"वास्तव में यह ज्ञान बहुत सिम्पुल है, बाकी याद की यात्रा से सम्पूर्ण बनना, इसमें मेहनत है। ... बाबा कहते हैं - सबको यही कहो कि मुझे याद करो। बाकी बाबा की सर्विस में जरा भी कदम नहीं उठाया तो वे फिर पदम कैसे पायेंगे! पदमपति तो सर्विस से ही बन सकते हैं। ... बाप-टीचर-सतगुरु को याद करने से उनकी शिफ्तें भी बुद्धि में आ जायेंगी।"

सा.बाबा 26.8.04 रिवा.

"अभी तुमको विचार करना है - क्या करें जो सब जल्दी समझ जायें। ... किसको पैसे देकर काम कराना भी रिश्वत है, बेकायदे हो जाता है।... तुम्हारी है योगबल की बात। योगबल इतना चाहिए जो तुम कोई से भी काम करा सको।... अब बच्चों को विचार करना है, हम अखबार के द्वारा कैसे समझायें।"

सा.बाबा 31.7.04 रिवा.

"बाप की याद में रह किसको ज्ञान देंगे तो तीर लग जायेगा। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। नॉलेज से धन की कमाई होती है, ताकत है याद की।"

सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

"स्व-उन्नति और सेवा की जिम्मेवारी अलग नहीं है, यज्ञ सेवा की जिम्मेवारी है। ... यज्ञ सेवा का पुण्य अगर हर समय जमा करो तो आपका पुण्य का खाता बहुत बहुत जल्दी बढ़ सकता है।"

अ.बापदादा 15.2.07

"खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। ... खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। तो वेल्थ भी है खुशी और हेल्थ भी है खुशी और जब खुशी है तो हैप्पी तो हैं ही है। ... बापदादा ने होमवर्क दिया था कि खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे, उतनी बढ़ेगी।" अ.बापदादा 2.2.07

"ज्ञान मार्ग में बड़ा उनको कहा जाता है, जो ज्ञान को अच्छी रीति समझ और समझा सकते हैं। जो नहीं समझा सकते हैं, उनको छोटे बच्चे कहा जाता है। छोटा बच्चा तो फिर पद भी छोटा- यह तो समझने की बात है।" सा.बाबा 26.2.07 रिवा.

"हम सब एक्टर्स हैं तो हमको भी ड्रामा का पता होना चाहिए।... तुम सबको यह समझानी देते रहो। तीर उनको लगेगा, जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा।... बाप को तो सभी आत्माओं को वापस ले जाना है।" सा.बाबा 22.2.07 रिवा.

"कोई भी स्थूल-सूक्ष्म देहधारी को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। इसलिए बाबा बार-बार समझाते रहते हैं ताकि कोई ऐसे न कहे कि हमको कोई ने समझाया नहीं। तुम बच्चों को हर एक को बाप का पैगाम देना है। कोई ऐसा न रह जाये, जो कहे कि हमको मालूम ही नहीं पड़े कि बाबा आया है।" सा.बाबा 24.2.07 रिवा.

तन-मन की आरोग्यता में संकल्पों के प्रभाव का विधि-विधान

हमारे तन की आरोग्यता में हमारे संकल्पों का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारे शरीर में अनेक प्रकार के रोग हमारे दूषित या कमजोर संकल्पों के कारण होते हैं और अनेक रोगों का निदान भी हमारे शक्तिशाली संकल्पों के द्वारा होता है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं, उस अनुसार शरीर की ग्रन्थियों से रस-स्राव होते हैं, जो हमारे दैहिक स्वाथ्य के कारण भी बनते हैं अर्थात् उनसे अनेकानेक रोग उत्पन्न भी होते हैं तो वे अनेकानेक रोगों के निदान का आधार भी बनते हैं। जब मनुष्य भय-चिन्ता, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति, काम-वासना आदि से ग्रसित होता है तो उस समय जो रस-स्राव होता है, वह अनेकानेक रोगों का कारण बनता है और जब मनुष्य विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, प्रभु-प्यार, प्रभु-स्मृति, योग-साधना तल्लीन होता है तो आत्मा आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होता है, जिससे वह निर्भय-निश्चिन्त, शान्त, पवित्रता, आत्मिक-प्रेम आदि से भरपूर होता है तो उस समय उसके संकल्पों से प्रभावित ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होते हैं, वह अनेकानेक रोगों का निदान करते है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप अस्तित्व में आया है, इसमें हमारे

अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ हिसाब-किताब हैं, वे भी पूरे होने हैं और ड्रामा का पार्ट भी है तथा समयानुसार वर्तमान वातावरण में अनेक प्रकार के जो संक्रमण हैं, वातावरण में वृत्तियों का संक्रमण है वह भी आत्मा को उसके कर्मों अनुसार प्रभावित करतें हैं, इसलिए किसी व्यक्ति के या अपने जीवन के रोगों आदि को देखकर भ्रमित नहीं होना है, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है, आश्चर्यचकित नहीं होना है। सत्य सदा ही सत्य है। अति आशावान भी नहीं होना है और जीवन निराशा को भी जन्म नहीं देना है। विश्व-नाटक में देह रूपी वस्त्र बदलना अपरिहार्य, अनिवार्य और स्वभाविक क्रिया है, जिसका कोई न कोई निमित्त कारण तो बनता ही है, इसलिए तमोप्रधान समय के अनुसार बीमारी-कर्मभोग तो आता ही है परन्तु निदान के लिए यथोचित उपचार भी करना है और योगबल से चुकता भी करना है। मम्मा-बाबा, जो हमारे इस जीवन के आदर्श हैं, उनके उदाहरण हमारे सामने हैं और अनेक मुरलियों में बाबा ने इसके लिए श्रीमत भी दी है और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी दिया है। जैसे अनेक प्रकार के रोग मन्सा संकल्पों-विकल्पों के कारण उत्पन्न होते हैं, वैसे ही अनेक असाध्य रोगों का निदान भी शुद्ध-शान्त संकल्पों के द्वारा होता है। ये सृष्टि का नियम है और प्रकृति का विधान है।

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रक्टिकल की। ... सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे, आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।" अ.बापदादा 31.12.05

* जैसे वृक्ष के विकास में देश-काल-वातावरण और बीज के गुण-धर्मों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, प्रभाव होता है, ऐसे ही आत्मा जिन माता-पिता के पास जन्म लेती है तो पिता के बीज और माता (भूमि) दोनों के ज्ञान-गुण-धर्म, संस्कार बच्चे को वर्से में मिलते हैं, ऐसे ही हम जब परमात्मा के पास ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट होते हैं तो ब्रह्मा माँ और पिता शिवबाबा दोनों के ज्ञान-गुण-संस्कार हमको वर्से में मिलते हैं, फिर उनको विकसित करना आत्मा का अपना काम है।

माता-पिता के अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के संस्कार बच्चे को वर्से में मिलते हैं और स्थूल में अनेक बीमारियां, शारीरिक ढांचा भी बच्चे को माता-पिता से वंशानुगत प्राप्त होता ही है। भले बच्चे का अपना पुरुषार्थ भी उसमें अपनी भूमिका निभाता है।

व्यक्ति जिसके साथ रहता है, जिसको याद करता है, उसके ज्ञान-गुणों, धर्म-संस्कार उस पर प्रभावित होते हैं, परमात्मा की याद से भी परमात्मा के ज्ञान, गुण, शक्तियां उसके जीवन में आती हैं।

विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और भारत

इस संसार रूपी विश्व-नाटक का भारत के साथ गहरा सम्बन्ध है अथवा ये कहें कि इस विश्व-नाटक की सारी कहानी भारत पर ही आधारित है या भारत ही इसका हीरो है। भारत इस विश्व-नाटक की धूरी है, जिसके चारो तरफ ये सारा विश्व चक्कर लगाता है। इसके कुछ नियम या घटनायें ऐसी हैं जो भारत से ही सम्बन्ध रखती हैं, दूसरे देश बाई-प्लॉट्स हैं। इस सम्बन्ध में कुछ नियम और घटनायें यहाँ लिखते हैं, जिससे इसकी महत्ता का ज्ञान होता है और भारत में जन्म लेना कितने स्वाभिमान की बात है, इसका भी आभास होता है।

परमपिता परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, जो विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञाता हैं और वे ही इस विश्व-नाटक के सभी नियम और सिद्धान्तों का ज्ञान देते हैं अर्थात् नये विश्व अर्थात् दैवी दुनिया के नियम-सिद्धान्तों का बीजारोपण भारत में ही करते हैं, जहाँ से वे नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान सारे विश्व में जाते हैं।

भारत अविनाशी भूमि है क्योंकि अविनाशी बाप का यहाँ अवतरण होता है, इसलिए ईश्वरीय गुण-धर्म भारत में अन्त समय तक अंश रूप में विद्यमान रहते हैं।

भारत का उत्थान होता तो विश्व का उत्थान और भारत का पतन होता तो विश्व का पतन होता है।

भारत ही स्वर्ग बनता है और भारत ही नरक बनता है, जिस स्वर्ग-नर्क को सारा विश्व याद करता है। जब भारत स्वर्ग होता है सारा ही विश्व एक होता है अर्थात् सारा ही विश्व स्वर्ग होता है और जब भारत नर्क बनता है तो सारा ही विश्व नर्क बन जाता है। भले ही परमधाम से आने वाली नई आत्मायें अपने समय के अनुसार वहाँ सुख अवश्य भोगती हैं।

"ड्रामा अनुसार जब ऐसी हालत हो जाती है, भारत बिल्कुल ही लास्ट खाते में चला जाता है, तब बाप आते हैं। भारत जब पुराना हो, तब फिर नया बने। नया भारत जब था तो और कोई धर्म नहीं था, उसको स्वर्ग कहा जाता है।" सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

"बाप समझाते हैं - यह नाटक है हार-जीत का, हेल-हेविन का। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है। यह बना-बनाया ड्रामा है। ... तुम जानते हो - भारत है सबसे पुराना खण्ड, जो कभी विनाश नहीं होता है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य भी यहाँ ही होता है।... वही भारत अभी पतित है तब फिर मैं आता हूँ।" सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

आध्यात्मिक ज्ञान की आधार भूमि भारत है, जहाँ से आध्यात्मिकता का प्रचार और प्रसार विश्व में होता है। इसके लिए बाबा ने कहा है - सर्वव्यापी का ज्ञान भी भारत से ही सारे विश्व में गया है। अभी ये परमात्मा का यथार्थ परिचय और ये आध्यात्मिक ज्ञान सारे विश्व को तुम आत्माओं के द्वारा मिलना है। सभी धर्म-पिताओं को भी यहाँ आकर सन्देश लेना ही है। "यह भी ड्रामा बना हुआ है। जब तुम कौड़ी जैसे बन जाते हो तब मैं तुमको हीरे जैसा बनाता हूँ। मैंने अनगिनत बार भारत को स्वर्ग बनाया है। ... बाबा सन्यासियों की भी महिमा करते हैं। वे भी अच्छे हैं, जो पवित्र रहते हैं। यह भी वे भारत को थमाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

"प्रजापिता है तो जरूर नई रचना रचते हैं। नई रचना होती है ब्राह्मणों की। ब्राह्मण हैं रुहानी सोशल वर्कर, देवता तो प्रालब्ध भोगते हैं। ... देवी-देवतायें बहुत काल से अलग रहे हैं तो पहले-पहले ज्ञान भी उनको ही मिलेगा। लक्ष्मी-नारायण ने 84 जन्म पूरे किये हैं तो उनको ही पहले ज्ञान मिलना है।"

सा.बाबा 31.12.03 रिवा.

"यही भारत शिवालय था, देवी-देवताओं का राज्य था, जिनके मन्दिर बनाये हुए हैं। ... फिर तुमको नीचे उतरना ही था, कला कमती होनी ही थी। उस समय कोई ऊपर चढ़ न सके क्योंकि वह है ही गिरती कला का समय।"

सा.बाबा 9.2.07 रिवा.

"भारत में ही डबल सिरताज वालों की पूजा होती है। लाइट है पवित्रता की निशानी। ... अब तुम पुरुषार्थी हो, इसलिए तुम पर लाइट नहीं दे सकते हैं। देवी-देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं।... अन्दर में यह नशा रहना चाहिए कि हमको परमपिता परमात्मा डबल सिरताज बनाते हैं।... सिंगल ताज वाले डबल ताज वालों को पूजते हैं।"

सा.बाबा 28.10.06 रिवा.

"भारत में जब रावण राज्य शुरू होता है तो ऐसे नहीं कि और धर्मों में भी रावण राज्य हो गया। नहीं, उनको तो अपने समय पर सतो, रजो, तमो में आना है।... उनको भी सुख-दुख दोनों भोगना है। ... जो पिछाड़ी में आते हैं, उनका कुछ मान रहता है।"

सा.बाबा 20.9.06 रिवा.

"भारत अभी कितना कंगाल है, रावण राज्य है। कितना ऊंच नम्बरवन था, अभी लास्ट नम्बर है। लास्ट में न आये तो नम्बरवन में कैसे जाये। ये भी हिसाब है ना। अगर धीरज से विचार सागर मंथन करें तो सब बातें आपेही बुद्धि में आ जायेंगी।"

सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

"भारतवासी ही वैकुण्ठ स्वर्ग को याद करते हैं, और धर्म वाले वैकुण्ठ को याद नहीं करते।

वे सिर्फ शान्ति को याद करेंगें, सुख को याद कर न सकें। लॉ नहीं कहता कि वे स्वर्ग को याद करें। ... भारत ही पवित्र था, अब अपवित्र है, तो अपने को हिन्दू कहलाते हैं। हिन्दू धर्म तो कोई है नहीं।" सा.बाबा 12.7.04 रिवा.

"अपने को आत्मा याद नहीं कर सकते तो बाप को फिर कैसे याद करेंगे। ... मनुष्य गीता आदि भल पढ़ते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। भारत की है ही मुख्य गीता। हर एक धर्म का अपना-अपना एक धर्मशास्त्र है।" सा.बाबा 19.6.04 रिवा.

"जानना तो मनुष्यों को ही है, जानवर तो नहीं जानेंगे। मनुष्य ही बहुत ऊंच हैं, मनुष्य ही बहुत नीच हैं।... बाप है अविनाशी सर्जन, तो जरूर आयेंगे भी वहाँ, जो भूमि सदैव कायम रहती है। जिस धरती पर भगवान का पाँव लगा, वह धरनी कभी विनाश नहीं हो सकती। यह भारत तो रहता है ना देवताओं के लिए। सिर्फ चेन्ज होता है। बाकी भारत तो है सच खण्ड, झूठ खण्ड भी भारत ही बनता है। भारत का ही आलराउण्ड पार्ट है।"

सा.बाबा 18.5.04 रिवा.

"अभी तुम प्रैक्टिकल में बाबा के पास बैठे हो, जानते हो कि हम फिर से भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। जो बनाते हैं, वे ही फिर राज्य करेंगे।"

सा.बाबा 19.8.03 रिवा.

शुभ-भावना, शुभ-कामना का विधि-विधान और नियम-सिद्धान्त

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान न्यायपूर्ण हैं, इसमें आत्मा जो करती है, उसका उसको फल अवश्य प्राप्त होता है। विविधता और सतत परिवर्तनशीलता ही इसकी शोभा है, इसलिए सभी आत्माओं के पार्ट एक समान नहीं हो सकते अर्थात् हर आत्मा के पार्ट में विविधता अवश्य होगी - इस सत्य को जानकर हमारे मन में किसी के पार्ट को देखकर ईर्ष्या, घृणा, राग-द्वेष की भावना नहीं आनी चाहिए। हम दूसरों के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखेंगे तो उनकी हमारे प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना अवश्य होगी। शुभ-भावना, शुभ-कामना से किये गये कर्म का फल निश्चित ही शुभ होगा।

* इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का अविनाशी पार्ट है और उस अनुसार जो आत्मा जैसा कर्म करती है, वैसा ही उसका फल प्राप्त करती है। साथ ही ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, विविधता ही इसकी शोभा है, इसलिए सभी आत्माओं का पार्ट और प्राप्तियां एक जैसी नहीं हो सकती, सबमें विविधता अवश्य होगी, इसलिए यथार्थ ज्ञानी आत्मा में किसी की प्राप्तियों को

या पार्ट को देखकर उससे ईर्ष्या-घृणा, राग-द्वेष की भावना नहीं आती। उसकी हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रहती है।

* हमारी दूसरों के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना होगी तो उनकी हमारे प्रति अवश्य ही शुभ-भावना, शुभ-कामना होगी। इसलिए विश्व-नाटक के इस विधि-विधान को जानने वाले की कभी भी किसके प्रति दुर्भावना नहीं हो सकती।

"चाहे स्वयं का कारण या दूसरा कोई कारण बनता लेकिन पर-उपकारी आत्मा बन, रहमदिल आत्मा बन शुभ-भावना, शुभ-कामना के दिल वाले बन सहयोग दो, स्नेह लो। ... बापदादा इस वर्ष को श्रेष्ठ शुभ संकल्प, दृढ़ संकल्प, स्नेह-सहयोग के संकल्प का वर्ष देखना चाहते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.06

"जो बिना मांगे मिलता है, उसको अच्छा माना जाता है।...शुभ इच्छा स्वत: ही पूर्ण होती हैं।...सारे कल्प का श्रेष्ठ भाग्य अब मिल रहा है।"

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 5

विश्व-नाटक, शुभभावना-शुभकामना और न्याय प्रक्रिया का विधि-विधान

निराकार परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर, विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धानों का पूर्ण ज्ञाता, जानी-जाननहार, सर्वशक्तिवान है, इसलिए वही धर्मराज, न्यायकारी है। परमात्मा न्यारा और सर्व का प्यारा है, सर्व आत्माओं के प्रति उसका समान प्यार है, इसलिए वह विश्व-नाटक का साक्षी-दृष्टा, समदर्शी, निर्भय है, इसलिए वही यथार्थ न्याय करने में समर्थ है। उसके बाद सभी देहधारी आत्मायें नम्बरवार न्यायकारी हैं क्योंकि देहधारी आत्माओं के ज्ञान-गुण-शक्ति की सीमायें हैं, जिसके अन्दर ही वे न्याय करने में समर्थ होते हैं।

जो जैसा कर्म करेगा, उस अनुसार उस आत्मा को फल अवश्य मिलेगा - यह इस विश्व-नाटक का अटल सिद्धान्त है, जो स्वचालित है।

हर आत्मा के प्रति हमको शुभभावना-शुभकामना रखनी ही चाहिए परन्तु न्याय-प्रक्रिया का भी उलंघन न हो - इस सत्य का भी अवश्य ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए समर्थ व्यक्ति को न्याय-प्रक्रिया में समष्टि और व्यष्टि दोनों का ही ध्यान रखना चाहिए। इस सत्य को ही ध्यान में रखते हुए एक महापुरुष ने कहा है - परिवार के लिए व्यक्ति का, समाज

के लिए परिवार का, देश के लिए समाज का और विश्व के लिए देश का हित त्याग कर देना चाहिए। इस सत्य का पालन करने वाला ही सत्य न्याय कर सकता है।

"ऐसे विघ्न वा व्यर्थ संकल्प चलाने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रखते चलो। समय लगता है ... आखिर में जो स्व-परिवर्तन करता है, विजय की माला उसी के गले में पड़ती है। ... यह विघ्न रूप भी सोने का लगाव का धागा है, यह भी उड़ने नहीं देगा। ... अब स्वयं को इन महीन धागों से भी मुक्त करो।"

अ.बापदादा 31.1.98

"बापदादा के दिल की यही श्रेष्ठ आशा है कि बच्चे बाप समान बनें। ... लेकिन बाप के दिल की आश पूर्ण करने वाले कौन, जो बाप ने सुनाया, उसको कर्म में कहाँ तक लाया ? मन्सा-वाचा-कर्मणा ... मन्सा शक्ति का दर्पण क्या है ? बोल और कर्म दर्पण हैं। जिनकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है, उनकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली वा शुद्ध होगी, शुभ भावना वाली होगी।"

अ.बापदादा 31.3.88

"मोहब्बत से मेहनत करो। स्नेह ऐसी वस्तु है, जो स्नेह के वश ना वाला भी हाँ कर देता है। ... शुभ भावना फल सदैव श्रेष्ठ होता है।"

अ.बापदादा 30.12.85

"रशिया वालों का बापदादा ने समाचार सुना ... उमंग-उत्साह से प्रोग्राम बनाया है तो उमंग-उत्साह में सफलता समाई हुई है। ... सब सुन रहे हैं तो सभी की शुभ-भावना भी आपके इस प्रोग्राम के साथ है। मुबारक हो।"

अ.बापदादा 15.2.07

लव एण्ड लॉ का बैलेन्स

यथार्थ न्याय करने के लिए लव एण्ड लॉ का बैलेन्स परमावश्यक है। न्यायकारी प्रेम के सागर परमात्मा ने हमको विश्व-नाटक के सभी नियम-सिद्धान्तों और कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देकर उनके अनुसार चलने के लिए श्रीमत दी है और प्रेम स्वरूप बनकर सर्व आत्माओं के साथ प्रेम का व्यवहार भी करना सिखाया है। हर आत्मा अपने कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है फिर भी हमको किसी दुखी आत्मा को देखकर उससे मुख नहीं मोड़ लेना है परन्तु विधि-विधान और यज्ञ के नियम-संयम का पालन करते हुए स्नेह युक्त भावना से उसके दुख को दूर करने का पुरुषार्थ अवश्य करना है, उसको सुखी जीवन का रास्ता अवश्य बताना है।

* बाबा ने हमारे ऊपर रहम किया है, हमारा कर्तव्य है कि हम अपने अन्य भाईयों पर रहम करें, उनको सुख-शान्ति का रास्ता बतायें।

"मनुष्य बेचारे कुछ नहीं जानते हैं, इसलिए अपने को उन पर तरस पड़ता है। ... अविनाशी ज्ञान रत्न हैं तो फिर दान करना चाहिए। दान नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या ?"

सा.बाबा 23.08.03 रिवा.

"कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। ... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।"

अ. बापदादा 18.4.82

"बापदादा यही चाहते हैं कि वर्तमान समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखना पड़ता है लेकिन लॉ और लव का बैलेन्स मिलकर लॉ नहीं लगे। लॉ में भी लव महसूस हो। जैसे साकार स्वरूप में बाप को देखा। लॉ के साथ लव इतना दिया जो हरेक के मुख से यही निकलता कि बाबा का मेरे से प्यार है, मेरा बाबा है। लॉ जरूर उठाओ लेकिन लॉ के साथ लव भी दो।"

अ.बापदादा 08-10-2002

कर्मातीत स्थिति और कर्मातीत स्थिति का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

कर्मातीत स्थिति अर्थात् जिसका इस धरा पर कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का कोई हिसाब-किताब न हो अर्थात् देह के बनधन से मुक्त आत्मा। परमात्मा ने कर्मातीत बनने के लिए हम आत्माओं को श्रीमत दी है और कर्मातीत स्थिति का विधि-विधान भी बताया है, जिसके आधर पर हम अपनी स्थिति को चेक कर सकते हैं कि हम कितना कर्मातीत स्थिति के समीप पहुँचे हैं। इस सम्बन्ध में परमात्मा ने जो विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बताये हैं, उनमें से कुछ नियम-सिद्धान्त और विधि-विधानों का यहाँ वर्णन कर रहे हैं।

कोई भी पूर्ण कर्मातीत आत्मा इस धरा पर इस देह में रह नहीं सकती। वह इस देह में रहते कर्मातीत स्थिति का अनुभव ही कर सकती है और उस अनुभव को बढ़ाते हुए कर्मातीत स्थिति को पा सकती है। पूर्ण कर्मातीत स्थिति आत्मा की परमधाम में ही होती है। इसके सम्बन्ध में बाबा ने कहा है - कर्मातीत बनने के बाद एक सेकण्ड भी आत्मा इस देह में

नहीं रह सकती। निराकार परमात्मा ही एक ऐसी सत्ता हैं, जो पूर्ण कर्मातीत होते हुए भी इस धरा पर आकर पार्ट बजाते है क्योंकि उनको अपनी देह नहीं है।

* आत्मा जब परमधाम से आती है तो भी कर्मातीत होती है और जब जाती है तो भी कर्मातीत बनकर ही जाती है। इस धरा पर आते ही आत्मा के कर्म-सम्बन्ध के हिसाब-किताब आरम्भ हो जाते हैं, इसलिए उसको पूर्ण कर्मातीत नहीं कहा जा सकता है। परमधाम जाने के अन्तिम क्षण तक आत्मा को अपने हिसाब-किताब चुक्ता करने होते हैं, इसलिए उसको भी पूर्ण कर्मातीत नहीं कहा जा सकता।

* कर्मातीत आत्मा या कर्मातीत स्थिति के समीप पहुँची हुई आत्मा अपने संकल्पों को दूसरों तक सहज पहुँचा सकती है और दूसरों के संकल्पों को भी समझ सकती है। कर्मातीत आत्मा के लिए ही कहा गया है कि उसको अष्ट सिद्धियां और नौ निधियों की प्राप्ति होती है अर्थात् उसके लिए इस जगत में कोई वस्तु या स्थिति अप्राप्त नहीं होती है।

* जब आत्मा परमधाम से आती है तो उसके संकल्प बहुत कम होते हैं क्योंकि वह कर्मातीत स्थिति से नीचे आती है। ऐसे ही जब आत्मा कर्मातीत बनकर परमधाम जाने के निकट होती है तो भी उसके संकल्प-बोल बहुत कम हो जाते हैं। कर्मात्त स्थिति के निकट पहुँची हुई आत्मा को वाचा और कर्म दोनों ही नहीं भाते हैं अर्थात् अच्छे नहीं लगते है, शान्ति ही उसको खींचती है। सतयुग की आदि में जब आत्मायें परमधाम से आती हैं तो सभी कर्मातीत स्थिति से नीचे आती हैं, इसलिए उनके बहुत कम संकल्प होते हैं, इसलिए सतयुग में सर्वत्र शान्ति का वातावरण होता है। सतयुग आदि के बाद भी आत्मायें परमधाम से आती हैं परन्तु उस समय जो आत्मायें आती हैं, वे तो कर्मातीत स्थिति से आती है परन्तु पहले वाली आत्मायें नीचे आई हुई होती हैं, इसलिए वहाँ आत्माओं को शान्ति और अशान्ति दोनों ही होती है।

* पहले जब आत्मा परमधाम से आती हैं तो कर्मातीत स्थिति होती है और उसके बाद उनकी कर्मातीत स्थिति नीचे उतरती जाती हैं परन्तु कल्पान्त में परमधाम जाने के समय आत्माओं को पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना होता है, जो आत्माओं की चढ़ती कला होती है।

* कर्मातीत बनने के बाद कोई भी आत्मा इस कर्म-क्षेत्र पर इस देह में एक सेकेण्ड भी नहीं रह सकती। वह निराकारी वतन या सूक्ष्म वतन में ही रह सकती है।

* कर्मातीत आत्मा को कोई भी प्रकार की दुख-अशान्ति नहीं हो सकती है, वह इस जीवन में इस धरा पर ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेगी।

"जब तक कर्मभोग है - यह निशानी है कि कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। अब मेहनत करनी

है कि कोई भी माया के तूफान न आयें।" सा.बाबा 24.2.69 रिवा.

* जब आत्मा को अपने आत्मिक स्वरुप की, परमपिता परमात्मा की और अपने मूल घर की स्वभाविक आकर्षण हो, तब कर्मातीत अवस्था होगी।

"कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचने की निशानी जानते हो ? समीपता की निशानी "समानता" है। किस बात में ? आवाज़ में आना व आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना...इस सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है - कर्मातीत अवस्था की समीपता।"

अ.बापदादा 1.9.75

"तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्दियां धोखा न दें। कर्मातीत अवस्था हो जाये।...तुमको पूरा पुरुषार्थ करना है।"

सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

"अगर ज्ञान की धारणा हो तो वह नशा सदा चढ़ा रहे। नशा कोई को बहुत मुश्किल चढ़ा रहता है। मित्र सम्बन्धी आदि सब तरफ से याद निकालकर एक बेहद की खुशी में ठहर जायें, यह है बड़ी कमाल। हाँ, यह भी अन्त में होगा, पिछाड़ी में सब कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं।" सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत। क्या ऐसी स्टेज रहती है ? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो, इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।" अ.बापदादा 3.2.74

"स्टडी पूरी तब होगी, जब विनाश के लिए सामग्री तैयार होगी। फिर समझ जायेंगे कि आग जरूर लगेगी। ... पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। इस समय किसकी कर्मातीत अवस्था होना असम्भव है। कर्मातीत अवस्था हो जाये फिर तो यह शरीर भी न रहे।"

सा.बाबा 29.6.05 रिवा.

"इस समय तुम हॉफ कास्ट हो। शूद्र से ब्राह्मण बन रहे हो। पूरा पवित्र, कर्मातीत पिछाड़ी में बनेंगे। पिछाड़ी में बुद्धियोग पूरा जम जायेगा और सब विकर्म भस्म हो जायेंगे। फिर भी यहाँ तुमको पावन नहीं कहेंगे क्योंकि शरीर तो पतित है।"

सा.बाबा 6.2.07 रिवा.

"अवस्था ऐसी होनी चाहिए, जो अन्त में कोई भी याद न आये, तब अन्त मति सो गति होगी, कर्मातीत अवस्था के समीप जा सकेंगे। सदा हर्षित भी तब रह सकेंगे, जब दूसरों की सेवा करेंगे।" सा.बाबा 1.2.07 रिवा.

"यह भी अभ्यास करता होगा। फिर कोई बच्चे आकर कहते है - बाबा गुडमॉर्निंग। तो इनको नीचे उतर गुडमॉर्निंग करना पड़े, आवाज़ में आना पड़े। यह तो पुरुषार्थ करते रहते हैं वाणी से परे होने का क्योंकि इससे ही पाप कटेंगे।... जिसका बहुत अच्छा पुरुषार्थ होगा, वही कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे। बहुत मेहनत करने से पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है।"

सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

"अपने को बाहर के ख्यालातों से हटाकर बाप को याद करना है, फिर गुडमॉर्निंग करने का भी आवाज़ नहीं निकलेगा। लाचारी आवाज़ में आयेंगे फिर चढ़ जायेंगे। ... ऐसे अगर बच्चे अभ्यास करेंगे तो कल्याण होता जायेगा।"

सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

"मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ, वह बहुत जन्मों के अन्त वाला जन्म है। वह भी पुरुषार्थ कर रहे हैं। अभी कर्मातीत अवस्था में कोई पहुँच नहीं सकते। कर्मातीत अवस्था आ जाये तो फिर यह शरीर रह नहीं सकता।"

सा.बाबा 25.4.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज। साहूकार लोग कभी सरेण्डर होकर कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे। बाप तो बड़ा जबरदस्त सर्राफ है। गरीब का ही लेंगे।... इसमें सबकुछ भूलना पड़ता है। कुछ भी पास न रहे, तब कर्मातीत अवस्था हो। साहूकार लोग तो भूल नहीं सकेंगे। कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया है, वे ही लेंगे।"

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"तुम बच्चों को बाप को याद करने में थोड़ी मुश्किलात होती है, इनको सहज है। फिर भी इनको भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है। ... यह जितना नजदीक है, उतना फिर इनके ऊपर बोझा भी बहुत है। ... ख्याल तो चलता है ना। बच्चियों पर कितनी मार पड़ती है तो जैसे दुख होता है। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी में होगी, तब तक ख्याल होता है।"

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

"अभी तुम हो संगमयुग पर। यह भी कोई नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। ... बाप श्रीमत देते हैं - बच्चे, मुझे याद करो। यह है बाप का बड़ा फरमान। पूरा निश्चय हो तब तो बाप के फरमान पर चलें ना। ... देवताओं की विकारी दृष्टि कभी हो नहीं सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही प्यार करेंगे, डाँस करेंगे। वहाँ प्यार करेंगे परन्तु विकार की बांस नहीं होगी।... देह की तरफ बिल्कुल दृष्टि न रहे। वह कर्मातीत अवस्था अभी बनानी है। अभी तक ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं।... जिनको पूरा निश्चय नहीं, वे पूरा पढ़ भी न सकें। पवित्र बन न सकें।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

जन्म-मृत्यु का नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान

ये सृष्टि एक रंगमंच है, जहाँ आत्माओं और प्रकृति का अनादि-अविनाशी खेल चलता है। आत्मायें परमधाम से आकर प्रकृतिकृत देह रूपी वस्त्रों को धारण कर भिन्न पार्ट बजाती हैं, जिस वस्त्र बदलने की प्रक्रिया को जन्म-मृत्यु की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार हम देखें तो मृत्यु आत्मा के लिए एक वरदान है, जिसके कारण आत्मा पुराना वस्त्र उतार कर नया धारण करती है परन्तु देहाभिमान के कारण वह वरदान के बजाये अभिषाप बन गया है क्योंकि हर प्राणी मृत्यु से भयभीत है। इस देहाभिमान रूपी अभिषाप के कारण ही आत्मा मृत्यु-दुख को अनुभव करती है और उस से भयभीत रहती है। इसीलिए जन्म-मृत्यु के लिए गायन है - जनमत-मरत दुसह दुख होई। परन्तु जन्म-मृत्यु के सम्बन्ध में यह युक्ति सतयुग-त्रेता में चरित्रार्थ नहीं होती है क्योंकि वहाँ आत्मायें आत्माभिमानी होती है, उनके कोई विकर्म नहीं होते हैं, इसलिए उनको जन्म और मृत्यु के समय कोई दुख की अनुभूति नहीं होती है, वे स्वेच्छा से समय पर देह का त्याग करते हैं।

सुखद जन्म और सुखद मृत्यु के लिए परमात्मा पिता जो विधि-विधान बताया है, उसको जानना और धारण करना अति आवश्यक है। अब प्रश्न उठता है कि सुखद मृत्य क्या है, कैसी है अर्थात् सुखद मृत्य किसको कहें? उसका विधि-विधान क्या है? उदाहरणार्थ महात्मा गांधी की, इन्द्रा गान्धी की, दीदी मनमोहिनी की, ब्रह्मा बाबा की अथवा उन सन्यासियों की, जिनके विषय में बाबा ने कहा कि अच्छे सन्यासी बैठे-बैठे देह का त्याग कर देते हैं और उनके देह त्याग से चारो ओर सन्नाटा हो जाता है। इनमें किसकी मृत्यु को अच्छा कहें और उसके लिए क्या पुरुषार्थ है? देवी-देवताओं के जन्म-मृत्यु का क्या विधि-विधान था, जिससे वे इस दुख से मुक्त थे।

आत्मिक स्वरूप को जानकर, उसमें स्थित होकर परमात्मा की याद और परमधाम की याद में देह से न्यारा हो जाना और फिर देह में न आना ही सबसे अच्छी मृत्यु है परन्तु अन्त समय ऐसी अवस्था हो, उसके लिए अभी से गहन पुरुषार्थ की आवश्यकता है अर्थात् देह से न्यारा होने का अभी से दृढ़ अभ्यास करने वाले ही अन्त में इस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त समय आत्मा ध्यान में चली जाये और शरीर छूट जाये, वह भी अच्छी मृत्यु है। विनाश के समय ऐसा हो सकता है कि आत्मायें ध्यान में चली जायें और उसके बाद उनके शरीर का विनाश हो जाये।

जन्म-मरण सदा न्यारे परमात्मा ने अभी जो आत्मिक ज्ञान दिया है और इस विश्व-नाटक का राज़ समझाया है, उसको समझकर व्यक्ति और वस्तुओं से नष्टोमोहा तथा देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप को देखने और स्थित होने का जो अभ्यास करा रहे हैं, वह ही हमको इस जीवन के अन्तिम समय देह के त्याग में सहयोगी बनेगा और भविष्य सतयुग-त्रेता में जन्म-मृत्यु के दुख से भी मुक्त रखेगा अर्थात् जीवन में अमृत्व को प्रदान करेगा।

जब आत्मायें परमधाम में चली जाती हैं तो साकार दुनिया में निर्मित देह और यहाँ का पार्ट आत्मा को परमधाम से नीचे खींच कर लाती है। इस साकार दुनिया में पुरानी देह से पार्ट की समाप्ति और नये देह से नये पार्ट का आदि आत्मा को मृत्यु और जन्म के लिये खींचता है और आत्मा उसके लिए चाहते, न चाहते बाध्य हो जाती है।

Q. जीवन क्या है और क्यों है?

जीवन एक हार-जीत का खेल है, जो परम आनन्दमय है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इसे खेलती और देखती है, वह इसके परम आनन्द को अनुभव करती है परन्तु ड्रामा के पार्ट, कर्मों के हिसाब-किताब के कारण कई आत्मायें चाहते हुए भी इसे अनुभव नहीं कर पाती हैं। आत्मा को इस सत्य को भी कभी भूलना नहीं चाहिए कि - ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। पुरुषार्थ की विजय अवश्य होती है, इसलिए पुरुषार्थ को कभी छोड़ना नहीं चाहिए।

"बाप समझाते हैं - यह नाटक है हार-जीत का, हेल-हेविन का। भारत पर ही यह सारा खेल बना हुआ है। यह बना-बनाया ड्रामा है। ऐसे नहीं कि परमपिता सर्वशक्तिवान है तो खेल पूरा होने के पहले ही आयेगा या आधे में खेल को बन्द कर सकता है। ... इस बेहद के ड्रामा में हर एक आत्मा का पार्ट नूँधा हुआ है, जो रिपीट होता है। इस बेहद के ड्रामा से ही कोई टुकड़ा निकाल हद का ड्रामा बनाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

* स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

मृत्यु-दुख महान दुख है, जिससे सभी प्राणी भयभीत हैं। मृत्यु-शैय्या पर लेटा हुआ व्यक्ति भी शरीर को छोड़ना नहीं चाहता है। सतयुग-त्रेतायुग में देवतायें स्वेच्छा से शरीर छोड़ते हैं परन्तु अभी संगमयुग पर हमारी ये स्थिति हो, उसके लिये अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है? जब इस सत्य का ज्ञान होगा और उसके अनुरूप अभीष्ठ पुरुषार्थ होगा तब ही हम समय पर स्वेच्छा से सुखमय स्थिति में देह का त्याग कर सकेंगे। हमको मृत्यु-दुख न भोगना पड़े, इसलिए इसके नियम-संयम और पुरुषार्थ को जानना और जानकर उसका अभ्यास करना आवश्यक है।

आत्मा, देह से अलग है, उसको उस रूप में देखने और अनुभव करने का पुरुषार्थ ही इसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ है।

"बच्चों की बुद्धि में खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह तो समझाया है कि सतयुग में आत्मा का ज्ञान है, सो भी जब बूढ़े होते हैं तब अनायास ख्याल आता है कि यह पुराना शरीर छोड़, फिर दूसरा नया शरीर लेना है। यह ख्यालात भी पिछाड़ी के टाइम में आता है, बाकी सारा टाइम खुशी-मौज में रहते हैं। पहले यह ज्ञान नहीं रहता है।"

सा.बाबा 18.10.03 रिवा.

"देवताओं की आयु बहुत बड़ी होती है, तो साक्षात्कार होता है - अभी यह शरीर छोड़कर जाकर बच्चा बनना है। तो यह अन्दर में आना चाहिए - हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ जाकर गर्भ में निवास करेंगी। अन्त मते सो गते। बूढ़े से तो हम क्यों न बच्चा बन जाऊं। आत्मा जब इस शरीर के साथ है, इस शरीर में मोह है, तब तकलीफ महसूस करती है।"

सा.बाबा 21.10.03 रिवा.

जैसे अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में आते हैं, मुरली चलाते हैं, बच्चों से मिलते हैं और चले जाते हैं। कर्तव्य करते हैं परन्तु किससे मोह नहीं है। नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप साक्षी स्थिति स्वेच्छा से देह त्याग के लिए मूलभूत आधार है। इस स्थिति में स्थित रहने का लम्बे समय से और गहन रूप का अभ्यास हो। सेकेण्ड में देह में आने और सेकेण्ड में देह से न्यारे होने का सतत अभ्यास हो। तब ही अन्त समय में स्वेच्छा से देह का त्याग करके मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकते हैं।

मृत्यु-दुख महान दुख है। देहाभिमान मृत्यु-दुख का मूल कारण है। आत्मिक स्वरूप के दृढ़ अभ्यास से देहाभिमान को समाप्त कर देही-अभिमानी होने से ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जीवन एक खेल है और मृत्य-जन्म इसमें एक वस्त्र बदलना है। इस सत्य को जानकर इस देह से पार्ट बजाते हुए भी, इससे नष्टोमोहा रहने पुरुषार्थ कर इस दुख से मुक्त हो सकते हैं।

"इस समय हर एक पर विकर्मों का बोझा बहुत भारी है। अभी सुकर्म थोड़े होते हैं, बाकी विकर्म तो जन्म-जन्मान्तर के बहुत हैं। कितना ज्ञान और योग में रहते हैं तो भी इतने विकर्म हैं, जो छूटते ही नहीं हैं। जब कर्मातीत बन जायेंगे फिर तो तुमको नया जन्म नई दुनिया में मिलेगा। अगर कुछ विकर्म रहे हुए होंगे तो पुरानी दुनिया में ही दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।"

सा.बाबा 10.1.07 रिवा.

"सतयुग में शरीर क्या वैल्यू होगी। आत्मा चली गई, शरीर चण्डाल के हाथ दे दिया, वह रस्म-रिवाज के अनुसार जला देंगे। ... यहाँ तो कितना करते हैं। ब्राह्मण खिलाते हैं, यह

करते हैं। वहाँ यह कुछ होता नहीं।" सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

"इस शरीर को भी खुशी से छोड़ना है, दुख की बात नहीं। पुरुषार्थ के लिए टाइम तो मिला है। ... बाप का बनकर अगर ग्लानि करते हैं तो बहुत बोझा चढ़ता है।"

सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

"तुम्हारे में कुछ भी मांगने की तमन्ना नहीं होनी चाहिए।... अभी तुम बच्चों की उपराम अवस्था रहनी चहिए। कोई भी छी-छी चीज में ममत्व नहीं रहना चाहिए। अपने शरीर में भी ममत्व न रहे, इतना योगी बनना है। ... तुम जितना सतोप्रधान बनते जायेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ता जायेगा। ... यहाँ जितनी खुशी रहेगी, फिर यही खुशी साथ में ले जायेंगे। अन्त मती सो गति कहा जाता है ना। यह बहुत विचार सागर मंथन करना होता है।"

सा.बाबा 30.7.04 रिवा.

ईश्वरीय पढ़ाई और परीक्षा का विधि-विधान

बाबा आकर मनुष्य से देवता बनाने के लिए पढ़ाते हैं और इस पढ़ाई का विधि-विधान भी बताते हैं। पढ़ाई के जो विधि-विधान परमात्मा बताते हैं, उनमें से कुछ लौकिक पढ़ाई में भी लागू होते हैं और कुछ विशेष हैं, जो ईश्वरीय पढ़ाई से ही सम्बन्ध रखते हैं।

पढ़ाई में क्लास आगे बढ़ने के लिए पढ़ाई की परीक्षा अवश्य होती है अर्थात् परीक्षा ही आगे बढ़ने का साधन है। बाबा ने बताया है कि इस पढ़ाई में जो विघ्न आते हैं, वे विघ्न नहीं लेकिन परीक्षा के पेपर हैं, जिनको खुशी से पास करने वाले बहुत आगे बढ़ते हैं।

पढ़ाई अच्छी तरह पढ़ने वाले परीक्षा या पेपर से घबराते नहीं हैं लेकिन वे प्रतीक्षा करते हैं कि परीक्षा हो और हम आगे क्लास में जायें।

हम जब से ज्ञान में आते हैं, तब से ही हर घड़ी जो पेपर आते हैं और हम जैसे उनको पास करते हैं, उस अनुसार हमारे फाइनल परीक्षा में मार्क्स बनते हैं अर्थात् सबके मार्क्स फाइनल में जमा होते हैं। इसलिए हम हर घड़ी परीक्षा हॉल में हैं, ऐसा समझकर आने वाले पेपर को पास करना है।

पढ़ने वालों को अपनी पढ़ाई और पढ़ाने वाले की याद स्वभाविक रहती है, जिसके आधार पर ही वे पढ़ाई में आगे बढ़ते हैं।

ये ईश्वरीय पढ़ाई भी गुप्त है, पढ़ाने वाला भी गुप्त है, पढ़ने वाले वाले भी गुप्त हैं और इसके पेपर भी गुप्त हैं अर्थात् सूक्ष्म हैं।

बाबा किसी को स्पेशल नहीं पढ़ाता है अर्थात् सबको समान रूप से पढ़ाता है परन्तु पढ़ने वाले अपने पुरुषार्थ के आधार पर नम्बरवार बन जाते हैं।

इस पढ़ाई का फल हमको इस जीवन में तो मिलता ही है लेकिन भविष्य 21 जन्म तक मिलता है।

"बापदादा सभी बच्चों से यही श्रेष्ठ आशा रखते हैं कि सभी बच्चे सहज पुरुषार्थी सदा रहें।... विघ्न-विनाशक के आगे विघ्न न आये तो विघ्न-विनाशक का टाइटिल कैसे गाया जायेगा। ... समस्या या विघ्न ऐसे पार हो जाये जैसे माखन से बाल निकल गया।"

अ.बापदादा 24.2.98

"अभी अगर आप सभी को अचानक डायरेक्शन मिले कि अभी-अभी अशरीरी बन जाओ तो बन सकते हो या हलचल होगी ? क्योंकि यही अभ्यास लास्ट समय पास विद् ऑनर बनायेगा। तो अभी बापदादा कहते हैं - एक सेकण्ड में सब बातों को किनारे कर अशरीरी भव।"

अ.बापदादा 30.3.98

"आप और बाप इन दो शब्दों में सारी पढ़ाई, ड्रामा, कल्प वृक्ष की सारी नॉलेज समाई हुई है। ... इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है। ... फिर सत्गुरु द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है, जिससे सदा के लिए सब क्वेश्चन समाप्त हो जाते हैं और सब क्वेश्चन का जबाब - फॉलो फादर के रूप में मिल जाता है।"

अ.बापदादा 30.3.98

आध्यात्मिक प्रश्नावली और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

ज्ञान सागर बाबा ने हमको आध्यात्मिकता का सारा ज्ञान दिया है, इसलिए ज्ञान के सभी राज़ हमारी बुद्धि में स्पष्ट होंगे, तो ही हम ज्ञान का यथार्थ सुख अनुभव कर सकेंगे। इस लक्ष्य से कुछ प्रश्न और उनके विषय में सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। किसी का विचार उससे भिन्न भी हो सकता है परन्तु सत्य तो सदा ही सत्य ही होता है, जो सबके लिए समान होता है परन्तु उसको ग्रहण करने की क्षमता हर आत्मा की अपनी-अपनी है और सबमें भिन्नता है, जिसके कारण ही इस विश्व-नाटक में भिन्नता है। ये भिन्नता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है।

एक प्रश्न होता है संशय से और एक प्रश्न होता है, किसी रहस्य को जानने के दृष्टिकोण से। जो संशय से प्रश्न उठता है, वह पतन की ओर ले जाता है और जो जानने के उद्देश्य से प्रश्न उठता है या करता है, वह उत्थान का आधार बनता है। जानने के उद्देश्य से प्रश्न उठना अच्छा है। यदि कोई बात समझते नहीं हैं और पूछेंगे भी नहीं तो वह अन्धश्रृद्धा हो जाती है और वह धोखा दे सकती है। यहाँ कुछ विचारणीय प्रश्न लिखे गये हैं, जिनके विषय में जानना आवश्यक है। ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक के विषय में अथाह ज्ञान दिया है और अनेक राज़ों और नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान हम आत्माओं के कल्याणार्थ दिया है, जब तक वे सभी राज़ हमारी बुद्धि में न बैठें और उनका अनुभव न हो तब तक मन में प्रश्न उठना स्वभाविक है क्योंकि उनको जानना और अनुभव करना अति आवश्यक है। परमात्मा ने हमको उनका ज्ञान इसलिए ही दिया है कि उनको जानने और अनुभव करने से हमारी अवस्था अच्छी होती है और सेवा के लिए भी उनका जानना आवश्यक है। जब किसी बात के विषय में प्रश्न उठता है तब ही उसको जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है और उसके लिए पुरुषार्थ होता है।

Q. देहाभिमान का बीज क्या है ?

स्वमान की अनुभूति भी किसकी तुलना में ही होती है। जब हम कहते - हम त्रिकालदर्शी हैं तो ये सिद्ध करता है कि कोई त्रिकालदर्शी नहीं हैं, उनकी भेंट में हम त्रिकालदर्शी हैं।

सतयुग में जब अपने यथार्थ स्वरूप के ज्ञान की विस्मृति हो जाती है तो देहभान आता है और देहाभान ही देहाभिमान का कारण बनता है अर्थात् देह-भान ही समयान्तर में देहाभिमान का रूप धारण कर लेता है अर्थात् देहाभिमान का बीज देहभान ही है। अभी स्वमान को जाग्रत करना आत्मा का स्वधर्म है। जहाँ अहंकार-हीनता दोनों ही नहीं हैं वही यथार्थ स्वमान है।

सतयुग में जो देहभान है, वही देहाभिमान का बीज है। सतयुग में देह-भान के आधार

पर स्त्री-पुरुष शादी करते हैं, द्वापर के आदि में जब आत्मिक शक्ति क्षीण हो जाती तो देहभान ही देहाभिमान का रूप ले लेता है और वह देहाभिमान काम विकार तथा अन्य विकारों का निमित्त बनता है।

Q. क्या हम अपनी यथार्थ स्थिति में पहुँच गये हैं अर्थात् यथार्थ स्थिति में स्थित हैं?

अव्यक्त बापदादा हमको मुरली के अन्त और मुरली के बीच-बीच में जो ड्रिल कराकर अनुभव कराते हैं, वही हमारी यथार्थ स्थिति है। वह स्थिति हमारी कहाँ तक है और कहाँ तक उसमें स्थित रहते हैं, उस पर हमको विचार करें तो सहज ही हम इस प्रश्न का उत्तर समझ सकते है और हम कहाँ तक पहुँचे हैं, अपनी उस यथार्थ स्थिति को समझ सकते हैं और उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ कर सकते हैं।

Q. योगबल और भोगबल से जन्म का स्वरूप क्या है? जैसे बाबा ने पपीता, मोर, मुख के प्यार का उदाहरण दिया, वह है या वर्तमान स्वरूप का ही कोई सतोप्रधान स्वरूप होगा?

"सतयुग में विष से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को निर्विकारी कह न सकें।"

सा. बाबा 22.1.72 रिवा.

"बाबा ने कहा देवी-देवताओं के पैर इस तमोप्रधान सृष्टि पर नहीं पड़ सकते।"

सा.बाबा 24.8.2000 रिवा.

(तो वह बार्डर लाइन क्या है, जहाँ देवी-देवताओं के पैर पड़ते और जहाँ नहीं पड़ते हैं?)

Q. सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होती है, इसका अर्थ क्या है?

Q. मनुष्यात्माओं और अन्य योनियों की आत्माओं में क्या अन्तर है? क्या वे भी मन-बुद्धि-संस्कार सहित हैं? यदि वे आत्मायें हैं तो वे आत्मायें भी परमधाम में जायेंगी या नहीं?

Q. क्या त्रेता के बाद नेचुरल केलेमिटीज होंगी? यदि होंगी तो उनका स्वरूप क्या होगा, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव होगा? क्योंकि वहाँ कोई विकर्म तो किया नहीं, तो मनुष्य को दुख कैसे हो सकता है?

Q. दैवी सभ्यता द्वापर से भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण विलीन होगी या 25 सौ वर्षों में प्रकृति और काल-चक्र के अनादि नियमानुसार सभ्यता और साधनों में स्वत: परिवर्तन होगा, जिससे पुरानी सभ्यता और साधन परिवर्तन हो जायेंगे?

समय के आधार पर भी साधन और सम्पत्ति के रूप में परिवर्तन होगा और नौ लाख से जब 33 करोड़ मनुष्य हो जायेंगे तो साधन और सम्पत्ति में प्रति व्यक्ति कमी भी अवश्य होगी,

जिससे भी साधनों के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य होगा।

"सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वर्ण में आये। रावण राज्य होने से सब विकार में गिर पड़े, भक्ति शुरू हो गई। बड़े-बड़े सोने, हीरे-जवाहरों के महल अर्थक्वेक में अन्दर चले गये। भारत विकारी बनने से ही अर्थक्वेक हुई। फिर रावणराज्य हो गया। पवित्र से अपवित्र बन पड़े। कहते भी हैं सोने की लंका अन्दर चली गई।"

सा.बाबा 22.3.71 रिवा.

Q. क्या आत्मा को परमधाम में संकल्प उठ सकता है? क्या परमात्मा को परमधाम में संकल्प उठता है?

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है और वहाँ से ही कोई कार्य कर सकता है?

Q. क्या परमात्मा किसको अधिक देता है और किसको कम? या उसका भण्डारा समान रूप से सबके लिए खुला रहता है, जो जितना चाहे उतना ले ले?

Q. ड्रामा हू ब हू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होता है या केवल मानव पार्ट ही रिपीट होता है?

Q. क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक की रचना कब की है? अथवा क्या ये कब रचा गया है? यदि हाँ, तो कब और कैसे?

Q. क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ, तो कैसे और यदि नहीं, तो क्यों? ड्रामा बीते पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर समान रीति से लागू होता है? क्या पुरुषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे? यदि नहीं तो जीवन में पुरुषार्थ का क्या महत्व है?

Q. क्या ये नाटक सुख-दुख का है? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे?

वास्तव में नाटक तो आनन्दमय है परन्तु उसमें सुख-दुख दोंनों का पार्ट है। जब आत्मायें आत्माभिमानी स्थिति में स्थित होती हैं, तो सुख का अनुभव करती हैं और जब देहाभिमान में आकर विकर्मों में प्रवृत्त होती हैं तो दुख का अनुभव करती हैं।

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण? यदि ऐसा है तो क्यों और कैसे?

नाटक में सभी एक्टर्स का पार्ट एक जैसा हो नहीं सकता, इसलिए पार्ट में विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। जो आत्मायें यथार्थ ज्ञान के साथ साक्षी होकर इसे देखती हैं, उनके

लिए VIP या साधारण का प्रश्न नहीं उठता है क्योंकि सभी आत्मायें एक परमात्मा के बच्चे हैं, ये तो VIP या साधारण तो पार्ट मात्र है, जो हर एक को अविनाशी मिला हुआ है। ये विश्व नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है।

Q. यदि किसी आत्मा को विशेष पार्ट (हीरो पार्ट) मिला है और किसी को साधारण या निकृष्ट- यह इस विश्व नाटक में पक्षपात है, गलत है या इसमें कोई न्यायपूर्ण समानता है ?

नाटक में कोई पक्षपात नहीं है क्योंकि इसमें हर आत्मा के साथ पूर्ण न्याय है। हर आत्मा अपने पार्ट और पार्ट के समय के अनुसार आधा समय सुखमय और आधा समय दुखमय पार्ट बजाती है।

Q. क्या ये फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है ? यदि अभी हो रही है तो कैसे ? यदि पहले से शूट हुई है तो हमारा क्या कर्तव्य है ?वास्तव में नाटक तो अनादि-अविनाशी है, इसलिए नयी शूटिंग का कोई प्रश्न ही नहीं परन्तु भूतकाल और भविष्य का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण नित्य नया प्रतीत होता है अर्थात् जो अभी हम करते हैं, वह भूतकाल का पुनरावृत्त होता है और भविष्य के शूट होता जाता है।

Q. इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है ? यह भूलना अच्छा है या खराब ?

पीछे का भूलना इस विश्व-नाटक की विशेष विशेषता है, जो यथार्थ पार्ट बजाने के लिए अति आवश्यक है। पिछला भूल जाने के कारण ही आत्मा वर्तमान में अपना यथार्थ पार्ट बजा पाती है और विश्व-नाटक में कोई व्यविधान नहीं होता है। भूलने के कई रास्ते हैं, जिनमें मुख्य हैं - समय, निद्रा, मृत्यु, योग, परमधाम में जाना। इसके साथ ही कुछ कृत्रिम साधन हैं जिनमें नशा, इन्जेक्शन, करेण्ट आदि।

Q. इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ? यदि नहीं तो क्यों ? ये नाटक हर क्षण नया लगता है, क्यों ?

नहीं अर्थात कल्प पहले जो हुआ, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है परन्तु ये सतत परिवर्तनशील है अर्थात् हर क्षण परिवर्तन होता है। परिवर्तन ही इसकी शोभा है, जो यह नित्य नया अनुभव होता है।

Q. ब्रह्मलोक है क्या ?

ब्रह्मलोक आत्माओं के रहने का स्थान है। जब तक जिन आत्माओं का इस विश्व-नाटक में पार्ट नहीं होता, तब तक वे परमधाम में विश्राम पाती हैं।

Q. क्या ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन भूमण्डल या आकाश तत्व के चारो ओर है या भूमण्डल के ऊपर एक ओर ही है?

ब्रह्म तत्व और सूक्ष्म वतन भूमण्डल के चारो ओर है। भूमण्डल आकाश तत्व से आवृत है, आकश तत्व सूक्ष्मलोक से आवृत है और सूक्ष्म लोक ब्रह्मलोक से आवृत है।

"आकाश बहुत सूक्ष्म तत्व है। अच्छा उनसे भी ऊपर देवता (B.V.S. सूक्ष्म देवतायें) रहते हैं। वह भी पोलार है। आकाश में बैठे हैं। फिर उनसे भी ऊपर और आकाश (ब्रह्म तत्व) है, उसमें भी आत्माओं के बैठने की जगह है। वह भी आकाश है, जिसको ब्रह्म तत्व कहते हैं। यह तीन तत्व हैं - स्थूल, सूक्ष्म और मूल।"

सा.बाबा 19.12.02 रिवा.

Q. क्या आत्मायें ब्रह्माण्ड के एक भाग में ही रहती हैं या सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं?

Q. बाबा ने कहा है कि परमधाम में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्र में दिखाया है और फिर बाबा ने कहा कि जैसे आकाश में तारे हैं, ऐसे ही परमधाम में आत्मायें रहती हैं। अब विचार करना है कि आत्मायें ब्रह्माण्ड में किसी एक कोने में रहती हैं या सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं?

जैसे आकाश में तारे रहते हैं, ऐसे आत्मायें समस्त ब्रह्माण्ड में रहती हैं और समस्त ब्रह्माण्ड में रहते भी उनका सम्बन्ध परमात्मा से अवश्य रहता है, जैसे तारे आकाश में कहाँ भी स्थित हैं परनतु सभी का सम्बन्ध सूर्य के साथ रहता ही है।

"आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ वानप्रस्थ में। तुम मुझे पुकारते हो। ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।"

सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

Q. मूलवतन में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्रों में दिखाया है या ये समझाने के लिए है नक्शेमात्र है, इसमें कोई परिवर्तन होगा?

तीन लोकों के चित्र में जो निराकारी झाड़ दिखाया गया है, वह प्रतीकात्मक है और समझने और समझाने के लिए नक्शे मात्र है। वास्तविकता अलग है। क्या ब्रह्मा, विष्णु, शंक्र की अलग-अलग आत्मायें हैं, क्या आत्मायें ब्रह्मलोक के एक भाग में ही रहती हैं - ये सब विचारणीय तथ्य हैं परन्तु इनमें उलझना नहीं है।

Q. ब्रह्मा विष्णु शंकर की तीन आत्मायें ब्रह्मलोक में है? यथार्थ क्या है?

बाबा ने कहा है - ब्रह्मा ही विष्णु बनता है और शंकर कोई नहीं, यह तो परमात्मा के तीन कर्तव्य समझाने के लिए दिखाया गया है क्योंकि दुनिया में भी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को मानते

हैं। जब ब्रह्मा ही विष्णु बनते हैं और शंकर कोई है नहीं तो निराकारी दुनिया में तीन आत्मायें कैसे हो सकती हैं।

Q. सूक्ष्म वतन में सभी के सूक्ष्म शरीर हैं या केवल एक ब्रह्मा बाबा का ही है ?

Q. क्या सभी आत्मायें सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्म वतन में जायेंगी ?

सभी आत्माओं को परमधाम जाते समय सूक्ष्म शरीर के साथ ही सूक्ष्म वतन से पार करना होगा, इसलिए सबका सूक्ष्म शरीर होता है। किसका एक सेकेण्ड के लिए होता है और किसका बहुत समय तक सूक्ष्म वतन में रहता है और कार्य करता है - जैसे ब्रह्मा बाबा।

Q. क्या सूक्ष्म शरीर से किये गये कर्मों का प्रभाव भी आत्मा पर पड़ता है और उसकी शक्ति में कोई परिवर्तन होता है ?

सूक्ष्म शरीर या स्थूल शरीर दोनों से किये गये कर्मों का फल आत्मा को मिलता ही है अर्थात् उनका प्रभाव आत्मा पर होता ही है। इस प्रभाव के कारण ही ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त होने के बाद जो रूप सन्देशियां वतन में देखती थी और अब जो देखती हैं, उन दोनों में अन्तर है। अभी पहले से अधिक तेजस्वी रूप देखने में आता है।

Q. क्या सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में सूक्ष्मवतन होगा ? यदि हाँ तो उसका स्वरूप क्या होगा और यदि नहीं तो क्यों ?

कोई भी क्षेत्र (Range) समाप्त नहीं होता है, इसलिए सूक्ष्मवतन तो होगा परन्तु वहां आज जैसे क्रिया-कलाप नहीं होंगे और न ही आत्माओं को परमधाम से आते समय सूक्ष्म शरीर होंगे।

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता या विनाश की प्रेरणा देता है ?

नहीं, विनाश प्रकृति के नियमानुसार स्वत: होता है, उसके लिए परमात्मा या शंकर कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

Q. सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की कितनी गद्दियाँ चलेंगी ? त्रेता में राम-सीता की कितनी गद्दियाँ चलेंगी ?

Q. सतयुग में 8 जन्म और 8 ही गद्दियाँ होंगी या अधिक ?

सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की आठ और त्रेता में राम-सीता की बारह गद्दियां समानान्तर होंगी।

Q. सतयुग के प्रथम जन्म की आयु और सतयुग के अन्त के जन्म की आयु में अन्तर होगा या नहीं, यदि होगा तो क्या अन्तर होगा ?

Q. क्या वहाँ जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही होगी या अन्तर होगा?

Q. 8 गद्दियों का गायन है, तो वे समानान्तर (Hotizontal) होंगी या एक के बाद दूसरी (Vertical)?

"सूर्यवंशी में आठ गद्दियाँ चलती हैं, फिर चन्द्रवंशी में 12 चलती हैं। डिनायस्टी होती है ना।... बाप फिर से वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी, वन गवर्मेन्ट, वन राज्य स्थापन करते हैं।"

सा.बाबा 21.07.03 रिवा.

Q. सूर्यवंशी की आठ और चन्द्रवंशी की 12 गद्दियों का अर्थ क्या है और वे कैसे चलती हैं?

जन्म	शादी एवं राजतिलक	बच्चे का जन्म	वानप्रस्थ	देह-त्याग	राज का समय	गद्दियां
आदि	30-40	60-70	90-100	160-175	60-70	21-18
मध्य	25-35	55-65	80-90	140-150	55-65	23-19
अन्त	25-30	45-50	75-85	125-135	50-55	25-23
औसत आयु		142-153 साल				23-20
अर्थात् लगभग		150 साल				21

विचारणीय है कि अगर राजतिलक देर से दिखायेंगे और बच्चे का जन्म देर से दिखायेंगे तो गद्दियों की संख्या कम होगी और जल्दी दिखाने से गद्दियों की संख्या बढ़ जायेगी - इस आधार पर ही ऊपर 23-20 की संख्या लिखी गई है।

आयु सतयुग आदि में 175 साल और सतयुग के अन्त में 125 साल

औसत 175+125 = 300 / 2 = 150 साल

ऐसे ही त्रेतायुग की 12 गद्दियों की गणना होगी, जिसके अनुसार त्रेता में एक राम-सीता की 30-31गद्दियां चलेंगी और एक राजा औसतन 40-42 वर्ष तक राज करेगा।

अर्थात् एक राजा के राज का समय औसतन 41 वर्ष होगा और गद्दियां 31 होंगी

त्रेता के आदि में 125 साल और त्रेता के अन्त में 75 साल

औसत 125 + 75 = 200 / 2 = 100 साल

"16108 की माला बहुत बड़ी है। त्रेता के अन्त तक 16108 प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हैं। कुछ तो निशानी है ना। ... यह बिल्कुल राइट है। त्रेता के अन्त तक इतने प्रिन्स-प्रिन्सेज होते हैं।

शुरू में तो नहीं होंगे। पहले थोड़े होंगे, फिर वृद्धि को पाते जाते हैं।"

सा.बाबा 4.4.03 रिवा.

Q. अष्ट रत्न, 8 युगल हैं या 8 आत्मायें अर्थात् 4 युगल हैं?

4 युगल अर्थात् आठ आत्मायें ही अष्ट रत्न में गिनी जायेंगी।

"उन्हों का मान बहुत है। हमेशा नौ रत्न गाये जाते हैं, आठ नहीं। चार की जोड़ी हो जाती है, बाकी है एक बीच में बाप।" सा.बाबा 20.06.03 रिवा.

Q. क्या त्रेता में भी सतयुग के समान 8 गद्दियां (राजाई) ही चलेंगी या गद्दियों की संख्या में वृद्धि होगी अर्थात् 12 हो जायेंगी?

त्रेता में समानान्तर गद्दियों की संख्या बढ़कर 12 हो जायेगी और उनकी क्रमश: 30-31 गद्दियां चलेंगी।

Q. सतयुग-त्रेता दोनों युगों में कितने चक्रवर्ती और दूसरे राज़ायें गद्दी पर बैठेंगे?

सतयुग में 20-21 चक्रवर्ती महाराजायें और कुल महाराजायें 165-170 होंगे तथा त्रेता में 30-31 चक्रवर्ती राजायें और कुल राजायें 360-372 के लगभग होंगे।

Q. क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई अन्तर है?

विश्व-नाटक का विधि-विधान और कर्म-सिद्धान्त सबके ऊपर समान रूप से प्रभावित होता है।

Q. क्या कोई आत्मा, किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और कितना?

नहीं अर्थात् हर आत्थमा अपने सुख-दुख का कारण स्वयं है, दूसरे तो कर्म के हिसाब-किताब के आधार पर निमित्त कारण बनते हैं।

Q. क्या सतयुग में जानवरों का दूध पियेंगे? यदि पियेंगे तो क्यों अर्थात् सतयुग में जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी? यदि पियेंगे तो क्या स्वाद के लिए पियेंगे या स्वास्थ्य लाभ के लिए?

जब सतयुग में सभी स्वस्थ होंगे, तो जानवर के दूध पीने की आवश्यकता क्यों? क्योंकि जो जिसका दूध पीता है तो उसके संस्कार-स्वभाव, गुण-धर्मों का प्रभाव पीने वाले के ऊपर अवश्य पड़ता है। तो क्या जानवरों का दूध पीने से उनके संस्कारों का प्रभाव मनुष्यों पर नहीं होगा?

नहीं, हर स्तनपान करने वाले बच्चे की माता के पास दूध उसके लिए ही होता है। सतयुग में

सभी स्वस्थ होंगे, स्वास के वशीभूत नहीं होंगे, स्वास्थ्य-वर्धक प्रकृतिकृत खाद्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे, इसलिए किसी दूसरे बच्चे की माता का दूध पीने की आवश्यकता ही नहीं होगी। प्रकृति के नियमानुसार किसी भी प्राणी के दूध का प्रभाव पीने वाले के गुण-धर्मों और संस्कारों पर अवश्य होता है।

Q. जब अकाले मृत्यु होती है तो क्या वे सभी आत्मायें भटकती हैं?

वास्तव में अकाले मृत्यु नाम की कोई मृत्यु नहीं है क्योंकि हर आत्मा ड्रामा के समय अनुसार ही देह का त्याग करती है। किसी दुर्घटना आदि में होने वाली मृत्यु, जिसको मनुष्य अकाले मृत्यु समझते हैं, वह अकाले मृत्यु तो है नहीं क्योंकि वह तो विश्व-नाटक में देह का त्याग का पूर्व-निश्चित विधि-विधान है, जो हर एक आत्मा का अलग-अलग है। वास्तव में अकाले मृत्यु इसलिए कहा जाता है कि कलियुग में मां-बाप के सामने बच्चे की मृत्यु, बड़े भाई के सामने छोटे भाई की मृत्यु, बचपन में ही मृत्यु का हो जाती है, जो सतयुग में नहीं होगी। सभी दुर्घटना में मरने वाली आत्मायें भटकती नहीं हैं, यह तो कुछ आत्माओं का भटकने पार्ट है, जिसमें प्राय: वे आत्मायें होती हैं, जिनकी हत्या की जाती है और उनमें मरने के समय बदला लेने की भावना रहती है।

Q. देवतायें जरा-मृत्यु से मुक्त होते हैं, मृत्यु उनके लिए वस्त्र बदलना होता है - तो मृत्यु या वस्त्र बदलने का निर्णायक बिन्दु क्या होता है, जब ये समझा जाये कि अभी हमको शरीर रूपी वस्त्र छोड़कर नया लेना है अर्थात् उसका निर्णय कैसे होता है?

जब आत्मा एक स्थान और शरीर के साथ पार्ट पूरा हो जाता है, उस समय उससे स्वत: ही बुद्धियोग हट जाता है और सतयुग में तो सब नष्टोमोहा होते हैं अर्थात् जाने वाला भी नष्टोमोहा और सम्बन्ध वाले भी नष्टोमोहा होते हैं, इसलिए कोई किसी को खींचता नहीं है। जब आत्मा का दूसरे स्थान, शरीर और सम्बन्धों के साथ पार्ट का समय होता है, वह उसको खींचता है और आत्मा सहज ही शरीर छोड़ देती है। आत्मिक शक्ति होने के कारण आभास भी हो जाता है परन्तु कहाँ जाना है, यह पता नहीं चलता है और इसकी आवश्यकता भी नहीं होती है।

"अपने को अशरीरी समझने का अभ्यास करना है क्योंकि बहुत समय से अपने को अशरीरी नहीं समझा है। सतयुग में यह ज्ञान पूरा रहता है कि मैं आत्मा हूँ, मुझे यह पुराना शरीर छोड़कर नया लेना है। साक्षात्कार भी हो जाता है, चाहे परोक्ष या अपरोक्ष। समझते हैं - अभी शरीर की आयु पूरी हुई है। जैसे कोई मरने पर होता है तो कहते हैं - हमको ऐसा लगता है कि अब मैं मरूँगा, रह नहीं सकूँगा। वहाँ फिर समझते हैं अब यह शरीर बड़ा हो गया है, अब

इसको छोड़ना है। अपने टाइम पर खुशी से छोड़ देते हैं। आत्मा का ज्ञान पूरा रहता है, बाप का ज्ञान बिल्कुल नहीं है।"

सा.बाबा 26.08.03 रिवा.

Q. क्या द्वापर-कलियुग में भी कोई की अकाले मृत्यु होती है? यदि हाँ तो अकाले मृत्यु क्या है और कैसे? क्योंकि ड्रामा हू ब हू पुनरावृत्त होता है तो अकाले मृत्यु क्या है?

वास्तव विश्व-नाटक में निश्चित समय से पहले कोई भी आत्मा शरीर नहीं छोड़ती, इसलिए ड्रामा के दृष्टिकोण से कोई अकाले मृत्यु नहीं है परन्तु अकाले मृत्यु इसलिए कहा जाता है कि कलियुग में मां-बाप के सामने बच्चे की मृत्यु, बड़े भाई के सामने छोटे भाई की मृत्यु, बचपन में ही मृत्यु का हो जाती है।

Q. संगमयुग का समय कब से कब तक है अर्थात् कितना है?

संगमयुग का समय परमात्मा के अवतरण से लेकर लक्ष्मी-नारायण के राजसिंहासन पर बैठने के समय तक माना जायेगा।

Q. सतयुग में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन होगा या वस्तु-विनिमय की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्र प्रथा होगी?

हमारे दृष्टिकोण से सतयुग में वस्तु-विनिमय की ही प्रथा होगी, मुद्रा का प्रचलन बाद में होगा।

Q. क्या परमात्मा परमधाम में रहकर कोई कार्य कर सकता है या करता है?

नहीं क्योंकि परमधाम में कोई संकल्प भी नहीं हो सकता तो कार्य कैसे हो सकता है। संकल्प और कार्य स्थूल या सूक्ष्म देह में प्रवेश होने के बाद ही होता है, जो परमात्मा संगमयुग पर आकर करते हैं।

Q. क्या बिना शरीर के आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है?

नहीं, शक्ति तब रेडियेट होती है, जब संकल्प उठता है।

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, वहाँ कौन सा तत्व है, जिसके आधार पर सूक्ष्मवतन का अस्तित्व है?

वास्तव में सूक्ष्मवतन का कोई अलग तत्व नहीं है। सूक्ष्मवतन तो आकाश तत्व और ब्रह्म तत्व का संगम है, जो दोनों तत्व के समिश्रण से बनता है।

"यहाँ आकर 5 तत्वों का शरीर लिया है। सूक्ष्मवतन में 5 तत्व होते नहीं हैं। 5 तत्व यहाँ होते हैं, जहाँ तुम पार्ट बजाते हो। हमारा असली देश वहाँ है।"

सा.बाबा 14.12.02 रिवा.

Q. क्या परमधाम ऊपर है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो कैसे?

वास्तव में परमधाम पृथ्वी के ऊपर नहीं है और न ही कोई ऐसी स्थिति है, जो ये सिद्ध करे कि कोई चीज ऊपर है या नीचे है। ऊपर और नीचे का निर्णय जीवात्मा अपने सिर और पैर के डायरेक्शन से करता है। जैसे पृथ्वी आकाश तत्व से आवृत है, ऐसे ही आकाश तत्व भी ब्रह्म महतत्व या परमधाम से आवृत है अर्थात् उसके चारो ओर है। पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण मनुष्य के पैर पृथ्वी पर होते हैं और सिर ब्रह्म महतत्व की तरफ होता है, इसलिए वह ब्रह्म महतत्व को ऊपर समझता है अर्थात् ब्रह्म महतत्व को ऊपर कहा जाता है।

"बाप कहते हैं - मैं संगम पर आकर राज़योग सिखाता हूँ। जो पास होते हैं, वे सूर्यवंशी बनते हैं और जो फेल होते हैं, वे चन्द्रवंशी बनते हैं। सूर्यवंशी की प्रजा सूर्यवंशी होगी और चन्द्रवंशी की प्रजा चन्द्रवंशी होगी।" सा.बाबा 23.12.02 रिवा.

Q. किस बात में फेल होंगे, जो चन्द्रवंशी बनते हैं?

मुख्य बात है काम विकार की। जहाँ काम विकार है, वहाँ और भी विकार आ ही जाते हैं।

Q. सतयुगी देवी-देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे? क्योंकि सतयुग में देह में आने से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं, कलायें कम हो गई तो सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे?

बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि सम्पूर्ण पवित्र तो श्रीकृष्ण को ही कहेंगे और उसके लिए भी कहा है जिस समय जन्म लेते हैं, उस समय से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं परन्तु उनको पतित नहीं कहेंगे क्योंकि पतित तब बनते हैं, जब विकारों के वशीभूत होकर विकर्म करते हैं।

"तुमसे कोई पूछेंगे कि तुम सम्पूर्ण पावन हो? तो क्या कहेंगे? भल पवित्र तो हैं परन्तु कायदे अनुसार जब तक यह शरीर है तो तुमको सम्पूर्ण पावन नहीं कह सकते। ... सम्पूर्ण पावन बन जायें फिर तो खेल ही खलास हो जाये, फिर यह शरीर छोड़ना पड़े। यह किसको समझाना बड़ा गुह्य ज्ञान है। यहाँ किसको सम्पूर्ण कह न सकें क्योंकि हम खुद कहते हैं कि यह व्यक्त है, वह अव्यक्त है। सम्पूर्ण अव्यक्त अन्त में बनेंगे, फिर यह शरीर नहीं रहेगा। यह सम्पूर्ण बन गये फिर ज्ञान भी पूरा हो जाता है।"

सा.बाबा 8.03.03 रिवा.

Q. आत्मा के पावन बनने और खाता जमा करने में कोई अन्तर है या एक ही बात है?

दोनों में कुछ अन्तर भी है और कुछ समानता भी है। योग से आत्मा पावन बनती है, आत्मिक शक्ति का खाता संचित होता है, जो सर्व आत्माओं का होता है क्योंकि आत्मा पावन बनने के बाद ही परमधाम में जाती है। खाता जमा करने में मन-मन-धन तीनों की बात है, जो जितना

तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा के कार्य में सफल करता है, वह उतना ही उसका फल नई दुनिया में पाता है।

Q. क्या अभी के पुरुषार्थ का फल भविष्य में ही मिलेगा या अभी भी प्राप्ति है। यदि अभी भी है तो वह क्या है?

अभी जो योग तपस्या करते हैं, तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में सफल करते हैं, उसका फल नई दुनिया में और सारे कल्प में तो मिलता ही है लेकिन अभी प्रत्यक्ष फल के रूप में अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द और खुशी मिलती है, जो भविष्य के फल से भी अति श्रेष्ठ है।

Q. सन्यासियों और देवताओं की पवित्रता में क्या अन्तर है, जिससे देवताओं के मन्दिर बनते, सन्यासियों के नहीं?

मन्दिर उनके बनते हैं, जिनकी आत्मा और देह दोनों पवित्र होते हैं, जो देवी-देवताओं के ही होते हैं। सन्यासियों की आत्मायें जब परमधाम से आती हैं तो आत्मा तो पवित्र होती है परन्तु उनको देह विकार से ही मिलती है, इसलिए उनके मन्दिर नहीं बनते हैं। उनकी केवल महिमा होती है।

Q. क्या परमपिता परमात्मा का स्वरूप परिवर्तन होता है, कभी प्यार का सागर हो, कभी न हो, कभी धर्मराज़ के रूप में हो ...? उसका रूप परिवर्तन होता है या हमको अपनी भावना और कर्मों अनुसार अनुभव होता है?

परमात्मा का कब रूप परिवर्तन नहीं होता है क्योंकि वह सर्व ज्ञान, गुणों और शक्तियों का सागर है तथा विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है। हर आत्मा अपनी बुद्धि के अनुसार उनका अनुभव करती है।

Q. जीवन किस लिए है? इन्द्रिय सुखों के भोग के लिए या ईश्वरीय सेवा के लिए?

वर्तमान ब्राह्मण जीवन ईश्वरीय सेवा के लिए ही है, इन्द्रिय सुखों के लिए नहीं। बाबा के महावाक्य हैं - अंशमात्र का इन्द्रियों का आकर्षण, दैहिक दृष्टि यथार्थ सुख का अनुभव करने नहीं देगा, दर्शनीयमूर्त बनने नहीं देगा।

Q. बाबा ने कहा है - जो स्थापना करते हैं, वे ही पालना करते हैं तो सतयुग की स्थापना कौन करता है अर्थात् ब्रह्माबाबा या शिवबाबा या दोनों?

परमात्मा शिवबाबा पतित-पावन है, वह आकर सर्व आत्माओं को पावन बनाता है, उसके लिए ज्ञान देता है और ब्रह्मा बाबा शिवबाबा की श्रीमत पर अपना तन-मन-धन सब ईश्वरीय सेवा में

सफल करता है, दैवी गुणों और ईश्वरीय गुणों का स्वरूप बनकर सेवा करता है, जिससे सतयुग की स्थापना होती है। वास्तव में परमात्मा परमपिता है और ब्रह्मा बाबा देवी-देवता धर्म का धर्मपिता है परन्तु दोनों के सहयोग से नई दुनिया की कलम का अर्थात् पुरानी का विनाश और नई की स्थापना का कार्य सम्पन्न होता है।

"जो स्थापना करते हैं, फिर पालना भी वे ही करेंगे। स्थापना के समय का नाम, रूप, देश, काल अलग है और पालना का नाम, रूप, देश, काल अलग है। ... यह तो एक बाप का ही काम है, जो इस सारी सृष्टि को हेल से हेविन बनाते हैं। ... जब सभी का अन्त होता है, तब मैं आता हूँ, सभी को ज्ञान से पार ले जाता हूँ। मैं आकर इन बच्चों के द्वारा कार्य कराता हूँ। बाप सबको साथ ले जाते हैं।" सा.बाबा 31.5.04 रिवा.

पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना के ये दोनों रहस्य इस मुरली में स्पष्ट किये हैं।

Q. Concentration - दृष्टि, शब्द,.. और योग में क्या अन्तर है? दोनों में क्या समानतायें हैं और क्या अन्तर हैं? दोनों के क्या लाभ हैं?

भक्ति मार्ग और हठयोग में जो शब्द एकाग्रता, दृष्टि एकाग्रता, त्राटक आदि करते हैं, उससे आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति मन्द होती है परन्तु आत्मिक शक्ति का विकास नहीं होता है। आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध, उनकी मधुर याद को योग कहा जाता है, जिस योग के द्वारा आत्मिक शक्ति का विकास होता है। हठयोग और भक्ति मार्ग में मन-बुद्धि को किसी स्थूल चीज पर सकाग्र करते हैं परन्तु योग में मन-बुद्धि को परमात्मा के स्वरूप और उनकी ज्ञान-गुण-शक्तियों पर एकाग्र करते हैं। परन्तु यह याद रहे कि राजयोग में भी मन-बुद्धि शिव परमात्मा के किसी चित्र पर एकाग्र नहीं करते हैं। यदि ऐसा करते हैं तो वह भी हठयोग है और उससे भी चढ़ती कला नहीं होगी।

Q. क्या पावन या कर्मातीत आत्मा को दूसरी आत्माओं के सुख-दुख की फीलिग होगी?

नहीं, क्योंकि कर्मातीत आत्मा सुख-दुख दोनों से न्यारी हो जाती है। कर्मातीत आत्मा साक्षी होकर इस सारे खेल को देखती है परन्तु जो आत्मायें साकार में पुरुषार्थ कर अव्यक्त बनती हैं, उनको दुखी आत्माओं पर विशेष रहम आता है, जिससे उसके सभी कर्म आत्माओं के कल्याणार्थ स्वत: ही होते हैं।

Q. भक्ति मार्ग में मरने के बाद शरीर की जो रस्म-रिवाज, क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह किसको फॉलो करते हैं?

ये संगमयुग ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भक्ति मार्ग में जो भी क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह इस संगमयुग पर ब्राह्मणों को ही फॉलो करते हैं।

Q. देवी-देवता धर्म की स्थापना कौन करता है अर्थात् शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा? दोनों के कर्तव्य में क्या अन्तर अर्थात् कौन क्या करता है?

शिवबाबा ने कहा है, जो स्थापना करता है, उसे पालना भी करनी होती है। शिवबाबा सतयुग में आकर देवी-देवता धर्म की पालना तो करता नहीं है, इसलिए शिवबाबा की श्रीमत पर ब्रह्मा बाबा ही देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं और ब्रह्मा बाबा ही सतयुग में नारायण के रूप में देवी-देवता धर्म की पालना करते हैं। शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वह आकर सर्व आत्माओं को ज्ञान देकर पावन बनाकर परमधाम ले जाते हैं, इसलिए उनको पतित पावन कहा जाता है। ज्ञान देकर राह दिखाना शिवबाबा का काम है, उसको जीवन में धारण कर कर्म करना ब्रह्मा बाबा का काम है। इस सम्बन्ध में नीचे लिखे महावाक्य विचारणीय हैं।

"यह है सबका बाप, सर्व का पतित-पावन। सिर्फ मनुष्यों का नहीं, 5 तत्वों का भी है। सर्व की सद्गति करने वाला है ऊंचे ते ऊंचा बाप। सृष्टि में महिमा करने लायक एक बाप ही है, दूसरा न कोई। ... धर्म स्थापकों की क्या महिमा है। धर्म स्थापक तो अपने धर्म वालों को नीचे ले आने के निमित्त बनते हैं।... जो धर्म स्थापन करते हैं, उनको फिर पालना जरूर करनी है।"

सा.बाबा 14.2.07 रिवा.

"जो स्थापना करेंगे, वे ही पालना करेंगे। जैसे क्राइस्ट ने क्रिश्चियन धर्म की स्थापना की, फिर पालना के लिए पोप भी उनको बनना पड़े। वापस तो कोई भी जा न सके।"

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

Q. यह अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, फिर पुरुषार्थ का क्या महत्व है?

यद्यपि ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु इसमें कर्म और फल का विधि-विधान नूँधा हुआ है, इसलिए फल के लिए कर्म करना अति आवश्यक है और कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती। वास्तविक पुरुषार्थ है अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने का। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, उससे समय अनुसार पुरुषार्थ भी अवश्य होता है और वह इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखते हुए परमानन्द का अनुभव करती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है।

दूसरी बात ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है, हर क्षण इसमें परिवर्तन होता है। सतत

परिवर्तन ही इसकी शोभा है। आत्मा को इस परिवर्तन का ज्ञान नहीं है, इसलिए उस परिवर्तन के लिए पुरुषार्थ आवश्यक है और आत्मा पुरुषार्थ के बिना एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकता।

Q. परमात्मा ने कहा है - संकल्प करते ही एक सेकेण्ड में अपने बिन्दु रूप में स्थित हो जाओ, कारण न बताओ निवारण करो, समस्या न बताओ समाधान स्वरूप बनो आदि आदि - अब इन सबका हल क्या है, कैसे यह स्थिति बने ?

आत्मिक स्वरूप इन बातों से मुक्त है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, उसके सामने पहले तो समस्या आयेगी ही नहीं और यदि आ भी जायेगी तो वह उससे प्रभावित नहीं होगा, घबरायेगा नहीं। उसके सभी कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होंगे, इसलिए उसको कोई कारण बताने की आवश्यकता ही नहीं होगी। इसलिए इन सबका हल अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का। आत्मिक स्वरूप है ही बिन्दुरूप, उसमें उसमें स्थित होने के लिए समय की कोई बात ही नहीं।

यदि हमारे प्रति किसी आत्मा का व्यवहार खराब है, हमारे सामने कोई समस्या आई है तो वह हमारी कमजोरी के कारण आई और वह कमजोरी का मूल कारण है देहाभिमान। यदि हम विश्व-नाटक के विधि-विधान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें तो हमारे प्रति किसी का व्यवहार खराब हो नहीं सकता, हमारे सामने कोई समस्या आ नहीं सकती क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व शक्तियों से सम्पन्न, इन सब बातों से मुक्त है। यदि किसी का व्यवहार खराब होता है, कोई समस्या आती है तो आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा उसे परीक्षा समझकर सहज पार कर लेगा। कर्मभोग भी उसको दुख की अनुभूति नहीं करायेगा।

Q. 15.2.07 की अव्यक्त वाणी में बाबा ने दृढ़ता, एकाग्रता और एकॉनामी की बात कही है तो सहज एकाग्रता कैसे हो ?

जब हम एकाग्रता का महत्व अनुभव करेंगे और विश्व-नाटक के विधि-विधान को जानेंगे, आत्मा और देह के सम्बन्ध को यथार्थ रीति अनुभव करेंगे तो हम अपने आत्मिक स्वरूप में सहज स्थित रहेंगे। आत्मिक स्वरूप सर्व शक्तियों से सम्पन्न है, उसमें स्थित आत्मा जिस समय जैसे चाहे, वैसे अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र कर सकती है। जहाँ एकाग्रता होती है अर्थात् आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो उसके जीवन में समय, संकल्प आदि सब बातों में एकॉनामी स्वत: होती है।

Q. सतयुग-त्रेता में परमात्मा का वर्सा क्यों कहा जाता है ?

परमात्मा अभी संगमयुग पर जो ज्ञान देते हैं और योग सिखाते हैं, जिसके आधार पर हम

आत्मिक शक्ति जमा करते हैं और सतयुग की स्थापना होती है, इसलिए वहाँ की प्राप्ति अभी संगमयुग के पुरुषार्थ के आधार पर मिलती है, इसलिए उसको परमात्मा का वर्सा कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में कर्म और फल का विधि-विधान चलता है।

Q. क्या किसी दुर्घटना, जैसे किसी हिंसक जीव द्वारा किसको घायल कर देना या मार देना आदि को सुनकर या देखकर हमको भयभीत होकर अपने यथार्थ पुरुषार्थ या पथ से विचलित होना चाहिए?

वास्तविकता को विचार करें तो हमको अपने अभीष्ट पथ अहिंसा से विचलित नहीं होना चाहिए और अपने सिद्धान्त पर अटल रहना चाहिए। हमको हर बात के सही (Possitive) पक्ष को विचार करना चाहिए। 1. योग और शुभ भावना, शुभ कामना का प्रभाव जड़, जंगम और चेतन पर अवश्य पड़ता है, 2. हमारा शुभ कर्म का खाता संचित है तो कोई भी हमको दुख नहीं दे सकता है, 3. ड्रामा के ज्ञान को भी विचार करें तो हमको कोई हिंसक वृत्ति या संकल्प को करने की आवश्यकता नहीं है।

अब एक ही बात रहती है कि हम भी हिंसक वृत्ति को धारण कर अपनी सुरक्षा का विचार करें या न करें, और अगर करें तो उसके लिए अस्त्र-शस्त्र को धारण करें परन्तु अनेक बातों को देखें तो वह भी कारगर नहीं होती है क्योंकि समय पर आत्मा शुभ कर्मों का संचित खाता और यथार्थ बुद्धि ही काम करती है अर्थात् अस्त्र-शस्त्र होते भी काम में नहीं आते हैं।

Q. साधन-सम्पत्ति का विधि-विधान क्या है?

साधन-सम्पत्ति का उसी सीमा तक और उन्हीं साधन-सम्पत्ति का मनुष्य को उपभोग और उपयोग करने का अधिकार है, जब तक उसकी कार्य क्षमता बढ़ती रहे। उसके अतिरिक्त जो हम उपयोग और उपभोग करते हैं, उससे मनुष्य की कार्य क्षमता घटती है, जो आत्मा के ऊपर एक प्रकार का दण्ड है। जिसको अर्थशास्त्र में उपयोगिता ह्रास नियम से भी जाना जाता है।

Q. बाबा के निम्नलिखित महावाक्यों के अनुसार विचारणीय है - कृष्ण को उनके मां-बाप गद्दी पर बिठायेंगे या उनके साथ पैदा होने वाली पावन आत्मायें उनको गद्दी पर बिठायेंगे?

"कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है, उनके बाप का नाम ही नहीं। ... वह पतित राजा होने के कारण उनका नाम थोड़ेही होगा। कृष्ण जब जन्म लेता तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वे बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठता है। तब से ही उनका संवत शुरू होता है।"

सा.बाबा 9.8.06 रिवा.

Q. परमात्मा न्यायकारी, समदर्शी है, विश्व-नाटक सत्य-न्यायपूर्ण-कल्याणकारी है फिर इसमें कोई राजा, कोई गरीब प्रजा, कोई दास-दासी बनता है तो इसमें क्या तर्क-संगत न्यायपूर्णता है?

इस विश्व-नाटक में महत्व ऊंचे-नीचे पार्ट का नहीं है, महत्व इसका है कि कोई भी आत्मा किस स्थिति में अपने पार्ट को सफलतापूर्वक बजाती है। जो आत्मा इस विश्व-नाटक की यथार्थता को, इसके विधि-विधान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अपना पार्ट बजाती है, वह इसके परमानन्द को अवश्य अनुभव करती है और करेगी। ये अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द ही संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है, परमात्मा का वर्सा है, जिसका सर्व आत्माओं को समान अधिकार है अर्थात् उसमें राजा-प्रजा, दास-दासी आदि का कोई बन्धन नहीं है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर विश्व-नाटक की ये अनुभूति अर्थात् परमात्मा का वर्सा एक गरीब प्रजा वाला कर सकता है, परन्तु उसके जैसा अनुभव एक राजा नहीं कर सकता है यदि वह अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित नहीं है।

Q. हमारे दुख का निमित्त कौन? ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को विचार करके निश्चित करो कि दुख का कारण कौन? क्या ड्रामा या ड्रामानुसार हमारा अपना ही कर्म?

ये विश्व-नाटक सुख-दुख का एक खेल है, जिसमें कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है। हर आत्मा को सुख-दुख उसके अपने ही कर्मों के फल स्वरूप मिलता है और कर्म ड्रामानुसार होता है।

तृतीय अध्याय (III Chapter)

धर्मराज, धर्मराजपुरी और धर्मराजपुरी के विधि-विधान

जैसे दुनिया में पाप-कर्म की सजा के लिए विधि-विधान हैं, वैसे इस विश्व-नाटक में भी विकर्मों की सजाओं के अटल विधि-विधान हैं, जिनके अनुसार हर आत्मा को अपने विकर्मों का फल स्वत: ही मिलता है परन्तु वे अदृश्य हैं। परमात्मा किसी का कोई हिसाब रखता नहीं है लेकिन हर आत्मा का सेकेण्ड बाई सेकेण्ड का कर्म और उसका फल नूँधा हुआ है और नूँध होता रहता है। समय पर परमात्मा, प्रकृति और आत्मायें हर आत्मा के कर्म के गवाह बनते हैं अर्थात् समय पर उनका साक्षात्कार होता है और उसके अनुसार उसको सजा मिलती है। धर्मराज, धर्मराज पुरी और धर्मराजपुरी के इन विधि-विधानों का आत्मा को ज्ञान होना अति आवश्यक है।

धर्मराज और धर्मराजपुरी का यह भी विधान है कि किसी भी आत्मा को कोई भी सजा मिलने से पहले उसको अपने कर्म का साक्षात्कार अवश्य होता है, जिससे कोई यह नहीं कहे कि उसको अकारण ही दण्ड मिल रहा है। धर्मराज के रूप में भी परमात्मा का साक्षात्कार ब्रह्मा बाबा के साथ ही होता है। आत्मा को सजा भी सूक्ष्म शरीर के साथ ही मिलती है, उस सजा का अनुभव भी इस साकार शरीर के साथ अन्त में होता है क्योंकि बिना शरीर के सजा का अनुभव नहीं हो सकता।

वास्तव में न धर्मराज का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है और न धर्मराजपुरी अलग से कोई स्थान है। परमात्मा को न्यायकारी कहा जाता है, इसलिए परमात्मा ये न्यायकारी का कर्तव्य ही धर्मराज के रूप में गाया जाता है। परमात्मा अभी जो प्यार का सागर है, बाप के रूप में प्यार दे रहा है और पालना कर रहा है, हमारी भूलों को क्षमा भी करता है परन्तु जब वह न्यायकारी स्थिति में स्थित होता है, उस समय किसके लिए कोई छूट नहीं होती है अर्थात् कोई क्षमा आदि नहीं करता है। बाबा ने तो इस सत्य का भी ज्ञान दिया है कि परमात्मा भी किसका हिसाब-किताब नहीं रखता है और न ही वह किसको दण्ड आदि देता है। यह ड्रामा में अनादि-अविनाशी नियम बना हुआ है, जिसके अनुसार हर आत्मा को कल्पान्त में अपने सभी कर्मों का हिसाब-किताव चुक्ता करना ही पड़ता है। अन्त समय परमात्मा ने या निमित्त आत्माओं ने जो समझाया है, वह सब याद आता है और उसका पश्चाताप होता है।

"चलते-फिरते भी विचार-सागर मन्थन करते रहना है। ... योग नहीं होगा तो एकदम गिर

पड़ेंगे। ... कई बच्चे डिससर्विस कर अपने को श्रापित करते हैं। ... भूल का पश्चाताप करते हैं। फिर भी पश्चाताप से कोई माफ नहीं हो सकता है।"

सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

"इस जन्म में कोई पाप कर्म तो नहीं किये हैं? ... इस जन्म के पाप बाप को बता दो तो हल्के हो जायेंगे, नहीं तो दिल अन्दर खाता रहेगा। ... हमारा बच्चा बनकर फिर भूल करने से सौगुणा वृद्धि हो जाती है।" (सौगुणा दण्ड पड़ जाता है)

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

"बहुतों को बहुत खराब ख्यालात आते हैं, फिर इनकी सजा भी बहुत कड़ी है। ... अवस्था गिर जाती है। अवस्था का गिरना ही सजा है।"

सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

"बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सजायें भी खानी पड़े। अगर अपने को सम्भालेंगे नहीं तो बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, उनके पास बेहद का हिसाब-किताब रहता है।"

सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

"अभी थोड़े समय में धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे।... फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प की भूल से एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है।"

अ.बापदादा 22.10.70

"ज़रा भी सम्पूर्ण आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और उतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता। ... सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय कल्प पहले भी हुई थी और अभी भी हुई पड़ी है।"

अ.बापदादा 25.1.70

"मैं निराकार रूप में तो कुछ देख नहीं सकता हूँ। आरगन्स बिगर आत्मा कुछ भी कर न सके।... यह तो अन्धश्रृद्धा है, जो कहते हैं ईश्वर सब कुछ देखता है। ... अच्छा या बुरा काम हर एक ड्रामा अनुसार करते हैं। मैं थोड़ेही बैठ इतने करोड़ों मनुष्यों का हिसाब रखूँगा। मुझे शरीर है तब सब कुछ करता हूँ। करन-करावनहार भी तब कहते हैं, जब शरीर में आते हैं। नहीं तो कह न सकें।... पार्ट बिगर कोई कुछ कर न सके। शरीर बिगर आत्मा कुछ कर नहीं सकती।"

सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है। हर आत्मा का कर्म और फल का विधि-विधान ड्रामा में नूंधा हुआ है, जिस अनुसार आत्मा कर्म भी करती है और उसका फल भी पाती है। बाबा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता और साक्षी-दृष्टा है, वही आकर इसका ज्ञान देता

है। कर्म और उसका फल ड्रामा अनुसार चलता है, उसके लिए परमात्मा की आवश्यकता नहीं है। सृष्टि के नियमानुसार समय पर कर्म का अच्छा या बुरा फल मिलना ही धर्मराज का स्वरूप है, जो विधि-विधान कल्प के आदि से अन्त तक चलता रहता है क्योंकि धर्मराज माना सुप्रीम जज अर्थात् मुख्य न्यायाधीश। कल्प के अन्त में सारे कल्प का संचित हिसाब-किताब चुक्ता होता है और अन्त में बुरा दुखदाई हिसाब-किताब अधिक होता है, इसलिए उसको धर्मराज के नाम से जाना जाता है। बाबा ने भी धर्मराज का नाम लिया है क्योंकि उस समय अनेक प्रकार के साक्षात्कार आदि भी होते हैं।

ब्राह्मण जीवन में कर्मों का फल कई गुणा बढ़ जाता है, जो विधि-विधान अच्छे पर भी प्रभावित होता है तो बुरे कर्मों पर भी प्रभावित होता है क्योंकि ब्राह्मण जीवन में परमात्मा से सब प्रकार का ज्ञान मिलता है। ब्राह्मण जीवन परम सुखमय जीवन है, उस जीवन का सच्चा सुख अनुभव न होना भी धर्मराज की सजा ही है। योगानन्द को परमानन्द कहते है और योग में बैठते समय या चलते-फिरते योग का आनन्द अनुभव न होना भी धर्मराज की सजायें ही हैं। विशेष रूप से योग में बैठने के समय संकल्प-विकल्प चलना, योग के आनन्द का अनुभव न होना भी धर्मराज की सजायें ही हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि धर्मराज की ट्रिबुनल भी ब्राह्मणों के लिए ही बैठेगी क्योंकि उनको बाबा ने सारा ज्ञान दिया फिर भी उन्होंने नहीं माना और विकर्म किये, इसलिए उनको उसकी कड़ी सज़ा मिलेगी।

"यह सब वायदे बाप के पास चित्रगुप्त के रूप में हिसाब के खाते में नूँधे हुए हैं। ... पत्र जो लिखकर दिया वह पत्र वा संकल्प सूक्ष्मवतन में बापदादा पास सदा के लिए रिकार्ड में रह गया।" अ.बापदादा 31.3.86

"चोरी की, उसका सौगुणा दण्ड हो ही जाता है। बाप जानकर क्या करेंगे। ... ईश्वर का बच्चा बनकर फिर चोरी करता, शिवबाबा जिनसे इतना वर्सा मिलता है, उनके भण्डारे की चोरी करता है, यह तो बहुत बड़ा पाप है।" सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

"लगाव वाले को धर्मराज के आगे सलाम भरना ही पड़ेगा। लगाव वाले सम्पूर्ण फर्स्ट जन्म का राज्यभाग्य पा न सकें। इसी प्रकार पुराने स्वभाव वाले नये जीवन, नये युग का सम्पूर्ण और सदा काल के सुख का अनुभव नहीं कर पाते। ... अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त करो।" अ.बापदादा 15.7.73

"अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रुप में कोई सजा नहीं मिल रही है, लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ जो

संकल्प हुआ, किया, उसकी सजा का भी अनुभव करेंगे।"

अ.बापदादा 3.5.72

"सूक्ष्म सजायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सजायें भी भोगनी पड़ेंगी।"

अ.बापदादा 3.5.72

"अभी बाबा ने राइट-रांग को जज करने की बुद्धि दी है।... बाबा थोड़ेही सज़ा देंगे। धर्मराज के द्वारा दिलवाते हैं। विनाश भी कराते हैं शंकर के द्वारा।... बाबा कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाते हैं।"

सा.बाबा 6.4.06 रिवा.

"जैसे प्रीत बुद्धि चलते-फिरते बाप, बाप के चरित्र और बाप के कर्तव्य की स्मृति में रहने से बाप के मिलने का प्रक्टिकल अनुभव करते हैं, वैसे विपरीत बुद्धि वाले विमुख होने से सूक्ष्म सजाओं का अनुभव करेंगे।... उनके सीरत से हरेक अनुभव कर सकेंगे कि इस समय यह आत्मा सजा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे लेकिन छिपा नहीं सकेंगे।"

अ.बापदादा 2.2.72

"अगर जरा भी गफलत की तो जैसे कहावत है - एक का सौ गुणा लाभ भी मिलता है तो एक का सौ गुण दण्ड भी मिलता है, यह बोल अभी प्रैक्टिकल में अनुभव होने वाले हैं। इसलिए सदा बाप के सम्मुख, सदा प्रीत बुद्धि बनकर रहो।"

अ.बापदादा 2.2.72

"यह विनाश का समय बहुत कड़ा है। ... धर्मराज भी साक्षात्कार कराने के सिवाए सजायें कैसे देंगे ? सब साक्षात्कार करायेंगे।"

सा.बाबा 17.11.03 रिवा.

"बेहद के बाप का बनकर फिर पाप किया तो एक का सौगुणा दण्ड हो जायेगा। शिवबाबा कहते हैं - मैं धर्मराज से बहुत कड़ी सजायें दिलवाता हूँ।... इसमें बड़े कायदे हैं। जज का बच्चा पाप करे तो जज कुछ कर थोड़ेही सकेंगा। उसकी सजा भोगनी ही पड़े।"

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, हिसाब-किताब चुक्तू कराने वाला। ट्रिबुनल बैठती है ना! पापों की सजायें तो जरूर मिलती हैं, जिसको कर्मभोग कहा जाता है।"

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

"बाप को याद करते-करते हम पावन बन जायेंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी। ... वहाँ पर

फिर ट्रिबुनल बैठती है, सब साक्षात्कार होते हैं। बिगर साक्षात्कार किसको सजा दे नहीं सकते। बिगर साक्षात्कार सजा दें तो तो मूँझ पड़े कि यह सजा हमको क्यों मिलती है। बाप को मालूम रहता है कि इसने यह पाप किया है, यह भूल की है। सब साक्षात्कार कराते हैं।"

सा.बाबा 14.6.04 रिवा.

"बाप के सामने सजायें खायेगे तो बाप क्या कहेंगे। उस समय माफ नहीं कर सकते। इन द्वारा बाप पढ़ाते हैं तो इनका ही साक्षात्कार होगा। ... बिगर साक्षात्कार सजा दे न सकें। कहेंगे तुमको इतना पढ़ाते थे फिर भी तुमने ऐसे-ऐसे काम किये।"

सा.बाबा 10.6.04 रिवा.

"आत्मा को सुख वा दुख तब भासता है जब शरीर है। बाबा ने समझाया है सजा कैसे मिलती है। सूक्ष्म शरीर भी नहीं, स्थूल शरीर धारण कराये सजा देते हैं। गर्भ जेल में सजा खाते हैं। त्राहि-त्राहि करते हैं, बस मुझे बाहर निकालो। गर्भ महल का भी मिसाल दिया हुआ है।"

सा.बाबा 25.09.03 रिवा.

"बाबा को कहा जाता है सुप्रीम जस्टिस, सुप्रीम टीचर और सुप्रीम सतगुरु। फिर सुप्रीम धर्मराज भी कहा जाता है। उनकी जजमेन्ट में नीचे-ऊपर कुछ नहीं हो सकता। ड्रामा में ऐसी नूँध ही नहीं है। ... बाप की बदनामी करने की सज़ा बहुत भारी है। जो यज्ञ में विघ्न डालते, वे सज़ा लायक बन जाते हैं।"

सा.बाबा 17.2.07 रिवा.

कर्म और फल का विधि-विधान

ये सृष्टि-नाटक एक कर्म और फल का अनादि-अविनाशी खेल है अर्थात् इस कर्म-क्षेत्र पर आत्मा बिना कर्म के एक सेकेण्ड भी नहीं रह सकती और कोई भी कर्म बिना कर्म-फल के नहीं रह सकता। सृष्टि के नियमनुसार आत्मा इस कर्म क्षेत्र पर जो भी कर्म करती है, उसका प्रभाव प्रकृति और अन्य आत्माओं को अवश्य ही प्रभावित करता है। आत्मा के जिस कर्म से अन्य आत्माओं को सुख मिलता है, प्रकृति और आत्मा पावन बनती हैं, उससे उसका पुण्य का खाता जमा होता है और जिन कर्मों से आत्माओं को दुख मिलता है या दुख के साधनों का निर्माण होता है, प्रकृति और वातावरण दूषित होता है, उससे उसका श्रेष्ठ कर्मों के फल का खाता कम होता है या कहें कि उससे उसके पाप का खाता बढ़ता है, जो उसको कर्मभोग या दुख के रूप में भोगना पड़ता है। हर आत्मा का अपना कर्म-फल ही उसके सुख

या दुख का मूल कारण है, दूसरी आत्मायें तो निमित्त मात्र हैं।

ड्रामा अनुसार कोई भी कर्म फल के बिना नहीं होता अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है और कोई भी फल कर्म के बिना नहीं मिलता अर्थात् किसी भी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल मिल रहा है, वह उसके द्वारा किये गये पूर्व कर्मों का परिणाम है। कर्म और फल के इस विधि-विधान को जानते हुए हमको किसी की प्राप्तियों से न ईर्ष्या हो, न द्वेष हो और न ही घृणा। ईर्ष्या-द्वेष-घृणा से या श्रेष्ठ फल की इच्छा करने से श्रेष्ठ फल नहीं मिलेगा परन्तु श्रेष्ठ कर्म करने से श्रेष्ठ फल अवश्य मिलेगा। जैसी स्मृति वैसी स्थिति और जैसी स्थिति वैसे कर्म अवश्य होते हैं। इस लिए इस विश्व-नाटक कर्म और फल के विधि-विधान को जानकर श्रेष्ठ कर्म करना अति आवश्य है। परमात्मा ही आकर इस विधि-विधान को यथार्थ रीति बताता है और श्रेष्ठ कर्म करने के बल को प्राप्त करने का भी साधन और साधना बताता है।

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के, अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।" अ.बापदादा 20.1.86

* कर्म करने के लिए आत्मिक शक्ति और शरीरिक शक्ति दोनों की आवश्यकता होती है। समय और शक्ति (दैहिक) आत्मा की ऐसी सम्पत्ति है, जो संचित नहीं की जा सकती, उसको कार्य में लगाना ही उसका संचय करना है और अपना भाग्य बनाना है। फल शक्ति के संचय से नहीं मिल सकता लेकिन शक्ति को कार्य में लगाने से फल मिलता है।

* किसी दूसरे की उपभोग्य वस्तु की ओर लालायित होना या उपभोग की इच्छा करना है और वह भी पाप है। आत्मा को उसका फल भोगना होता है। किसी अनाधिकृत वस्तु की ओर आकर्षित होना भी पाप कर्म है और उसका भी फल आत्मा को भोगना ही होता है।

* कर्म का फल = कर्म का स्वरूप + कर्ता की भावना + कर्म का व्यक्ति व प्रकृति पर प्रभाव अर्थात् इन सब बातों के आधार पर कर्म के फल का निर्णय होता है।

* किसी के अनुचित व्यवहार या कर्म से किसी आत्मा का पतन होता है, वह अनुचित कार्यों को करने के लिए बाध्य होती है, अनुचित कर्मों में प्रवृत्त होती है तो अपने उस अनुचित व्यवहार अर्थात् अकृत्य के कारण कर्म करने वाला व्यक्ति भी उसके कर्मों में भागीदार बनता है अर्थात् दोनों ही उसके फल में भागीदार होते हैं।

* सतयुग में कर्म, अकर्म होते क्योंकि वहाँ कोई दुखी होता ही नहीं है, इसलिए पुण्य करने की आवश्यकता ही नहीं है और विकार न होने के कारण पाप कर्म भी नहीं होता है। वहाँ संगमयुग पर बनायी हुई प्रालब्ध को भोगते हैं, इसलिए वहाँ सुकर्म और विकर्म दोनों नहीं होते, इसलिए वहाँ के कर्मों को अकर्म कहा जाता है। वास्तव में अकर्म कोई होता नहीं है क्योंकि वहाँ जो प्रालब्ध भोगते, उसके कारण आत्मा की शक्ति में थोड़ा-थोड़ा ह्रास होता जाता है, जिससे आत्मा की कलायें गिरती हैं अर्थात् उतरती कला अवश्य होती है परन्तु वहाँ पाप-पुण्य का प्रश्न नहीं होता।

* सतयुग-त्रेता युग में पाप-पुण्य नहीं होता है क्योंकि दुख की फीलिंग नहीं होती इसलिए पाप-पुण्य का संकल्प ही नहीं, केवल प्रालब्ध भोगते हुए स्थिति उतरती कला की रहती है। द्वापर से देहाभिमान के कारण विकार आ जाते हैं और विकारों के कारण विकर्म होना आरम्भ होता है, जिसके फल स्वरूप दुख-अशान्ति का आरम्भ होता, इसलिए उस दुख-अशान्ति से मुक्त होने के लिए पाप-पुण्य की भावना जाग्रत होती है और उस अनुसार कर्म आरम्भ होते हैं परन्तु वहाँ से पाप की गति तीव्र और पुण्य की गति मन्द होती है, इसलिए स्थिति पतनोन्मुख रहती है, जिसका अनुपात उसी दिशा में निरन्तर बढ़ता जाता है। संगम पर यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान और परमपिता परमात्मा के संग के कारण पुण्य की गति तीव्र और पाप की गति मन्द हो जाती है, इसलिए स्थिति उत्थानोन्मुख अर्थात् चढ़ती कला की होती है, जो अनुपात निरन्तर बढ़ते-बढ़ते आत्मा को सम्पूर्णता तक ले जाता है।

* पुरुषार्थ का फल अवश्य मिलता है और प्राप्ति पुरुषार्थ से होती है। इसलिए हमको कब पुरुषार्थ के फल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए और न ही किसकी प्राप्तियों से ईर्ष्या करनी चाहिए। जो इस सत्य को जानकर निश्चिन्त, निर्संकल्प, निरासक्त, निर्भय होकर अपने पुरुषार्थ को करता है, वही अपने अभी लक्ष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव करता है। पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है। संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान सुख देने वाला होता है बल्कि सतयुग की प्रालब्ध से भी संगम का पुरुषार्थ अधिक फल देने वाला अर्थात् अधिक सुखदायी होता है।

* दृष्टि-वृत्ति, कृत्ति, संकल्प, बोल से किये गये हर कर्म का फल होता है और उसका परिणाम कर्ता को भोगना ही पड़ता है। इस सत्य को समझकर कोई भी कर्म करना है और जो कर्म करना है, उसके अच्छे-बुरे फल को खाने के लिए तैयार रहना है।

"एक समय और दूसरा संकल्प - इन दो खज़ानों पर विशेष अटेन्शन रखना। ... सारे कल्प

के लिए जमा करने की बैंक अभी ही खुलती है। सतयुग में ये जमा की बैंक बन्द हो जायेगी।" अ.बापदादा 16.2.96

"सतयुग में न ये बैंक होंगी और न रुहानी खज़ाने जमा करने की बैंक होगी। दोनों ही बैंक नहीं होंगी। इस समय एक का पद्मगुणा करके देने की ये रुहानी बैंक है लेकिन जमा करेंगे तब पद्म मिलेगा, ऐसे नहीं। पूरा हिसाब है।" अ.बापदादा 16.2.96

* हर आत्मा इस जगत में सुख या दुख अपने जमा के खाते के अनुसार ही पाती है। हमारा जीवन सदा सुखमय हो, इसके लिए हर आत्मा को अपने श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। इसके लिए हमारा श्रेष्ठ कर्मों का खाता किस विधि-विधान के अनुसार जमा होता है और किस अनुसार ना अर्थात् खत्म होता है, उसका ज्ञान भी होना अति आवश्यक है। परमात्मा पिता ने हमको श्रेष्ठ कर्मों के खाते को जमा करने का विधि-विधान बताया है, जिसके अनुसार कर्म करके हम अभी अपना खाता जमा करते हैं और उसके फलस्वरूप अभी भी सुख पाते हैं और सतयुग में भी श्रेष्ठ पद पाते हैं।

* आत्मा जो कर्म करती है, उससे जो खाता जमा होता, उसका फल आत्मा को इस जन्म में भी मिलता है और अनेक जन्मों तक भी मिल सकता है। संगमयुग पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों का फल आत्मा को 21 जन्म तक तो मिलता ही है बाद में भी वह जमा का खाता चलता रहता है।

* जड़ तत्वों का उपभोग हो या चेतन आत्माओं के साथ व्यवहार, सबके लिए हमको उतना ही अधिकार है जितना हमारे लिए और समस्त विश्व के लिए आवश्यक और उपयोगी है, जिससे हमारी आत्मिक शक्ति और शारीरिक शक्ति का विकास होता है, उसके अतिरिक्त उपयोग या व्यवहार से हमारा सुख का खाता कम होता है और यदि हम साधनों का दुरुपयोग करते हैं तो जमा का खाता ना होता है अर्थात दुख का खाता शुरू हो जाता है।

* श्रेष्ठ कमों का खाता जमा करने का समय ये संगमयुग ही है और तो सारे कल्प में अन्तिम परिणाम में खाता कम ही होता है क्योंकि सतयुग-त्रेता में कोई श्रेष्ठ कर्म नहीं करते क्योंकि श्रेष्ठ कर्मों का न ज्ञान होता है और न ही आवश्यकता होती है, इसलिए वहाँ के कर्म अकर्म कहलाते हैं परन्तु वे भी आत्मा के पुण्य का खाता कम अवश्य करते हैं। द्वापर-कलियुग में मनुष्य अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म करता है परन्तु अन्तिम परिणाम बुरे का ही भारी होता है क्योंकि देहाभिमान के वशीभुत आत्मा से बुरे कर्म ही अधिक होते हैं, अच्छे बहुत कम होते हैं। सतयुग से कलियुग अन्त तक आत्मा का जमा का खाता कम ही होता है, जमा करने का समय संगमयुग ही है।

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र और आप ही अपना शत्रु है। अपने लिए या किसी अन्य के दुख-अशान्ति के लिए किसी दूसरे को दोष देना या दोषी ठहराना अज्ञानता है और अपने आप ही अपने पाप का खाता बढ़ाकर जीवन को अन्धकारमय बनाना है। हम ज्ञान के सागर, विश्व कल्यणकारी बाप के बच्चे हैं, विश्व कल्याण हमारा लक्ष्य है, ये विश्व-नाटक कल्याणमय है, इसलिए सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण का संकल्प रखना और कर्म करना ही हमारा कर्तव्य है, उससे ही हमारा श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होता है। इसमें ही हमारा अपना, दूसरों का और विश्व का कल्याण नीहित है।

"मुख्य यह तीनों खज़ाने - संकल्प, समय और स्वांस आज्ञा प्रमाण सफल होते हैं ? व्यर्थ तो नहीं जाते ? ... जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है। ... सारे कल्प के लिए जमा इस संगम पर ही करना है। ... इस छोटे से जन्म के संकल्प, समय और स्वांस कितने अमूल्य हैं!"
अ.बापदादा 15.11.99

"जमा करने की विधि बहुत सहज है, सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ।... आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका, वह भी फुल-स्टॉप अर्थात् बिन्दी।... जमा का खाता बढ़ाने की विधि है - "बिन्दी" और गँवाने का रास्ता है क्वेश्चन मार्ग, आश्चर्य की मात्रा लगाना।"
अ.बापदादा 30.11.99

"इस समय जो कुछ करते हैं, वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं, ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। बाबा कहते हैं - इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है, जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो।"
सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।"
अ. बापदादा 19.3.82

"बीज बोया जाता है तो उसका फल निकलता है। यहाँ चावल चपटी देने से महल मिल जाते हैं। किसको भी कहना नहीं है कि बीज बोओ। तकदीर में नहीं होगा तो कभी बुद्धि में आयेगा ही नहीं। ... गरीब सबसे जास्ती इन्श्योर करते हैं। गरीब के चावल मुट्ठी भी साहूकार के धन के इक्वल हो जाते हैं। ... अभी अम्बा पर कितना बड़ा मेला लगता है। कुछ तो सर्विस करके गई है ना। ... तुमको कोई से पैसे आदि लेने की इच्छा नहीं होनी चाहिए। तुमको तो रहमदिल बनना है।"
सा.बाबा 17.09.03 रिवा.

"यथा शक्ति तथा फल की प्राप्ति करते हैं। ... दिखावे मात्र करते हैं, स्वार्थ वश करते हैं।

उन सब हिसाब अनुसार जैसा कर्म, जैसी भावना वैसा फल मिलता है।"

अ.बापदादा 7.3.84

"गरीब साहूकार सब आ जाते हैं। शिवबाबा का भण्डारा भरता जाता है। जो भण्डारा भरते हैं, उनको वहाँ रिटर्न में कई गुणा मिल जाता है।"

सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

"अगर सन्तुष्टता का अनुभव नहीं किया, चाहे स्वयं से स्वयं ने, चाहे दूसरे ने तो जमा का खाता कम होता है। बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। जानते हो वह चाबी क्या है? ... निमित्त भाव, निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव। अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है।"

अ.बापदादा 31.12.03

"अभी बच्चे चलते-फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों को याद की यात्रा से विनाश करते हैं। ... बच्चे समझते हैं - हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।"

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

"अभी तो अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के बने हुए खाते, जिसको पाप-कर्मों का खाता कहा जाता है, उसको भस्म कराने के आप निमित्त हो। जो अन्य के व्यर्थ खाते को भस्म कराने वाले हैं, वे स्वयं अपना ऐसा खाता बना नहीं सकते। यह तो पुराने खाते हैं। आप तो पुराने खाते समाप्त कर नया जन्म, नये खाते बनाने वाले हो। पुराने खाते सब खत्म हो रहे हैं - ऐसा अनुभव होता है?"

अ.बापदादा 4.2.75

"सिर्फ घर को याद करेंगे तो पाप विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश होंगे और तुम अपने घर चले जायेंगे।"

सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

"व्यर्थ में समय नहीं गँवाओ। व्यर्थ के संस्कार पक्के होते जाते हैं। ... व्यर्थ का भी खाता जमा हो जाता है। सुनने से भी व्यर्थ जमा होता है।"

अ.बापदादा 16.3.95

"ज्ञानी और योगी आत्मा के हर कर्म स्वत: युक्तियुक्त अर्थात् यथार्थ श्रेष्ठ कर्म होंगे।... कोई भी कर्म रूपी बीज फल के सिवाए नहीं होता है।"

अ.बापदादा 14.1.90 पार्टी 2

"अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ, घबराओ नहीं। ... बाकी कोई सीजन का फल

है, कोई हर समय का फल है। ... श्रीमत प्रमाण कार्य किया, तो ये श्रीमत को मानना भी एक सफलता है।"

अ.बापदादा 27.2.96 पार्टी

"त्रिकालदर्शी के स्मृति की स्थिति रूपी तख्त पर स्थित होकर कोई भी कर्म करो, फिर कर्म फल नहीं देवे, यह हो नहीं सकता। बीज अगर शक्तिशाली होगा तो फल अवश्य मिलेगा। ... अभ्यास में कभी भी अलबेले नहीं बनो।"

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

"कोई भी कर्म करते हो तो पहले त्रिकालदर्शी बनकर फिर कोई कर्म करो।... पहले परिणाम को सोचो फिर कर्म करो तो सदा श्रेष्ठ परिणाम निकलेगा।... त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर कर्म करने से कब कोई व्यर्थ कर्म नहीं होगा, साधारण नहीं होगा।"

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

"बाप ने हिसाब भी बताया है कि सबसे पहले भक्ति तुम करते हो, इसलिए तुमको ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलना चाहिए, जो फिर तुम ही नई दुनिया में राज्य करो।"

सा.बाबा 3.10.06 रिवा.

"शिवबाबा तो निराकार दाता है ना। तुम देते हो तो तुमको 21 जन्मों के लिए फल देते हैं। ... चावल मुट्ठी का भी गायन है ना। गरीब अपनी हिम्मत अनुसार जितना देते हैं, उतना उनका भी बनता है, जितना साहूकार का। इसलिए बाप को गरीब निवाज़ कहा जाता है।"

सा.बाबा 10.10.06 रिवा.

"मम्मा बिना कौड़ी आई और विश्व की महारानी बन गई। यह साधारण था। मम्मा बहुत सर्विस करती थी ... इसमें खर्चे की तो कोई बात ही नहीं। अगर कोई थोड़ा खर्चा करते भी हो, सो भी अपने लिए। जैसे खेती में दो मुट्ठी बीज डालने से ढेर अन्न निकलता है।"

सा.बाबा 6.11.06 रिवा.

"बाप को याद करना गोया कमाई करना। इसमें आशीर्वाद क्या करेंगे। सब पर आशीर्वाद करें तो सब स्वर्ग में चले जायें। यहाँ तो अपनी मेहनत करनी है। ... जितना याद करेंगे, उतना राजाई मिलेगी।"

सा.बाबा 25.10.06 रिवा.

"बाबा के पास ऐसे-ऐसे बच्चे भी हैं, जो कहते बाबा जब जरूरत पड़े तो मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाज़िर हैं।... बाबा कहते - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं, हम आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे।"

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"महान दाता बन, बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े होकर बेहद की सेवा में वायब्रेशन

फैलाओ। ... मनोबल को बढ़ाओ। मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंची स्थित में स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित होकर थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।" अ.बापदादा 13.11.97

"अभी तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान है कि बाबा हमको फिर पांच हजार वर्ष के बाद आकर यह ज्ञान सुनायेंगे। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा। ... इन लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य किसने दिया? यह उनके कर्मों का फल है ना। बाप अभी तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते हैं।" सा.बाबा 14.10.06 रिवा.

"बाप समान बनना ही है ना या देखेंगे, सोचेंगे ... मेहनत करते हैं, उसकी सफलता मिलती ही है, व्यर्थ नहीं जाती। लेकिन किसलिए सेवा करते हो? ... बाप को प्रत्यक्ष करना ही है और करेंगे ही लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो। ... शिव-शक्तियां इस वर्ष स्व को शिव-शक्ति के रूप में प्रत्यक्ष करेंगे?"

अ.बापदादा 31.12.06

"आज अखुट अविनाशी खज़ानों के मालिक बापदादा अपने चारो ओर के सम्पन्न बच्चों के जमा के खाते देख रहे हैं। तीन प्रकार के खाते देख रहे हैं - 1. अपने पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाता, 2. सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना - यह सन्तुष्टता द्वारा दुआओं का खाता और 3. मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बेहद के निस्वार्थ सेवा द्वारा पुण्य का खाता।" अ.बापदादा 30.11.06

"इन तीनों खातों (प्रालब्ध का, दुआओं का और पुण्य का) में जमा कितना है, है या नहीं, उसकी निशानी है - वह सदा सर्व प्रति, स्वयं प्रति सन्तुष्टता स्वरूप, सर्व प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना और सदा अपने को खुशनुमा, खुशनसीब स्थिति में अनुभव करेगा। तो चेक करो।" अ.बापदादा 30.11.06

"सदैव अपने को चेक करो कि आज के दिन मन्सा अर्थात् स्वयं के संकल्प शक्ति में क्या विशेष विशेषता लाई? ... साथ-साथ बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता कितनी लाई? ... कर्म रूपी बीज प्राप्ति के वृक्ष से भरपूर हो, खाली नहीं हो।"

अ.बापदादा 31.12.90

"नवीनता अर्थात् हर कर्म स्व के प्रति और अन्य आत्माओं के प्रति प्राप्ति का अनुभव कराये। कर्म का प्रत्यक्षफल व भविष्य जमा का फल अनुभव हो। वर्तमान समय प्रत्यक्षफल सदा खुशी और शक्ति की प्रसन्नता की अनुभूति हो और भविष्य जमा का अनुभव हो।"

अ.बापदादा 31.12.90

"सफल उनका होगा, जो ईश्वरीय स्थापना के कार्य में लगा रहे हैं। यह है ईश्वरीय बैंक, इसमें जो जितना डाले, उतना जमा होता है। जिसने जितना कल्प पहले डाला होगा, वह उतना ही अभी भी शिवबाबा की गोलक में डालेंगे। इसका रिटर्न फिर नई दुनिया में 21 जन्मों तक मिलेगा।" सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

"रतनचन्द ने ब्रह्मा बाप को फॉलो किया, तो आज उसका परिवार उसकी दुआओं से बहुत अच्छा चल रहा है और राम-सावित्री दिल से सेवा के निमित्त बने, समय पर गुप्त सहयोगी बनें, उसकी दुआयें परिवार को हैं। काम उसने किया और नाम परिवार को दिया है।"

अ.बापदादा 31.12.06 सिन्धी ग्रुप

"आज से अपने में देखो। दूसरा भी करता, तीसरा भी करता है - इसे मुझे नहीं देखना है। ... अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो। नहीं तो धोखा खा लेंगे। ... महारथियों का निश्चय का फाउण्डेशन अटूट-अचल है, उसकी उनको एक्स्ट्रा दुआयें मिलती हैं।"

अ.बापदादा 3.4.97

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज। दान हमेशा गरीबों को ही दिया जाता है। सुदामा की बात है ना - चावल चपटी ले उनको महल दे दिये। समझो कोई के पास 25-50 रुपया है, उसमें से 20-25 पैसे देता है और साहूकार 50 हजार दे तो भी इक्वल हो जाता है।"

सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"भोलानाथ शिवबाबा को ही कहा जाता है। गाया हुआ है - सुदामा ने दो मुट्ठी चावल की दी तो महल मिल गये। ... बाप महल देते हैं लेकिन किसकी एवज़ में देते हैं? बच्चे कहते हैं - बाबा यह तन-मन-धन सब आपका है।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।"

मातेश्वरी 24.6.65

"इस समय जो कुछ करते हैं, वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं। ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। बाबा कहते हैं - इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है, जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"कभी भी यह संकल्प नहीं करना चाहिए कि हम किसी मनुष्य से लेवें। बोलो - शिवबाबा के

भण्डारे में भेज दो, इनको देने से तो कुछ नहीं मिलेगा, और ही घाटा पड़ जायेगा। इनसे तो शिवबाबा के भण्डारे में डालने से पदम हो जायेगा। अपने को भी घाटा थोड़ेही डालना है।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"यहाँ ही फल को स्वीकार कर लिया तो भविष्य फल को खत्म कर लेंगे। ... कोई भी कार्य करना है तो संगम पर ठहर कर जजमेन्ट करना है क्योंकि आप सभी संगमयुगी कहलाते हो।... बीच (संगम) की अवस्था है बीज अर्थात् बिन्दी।"

अ.बापदादा 17.4.69

"यह सब ड्रामा चल रहा है। ... 5000 वर्ष में हम क्या-क्या जन्म लेते हैं, कैसे सुख से फिर दुख में आते हैं। जिनकी बुद्धि में सारा ज्ञान है, धारणा है वे समझ सकते हैं।... धन दान नहीं करते हैं तो गोया उनके पास है ही नहीं। दान नहीं करते तो मिलेगा भी नहीं। हिसाब है ना। ये सब हैं अविनाशी ज्ञान रतन।"

सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

"देहाभिमानी से कुछ न कुछ पाप जरूर होगा।... बाप कहते हैं - तुम आत्मा अशरीरी आई थीं। ... सुन्न (अशरीरी) होने का समय अभी ही है। अभी तुमको घर जाना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया और इस शरीर का भान उड़ा देना है। कुछ भी याद न रहे।"

सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

"जो एग्जाम्पुल बनता है, ड्रामा में एग्जाम के टाइम उसे एक्स्ट्रा मार्क्स मिलती है।"

अ.बापदादा 10.1.91 टीचर्स

"एक समर्थ संकल्प का फल पदमगुणा मिलता है। ऐसे ही एक व्यर्थ संकल्प का हिसाब-किताब भी उतना ही है। ... यह भी एक का बहुत गुणा के हिसाब से अनुभव होता है। फिर सोचते हैं कि था तो कुछ नहीं, पता नहीं क्यों खुशी गुम हो गई।"

अ.बापदादा 24.3.85

"त्याग को त्याग न समझ भाग्य अनुभव करना, इसको कहा जाता है - सच्चा त्याग। अगर संकल्प में, वाणी में भी इस भावना का बोल निकलता है कि मैं ने यह त्याग किया, तो उसका भाग्य नहीं बनता है।"

अ.बापदादा 28.1.77

आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का विधि-विधान

पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का विधि-विधान

सारे कल्प में आत्मा को सुख या दुख उसके अपने ही पुण्य-पाप के कर्मो के फलस्वरूप मिलता है। आत्मा जो भी कर्म करती है, उससे उसका खाता संचित होता जाता है, जो समय पर सुख या दुख के रूप में फल देता है। पाप-पुण्य दोनों ही कर्मों से आत्मा का खाता बनता है परन्तु पुण्य के खाते को जमा का खाता कहा जाता है और पाप के खाते को ना (घाटे) का खाता कहा जाता है क्योंकि उससे उसका पुण्य का खाता कम हो जाता है। आत्मा का पुण्य का खाता कैसे और कौन से कर्मों से जमा होता है और पापों का खाता कैसे बढ़ता है अर्थात् आत्मा का पुण्य का खाता कैसे खत्म होता है और आत्मा पर पाप का बोझ कैसे चढ़ता है - ये सब राज़ भी अभी परमात्मा ने बताये हैं और पाप का बोझ खत्म करके पुण्य का खाता जमा करने की विधि भी बताई है, उस सब विधि-विधान को जानना अति आवश्यक है।

सतयुग-त्रेता में आत्मायें कोई पुण्य-पाप कर्म नहीं करती हैं लेकिन जो साधन-सम्पत्ति का उपभोग करती हैं, उससे उनका संगमयुग पर जमा किया हुआ पुण्य जमा का खाता कम होता जाता है। अभी संगमयुग पर और सारे कल्प में आत्मायें जो भी साधन-सत्ता का उपभोग करती हैं, उससे उनका पुण्य का खाता कम होता है। इसीलिए बाबा कहते हैं अभी तुम किससे सेवा न लो, व्यर्थ उपभोग न करो, जिससे तुम्हारा पुण्य का खाता खत्म हो जाये। दुआयें दो, दुआयें लो, सुख दो, सुख लो तो तुम्हारा खाता जमा होता रहेगा। यथार्थ रीति देखा जाये तो सारे कल्प में खाता जमा करने का समय अभी संगमयुग ही है और तो सारे कल्प खाता खत्म ही होता जाता है। भल भक्ति मार्ग अर्थात् द्वापर-कलियुग में आत्मायें पुण्य करने का पुरुषार्थ करती हैं परन्तु परिणाम में पुण्य से पाप अधिक होने के कारण पुण्य का संचित खाता कम ही होता जाता है, जो कलियुग के अन्त में ना के बराबर अर्थात् नाममात्र रह जाता है।

"सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है। ... इस युग और इस जीवन की विशेषता है कि अब ही जो जितना जमा करना चाहे, वह कर सकते हैं। ... इस समय ही श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ ज्ञान का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का खाता जमा करते हो।" अ.बापदादा 06.1.86

"खजाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि को प्राप्त करना। चाहे स्वयं को सम्पन्न बनाने के कार्य में लगायें, चाहे स्वयं की सम्पन्नता द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा के कार्य में

लगायें। विनाशी धन खर्चने से खुटता है परन्तु अविनाशी धन खर्चने से पद्मगुणा बढ़ता है, इसलिए कहावत है खर्चो और खाओ।" अ.बापदादा 17.4.84

"सबसे बड़ा पुण्य है - बाप को याद करना। याद से ही पुण्यात्मा बनेंगे। ... बाप भी कहते हैं - तुमको पुण्य का खाता जमा करना है, पाप करने से वह सौगुणा हो जाता है और ही घाटे में आ जायेगा। पाप भी कोई बहुत कड़ा, कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा पाप, क्रोध है सेकेण्ड नम्बर। सबसे जास्ती काम वश होने से जो जमा हुआ, वह ना (खत्म) हो जाता है। ... इस जन्म की जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म-जन्मान्तर के पाप नहीं कट जायेंगे। सिर्फ इस जन्म की हल्काई हो जाती है। जन्म-जन्मान्तर के पाप योग से ही चुक्तू होने वाले हैं।"

सा.बाबा 15.1.04 रिवा.

"एक हैं जो खज़ाने को अपना बना लेते हैं और हर समय यूज़ करने के अनुभव से खुशी और नशे में रहते हैं। ... दूसरे हैं जो खज़ाना मिला है, मेरा है, इस खुशी में रहते हैं लेकिन उसको कार्य में नहीं लगाते हैं ... जमा करने और यूज़ करने की अनुभूति में अन्तर है।"

अ.बापदादा 13.3.90

"शिवबाबा को याद नहीं करेंगे तो पाप कटेंगे नहीं। भल बाप ले तो सबको जायेंगे परन्तु कोई सजा खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे। हिसाब-किताब चुक्तू सबको करना है। तुम जानते हो अभी हम अपना खाता जमा कर रहे हैं। जितना पवित्र बन जास्ती कमाई करेंगे, उतना अधिक जमा होता है।" सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

"ब्रह्मा कुमार-कुमारी भाई-बहन होने के कारण विकार में जा नहीं सकते। नहीं तो वह हो जाये क्रिमिनल एसॉल्ट। उसको बहुत खराब कहा जाता है। भाई-बहन कहलाकर फिर अगर विकार में गये तो बहुत कड़ी सज़ा भोगनी पड़ेगी। गायन है - सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये।" सा.बाबा 26.1.07 रिवा.

"दिल्ली से नाम बाला होगा ना। सभी के सकाश से दिल्ली से नाम बाला तो करना ही है। ... जो निमित्त बनता है, उसको सेवा की सफलता का शेयर मिल जाता है, इसलिए निमित्त बनते जाओ और शेयर्स जमा करते जाओ।... स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन यह गिफ्ट में लिफ्ट मिलती है।" अ.बापदादा 31.1.98 जगदीश भाई से

"सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से कोई भी कोई भी रीति से सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती है। मेहनत से इतनी नहीं बढ़ती है, जितनी ऐसे बढ़ती है।... सदा सुख दो और सुख लो।... सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें लो और दुआयें दो। ... ऐसे भी नहीं कि मर्यादा तोड़कर किसको सुख दो। नहीं, वह

सुख के खाते में जमा नहीं होता है। वह ऑटोमेटिक दुख के खाते में जमा हो जाता है।"

अ.बापदादा 18.1.98

"हर एक को अपनी दिल से पूछना है कि हमारे में क्या खामी है। बाबा को बताना चाहिए, बाबा मेरे में यह खामी है। नहीं तो वह खामी वृद्धि को पाती जायेगी। बाप यह कोई श्राप नहीं देते हैं परन्तु यह एक लॉ है।"

सा.बाबा 4.1.07 रिवा.

"इन तीनों खज़ानों (प्रालब्ध का, दुआओं का और पुण्य का) के वृद्धि की विधि है - दृढ़ता। ... होगा या नहीं होगा, यह संकल्प भी नहीं चलेगा। हुआ ही पड़ता ... दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चित और निश्चिन्त अनुभव करेगा।"

अ.बापदादा 30.11.06

"यह बहुत गुह्य गति है। जैसे पिछले जन्मों के पाप कर्मों के बोझ आत्मा को उड़ने नहीं देते। ऐसे इस जन्म की छोटी-छोटी अवज्ञाओं का बोझ, जैसी स्थिति चाहते हो, वह अनुभव करने नहीं देता। ... अवज्ञाओं का बोझ सदा समर्थ बनने नहीं देता।"

अ.बापदादा 17.12.89

"सेवा करना और सेवा का फल जमा होना, उसमें अन्तर है। ... सेवा के बाद स्वयं अपने मन में अपने से सन्तुष्ट हैं और साथ में जिनकी सेवा की, जो सेवा के साथी बनें वा सेवा करने वाले को देखते हैं, सुनते हैं वे भी सन्तुष्ट हैं, तो समझो जमा हुआ।"

अ.बापदादा 28.3.06

"बाप की याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, इसको योग अग्नि कहा जाता है। ...सोने को आग में डालकर उससे किचड़ा निकालते हैं, फिर सोने में खाद डालने के लिए भी आग में डालते हैं। बाप कहते हैं - वह काम चिता और यह है ज्ञान चिता।"

सा.बाबा 10.03.06 रिवा.

"तुम बच्चों को दुख-सुख, मान-अपमान ... सब सहन करना है।... अगर कोई बात है तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। रिपोर्ट नहीं करते तो बड़ा पाप लगता है। ... इस काम के कारण ही कितने पाप होते हैं।"

सा.बाबा 10.6.05 रिवा.

"अमृतवेले योग लगाया, जमा किया। क्लास में स्टडी कर जमा किया और फिर सारे दिन में परिस्थितियों के वश वा माया के वार के वश वा अपने संस्कारों के वश जो जमा किया वह युद्ध करते विजयी बनने में खर्च किया। तो रिजल्ट क्या निकली ? कमाया और खाया।"

अ.बापदादा 06.1.86

"सभी ने पाप किये जरूर हैं। जो पुण्यात्मा थे, वे ही फिर पापात्मा भी बनते हैं। हिसाब-किताब

बाप बैठ समझाते हैं। ... यह सारा ड्रामा चल रहा है। आत्मा शरीर धारण कर पार्ट बजाती है।"

सा.बाबा 13.7.04 रिवा.

"बाबा को थोड़ेही मालूम था कि बाप स्वयं आकर मेरे में प्रवेश करेंगे। ... पहले तो आश्चर्य खाते थे, यह क्या होता है। मैं किसको देखता हूँ तो बैठे-बैठे उनको कशिश होती है, ध्यान में चले जाते हैं। आश्चर्य में पड़ गये, यह क्या है। इन बातों को समझने के लिए फिर एकान्त चाहिए। अच्छा बनारस जाता हूँ। ... रात को नींद आ जाती थी, समझता था कहाँ उड़ गया हूँ।"

सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

"सबसे बड़ा पुण्य है - बाप को याद करना। याद से ही पुण्यात्मा बनेंगे। ... बाप भी कहते हैं- तुम्हारा पुण्य का खाता था, पाप करने से वह सौगुणा हो जाता है और ही घाटे में आ जायेगा। पाप भी कोई बहुत कड़ा, कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा, क्रोध है सेकेण्ड नम्बर। सबसे जास्ती काम वश होने से जो जमा हुआ, वह ना हो जाता है। ... इस जन्म की जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म-जन्मान्तर के पाप नहीं कट जायेंगे। सिर्फ इस जन्म की हल्काई हो जाती है। जन्म-जन्मान्तर के पाप योग से ही चुक्तू होने वाले हैं।"

सा.बाबा 15.1.04 रिवा.

"सर्व प्राप्तियों के दाता ने सर्व प्राप्तियां करा दी ... खज़ानों को जमा करने की सहज विधि बाप ने सुनाई है। विधि है - बिन्दी। ... तीन बिन्दियां। एक मैं आत्मा बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो भी बीत जाता है, वह फुल स्टॉप अर्थात् बिन्दी। इस स्मृति से स्वत: ही खज़ाने जमा हो जाते हैं।"

अ.बापदादा 2.2.07

"बापदादा हर बच्चे का जमा का खाता चेक करते हैं। आप सभी भी अपने हर समय का जमा का खाता चेक करो। ... कर्म में स्वयं भी सन्तुष्ट और जिसके साथ कर्म किया, वह भी सन्तुष्ट। अगर दोनों में सन्तुष्टता है तो समझो कर्म का खाता जमा हुआ। अगर दोनों में सन्तुष्टता नहीं आई तो जमा नहीं होता है।"

अ.बापदादा 2.2.07

कर्मभोग और कर्मभोग से मुक्ति पाने का विधि-विधान

कर्म और फल के विधि-विधान पर विचार करें तो हमको इस सत्य का स्पष्ट अनुभव होगा कि किसी आत्मा को कोई भी कर्मभोग बिना कर्म के नहीं हो सकता। कर्मभोग के विधि-विधान के अनुसार हर आत्मा को अपने विकर्मों का दण्ड अर्थात फल कर्मभोग के रूप

में भोगना पड़ता है। कर्मभोग से बचने के लिए कर्मभोग के विधि-विधान को जानना अति आवश्यक है और यदि कर्मभोग आ गया तो भी इस विधि-विधान को जानने वाले को उसको भोगने में मदद मिलती है अर्थात् उस कर्मभोग से सहज मुक्ति पा सकता है।

कर्मभोग को भोगने में भी अगर आत्मा को वेदना नहीं है, उसकी महसूसता नहीं है, तो उसकी भोगना कम होती है। अगर कर्मभोग हल्का है और उसकी महसूसता अधिक है तो वह बड़ा कर्मभोग कहा जायेगा। कर्मभोग की महसूसता में भी आत्मा की चेतना का अधिक प्रभाव होता है। बुद्धिशाली-चिन्तनशील आत्मा को थोड़ा कर्मभोग भी अधिक लगता है अर्थात् उसकी महसूसता अधिक आती है। मनुष्य सृष्टि का सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसको सुख-दुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति दोनों की महसूसता अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक होती है।

कल्पान्त में आत्मा को कर्मातीत बनकर परमधाम घर वापस जाना होता है, इसलिए वापस जाने वाली आत्माओं को अपना सारे कल्प का संचित खाता पूरा करना होता है, इसलिए उनको अन्त तक कुछ न कुछ कर्मभोग रहता ही है, जिसको चुक्ता करने के बाद ही आत्मा वापस जा सकेगी और कर्मभोग चुक्ता होने के बाद कर्मातीत आत्मा एक सेकेण्ड भी इस देह और इस धरा पर नहीं रह सकती।

कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने में अपने श्रेष्ठ कर्मों का फल, परमात्मा की श्रीमत पर चलने से परमात्मा की दुआयें, आत्माओं की सेवा करने से आत्माओं की दुआयें, योग का पुरुषार्थ अर्थात् देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास बहुत मदद करता है। ये सब बातें आत्मा को कर्मभोग की वेदना से मुक्त करती हैं अर्थात् वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करती हैं।

जब आत्मा को यथार्थ ज्ञान के द्वारा इस सत्य का ज्ञान हो जाता है कि हमको जो भी कर्मभोग आया है, वह हमारे ही विकर्मों का फल है और उसको भोग कर ही हम उससे मुक्त हो सकते हैं, तो आत्मा उसको सहज स्वीकार कर लेती है, जिससे उसकी भोगना की वेदना बहुत कुछ कम हो जाती है परन्तु जब हम यह समझते हैं कि ये कर्मभोग हमारे ऊपर किसी दूसरे के द्वारा अकारण ही डाला गया है या उसके लिए दूसरा व्यक्ति निमित्त है तो उसकी भोगना अधिक हो जाती है और उससे अनेक विकर्म और हो जाते हैं, जिससे आगे के लिए नया कर्मभोग का खाता जमा हो जाता है।

इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब

आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है अर्थात् आत्मा कर्मभोग होते भी आत्मा उसको महसूस नहीं करती है। आत्मा और दैहिक स्वास्थ्य के लिए वरदान अर्थात् दुआयें भी दवाई का काम करती हैं। किसी की दुआयें लेने के लिए श्रेष्ठ कर्म अति आवश्यक हैं।

"अभी श्रीमत कहती है - यह विष की लेन-देन छोड़ दो, ज्ञान और योग की धारणा करो। जितना ज्ञान रतन धारण करेंगे, उतना निरोगी बनेंगे। ... यह है रुहानी हॉस्पिटल और युनिवर्सिटी, इससे मनुष्य 21 जन्मों के लिए एवर हेल्दी-वेल्दी बन सकते हैं।"

सा.बाबा 9.1.07 रिवा.

"मन्सा से शक्तियों का खज़ाना, वाणी से ज्ञान का खज़ाना, कर्म से गुणों का खज़ाना और बुद्धि से समय का खज़ाना, सम्बन्ध-सम्पर्क से खुशी का खज़ाना सफल करो। तो सफल करने से सफलतामूर्त बन ही जायेंगे। सहज उड़ते रहेंगे क्योंकि दुआयें लिफ्ट का काम करती है।"

अ.बापदादा 31.10.06

"जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। ... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।" अ.बापदादा 4.12.72

"इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है। ... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।"

अ.बापदादा 23.3.70

"मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं। ... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। ... क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।" अ.बापदादा

"यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। ... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। अपनी आप ही

मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।"

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

"बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं। ... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।"

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है। ... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।"

अ.बापदादा 30.11.99

"कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है। ... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।"

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।"

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है।... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा।... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।"

अ.बापदादा 29.10.87

"जहाँ लगन होती है, वहाँ कोई विघ्न ठहर नहीं सकते। स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। पढ़ाई की प्रीत, मुरली से प्रीत वाले विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं।... एक मुरली से प्यार, पढ़ाई से प्यार और परिवार का प्यार किला बन जाता है। किले में रहने वाले सेफ हो जाते हैं।"

अ.बापदादा 27.03.86

"कर्मभोग तो पिछाड़ी तक भोगना ही है। ऐसे नहीं कि मैं इन पर आशीर्वाद करूँ। इनको भी अपना पुरुषार्थ करना है। हाँ, रथ दिया है तो उसके लिए कुछ इजाफा भी देंगे।"

सा.बाबा 14.5.04 रिवा.

"मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं।... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उसके मुख,

चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते।... क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।" अ.बापदादा 29.10.87

ज्ञानमार्ग, ज्ञान मार्ग में समर्पित जीवन और सन्यास मार्ग के विधि-विधान

जो भी आत्मा जाने-अन्जाने परमात्मा के नाम पर या अपने आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण की भावना से जो कर्म करता है, उसके लिए त्याग-तपस्या करता है, उसका फल उसको अवश्य मिलता है। भक्ति मार्ग में भी शुभ-भावना और शुभ-कामना से भक्त, सन्यासी, जैन साधू-साध्वी, क्रिश्चियन धर्म में नन्स, बौद्ध-भिक्षु आदि जो सन्यास करते हैं, परमात्मा और प्रकृति द्वारा ड्रामा अनुसार उनकी पालना अवश्य होती है, उनकी मान-मर्यादा अवश्य होती है। समय पर उनके कार्य अवश्य सिद्ध होते हैं, उनकी वाणी में, दृष्टि-वृत्ति में विशेष शक्ति आ जाती है। अभी संगमयुग पर परमात्मा ने हमको यथार्थ ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक के अनेक विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बताये हैं, इसलिए हम उनके ऊपर श्रृद्धा-विश्वास रखकर त्याग-तपस्या करते हैं तो वह हमको अवश्य मदद करता है। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार भक्ति-मार्ग और ज्ञान-मार्ग की प्राप्ति में महान अन्तर है। इसलिए ज्ञान-मार्ग में चलने वाले किसी भाई-बहन को या समर्पित होने वाले किसी भाई-बहन को अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए। जो ईश्वरीय विधि-विधान और विश्व-नाटक के विधि-विधान को जानकर, निश्चय कर दृढ़ संकल्प रखकर चलता है, त्याग-तपस्या करता है, वही इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव करता है।

कर्म-फल का संचय ही सबसे श्रेष्ठ संचय है, जो सदा, सर्वदा, सर्वत्र काम आता है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना और अन्य आत्माओं को अपनी शक्ति से आत्मिक स्वरूप में स्थित करके अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराना सबसे श्रेष्ठ कर्म है, श्रेष्ठ साधना है।

वर्तमान ज्ञान मार्ग के विधि-विधान और नियम-सिद्धान्त ही भक्ति मार्ग में अपनाये जाने वाले विधि-विधानों और नियम-सिद्धान्तों का आधार हैं और भक्ति-मार्ग में अपनाये जाने वाले विधि-विधानों और नियम-सिद्धान्तों से ही संगमयुग और सतयुग के विधि-विधानों और नियम-सिद्धान्तों की कलम लगती है। बाबा अनेक बार मुरलियों में भक्ति-मार्ग के पुरुषार्थ के

विधि-विधानों का वर्णन करते हैं। बाबा ने यह भी कहा है कि जो जिन्होंने सबसे ज्यादा भक्ति की होगी, वे ही पहले ज्ञान में आयेंगे और अच्छा पुरुषार्थ भी करेंगे। यदि हम गहराई से देखें तो जिन आत्माओं को भक्ति मार्ग में जाने-अन्जाने परमात्मा के ऊपर अटल श्रृद्धा होती है, देवताओं के प्रति अटल श्रृद्धा-विश्वास होता है, वे सहज ही परमात्मा के बताये हुए विधि-विधानों को स्वीकार कर लेते हैं, उनके लिए उनकी पालना सहज हो जाती है। इस प्रकार हम देखें तो भक्ति-मार्ग के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त और ज्ञान मार्ग के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त चक्रवत (Cyclic) चलते हैं।

भूल से भी ये संकल्प नहीं करना चाहिए कि हमको ज्ञान में 50 साल हो गये हैं, हमको यज्ञ में समर्पित हुए 40 साल हो गये हैं, इसलिए हमको ये चीज अर्थात् स्कूटर, कमरा आदि मिलना चाहिए, विशेष साधन-सुविधा मिलनी चाहिए। जब ये साधन-सुविधायें नयों को मिल सकती हैं तो हमको क्यों नहीं मिल सकती हैं या मिलती हैं। यह जैसे हम अपनी 50 साल की त्याग-तपस्या के बदले ये चीज मांगते हैं अर्थात् उनका मूल्य हम अपनी 50 साल की त्याग-तपस्या से चुका रहे हैं। अपने कार्य की आवश्यकतानुसार किसी चीज के लिए मांगना अलग बात है। हमने 50 साल तक त्याग-तपस्या या यज्ञ में समर्पण किसी वस्तु विशेष के लिए नहीं किया है। बाबा हमको जो ज्ञान-गुण-शक्तियां देने आया है, उनको लेने और उसका सुख अनुभव करने के लिए हम त्याग-तपस्या करते हैं, हमने सेवा से अपना भाग्य बनाने के लिए समर्पण किया है। इस देह से न्यारी आत्मिक स्थिति परमानन्दमय है, परमात्मा के साथ ईश्वरीय सेवा परमानन्दमय है और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का खेल देखना परमानन्दमय है, हमको उसका उपभोग करना है। उसके लिए किसी भौतिक साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है। इसलिए बाबा की श्रीमत पर अपना समय, स्वांस, संकल्प इस स्थिति के लिए लगाना है, न कि किसी साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए। किसी साधन-सम्पत्ति के लिए अपना समय, स्वांस, संकल्प लगाना तो जैसे हीरे के बदली कौड़ी लेना है।

Q. विचार करो - क्या तुम किसी स्थूल साधन-सम्पत्ति या भविष्य के दिलासे पर जी रहे हो या वर्तमान जीवन की परम-प्राप्तियों की अनुभूतियों में जी रहे हो ?

वर्तमान जीवन और वर्तमान की प्राप्तियां भविष्य से पद्मापदम गुणा श्रेष्ठ है और सारे कल्प की प्राप्तियों का आधार हैं। इस जीवन जैसा सुख त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ भी नहीं है। इस सत्य को जानकर इस जीवन का परम सुख अनुभव करो और कराओ। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसका यथार्थ ज्ञान और अनुभव अभी ही हो सकता है। इस विश्व-नाटक के विधि-विधान को जानकर कर्म करने वाले को अभी ही परम सुख की अनुभूति होती है।

"जिनको सन्यास धर्म में जाना है, वे घर में ठहरेंगे नहीं। उनसे सन्यासी बनने का पुरुषार्थ जरूर होगा। ... अन्त में एक मेरी ही याद रहे। नहीं तो जिनके साथ लगन होगी, वहाँ जन्म लेना पड़ेगा।"

सा.बाबा 27.1.07 रिवा.

"वे अपनी कुटिया में रहते हैं, वहाँ ही उनको भोजन पहुँचता है। जो विकारों का सन्यास करते हैं तो उनकी पवित्रता मनुष्यों को खींचती है। ... सच्चे सन्यासी लोग मांगते नहीं हैं, उनमें योग का बल रहता है। तत्व योगियों में भी ताकत होती है।"

सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

"वैराग्य दो प्रकार का होता है। सन्यासियों का है हद का वैराग्य। घरबार छोड़ जाकर जंगल में बैठते हैं। फिर वे गुप्त मदद करते हैं, भारत का बहुत फायदा करते हैं। जैसे विनाश के लिए कहा जाता है, इनसे स्वर्ग के गेट खुलते हैं, वैसे ये भी पवित्रता की मदद करते हैं, इसलिए ड्रामा में उन्हों की महिमा है। ... तुम्हारा है बेहद का वैराग्य।... पवित्रता की कशिश होती है, इसलिए उन्हों का मर्तबा रखते हैं। वे भी समझते हैं - हमारे जैसा ऊंच भारत में कोई है नहीं।"

सा.बाबा 19.8.03 रिवा.

"तुम सब कुछ बाबा को सरेण्डर करते हो, बाबा फिर उसका एवज़ा देते हैं। जो जितना श्रीमत पर चलते हैं, जितना सरेण्डर करते हैं, उतना उनको दर्जा मिलता है।"

सा.बाबा 22.2.07 रिवा.

विविध बिन्दु

* ये एक आध्यात्मिक सिद्धान्त है कि इस ब्राह्मण जीवन में कोई अकृत्य करते, श्रीमत का उलंघन करते या करके छिपाते तो वह हमारे संकल्प को डिस्टर्व अवश्य करेगा, जिससे हम इस जीवन की परम प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति के परम सुख से वंचित हो जाते हैं क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का मूलाधार है - निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति।

* सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा को पाकर भी कोई आत्मा उनकी स्मृति को भूलकर उनकी मुरली को छोड़कर किसी आत्मा विशेष को याद करती, उसके क्लास में अधिक रुचि रखती, उसके साहित्व को पढ़ने में विशेष रुचि रखती, उसके गुण-धर्मों से विशेष प्रभावित होती तो भी हमको कभी आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, राग-द्वेष की भावना जाग्रत नहीं होनी चाहिए क्योंकि बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है कि ये विश्व एक ड्रामा है और अभी ये राजाई स्थापन हो रही है और वहाँ की राजाई में भी विभिन्न प्रकार की राजाई होंगी और राजाई में भी विभिन्न पद और प्राप्तियों वाले व्यक्ति होंगे ही तो जरूर कोई ऐसे कारण बनेंगे, जिसके अनुसार वे पद और प्राप्तियाँ होंगी। लौकिक गीता में भी इस सत्य के विषय में स्पष्ट रूप से कहा गया कि मेरे को भजने वाले मेरे लोक को प्राप्त होते हैं और देवताओं और भूतों को भजने वाले उनके लोक को प्राप्त होते हैं। ये विश्व-नाटक का अटल सिद्धान्त हैं कि जो जिसका साहित्य पढ़ता है, किसके गुण-धर्मों की ओर आकृष्ट होता है, उसको उसकी याद अवश्य आती है, उसके साथ उसका सम्बन्ध जुटता है।

* किसी कर्म के फल को निर्णय करने में करने वाले की भावना का महत्वपूर्ण स्थान है। जीवात्मा कोई भी कर्म करती है तो चेतन आत्माओं के साथ 2 पंच तत्व भी उसके कर्म की गवाही देते हैं और उसके चित्र को संचित रखते हैं, जिसके आधार पर ही प्रकृति द्वारा उसका फल मिलता है और समय पर उसका साक्षात्कार भी होता है। किसका कर्मों का कितना अच्छा या बुरा खाता जमा है, वह आत्मा स्वयं भी नहीं जानती है परन्तु प्रकृति उसको जानती है और समय पर उसका फल देती है। परमात्मा ज्ञान सागर होने के कारण इन सब सत्यों को जान सकता है परन्तु ड्रामा अनुसार उसको जानने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि वह जानता है - जो जैसा करेगा, उसको वैसा फल मिलेगा। वह तो ड्रामा का और श्रेष्ठ कर्मों का विधि-विधान बताता है, जो जैसा करता वैसा फल पाता है।

* किसी भी समय देह का छूट जाना कर्मभोग या दुख नहीं है परन्तु देह में रहते या देह का त्याग करते समय दुखी होना कर्मभोग या दुख है। देह धारण करना और देह का त्याग करना

तो सृष्टि का अनादि-अविनाशी नियम है। देह धारण करना और छोड़ना आत्मा की स्वभाविक क्रिया है, जो इस विश्व-नाटक की परमावश्यक क्रिया है।

वनस्पति अर्थात् जंगम प्रकृति में भी जब फल या बीज आ जाता है और वह पक जाता है तो पौधा पृथ्वी से नाता तोड़ देता है और सूख जाता है। ऐसे ही प्राय: सभी बड़े वृक्षों में भी जब बीज या फल पक जाते हैं तो उनका काया-कल्प होता है अर्थात् उनमें पतझड़ होता है, नयी कोपलें, नये पत्ते आते हैं। ऐसे ही सृष्टि के नियमानुसार जब बच्चे समर्थ हो जायें तो मनुष्य को उनको मालिक बनाकर स्वयं इस देह और देह की दुनिया से उपराम हो जाना चाहिए। यही सुखी जीवन और सुखमय मृत्यु का नियम है। सतयुग-त्रेतायुग में आत्मा का ज्ञान होने से और स्थिति सतोप्रधान होने से जीवात्माओं की ये स्वभाविक स्थिति होती है।

Q. जीवन के उत्तरदायी कौन है?

हर आत्मा चाहे वह समर्पित हो, ट्रस्टी ब्रह्माकुमार हो या ब्रह्माकुमार न भी हो, वह अपने जीवन के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है, दूसरी आत्मायें उसके कर्मों और ड्रामा के पार्ट अनुसार केवल निमित्तमात्र हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष को किसी भी परिस्थिति में किसको दोष देकर, किसके प्रति राग-द्वेष का भाव लाकर अपने विकर्मों का खाता नहीं बढ़ाना चाहिए।

"भाग्यवान तो सभी बच्चे हैं क्योंकि भाग्यविधाता के बने हैं, इसलिए भाग्य तो जन्मसिद्ध अधिकार है। ... इस भाग्य के अधिकार के अधिकारी बन उस खुशी और नशे में रहना और औरों को भी भाग्यविधाता द्वारा भाग्यवान बनाना, यह है अधिकारीपन के नशे में रहना। ... ये श्रेष्ठ भाग्य की झलक और रुहानी फलक विश्व में सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ, न्यारी और प्यारी है।"

अ.बापदादा 9.1.85

"अभी तुम सुखधाम में जाने के लायक बन रहे हो। पतित मनुष्य कोई पावन दुनिया में जा नहीं सकते। कायदा नहीं है। यह कायदा भी तुम बच्चे ही जानते हो। ... ज्ञान, भक्ति और वैराग्य।"

सा.बाबा 6.3.07 रिवा.

"भक्ति मार्ग आधा कल्प चलता है, भगवान की खोज करते रहते हैं। ... सबको नीचे जाना ही है, भ्रष्टाचारी बनना ही है - यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। ... जो पहले अलग हुए हैं, उनको ही पहले आना है। उनके लिए ही आना पड़ता है, साथ में सबको मुक्ति देनी है।"

सा.बाबा 7.3.07 रिवा.

"देवी-देवता धर्म का ही सेपलिंग लगना है। कोई किस धर्म में, कोई किस धर्म में चले गये हैं। वे ही निकल आते हैं। इस धर्म की स्थापना कितनी वण्डरफुल है। ... कोई समझ न सके कि

देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे होती है।"

सा.बाबा 7.3.07 रिवा.

"सन्यासी विकार में नहीं जाते, इसलिए उनको पतित नहीं कहेंगे। ... गृहस्थी लोग उनको बहुत मान देते हैं परन्तु वे कोई मन्दिरों में पूजने लायक नहीं बनते हैं। पूजा उनकी होती है, जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होते हैं। ... सन्यास धर्म का भी ड्रामा में पार्ट है, सृष्टि को जल मरने से कुछ बताते हैं।"

सा.बाबा 8.3.07 रिवा.

"शिवबाबा को याद करने से मदद मिलेगी। सच्चे दिल पर साहेब राजी होता है। सच्ची दिल वाले बच्चों को ही बाप का सहारा मिलता है। ... भारत जो पूज्य था, वह पुजारी बना है, फिर पूज्य जरूर बनेगा।"

सा.बाबा 8.3.07 रिवा.

"जो पवित्र बनते हैं, याद में रहते हैं, वे ही सर्विस कर सकेंगे। बाप के डायरेक्शन पर चलते हैं तो बाबा राज़ी होते हैं। पहले सर्विस करनी है, सबको रास्ता बताना है। योग का रास्ता बताने के लिए भी पहले ज्ञान देंगे ना। योग में रहने से विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 8.3.07 रिवा.

"भारत का असुल आदि सनातन धर्म है ही देवी-देवता। सतयुग आदि में देवी-देवताओं का राज्य था। भारतवासी अपने धर्म को भूल गये हैं। जो पावन थे, वे अब पतित बन गये हैं।... गाते भी हैं - हे भगवान आकर गीता का ज्ञान फिर से सुनाओ।"

सा.बाबा 9.3.07 रिवा.

"धर्मराज के पास तो सबका रजिस्टर रहता है, फिर सज़ा भोगने के समय उनको साक्षात्कार करायेंगे ... अन्त में बाबा सब साक्षात्कार करायेंगे, फिर बहुत परेशान होंगे।... बाप कोई श्राप नहीं देते हैं परन्तु बच्चे अपनी चलन से अपने ऊपर आपेही बद्दुआ करते हैं।"

सा.बाबा 9.3.07 रिवा.

"आप बेगर टू प्रिन्स हो। बेगर भी हो और प्रिन्स भी हो। सर्व त्याग माना बेगर और सर्व प्राप्तियां अर्थात् प्रिन्स। बिना त्याग के इतना बड़ा भाग्य नहीं मिलता है। त्याग का ही भाग्य मिलता है। ... तन-मन-धन, सम्बन्ध मेरा के बजाये तेरा किया।... सिर्फ तेरा कहना नहीं लेकिन मानना, सिर्फ मानना भी नहीं लेकिन चलना।"

अ.बापदादा 13.3.98

"जो सच्ची दिल से निस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते जाते हैं, उन्हों के खाते में पुण्य का खाता बहुत

अच्छा जमा होता जाता है। कई बच्चों का एक है अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध का खाता, दूसरा है सन्तुष्ट रह सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता और तीसरा है यथार्थ योगयुक्त-युक्तियुक्त सेवा के रिटर्न में पुण्य का खाता - ये तीनों खाते बापदादा हर एक का देखते रहते हैं।"

अ.बापदादा 24.2.98

"जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं, वे विश्व के प्यारे भी बनते हैं। सिर्फ भविष्य प्राप्ति नहीं है लेकिन वर्तमान भी है। ... अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो। ... होली अर्थात् हो ली अर्थात् बन गये। परमात्म परिवार की हो ली अर्थात् हो गई।"

अ.बापदादा 13.3.98

"हर कार्य के लिए कोई न कोई निमित्त बन जाता है और हो भी जाता है क्योंकि ड्रामा में नूँधा हुआ है। सिर्फ समय पर कोई निमित्त बन जाता है तो उसका फल उसको मिल जाता है। तो इस कार्य के लिए भी कोई निमित्त बनना ही है।"

अ.बापदादा 13.3.98

"(ड्रिल) मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारो ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ। ... पूज्य आत्मायें हो, अपने भक्त आत्माओं को सकाश दो।"

अ.बापदादा 13.3.98

"ज्ञान के खज़ाने तो खर्च करने से बढ़ते हैं, कम नहीं होते। अगर बार-बार अपने ही स्वभाव-संस्कार वा माया की तरफ से आई हुई समस्याओं में अपनी शक्तियां यूज़ करते हो तो जमा का खाता कम होता है। ... जमा की तो खुशी होती है लेकिन खर्च का हिसाब नहीं निकाला तो समय पर धोखा मिल जायेगा।"

अ.बापदादा 13.3.98

"अशरीरी बनने का अभ्यास पक्का है, इसलिए शरीर का हिसाब-किताब सहज चुक्तू हो जाता है। ... आदि से साथी रहे हैं तो साथी का जो भी कुछ होता है, वह बाप ले लेता है। सभी की दुआयें आपके साथ हैं। ... देने वाले को देना, देना नहीं होता है लेकिन जमा होता है।"

अ.बापदादा 13.3.98

"भक्ति मार्ग में भी जो उत्सव मनाते हैं, यादगार हैं वे सब कुछ-कुछ अर्थ से बने हुए हैं। ... पहले बुराई को जलाओ, फिर मनाओ। ... आत्मिक मनाना और उस मनाने से शक्ति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना। वह तब ही कर सकते हो जब पहले जलाया है।"

अ.बापदादा 13.3.98

"बाप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं हो लेकिन मनाने के साथ स्वयं को बाप समान बनाते भी हो। ... बापदादा चारो ओर के सेवाधारी बच्चों को हिम्मत के रिटर्न में मदद देते रहते हैं। बच्चों की हिम्मत और बाप की मदद है ही है।"

अ.बापदादा 24.2.98

"जो सच्ची दिल से निस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते जाते हैं, उन्हों के खाते में पुण्य का खाता बहुत अच्छा जमा होता जाता है। कई बच्चों का एक है अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध का खाता, दूसरा है सन्तुष्ट रह सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता और तीसरा है यथार्थ योगयुक्त-युक्तियुक्त सेवा के रिटर्न में पुण्य का खाता - ये तीनों खाते बापदादा हर एक का देखते रहते हैं।"

अ.बापदादा 24.2.98

"एक है अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध का खाता, दूसरा है सन्तुष्ट रह सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता और तीसरा है यथार्थ योगयुक्त-युक्तियुक्त सेवा के रिटर्न में पुण्य का खाता... अगर ये तीनों खातो में जमा होता है तो उसकी निशानी है - वह सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करते हैं ... दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। मेहनत से छूट जाते हैं।"

अ.बापदादा 24.2.98

"जो स्वराज्य अधिकारी हैं वे ही विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। जब चाहो, कैसा भी वातावरण हो लेकिन अगर मन-बुद्धि को ऑर्डर करो स्टॉप तो स्टॉप हो जाये। ... यह अभ्यास बार-बार करते रहो। यह अभ्यास अन्त में बहुत काम में आयेगा। इसी आधार पर पास विद् ऑनर बन सकेंगे।" (ड्रिल)

अ.बापदादा 24.2.98

"बाप के रूप में परमात्म-पालना का अनुभव कर रहे हो। यह परमात्म-पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में आप बच्चों को ही प्रापत होती है।... परमात्म प्यार सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराता है, परमात्म प्यार अपने देह भान को भी भुला देता है, साथ-साथ अनेक स्वार्थ के प्यार को भी भुला देता है। ... आप बच्चों के लिए रोज़ बाप शिक्षक बनकर आपके पास पढ़ाने आते हैं।"

अ.बापदादा 30.3.98

"जहाँ दृढ़ता है, वहाँ सफलता नहीं हो, असम्भव है। ... सारे वर्ल्ड के लिए हे अर्जुन मधुबन निवासी हैं। निमित्त मधुबन निवासी है, सेकण्ड नम्बर देश-विदेश की निमित्त सेवाधारी टीचर्स हैं और सर्व सहयोगी साथी सारा परिवार ब्राह्मण आत्मायें हैं।"

अ.बापदादा 30.3.98

"जब काम मिलता है तो लिखने में भी मार्क्स जमा होती है। अगर नहीं लिखा तो एक्स्ट्रा मार्क्स कम हो गई। ... जो बाप द्वारा डायरेक्शन मिलते हैं, चाहे निमित्त आत्मायें दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेला बनना।"

अ.बापदादा 30.3.98

"चीज़ भले नहीं दे सकते लेकिन मीठे बोल तो दे सकते हो।... सन्तुष्ट करने का लक्ष्य होता है तो चीज़ भी आ जाती है। ... पता नहीं कहाँ से चीज़ें ले आते हैं, कहाँ से स्टॉक भर जाता है। सिर्फ दिल हो सन्तुष्ट करने का। ... अगर ड्रामा ने निमित्त बनाया है तो कोई न कोई विशेषता तो है, जिस विशेषता ने मधुबन में निमित्त बनाया है। सिर्फ उस विशेषता को समय प्रति समय थोड़ा सा शान्त भाव, प्रेम भाव से निमित्त बनो।"

अ.बापदादा 30.3.98

"जैसे मुख का आवाज़ साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुँचता है, ऐसे मन का आवाज़ संकल्प भी पहुँचे। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे और उन्हीं इशारों से कइयों को जागृति भी आई। ऐसे जो आदि में हुआ, वह अभी अन्त में भी हो। ... वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति आप सबके द्वारा प्रत्यक्ष हो।"

अ.बापदादा 30.3.98 दादियों से

"साइलेन्स की विशेषता क्या है और साइलेन्स के बल से क्या-क्या कर सकते हैं, क्या-क्या हो सकता है, इस विषय पर ज्यादा अटेन्शन दो। ... वायुमण्डल में लहर फैलाने के निमित्त तो आप ही हैं। मन का आवाज़ मुख के आवाज़ से भी ज्यादा काम कर सकता है। ... कई रिद्धि-सिद्धि वाले भी कुछ ऐसी विधि से करते हैं। लेकिन योग की विधि द्वारा यह आवाज़ फैले।"

अ.बापदादा 30.3.98 दादियों से

साराँश

सारांश में हम देखें तो संगमयुग पर बाबा आकर सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं और सृष्टि-चक्र के सारे अनादि-अविनाशी नियम-सिद्धान्त, विधि-विधान बताते हैं, जिनको जानकर आत्मा पुरुषार्थ कर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परम सुख-शान्ति का अनुभव करती है।

* सम्पूर्णता परम सुख-शानति का आधार है, उस के लिए किसी साधन-सम्पत्ति, महल-माड़ी, व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और दृढ़ पुरुषार्थ की आवश्यकता है। इस पुरुषार्थ में कोई व्यक्ति या वस्तु बाधक भी नहीं बन सकती है। ब्रह्मा बाबा ने अपने पुरुषार्थ और सम्पूर्णता की स्थिति से ये सिद्ध करके दिखाया है।

* सुखी जीवन के लिए तन, मन, धन, जन सब स्वस्थ चाहिए, जिसका आधार है स्वस्थ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म। किसके लिए क्या और कैसा कर्म करना है, उसके लिए भी बाबा श्रीमत दी है, उसका विधि-विधान बताया है।

* इस विश्व-नाटक का ये अनादि-अविनाशी नियम है कि इस विश्व-नाटक की हर घटना 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। हम किसी भी घटना को जो कल्प पहले हुई है, उसे बदल नहीं सकते परन्तु ज्ञान और योग के अभ्यास से हमारा उस घटना के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है, जिससे उस घटना से प्राप्त होने वाले दुख-दर्द की महसूसता हल्की हो जाती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को किसी भी घटना या कर्मभोग की महसूसता नहीं आती है क्योंकि आत्मा अपने सत्य स्वरूप में स्थित होने पर परमपिता परमात्मा के समान सुख और दुख दोनों से न्यारी अर्थात मुक्त है। देहभान और देहाभिमान ही आत्मा के सुख और दुख का मूलाधार है। इस सन्दर्भ में अंग्रेजी में भी किसी लेखक ने भी कहा है - Events can't be changed but we can change our attitude towords events.

"आज बापदादा उन विशेष बच्चों को देख रहे थे, जो सदा स्व-चिन्तन, शुभ चिन्तन में रहने के कारण सर्व के शुभ चिन्तक हैं। जो सदा शुभ चिन्तन में रहता है, वह स्वत: ही शुभ-चिन्तक बन जाता है। शुभ-चिन्तन आधार है शुभ-चिन्तक बनने का। पहला कदम है स्व-चिन्तन।... मैं कौन हूँ?... आत्माभिमानी स्थिति में यह कमजोरी की बातें आ नहीं सकतीं।... स्व-चिन्तन अर्थात् जैसा बाप वैसे मैं आत्मा हूँ। ... रचता और रचना के गुह्य रमणीक राज़ो में रमण करना।"

अ.बापदादा 14.1.85

* सृष्टि के नियमानुसार आत्मिक स्वरूप सुख-दुख दोनों से न्यारा अर्थात् मुक्त है। यदि

हमको किसी भी प्रकार से सुख या दुख की महसूसता है तो हमारी यथार्थ आत्मिक स्थिति नहीं है, इसलिए उसके लिए हमको अभीष्ठ पुरुषार्थ करना ही है। आत्मा अन्त में सुख-दुख दोनों से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर ही घर वापस जायेगी।

परमपिता परमात्मा का साथ संगमयुग की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है और परमात्मा का साथ सर्व प्रकार के दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, राग-द्वेष से मुक्त परमानन्दमय है। यदि इस अनुभूति में कोई कमी है तो समझो हमारा परमात्मा के साथ यथार्थ साथ नहीं है, इसलिए अभीष्ठ पुरुषार्थ करके उस स्थिति को पाना ही है। फरिश्ता स्वरूप इन सर्व बातों से मुक्त है और परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में ये कोई बातें हो नहीं सकती।

* यह एक ईश्वरीय नियम है कि जब हम निश्चयबुद्धि होकर सच्ची दिल से बाबा के बन जाते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं तो संगमयुग की परम प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव अवश्य होता है और ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। ब्रह्मा बाबा का उदाहरण हमारे सामने हैं कि कैसे उन्होंने सच्चे दिल से अपना सबकुछ बाबा के अर्पण कर दिया और बाबा का बनते ही इस परम प्राप्ति का अनुभव किया और निरन्तर उसमें उन्नति का अनुभव किया। यदि इस अनुभूति में कोई कमी है तो ये स्पष्ट है कि हमारे निश्चय और सच्ची दिल में कहाँ न कहाँ कोई कमी अवश्य है।

* काम और राम साथ-साथ रह नहीं सकते, भौतिकता और आध्यात्मिकता का पुरुषार्थ साथ-साथ हो नहीं सकता। आध्यात्मिकता ही भौतिकता का आधार है। जिसका आध्यात्मिकता के लिए यथार्थ पुरुषार्थ है, उसके पीछे भौतिकता परछाई की तरह चलती है। इस सत्य को जानकर आत्म कल्याण का अभीष्ठ पुरुषार्थ करो।

* आत्मा पर विकर्मों का बोझा कितना है, इसका सूचक (Indicatar) है देहाभिमान और देहाभिमान का सूचक है - सुख-दुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... की महसूसता। जब आत्मा विकर्माजीत अर्थात् पवित्र बन जाती है तो इन दोनों की महसूसता से मुक्त हो जाती है।

* विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा की कसौटी है - निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति अर्थात् निरन्तर मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति।

* आत्मिक स्वरूप की गहन अनुभूति और उसकी दीर्घकालिक स्थिति अर्थात् अनुभूति का पुरुषार्थ ही यथार्थ पुरुषार्थ है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही आत्मिक स्वरूप का गहन अभ्यास किया और अपने अभीष्ठ लक्ष्य अर्थात् सम्पूर्णता को प्राप्त किया।

* जिस सत्य का ज्ञान होगा, उस पर निश्चय होगा, उसकी धारणा अवश्य होगी और जिसकी

धारणा होगी, वह समय पर स्मृति में अवश्य आयेग। ये प्रकृति का नियम है। इसलिए भूत काल के चिन्तन, पश्चाताप और भविष्य की चिन्ता में न रहकर अपने सत्य स्वरूप में स्थित होने का अभीष्ट पुरुषार्थ करो तो और सब कार्य स्वत: सिद्ध हो जायेंगे।

यथार्थ ज्ञान अर्थात् साक्षी स्थिति सर्व प्रकार की दुख-अशान्ति से, भय-चिन्ता से, राग-द्वेष से मुक्त परम सुखमय है। यदि अंशमात्र भी इन बातों की महसूसता है तो समझो यथार्थ ज्ञान की धारणा की कमी है, इसलिए उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करके उस स्थिति को पाना ही चाहिए। ये विश्व-नाटक परम सुखमय है और उस परम सुख की यथार्थ अनुभूति का समय ये संगमयुग ही है।

सृष्टि-चक्र का मूल सिद्धान्त जिस पर हमारे पुरुषार्थ का आधार है, वह है - जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उसके अनुसार उसका अच्छा या बुरा फल पा रही है इसलिए हर आत्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। पवित्रता ही जीवन है अर्थात् पवित्रता सर्व सुखों का आधार है। पवित्रता अर्थात् शत प्रतिशत देही-अभिमानी स्थिति। सत्यता ये है कि इस जगत में न कोई अपना है और न ही कोई पराया है, न कोई अपना मित्र है और न ही कोई शत्रु है, न कोई हमारा कुछ ले सकता है और न ही हमको कुछ दे सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा कुछ लिया है। दाता एक परमात्मा ही है और उसने जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। इस सत्य को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परम शान्ति का और परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर परमानन्द का और साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने से परम सुख का अनुभव होगा। यही इस ईश्वरीय जीवन की परम प्राप्ति है।

यह विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु इस विश्व-नाटक की इस हू-ब-हू पुनरावृत्ति में कर्म और कर्म-फल का अद्भुत सन्तुलन है। ड्रामा के पार्ट अनुसार आत्मा में कर्म का संकल्प अवश्य आता है और कर्म करने के बाद उसका फल भी आत्मा को अवश्य मिलता है। इस प्रकार ड्रामा का पार्ट, कर्म और उसके फल का इस विश्व नाटक में अद्भुत सन्तुलन है।

यह विश्व-नाटक कर्म और फल का एक खेल है। कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म निष्फल हो नहीं सकता। हर आत्मा अपने ही कर्म के फल स्वरूप सुख या दुख को पाती है इसलिए अपने सुख-दुख का कारण किसी

अन्य आत्मा को समझकर उसके प्रति राग-द्वेष की भावना रखना एक भूल है, जो अनेक विकर्मों का कारण बन जाती है, जो भविष्य में उसके अनेक दुखों का कारण बनते हैं।

परमात्मा न्यायकारी समदर्शी है, वह आकर सभी आत्माओं सुख का रास्ता बताता है, फिर जो जितना उस रास्ते पर चलता है, उस अनुसार सुख पाता है। जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है।

बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है और योग सिखाया है, ज्ञान के सभी राज़ हमारी बुद्धि में होंगे, उस ज्ञान-योग का हमारे जीवन में क्या महत्व है, वह हमारी बुद्धि में होगा, उस पर निश्चय और उसका अनुभव होगा, देह और देह की दुनिया भूली हुई होगी, आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तब ही हम मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव कर सकेंगे। उस अनुभव की खुशी, नशा स्वयं को भी अनुभव होगा और हमारे जीवन से अर्थात् हमारे बोल, कर्म, दृष्टि-वृत्ति से दूसरी आत्माओं को भी अनुभव होगा, जैसे हम ब्रह्मा बाबा के जीवन से अनुभव करते थे। उससे स्वत: ही सेवा होगी। ये सृष्टि का नियम है, जो उसको समझकर जितना उसे अनुभव करता है, वह उतना ही दूसरों को भी उसका अनुभव करा सकता है। उसके अधिक कोई अनुभव करता है तो वह उसका अपना पुरुषार्थ है। ब्रह्मा बाबा ने इस सत्य को अच्छी रीति अनुभव किया और उसके अनुसार पुरुषार्थ करके परम पद को पाया, जिससे उनका जीवन विश्व के लिए आदर्श बन गया, उनके जीवन के नियम-संयम विश्व के लिए नियम और सिद्धान्त बन गये। उनके पद-चिन्हों का अनुसरण करने वालों का ही जीवन श्रेष्ठ बन सकता है। विश्व-नाटक के इन अटल सत्यों के ज्ञान का निश्चय ही आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख की अनुभूति करा सकता है। जागो, देखो परमपिता परमात्मा का वरदानी हाथ हम सभी के सिर पर है, सर्वशक्तिवान बाप की छत्रछाया हम सभी के ऊपर है, उसका सुख लो और भाग्यविधाता से अपने परम भाग्य को प्राप्त करो।

इस विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्तों, विधि-विधानों का परमात्मा ने हमको ज्ञान दिया है, विश्व-नाटक के इन अनादि-अविनाशी अटल नियम-सिद्धान्तों का जितना स्पष्ट ज्ञान होगा, उनका अनुभव होगा, उन पर निश्चय होगा, उतना ही आत्म-नियन्त्रण होगा और आत्म-नियन्त्रण से कर्म श्रेष्ठ होंगे। जब कर्म श्रेष्ठ होंगे तो उनका फल भी अवश्य श्रेष्ठ होगा। विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी सिद्धान्त कभी भी निष्प्रभावी हो नहीं सकते।

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों को पूरी रीति से समझना और वर्णन करना तो किसी भी व्यक्ति के लिए असम्भव ही है परन्तु उनको सार रूप में समझने से अनुभव होता है कि विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, इसमें कोई भी घटना किसी आधार के बिना नहीं होती है और कोई भी कर्म फल के बिना नहीं हो सकता। विश्व-

नाटक में आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों की गति भी अति गहन है, जिसको समझना भी अति कठिन है परन्तु ये सत्य है कि आत्माओं के किसी भी अच्छे-बुरे सम्बन्ध का आधार अवश्य है। इसलिए इस सत्य को समझकर ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है कि वह किसी भी घटना को देखकर आश्चर्यचकित या दुखी न होकर इस विश्व-नाटक की हर घटना को साक्षी होकर देखे और ट्रस्टी होकर कर्म करते हुए इस विश्व-नाटक का आनन्द ले, इसका परम-सुख अनुभव करे और सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखे।

परमात्मा सर्व समर्थ है, सब जानते हुए भी हर घटना और हर कर्म के फल के सम्बन्ध में अधिक न बताकर, जो हमारे लिए हितकर है उस अनुसार संक्षेप इसके नियम-सिद्धन्तों, विधि-विधानों को बताते हैं, जिनको जानकर, उन पर निश्चय करने वाले इस विश्व-नाटक का परमानन्द अनुभव करते हैं।

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों को देखें तो इस सत्यता का अनुभव होगा कि ये सतत परिवर्तनशील है। इस विश्व-नाटक में देह परिवर्तन, पदार्थों पर अधिकार परिवर्तन, सम्बन्धों का परिवर्तन, स्थान परिवर्तन स्वभाविक और अपरिहार्य क्रियायें हैं। इस परिवर्तन से ही इसकी शोभा है, इसलिए इस परिवर्तन के विधि-विधान को जानकर, इन सबसे बुद्धियोग निकालकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद स्वत: आयेगी और जब परमात्मा की याद होगी, परमात्मा का साथ होगा तो जीवन की सफलता निश्चित है। ये विश्व-नाटक चक्रवत गतिशील है, इसलिए जब इस परिवर्तन के विधि-विधान को समझ लेंगे तो आत्मा का सबसे बुद्धियोग स्वत: हट जायेगा और एक परमात्मा के साथ सहज स्थिर हो जायेगा और जहाँ परमात्मा का साथ है, वहाँ विजय निश्चित है अर्थात् जीवन में परमानन्द का अनुभव अवश्य होगा। जो स्वयं परमानन्द की अनुभूति में होगा, वह दूसरों को भी उसका अनुभव अवश्य करायेगा।

इस विविधतापूर्ण विश्व-नाटक के विधि-विधान और नियम-सिद्धान्तों को जानकर किसी आत्मा को हताश होकर अपने पुरुषार्थ से विचलित नहीं होना चाहिए और सत्य ये है कि इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाला कब भी हताश या निराश नहीं हो सकता क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण होते भी सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। सर्व आत्माओं को इसमें समान अधिकार मिले हुए हैं। इसकी वास्तविकता को जानकर जो आत्मा अभी इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, वह मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुर-दुर्लभ सुख को अनुभव करती है, जो ही भविष्य की प्राप्तियों का आधार है। इसके लिए बाबा ने कहा है - जो यहाँ स्वराज्य अधिकारी बनेगा, वही विश्व का राज्य अधिकारी बन सकता है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर जो सुख अनुभव होता है, वही परम सुख है, भविष्य का सुख तो उसके आगे गौड़ है।

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प रहती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। सर्वात्मायें एक परमात्मा की सन्तान और विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर जब दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास होगा तो आत्मिक स्थिति सहज होगी तो हम राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त निर्संकल्प-निर्विकल्प होंगे, जिससे हम अपनी अन्तिम मंजिल अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव करेंगे, यही जीवन की परम-प्राप्ति है, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

"जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।"

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org